

शुद्धिपत्र ।

३८८ पृष्ठा ६ पक्तिमें "सप्तदश" स्थानमें अष्टा-
दश" होगा ।

४४८ पृष्ठा ५ पक्तिमें "अष्टादश" स्थानमें
"ऊनविंश" होगा ।



भूमिका ।

गृहचिकित्सा पुस्तक में प्रकाशित हमारा दूसरा ग्रन्थ "चिकित्सा तत्त्व" था जो प्रकाशित हुआ। इस के रूप में के आरम्भ करने से हमारे प्राणिक लोग जल्दा उपचार के लिए अत्यन्त आग्रह करने परन्तु अनेक तरह के विपन्न और विपत्तियों से समयक विलम्ब हुआ। भासा है कि हमारा इस पुस्तिका कि जिसे हमने अपनी इच्छा से नहीं की, प्राणिक लोग समा करेंगे।

गृहचिकित्सा पुस्तक विद्यार्थी और गृहस्थों लोगों के लिये लिखा गया है इस से उसमें सब रोगों की विस्तृत चिकित्सा लिखना असम्भव था परन्तु इस पुस्तक की सहायता से होमियोपैथिक चिकित्सा में कुछ न्यु पत्ति होसकता है उस समय सब रोगों की चिकित्सा करने के किसी बड़े ग्रन्थ की अपेक्षा अनुभव होती है उसी अनुभव के रूप करने के लिये यह 'चिकित्सा तत्त्व' छापा और प्रकाशित किया गया। चिकित्सा विद्या केवल घन बनाने की ही विद्या नहीं है परन्तु हरक गृहस्थ का यादा बहुत इस विद्या का जानना और उस के अनुसार कुछ चिकित्सा प्रयत्न कुटुम्ब की करना आवश्यक है। होमियोपैथिक चिकित्सा की रीति जैसी सहज है तैसा उपकारा है। क्या नुरत के जन्म बालक ? क्या गभवता स्त्री ? यह सभी होमियोपैथिक औषध निम्न सज्ज करसके है। इस पुस्तक के पढ़ने से अपेक्षा न जानने वाले चिकित्सक और गृहस्थ सभी होमियोपैथिक चिकित्सा में एतकाय हा

सते है। इस विषय में प्रग्यकारने कुछ कसर नहीं रहीं। जब पाठक लोगों से यह प्रार्थना है कि हमारी गृहबिक्रिता और विसुचिषाचिक्रिता इत्यादि पुस्तकों के समान यह पुस्तक भी उनका अभाव पूरा करसके तो हम लोग अपना भ्रम और धान्यको सकल समझेंगे और आगे होमियोपैथिक की अधान्य पुस्तकों क प्रकाश करने में यत्न करेंगे।

दिनांक

श्रीउपेन्द्र नाथ मल्लिक

कार्याध्यक्ष लाहिडी एण्ड कम्पनी

मथुरा ता०२०सितम्बर सन् १९०८। मथुरा शाखा औषधालय।



सूचीपत्र ।

प्रथम अध्याय ।

हामियोपैथि १ ।

द्वितीय दूसरा अध्याय

आरूप्य सम्बन्धि नियमावलि

आहार १२, जल १७, वायु १८, ध्यायाम २०, परिधेय २२, ज्ञान २३।

तीसरा अध्याय

रोगी परीक्षा

रोगीकी शुद्धि २९

चौथा अध्याय

शरीर को इच्छाप और तापमानयत्र २६, नाडी ३२, श्वास
प्रश्वास ३४, जिह्वा ३६, वेदना (रुद) ३७, घम ३८, पेशाब ३९,
साधारण परीक्षा ४१

पचम अध्याय

हामियोपैथिक औषधि सम्बन्धी नियमावलि ४३, प्रधान प्रधान
औषधियों की तालिका ४८ आयुश्चक्राय २४ औषधियों के नाम
५०, खगाने का औषधि ५०

(२)

द्वि अध्याय.

साधारण रोग

(क) रक्त विकार के रोग

चेन्नक ५१, चिकि-पोक्स ६१ टाका ६५, मीनिलस ६८, पुग ७६
विसप ८७, सान्निपातिक विकार ज्वर ८६ आतिसारिक विकार
ज्वर १०४, सरिराम ज्वर १२६, स्वल्पविराम ज्वर १४५, सामान्य
ज्वर १५२, हैजा (कालेरा १५४, डिपथारिया १३८

सप्तम अध्याय

साधारण रोग समूह [ष] घातुगत रोग समूह ।

तटण घात १७२, पुरातन घात रोग १७७ कमर में घात १८०
सापेटिका १८२, गदन कडी पडजाना १८३ गडमाला १८३, क्षय
बाधवा यक्ष्मा १८८ बहुमूत्र १०४ शोत १६७, रक्ताल्पता २०३

अष्टम अध्याय

मानसिक रोग समूह

भय २०५ शोकदुःख २०७, क्रोध २०८, उन्मत्तता २१०

नवम अध्याय

वायु विधान के रोग

मलिनिक प्रदाह २१४, स-यास २१७, तापाघात २२२, पक्षाघात
२२३, मूर्च्छा २२६ जगतकु २२८, धनुषकार २३१, मगाराग २३४
मूलागतवायु २३७ शिर पीडा २३६, सिरधूमना २५०, अनिद्रा २५३,
ब ल उडजाना २५५

दशम अध्याय

चतु राग समूह (साधों की बीमारियाँ)

असुखाद २७, मज्जति [गुहेती] २६१, दृष्टिहीनता २६२

एकादश अध्याय

कर्त रोग समूह

कान से रुई २६, कान से मयाद गिरना २६७ बहुरागन २६८
कर्मनाद २७२ कर्ममूलनाद २७४

द्वादश अध्याय

नामा रोग समूह

नाक बहना ३१ दुग्गता लुब्धक २६१ नामाशन २६२ नाक से
गून पिकना २६५ नामा रोग २६८

त्रयोदश अध्याय

हृत् रोग समूह

हृत्कम २२ हृत्विच्छेदो वाप २६६

चतुर्दश अध्याय

काम रोग समूह

हृत्कम २२३ हृत्कम ३०१ हृत्कम ३०२ हृत्कम
३०३ हृत्कम ३०४ हृत्कम ३०५ हृत्कम ३०६ हृत्कम ३०७
हृत्कम ३०८ हृत्कम ३०९ हृत्कम ३१० हृत्कम ३११
हृत्कम ३१२ हृत्कम ३१३ हृत्कम ३१४ हृत्कम ३१५

पंद्रहवा अध्याय

मुख के भीतर के रोग

मुह का बुरा स्वाद ३५२, मुह में दुग्ध ३ ३, मुख चत ३५४
 मुखौप ३५७, मसूदों से खन गिरना ३५८ मसूद में फोडा ३५९
 ६ तशुख ३६१ गल का दद ३६६ गले में घाव ३६८

सोलहवा अध्याय

पाकाशय क रोग

अशुधा ३७० अस्वाभाविक क्षुधा ३७२, अनाण ३७४ छाती पर
 जलन होना ३८१, यमन ३८३, रक्त यमन ३८६, द्विचकी ३८८

सप्तदश अध्याय

पेट के रोग

शूल वेदना ३८९, यकृत प्रदाह ३९३, पुराना यकृत प्रदाह ३९५
 पालिया ३९७ उदरामय ४०२ रक्तमाशय ४० काडों का उपद्रव
 ४१३, काष्ठयस ४१७, अश[यवाभरि] ४२२ काच बाहर निकलना ४२५

अठारहवा अध्याय

जनन यन्त्र सम्बन्धीय पाडा ।

उपद्रव ४ ६ वद ४३३ प्रमेह ४३४, म्यप्रदोष ४३६

उनविंश अध्याय

मूत्र यन्त्र सम्बन्धीय रोग

शूलक प्रदाह ४४४ पगरी ४४८, मूत्राशय प्रदाह ४५१ रक्त
 ४५४ अशरित मूत्र धाव ४ ६

विंश अध्याय

सम राग समूह

मन्त्र ४५२, सुकला काज ४६० रतु ४६२, छात्र ४६३ विस्तरो
 टक ४६४ विद्रोहि ४६७ सन दा यय ४७० कुनय ४७३ विनाय
 ४७३, मन्म ४७५, टक ४७६ सुगधी ४७७, शिरोदद्रु ४७८

एकविंश अध्याय

सा राग समूह

अनु ४८० प्रथम रजा दर्शन में पिठन्य ४८१, मृग्याण्डु ४८३,
 सन्तरज ४८८, रज सुल ४९२ प्रचुर रजस्य ४९६ रमासा ५००,
 हवेतमदर ५०३, मन्मथरय ५०८ मन्मथरय के समय का नियम
 ५१२ गमायसा का पीठा ५१३, मुख में पाना भर माना और
 छाता में चलन ५१५, कोट्यय ५१६, उदरानय ५१८, सिर बंद और
 सिर घूमना ५२० गमायसा में दन्त हल ५२१, पशाक का दानन
 न रोह सकला ५२१, पैर फूलना ५२२, मन्मथ ५२३ प्रसव ५२९,
 कृति का गृह ५२६, प्रसव बदना ५३१, प्रसवतकाभय ५३३ प्रसव
 के अन्न में। पाकिसा ५३६ प्रसव के अन्न में रक्त दाय ५३७
 प्रसवतक बदना ५३६ पूर म गिरना ५५०, प्रसव के अन्न में
 मुख स्या ५६१, प्रसव के पाठ काटव ५५२ उदरानय ५६३,
 सनचर ५६३ स्त्री में दूध कमजाना ५६४, सन प्रदाइ ५६५ इद
 स्या ५६६, कृति का ज्वर ५६७

द्वविंश अध्याय

।सप्तविंश सा

होमियोपैथिक ।

चिकित्सातत्त्व ।

—००७०१००—

प्रथम अध्याय ।

होमियोपैथी ।

ईश्वर का सृष्टिमें जीवित होना प्रथम है और स्वास्थ्य ही जीवित का परम सुख है । स्वास्थ्य विगड़ जाने पर मनुष्य उसको फिर किन तरह प्राप्त कर सकता है और आजीवन आरोग्य रहकर किस प्रकार सुख पृथक् समय बितासका है यहाँ इस पुस्तकका मूल उद्देश्य है । दरदरमें कई रोग उपस्थित होनेपर जिनकी उन्हीं और आसानसे होमियोपैथिक द्वारा आराम होता है दूसरी किमी चिकित्सा प्रयत्नोमें नहीं होता । होमियोपैथिक चिकित्सामें प्रवृत्त होनेसे पहिले पाठकोंको यह जानना चाहिये कि होमियोपैथी क्या है ? इसलिये होमियोपैथी सम्बन्धीय कुछ मोटी मोटी बातें नीचे लिखने हैं ।

इतिहासिकीय सौषरस से अधिक हुए होंगे सन् १७२७
 ईसाके इसका महामा हैनामैनेन पहिले पहिले
 इस चिकित्सा प्रणालीको चलाया । हैनामैनेनके जन्म प्रथमसे
 पहिलेकी यूरोप तथा भारतवर्षके चिकित्सा शास्त्र मानुस-
 दादि में इसकी सत्यताकी कुछ मूलक दोष पडती है किन्तु
 इसका विज्ञान सम्मत उद्यमियों पर पहुँचाकर भवभाषा

हामियापैथी प्रणाली
प्रमाण्य चिकित्सा

क ऊपर प्रतिष्ठित है अर्थात् जब हमका
प्रत्यक्ष प्रमाण दायता है तो हमका मान्य
निक भयवा पूर्ण केवल कहसके है । यान

पूवक परामा द्वारा हमस ओ प्रत्यक्ष प्रमाण दाय यह है उनका
कहन बिना प्रकार नहीं दायता और यह चादिकयत
(अभिज्ञतापर) निभर है । हेर्गमिन्न इस चिकित्सा प्रणाली
का जिस समय निवाला या उर्मा समय उसका प्रकाशित
नहीं करदिया या करन कह परम भ उगका गुण रकया या ।
अन्त में परीक्षा प्रमाण आर पूर्ण अभिज्ञता (चादिकयत) स
निश्चय दायया वि इस इलाज भ भाराम दाय है तय उसन
हम मतका प्रकाशित किया । हम मत की सुगियाह इतनी
मउतून है वि जब तक इस का प्रमाण दकर इस छापूण
सावित न करद तय लव यह चिकित्सा प्रणाली यथा भाव
भरल रहगी ।

हामियापैथी प्रणाली
चिकित्सा

हामियापैथिक चिकित्सा लक्षणों क
प्रमाण्य हानी है । लक्षणों का उपस्थित स
रागका प्रकाश इसका मयाप राग और

काह नुहा चात्र नहीं है । हामियापैथिक दयाहयों क ओ - लक्षण
जिसउमक साधरी रागा की यत्नमान दशाक लक्षणों का मिलान
कल्पना चाहिय और फिर जिस दया क लक्षण रागी क
लक्षणों स विशय मिध उसी दया का देना चाहिय । जिस
म चाध क लक्षण रागा क लक्षणों भ विशय मिलत हों वही
दया विशय फायदा करता है । रागक चितन लक्षण हे यदि
यह मक दूर हागये ना समक्षला कि भाराम दायया ।

हामियापैथिक मत निगप्रकार प्रत्यक्ष प्रमाणोंक ऊपर
प्रतिष्ठित है उसी प्रकार हमकी चिकित्सा प्रणाली भा जस्य न

मरल १ एक समयम एकहा भाषण र गी का ज्ञानता
१ मतपर विना मित्रा हूँ एकहा २१ का ज्या बहुत बलव

समझा नामकाह बहुत मा ज्ञाया एक
साथ २१ पर मरुन करनमे यह स्पष्ट

नहा मालूम नामकाह कि किम २१ का का फल हुआ। प्रत्येक
आथाधका पर एक ३१ य ३१ का २१ का २१ का २१ का एक
साथ मिलानमे एक २१ का २१ का २१ का २१ का २१ का
पटुचाना है। कपल यहा वान नका २१ का २१ का २१ का २१ का
जाउ ता ३१ का २१ का २१ का २१ का २१ का २१ का २१ का
व्याका क्या जमर हूँ आर य २१ का २१ का २१ का २१ का
यह निश्चय करना भी फायत २१ का २१ का २१ का २१ का
का निकाहना ज्ञानमे २१ का २१ का २१ का २१ का २१ का
इसलिए नामयाप ३१ का २१ का २१ का २१ का २१ का
पा २१ का २१ का २१ का २१ का २१ का २१ का २१ का

नामयाप ३१ का २१ का २१ का २१ का २१ का २१ का
समझना ३१ का २१ का २१ का २१ का २१ का २१ का
२१ का २१ का २१ का २१ का २१ का २१ का २१ का

ना ३१ का २१ का २१ का २१ का २१ का २१ का २१ का
आथापका माया चाह थाता चाह उहुन है हामिय पैथा मे
दवाआका रागक साथामयान एक २१ का २१ का २१ का
पर यहमा कहना हागा कि इसमे मात्रा निस् कहतहे
उमका कुछ राह पारमाणना नही। निस् परिमाणमे औषधि
इतमे राग का आरामना एहा उमकी मात्राहै। यदि थाडा
मे थाप हा आथाप इतमे रागाका आराम हो तो बहुत सी
२१ का २१ का २१ का २१ का २१ का २१ का २१ का
मनमे २१ का २१ का २१ का २१ का २१ का २१ का २१ का

यह साधारण मात्रामें दवाओंका प्रयोग करते हैं । अतः
तदुपरस और परीक्षास उनका समझमें यह बात स्पष्ट है
अधिक मात्रामें बार बार औषधि देनेकी अपेक्षा दो-दो-दो
में औषधि देनेस अधिक फल होताहै । हेनमैनके मतमें
होमियोपैथिक चिकित्सक हुएहैं सब इस बात पर
करते आतेहैं ।

होमियोपैथिक मतस दवा कम मात्रामें देनेकी बात
कोर आशय अथवा अविश्वासका कारण नहीं है ।

पैथिक नियम नुसार किसी रोगांका होनेके कारण
रान्त हसस जैसा एन्हो उमाके मतमें

अल्पत प्रमाण की अपेक्षा और बड़े प्रमाण
रोगमें बड़ेका और बड़ेका ठु ठु प्रमाण

बढ़ जाती है । दवाकी मात्रा कम देने
मात्रा राग प्रसिद्ध करनेके कारण

तरह पर शरीरमें यदि किसी
र इतना दूर न हारा

आया। कारण यह है कि
पैथिक होजाताहै ।

रूप बतलानेके
अन्यथा

दोषाधिक
का दोष

पैथिक
एक

होमियोपैथिक
र राग क

ममवना
की दवा

की दवा

स
त
की
र
स

र दवा
द बात भी
ग होमियो
र राग क
ममवना
की दवा

का गुण विमप्रकार समझ सके हैं ।

हामियापैथी तनुपेते
विषाद नहीं है

हामियापैथी भाभय नहीं है ।
तनुपेते विषाद भी नहीं है । को
का तक नहीं हुए थी और आज हु

निय यह झूठ है यह नहीं सामना । मनुष्यता तनुपेता और
राज्य वचना बनता जाता है । हामियापैथिज औपधि से
हाना है यथा विश्वास न हान का कारण यह है कि
ता यथा हाना नहीं नहीं ।

किना किमी दान में पादक दिनोंमें पानी जमजात
इयम दान क राजान जय यह यान मुना तो हंसकर
दी और करने लग गि यथा कमी जाती नहीं मना । उ
वैद्य भादि विविधमक मण्टी में इयम दान क राज
मरुद पण्डित नवदून म है ।

हामियापैथिक क्याथा की वृत्तता
विषाद इत्यन्तय गी नही है

विश्वाम भयथा बनता क ऊपर
नहीं है । मानाही पादीका भवान तथा मण्डुत पाकय [वि
मुक्त भावात्रमा न निवृत्तनीहा] वादक वचनाहुभा
हानगुभ्य रागी आक रागस्यथापर पहादुमा हा याम
बने गय येत प्राद प्राकानमें उदरवयव पथी मय भी
मयन करमय रागस्य सुन्द हा पाथनई । तिनको हामिया
मनाक विदुतुत विषय म नहीं जाता उमकामी इधने प्राणम
देवा जगते प्राणत हानस्य उमका मविषय म हुत ज्ञान है विम
उमक प्राणम नहीं करना वादक भागम विश्वास बना दन

विश्वाम हामियापैथी नहीं है । यथाही हामियापैथी नहीं
का नहीं बरुई सुप्यवकाय हैरा बन मय्यायव मंथी हु

रागीका आराम होता है । यह सब जानते
 कि होमियोपैथी वल्य नरुवाधो कुछ
 नियम धारण करना उपरान्त उपरान्त नीचे है
 स्वच्छता का अतिव्यक्त ही रोग है, स्वच्छता ही स्वाभाविक
 अर्थ है । राग अनियम और अत्याचार का विषय कहें ।
 इसलिये रोग के समय जितने आमाविष भाग्य पर लक्षणक
 उतनी ही आराम होने में शायदा होता है । इसलिये रागा
 को भरी आहार, अन्तर, गुलाब आदि सुगंधि द्रव्य खांरनी
 मत में जड़ल फिरना, अहमन, व्याज इत्यादी बचूर धारि
 गरम मसालों में घबरावा चाहिए । वध्य माधारण तरह पर
 अल्प न खावने में ही दिया जाता है । किसी विशिष्टता
 शास्त्र की व्यवस्था अथवा उपद्रव नहीं है ।

होमियोपैथिक के विषय घात हमारा यों कहा जगत है
 कि जामो तुमारी शीशीकी सब क्या खाए टाकन हैं, देखे
 क्या होता है इसका बखरमें हम इतना ता खाकार करते हैं
 कि तीभरा हटा अथवा २०० राति की
 एक शीशी क्या खाने न तत्काल बोह
 तौम खराणन भी शीष मना है किन्तु उस
 में कुछ न कुछ किया होगा । यह धान विद्यान सम्मन है और इस
 श्रिय अकार करन लावक है, किन्तु यदि यह भी छोकार किया
 जावे कि उससे कुछ भी फल न हुआ तो यह घात भी
 होमियोपैथिक श्रिय ताराक का है कि निन्दा की ' होमिया
 पैथी का उद्देश्यही यह है कि क्या का अन्तर रागी क
 धरिपरही हो । इससे कुछ उपरान्त होने की संभावना
 नहीं रहती । रोगमें दृढका भार देहके सब यन्त्रों की उत्तजन
 शक्तिता घटजाती है, इसीलिये यह घोड़ीसी मायाकी भाषाध

मार आराम हानके बाद रागका भोगना कटजाता है। मीथयि का भोग पीछे भी भागना पड़ता है। होमिय त्रिकिन्मा में हमप्रकार का कुछ भोगना भी नहीं पड़त वप्रणा भी नहीं होती ।

नय और पुराने सब तरहक रागमें हामियोपैथिक नि
 और त्रिकिन्माओं में अच्छीहै । हैजे
 हानकोपयी होमियोपैथिक इलाज जो चमककार
 होत है।
 होताहै नय समार में उसकी कार
 रहीहै। हैज की तरह तदण और साधातिक राग
 कूमरा कार नहीं ह । हम भीयणा हैज की यदि कोई चि
 है तो हामियोपैथी ही है ।

हामियोपैथिक द्वायों में प्रतिपेयक मार आरो
 वानाही प्रकारकी शक्ति है । बहुत
 प्रतिपेयक । यथा मरी, नामाप्रकारके उपर, हैजा ।
 क मृचवात हानहा दया वहीजाये ता मनुषित होता
 बिलकुल जाता रहता है । मयया इखवा पड़जाता है । जग
 तरह ककक कूमरा इत्यादि संक्रामक राग वैज रह
 दिनोंमें एक एक मात्रा हामियोपैथिक आरधि मेधन करन
 सब मरीं अ बचा रहमना है ।

त्रिकिन्मा द्वायों नय पर कायमहै उ
 हामियोपैथिक सर्वदा जीत हाताहै । मैथयों चिदनि
 और त्रिकिं का शानकी वागमें उदा कर बह चि
 प्रणाली प्रणय द्वायममें पुनीन वैज रहाहै । वत्राकमें न
 एक कदम उ न गावमें भी एक हैमियोपैथिक चिकि

अपत्य मिलेगा। पहिले जो खोग होमियोपैथिके नामसे मुह फेरबेतेथे अब वही खोग होमियोपैथिक सिषाय दूसरा कार खोज नहीं करते। होमियोपैथी मत सच्चा और विद्वान की पक्षी पुनिवाद पर कायम है। इसके विषयमें ऐसी भाशा की जातीहै कि पाठेही दिनोंमें देशभगमें सबसे अच्छी चिकित्सा प्रदायी यही समझी जायेंगी।

॥ दूसरा श्रृङ्गाय ॥

स्वस्थ्यासम्यन्धी नियमावली ।

रोग होनेपर औपधि द्वारा उसको निवारण करनेकी अपेक्षा रोग न होनेदेना हा अच्छाहै। रोग हमलोगोंके पाप और अत्याचार तथा शारीरिक नियम पालनकी भूल तथा अज्ञानता का विषमय फलहै। सब माधारेणको स्वास्थ्य रक्षाने नियम जानना और उनफ अनुसार चलना उचित है। स्वास्थ्य रक्षाके नियम पालन करनेसे प्रायः ग्रीषण रोगोंके हापसे रक्षा मिलतीहै। शरारत भयल और तज युक्त होताहै तथा अज्ञान मृत्यु बहुधा नहीं होमकी। अतएव स्वस्थ रक्षाकी जो मोटा मोटी बातेंहैं इस अध्यायमें उहा सबको लिखतेहैं। पाश्चात्य

सभ्यताके साथ साथ हमारे देशमें रोगोंकी

संख्याभा बहुत बढ़गएहै। मनुष्योंकी आरिभ और

प्राकृतिक अस्वामे इतने सब रोग नहीं थे।

हम मरुपताफ अग्निमानसे नितने दूरे जाते

हैं उनमे ही तरह तरहके कठिन रोग हम

खोगोंमें प्रवेशकर हमारे सुख सम्यक को दूधर उरुक

भार आगम हानके धाद रोगका भोगता फज्जाता है परंतु औषधि का भोग पीछे भी भागता पडता है । होमियोपैथिक त्रिकिन्मा में इसप्रकार का कुछ भोगता भी नहीं पडता और येतगा भी नहीं होती ।

नय और पुरान सव तरहके रागमें होमियोपैथिक त्रिकिन्मा और त्रिकिन्माओं से अन्वी है । हेजे रागमें होमियोपैथिक इलाज जी अमत्कार दिख जाताह नय समार में उसकी कीर्ति फेज नहींह । हेजे की तरह तदण और साधातिक राग शायद कुमरा फार नहींह । इस भीषण हेजे की यदि कोई त्रिकिन्मा है तो होमियोपैथी ही है ।

होमियोपैथिक दवाइयों में प्रतिपक्ष भार अरुण्यकारी जानाही प्रकारकी शक्ति है । बहुतस राग यथा मदी, तानाप्रकारक उपर हेजा इत्यादि क अन्वगत हानका दवा द्दीजाये ता अनुचित होतही रोग निरुद्ध हो जाता रहता है । अथवा इच्छता पडजाता है । जब थारों तरह अन्व अमरा इत्यादि संशामक राग फेज रहें तो उन दिनोंमें एक एक मात्र होमियोपैथिक औषधि भेजन करन बहुत अर्थ नगो अ दवा रहस्यता है ।

त्रिकिन्मा कुनदाद नय पर काबजदे उन्नीकी अन्वदा जीन जानाहै । त्रिकिन्मा विरक्ति अन्वद और विरों का हानकी नानमें द्दा कर कह त्रिकिन्मा उन्नीकी अन्वद द्दा नये कुनदा के उन्नी है । नकाअने ता मात्र एक इन्वद हान नानमें भी एक है होमियोपैथिक त्रिकिन्माक

अवश्य मिलेगा। पहिले जो खोग होमियोपैथिके नामसे मुह
 फेरतेतेथे अब एही खोग होमियोपैथिक मिषाय दूमरा
 काइ इजाज नहीं करते। होमियोपैथी मत सच्चा और विद्वान
 की पक्षी बुनियाद पर बसाय है। इसके विषयमें एसी धान्ना
 की जातीहै कि पाठेही दिनोंमें देशभग्में सबसे अच्छे
 चिकित्सा प्रदायी एही समझी जायगी।

॥ दूमरा श्रद्धयाप ॥

स्वस्थ्यामस्वन्धी नियमावली ।

रोग हानेपर औषधि द्वारा उमका नियारण करनेकी
 अपेक्षा राग न होनेकेना हा अच्छाहै। रोग हमलोगोंके पाप
 और अत्याचार तथा शारीरिक नियम पाछनकी भूख तथा
 अशक्तता का विषयमें फलहै। सब साधारणको स्वास्थ्य रक्षाके
 नियम जानना और उनका अनुसार चलना उचित है। स्वास्थ्य
 रक्षाके नियम पालन करनेसे प्रायः भीषण रोगोंके हाथसे
 रक्षा मिलतीहै। शरीर सबल और तज युक्त हाताहै तथा
 अज्ञान शत्रु बहुत नही हासकी। अतएव स्वस्थ रक्षाकी जो
 मोटा मोटी बातेंहैं हम अध्यायमें उहा सबको लिखतेहैं। पाश्चात्य

सभ्यताके साथसाथ हमारे देशमें रोगोंकी
 संख्या भी
 बढ़ती गयी
 प्राकृतिक अवस्थामें रहने सब रोग नहीं थे।
 हम सभ्यताके अभिमानसे नितने फूले जाते
 हैं उनसे ही तरह तरहके कठिन रोग हम
 छोड़ते प्रवेशकर हमारे सुख सम्पद को ही नष्ट कर डरते

और आराम हानके बाद रोगका भोगतो कटुजाता है परंतु औषधि का भाग पीछे भी भागता पडता है। होमियोपैथिक चिकित्सा में इसप्रकार का कुछ भोगना भी नहीं पडता और येत्रगा भी नहीं होती ।

नय और पुरान नय तरहक रागमें होमियोपैथिक चिकित्सा

होमियोपैथिक

होमियोपैथिक

और चिकित्साओं से अच्छी है । हेजे रागमें

होमियोपैथिक इलाज का अग्रकार दिख

जाता है नय समार में उमकी कीर्ति फल

पती है । हेजे की तरह तठण और साधानिक रोग शायद

हमरा बाद नहीं ह । इस भीषण हेजे की यदि कोई चिकित्सा

है तो होमियोपैथी ही है ।

होमियोपैथिक द्धार्यों में प्रतिपक्ष आर अग्रकारों

होमियोपैथिक

दानाही प्रकारकी शक्ति हैं । बहुतस राग

यथा नहीं, सामान्यकारक उपर हेजा इत्यादि

क अचरान हानहा दया द्दीप्रापै ना अनुचित हानही राग

विलुप्त जाता रहता है । अथवा हानका पडजाता है । उन चारों

नरक ककक कमरा इत्यादि अकामक रोग पैड रहें उत

दिनोंमें एक एक मात्र होमियोपैथिक औषधि सेवन करन से इन

अव रोगों से बचा रहसता है ।

होमियोपैथिक

होमियोपैथिक

त्रिमूर्ती द्धनवान नय पर क समदे उनीकी

अर्थवा जीव दाने है । मैचरों विरल कलाप

और विरोंका दानर्ष नाममें द्दरा कक बहु चिकित्सा

उत्तरी उरुण नयाममें दुर्नीय केउरही है । अकाममें ना कक

दक ककक ह न नाममें भी एक है नय पै नय चिकित्साक

अवश्य मिलेगा। पहिले जो रोग होमियोपैथिके नामसे मुह फेरकेतये अब वही खाग होमियोपैथिक सिधाय दूसरा कार इजाजत नहीं करने। होमियोपैथी मन सच्चा और विद्वान की पत्नी दुनियाद पर दायन है। इसके विषयमें ऐसी भाशा की जाती है कि पाँचही दिनोंमें देशान्तमें सबसे अच्छी चिकित्सा दयाइया पही समझी आवेगी।

॥ दूसरा अध्याय ॥

स्वस्थ्यासन्वन्धी नियमावली ।

रोग होनेपर औषधि द्वारा उनको निवारण करनेकी अपेक्षा राग न होनेदेना ही अच्छा है। रोग हमलोगोंके पाप और अन्याचार तथा शारीरिक नियम पालनकी भूल तथा मज्जना का विदमय सूत्र है। अब भाष्यरत्नकी व्याख्य रखाके नियम जानना और उनका अनुसार चलना उचित है। व्याख्य रखाके नियम पालन करनेमें श्रेष्ठ। शीघ्र रोगोंके हाथम रक्षा मिलती है। शरीर स्वस्थ और तब सुख होता है तथा अस्वास्थ्य दूर्यु दूर्यु नहीं होसकता। अतएव व्यवस्था रक्षाही आ मोटा मोटी बनें इस अन्वयमें उहा सबको लिखत है। पाश्चात्य

सम्बन्धे साथ साथ हमारे देशमें रोगोंकी

संख्यामा बहुत बढ़गई। अनुष्योकी आशिम और

माहृतिक व्यवस्थामें इतने सब रोग नहीं प।

हम मज्जनाके अविमानसे जिनमें पूछे जान

हैं उनमें ही ताह तरहके कठिन रोग हम

योगोंमें प्रवेष्टकर हमारे सुख संग्रह हो ईश्वर २५६

अवश्य मित्रगा । पहिले जो खोग होमियोपैथिके नामसे मुह फेरबेतये अब वही खोग होमियोपैथिक सिषाय दूमरा कार इच्छाज नहीं करते । होमियोपैथी मत सच्चा और विज्ञान की पक्षी सुनिसाद पर कायम है । इसके विषयमें एमो माशा की जातीहै कि पाडेही दिनोंमें देशागमें सबसे अच्छी चिकित्सा प्रशाखा वही समझी जायेगी ।

॥ दूमरा श्रध्गाय ॥

स्वस्थ्यासम्बन्धी नियमावली ।

रोग होनेपर औषधि द्वारा उसको नियारण करनेकी अपेक्षा राग न होनेकेना ही अच्छाहै । रोग हमलोगोंके पाप और अत्याचार तथा शारीरिक नियम पाञ्चनकी भूख तथा अशक्तता का विषमय फलहै । सर्व मापारणको स्वास्थ्य रखावे नियम जानना और उनका अनुसार चलना उचित है । स्वास्थ्य रक्षाके नियम पालन करनेसे प्रायः भीषण रोगोंके हाथसे रक्षा मिछतीहै । शरारत सबल और तज युक्त होताहै तथा अज्ञान मृत्यु पहुचा नहीं हासकी । अतएव स्वास्थ्य रक्षाकी आ मोटा मोटी बातेंहैं इस अध्यायमें उहा सबको लिखतहैं । पाश्चात्य

सम्पत्ताके साथ साथ हमारे देशमें रोगोंकी

वृद्धि काय

सम्बन्धित

इतने साथ

हम सशक्तक अभिमानसे जितने पूछे जाते

हैं उनमें ही तरह तरहके कठिन रोग हम

खोगोंसे प्रवेशकर हमारे सुख सम्पद को हँकर उरुक

आर आराम होनेके बाद रोगका भागता घटजाता है परंतु
अन्यथा का भाग पीछे भी भागता पडता है । होमियोपैथिक
चिकित्सा में हमेशाकाएक का कुछ भोगता भी नहीं पडता और
वेचता भी नहीं होती ।

मन और पुरान मन तरहके रागमें होमियोपैथिक चिकित्सा
और चिकित्साओं से अलगही है । हैस रागमें
होमियोपैथिक इच्छात जो असाधारण दिख
जाताहै मन समार में उसकी कीर्त फल
रखे । इस की तरह मरणा और सांघातिक राग सायद
बुलना चाह नहीं है । इस भोगता हत की यदि कोई चिकित्सा
है या होमियोपैथी ही है ।

होमियोपैथिक चिकित्सा में अतिवचन और असाधारणकारण
जाती प्रकाशकी शास्त्र है । बहुतसा राग
यना नहीं, सामान्यकारण और हैस इत्यादि
के अभाव में होना होना उदाहरणों में अचरित होना ही
बिनाबुद्ध होना होना है । असाधारण इच्छा पडजाता है । मन का
असाधारण असाधारण इच्छा असाधारण राग फल नहीं उत
होना उत उत असाधारण होना होना उत असाधारण असाधारण
असाधारण असाधारण होना होना है ।

असाधारण चिकित्सा मन मन असाधारण चिकित्सा
असाधारण असाधारण है । असाधारण चिकित्सा असाधारण
असाधारण असाधारण असाधारण असाधारण असाधारण
असाधारण असाधारण असाधारण असाधारण असाधारण
असाधारण असाधारण असाधारण असाधारण असाधारण

अथर्व मित्रगा । पहिले जो खोग होमिपैयिके नामसे मुह फेरबेनेचे अथ यही खोग हामियोपैयिक सिषाय दूमरा थार इबाज नहीं करने । होमियोपैयी मत सथा और विज्ञान की पक्षी बुनियाद पर थायम है । इनके विषयमें ऐसा आशा की जाती है कि पाठही दिनोंमें देशभरमें सधसे अच्छी चिह्नितमा प्रकाशा यहाँ समझी जायगी ।

॥ दूमरा श्रुगाय ॥

स्वस्थ्यामम्वन्धी नियमावली ।

राम होनेपर आयुषि द्वारा उसको नियारण करनेकी अवेसा रोग न होनेना ही अच्छा है । रोग हमलोगोंके पाप और अत्याचार तथा शारीरिक नियम पावनकी भूल तथा अनास्था का प्रियमय फल है । सर्व साधारणकी स्वास्थ्य रक्षाने नियम जानना और उनका अनुसार चलना उचित है । स्वास्थ्य रक्षाके नियम पालन करनेसे प्रायः भीषण रोगोंके हाथस रक्षा मिलती है । अरार सबल और तज युक्त होता है तथा अहाह शृंगु बहुधा नहीं हासकी । अतएव स्वस्थ रखाई जो मोटी मोटी माने हस अद्यायमें उग्रा सधको लिखत है । पाश्चात्य

सम्पनाके साथ साथ हमारे देशमें रोगोंकी

सधसामों दगुन बटगार है । मनुष्योंकी आरिष और

आरुतक अथवावे इतने सध रोग नहीं थे ।

हम सधसनाच अमिमानसे जितन दूरे जत

हैं उनसे ही तगद मरहके कठिन रोग हम

पोगोंसे अवेसाअर हमारे सुख सगद का हँ अवर २५५

और आराम होनेसे घाद रोगका भोगना बट जाता है परंतु औषधि का भोग पीछे भी भागना पड़ता है । होमियोपैथिक चिकित्सा में इसप्रकार का कुछ भोगना भी नहीं पड़ता और यत्रणा भी नहीं होती ।

नये और पुराने सब तरहके रोगमें होमियोपैथिक चिकित्सा और चिकित्साओं से अच्छी है । हैने रोगमें होमियोपैथिक इलाज जा चमत्कार दिख जाता है सब समार में उसकी कारि फैल रही है । हैजे की तरह तथा और साघातिक रोग शायद हमरा बर नहीं ह । इस भीषण हैजे की यदि कोई चिकित्सा है तो होमियोपैथी ही है ।

होमियोपैथिक दवाइयों में प्रतिरोधक बार अरोग्यकारी दानोही प्रकारकी शक्ति हैं । बहुतस रोग यथा सर्दी, मानाप्रकारक ज्वर हैजा इत्यादि क मूत्रवात हातहा दया दूरीजाये ता मरुगित होतही रोग बिलकुल जाता रहता है । भयथा हृदयका पहजाता है । जब चारों तरफ बचक बसरा इत्यादि संत्रामक रोग फैल रहेहों उन दिनोंमें एक एक मात्रा होमियोपैथिक औषधि भेजना करन स इन सब रोगों से बचा रहसजा है ।

होमियोपैथिक चिकित्सा
की शक्ति
जिसका बुनियाद मज पर काम है उर्षीकी सर्वदा जीत दानो है । मैकहों बिगलि बचाव और विमोको बातकी बातमें हटा कर बहु चिकित्सा प्रयासी हमरा दवाइयोंमें कुर्बोम केरगा है । बत्राकमें ता जाक एक छटम छान गाइमें भी एक होमियोपैथिक चिकित्सक

अप्यय मिश्रणा । पहिले जो खोग होमियोपैथिके नामसे मुह फेरबेनेये अब वही खोग होमियोपैथिक सिषाय दूसरा कार इखाज नहीं करने । होमियोपैथी मत सखा और विज्ञान की पक्षी दुनिवाद पर कायम है । इसके विषयमें ऐसी भाशा की जातीहै कि पोंडेही दिनोंमें देशभगमें सबसे अच्छी चिकित्सा प्रयाखी यहाँ समझी जायगी ।

॥ दूसरा श्रध्दाय ॥

स्वस्थ्यामम्बन्धी नियमावली ।

रोग होनेपर औषधि द्वारा उसकी निवारण करनेकी अपेक्षा रोग न होनेदेना ही अच्छाहै । रोग हमलोगोंके पाप और अत्याचार तथा शारारिक नियम पालनकी भूल तथा अशक्तता का विषमय फलहै । सब माधरणको स्वास्थ्य रभावे नियम जानना और उनक अनुसार चलना उचित है । स्वास्थ्य रक्षाके नियम पालन करनेस प्रायः मीषण रोगोंके हायसे रक्षा मिश्रतीहै । शरार सफल और तज युक्त होताहै तथा अहाज मृत्यु बहुधा नहीं हासकी । अतएव स्वस्थ रक्षाकी जो मोटीमोटी बातेंहैं इस अध्यायमें उहा सबको लिखतेहैं । पाध्याय

सभ्यताके साथसाथ हमारे देशमें रोगोंकी लक्षणा की

सवपामों बहुत बढ़गइहै । मनुष्योंकी आदिम और

प्राकृतिक अवस्थामें इतने सब रोग नहीं थे ।

हम सभ्यताक अभिमानसे जितने पूछे जाते

हैं उनमें ही ताह तरहके कठिन रोग हम

खोगोंमें प्रयोगकर हमारे सुख सभ्यद हो हैं नकर ररुह

भार आराम होनेके बाद रोगका भोगना फट्पाता है परंतु
 औषधि का भोग पीछे भी भागना पड़ता है। होमियोपैथिक
 चिकित्सा में इसप्रकार का कुछ भोगना भी नहीं पड़ता और
 यशसा भी नहीं होती ।

नये और पुराने सब तरहके रोगमें होमियोपैथिक चिकित्सा
 और चिकित्साओं से अच्छी है। हेज रोगमें
 हार्मियोपैथी
 योग देना ।
 होमियोपैथिक इलाज जो चमत्कार दिख
 जाता है नये समार में उसकी कार्ति कैल
 रहा है। हेज की तरह तड़प और साधानिक रोग शायद
 हमरा कार नहीं है। हम भीयथा हेज की यदि कोई चिकित्सा
 है तो हार्मियोपैथी ही है ।

हार्मियोपैथिक दवाइयों में प्रतिरोधक भार आरामकारी
 दानाही प्रकारकी दानि हैं। बहुतसे रोग
 यथा सर्दी, नानाप्रकारके ज्वर हेजा इत्यादि
 के सूत्रवान हातहा दवा दहीजाये तो अनृणित होनही रोग
 विशुद्ध ज्ञाना रहता है। अथवा हलका पड़जाता है। जब चारों
 तरहके अचक हमरा इत्यादि अनामक रोग पैदा रहें उत
 दिनोंमें एक एक माथा हार्मियोपैथिक दवाइयों सेवन करन से हम
 सब रोगों से बचा रहसता है ।

चिकित्सी दानियाद सब दर काबमदे उभीकी
 हार्मियोपैथी
 अथवा
 और चिकित्सी दानकी दानमें दवा कर बहु चिकित्सी
 प्रदर्शक अथवा दवाइयों में दुर्बल पैदा रह दे। अथवा से जो
 एक अथवा उ ट न दरे भी एक हार्मियोपैथिक चिकित्सी

अथर्व मिश्रणा । पहिले जो खोग होमियोपैथिके नामसे मुह
 फेरबेनेचे अथ वही खोग होमियोपैथिक सिषाय दूमरा
 कोर इबाज नही करने । होमियोपैथी मत सथा और विज्ञान
 की पद्धी युनियाद पर कायम है । इसके विषयमें ऐसी भाशा
 की जाती है कि पाठेही दिनोंमें देशभ्रममें सबसे अच्छी
 बिहित्वा वसाखी यही समझी जावेगी ।

॥ दूमरा श्रद्धाय ॥

स्वस्थ्यामन्वन्धी नियमावली ।

रोग होनेपर औषधि द्वारा उसको निवारण करनेकी
 धरेखा रोग न होनेदेना ही अच्छा है । रोग हमलोगोंके पाप
 और अत्याचार तथा शारीरिक नियम पाबनकी भूल तथा
 अशक्तता का विषय फल है । सर्व साधारणकी स्वास्थ्य रक्षाने
 नियम जानना और उनका अनुसार चलना उचित है । स्वास्थ्य
 रक्षाके नियम पालन करनेसे प्रायः मीथ्य रोगोंके हाथसे
 रक्षा मिलती है । शरीर सबल और तज युक्त होता है तथा
 अहाइ मृत्यु बहुत नही हासली । अतएव स्वस्थ रखाही जो
 मोटी मोटी बाने है इस अच्छापमें उहा सबको विछते है । पाश्चात्य

सभ्यताके साथ साथ हमारे देशमें रोगोंकी

संख्यामें बहुत बढगा है । मनुष्योंकी आरिभ और

प्राकृतिक अशक्तताएँ इतने सब रोग नहीं थे ।

हम सभ्यताके अविमानसे जितन दूरे जाते

हैं उतने ही तरह तरहके कठिन रोग हम

खोगोंमें अवेचकर हमारे सुख सभ्य हो हैं उर उर उर

और अराम होनेके बाद मोगना मोगना कट जाता है परंतु मोगना का मोग पीछे भी मोगना पड़ना है। होमियोपैथिक चिकित्सा में इसप्रकार का कुछ मोगना भी नहीं पड़ता और यंत्रणा भी नहीं होती ।

जब और पुराने मोग तरहक रोगमें होमियोपैथिक चिकित्सा

और चिकित्साओं से अच्छी है। ऐसे रोगमें

होमियोपैथिक

होमियोपैथिक इलाज का अत्यन्त दिग्

गोरेका ।

बाना है मोग अन्त में उमरी कीर्ति फैल

गयी है। इस की तरह तबका और साधारण रोग शायद

हमरा का है नहीं है। इस भीषण रोग की यदि कोई चिकित्सा

है तो होमियोपैथिक ही है ।

होमियोपैथिक दवाओं में प्रतिपक्ष और अरोग्यकारी

बानाही प्रकारकी दवा है । बहुतसे रोग

प्रतिपक्ष ।

यथा मरी, माताप्रकारके उपर हैजा इत्यादि

के मूत्रगत रोगका रोग दूरिजाये तो अच्युत होनही रोग

चिकित्सक जाना पड़ता है । अथवा हृदयका पड़ना है । जब थोड़े

तरहक अथवा अन्त में अन्त में अन्त में अन्त में अन्त में

दिनोंमें एक एक मात्र होमियोपैथिक दवाओं के प्रयोग करने से इन

रोगों का रोग रूपा है ।

होमियोपैथिक दवाओं में अन्त में अन्त में अन्त में अन्त में

अन्त में अन्त में अन्त में अन्त में अन्त में अन्त में

अन्त में अन्त में अन्त में अन्त में अन्त में अन्त में

अन्त में अन्त में अन्त में अन्त में अन्त में अन्त में

अन्त में अन्त में अन्त में अन्त में अन्त में अन्त में

रधन (पकाना) दूसरा चयन (चयाना)
 मात्रन करनेका उद्देश है कि गाइदुर बीज पचकर रक्त
 का साथ मिलनायै और शरीरके दैनिक अपचय (दिन में
 जो कुछ शरीर घटे अर्थात् जितनी शक्ति कम हा) को पूरा
 करे। जो भोजन नहीं पचता उसमें शरीरका अपचय पूर्ण
 होना तो दूर रहे और तरह तरह की व्याधिया उपस्थित हो
 जाती हैं। इसलिये हमपर पूरी दृष्टि रखनी चाहिये कि भोजन
 बनाने समय कोइ सामग्री कच्ची न रहनायै। बहुत परिमाण में
 धी गरम मसाला, प्याज इत्यादि प्रतिदिन भोजन करनेसे परि-
 पाकशक्ति कम होजाती है और कमा कमी उद्गमय भी
 होजाता है। भोजन करने समय घ्रास को धीरे धीरे अच्छी तरह
 चबाकर खाना चाहिये। खान का पदार्थ यदि अच्छी तरह
 चबाया न जायेगा तो वह मुहकी गरके साथ अच्छा तरह
 न मिलसकेगा और ठीक तरह से हضم भी न होगा।

हम लोगों का प्रधान भोजन पदार्थ दाढ़ राटी और
 चावल इत्यादि है। सुबह को दाढ़ राटी
 प्रधान हो।

चावल इत्यादि भोजन करना और रात
 का पूरा पराठे खाना ठीक है। बहुतों की राय है कि जिन
 जगहोंमें मेसूरिबा का अधिक जोर हाता है वहा रातको
 चावल खाना अनुचित है। चावल का अपेक्षा राटी अधिक
 पुष्टिकर हाती है। मयदाजी रोगी की अपेक्षा बाटे की
 रोगी अच्छी हाती है क्योंकि उसमें विचिन परिमाण में
 भुमी मिडीरहने के कारण दस्त माफ खाती है। रोगीना इस
 प्रकार की देखने पचने वाली राटी नहीं दनी चाहिये।

३३ ।

दान शाक भाजी तरकारा आदि हमारे
 भोजनके प्रधान उपकरण (अर्थात् साथ

उपर आन की चीजों) हैं। रागीको उरदकी दाल नहीं
 चाहिए। मूग मसूर तथा और मटर की दाल अच्छी
 हैं। दाल हम लोगों के लिये पुष्टिकर आद्य पदार्थ है क्योंकि
 इसमें मांस ज्ञानीय यथभारज पदार्थ और और चीजों
 अभाव अभाव है। उरद रागीकी हालत में दाल बना डीक
 ।

दालमें मांस उलम आता है। अन्नायह हमक मच्छी अन्ना
 नाई का आता है। मच्छी का भाग्य [रमा] मूग को बनाता
 मच्छी रागा क लिये छाट छाट [काह] और [मागूर] मच्छी
 अन्ना बना चाहिए बहुत बड़ा टिलकादार अन्ना चाटीदार
 नहीं हीमा मच्छी रागीक भाग्य नहीं बना चाहिए क्योंकि
 बहुत दूर में दूधम जाती है । *

हम लोगों क दामें मात्र कल मांस आता दिन प्रति दिन
 ना पड़े इसमें शक नहीं कि मांस एक उच्छा चीज है क्यों
 अन्न पचकर गाहा मूलाक में अन्ना नाकल पैदा करता है।
 उरदना उच्छा आन की चीज दालमें भी दा कारणों से हम
 अन्नका कल पैदा करता है। अन्न अन्नामा मांस का आलना।
 अन्न अन्न है कि बाज दूरे आ मांस अन्नमें में विकृत
 एक पदार्थ अन्न है ना है कि अन्न का विकृत नहीं होता।
 उच्छा में हम अन्न का मांस आन क अन्न से आ विकृत
 अन्न अन्न में आता है कि मूगों क पनी मांस आन क

* अन्न अन्नमें मांस अन्न है कि आ अन्न अन्न अन्न ही अन्न
 अन्न अन्न अन्न है अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न
 अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न
 अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न
 अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न
 अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न अन्न

यह कई तरह के कापड़ आती रहने के सबब से यह सब दुराहवा
 देखन में नहीं आतीं । दूमरा ना पचने वाला मांस तैयार करना
 है । हम लोगों का केसा पकीन है पकीन काहेको मूल बढ़ना
 चाहिये भास तैयार कराने के साथ घी, मसाला, प्याज घीर
 चीजें मा बमदान मिला दते हैं । क्याल करना चाहिये कि ऐसी
 ऐसी चीजें ऊरर हुआ पैदा करेगा ?

मकली एव
 हीन वर ।

तरकारियों में बहुतसी पुष्टिकर और
 उत्तम हैं । इन्हेगुट आद देशोंमें जहां ममिभ
 मास खानका रिवाज है वहां भी बेवख मात्र
 मानव वदल उसके साथ तरकारीवा मीषक

मांग खाना चाहिये । हम विषय पर घेर आदोलन चल रहा है ।

तरकारियों में आजू परयम बचा बेका, करपी कटहल
 के चीज तोरें लौची इत्यादि उत्तम तरकारिया हैं । कभी
 कभी कटपी तरकारी मा खानी चाहिये । जैसे काल परयम
 क पनों का इन्ग बहुत कापड़ेमद है । पनी शाक आती के
 पदार्थ बहुत माना उचित नहीं है । बिन्तु उनमें शाक अतीष
 पहाय रदनक कारण कभी कभी पनी शाकहि का भी हमार
 रीरका आकरकना पड़ती है । शाकहि विषय शाक कुपप्य
 है । कबोंने बहुतम कब पद सुखार और कापड़ेमद जान है ।

दवा खान बचा पाना, जामुन, अमूर केव अमर, गर
 का, कदा मरिपक कटहल बब इतदि । मरिपक मूळ आंवेर
 परम हउम शाक है । कटहल मीषक खानम लेका राग इत्या
 शाक है दूध आनुजन पान्य है । समारने दूधक सिवाक अर
 कद लेमा पहाय करे है जिसवही ज्ञान मनुष्य बहुत दिव
 तक उ विन रहसके । दूधक अंतर हमार रीरक मर

) विविक्ततर।

य उपकरण थड़ा अच्छी तरहसे मिचेहुए हैं। गायका प्राय हमार देशमें प्रचलितह। परन्तु भेसका दूधभी नहीं हाता। दुध इतना उपकारा और भावदपकीय पदार्थ है इसीलिये हमार देशमें गौका पूजनीय जानाहै। ब्राह्मण और खासी रागमें वफरिका दूध अच्छा होताहै। धरौ लिये माता के स्तन का दुग्ध नितना उपकारा होताहै सहज में पचजाता है उतना दूसरा नहीं होता। यदि माता दुध न मित्र सके तो गधैवा का अथवा गायका दूध नी मिलाकर दना चाहिये। कभी कभी एसा दया जाना है दूध के द्वारा बहुत से सकामक राग जगह जगह फैलते ह दूधस और भी उत्तम उत्तम पदार्थ तयार होते हैं या मफवत थी, स्वामा अच्छा है।

दो समय प्रघात आहार और दो समय कुछ जलपान करना ठाक है। जलपान क समय अधिक मिष्टान्न भाजन करना दुपनाय है। कुछ घाड स फल मूत्र, और अणुस्था नुमार पूरी कचौडी लुका हुए दाल जलपान मुरमुरा इत्यादि बहुत ठीक है। भोजन के समय निद्रिष्ट रहना उचित है। प्रतिदिन नियमित समय पर यथाचित आहार करने स मनुष्य प्राय बहुत सा पीडाओं क हाथ स बचा रहसक्ता है।

भाजन क उपरान्त दात और मुह अच्छातरह साफ करन चाहिये। दातों में खाइ हुई यदि काइ चान गगा रहजावे ता बह मुह में दुर्गंध पैदा करता है आर दातों का कमपोर करता ह। दातों का समुचित स चालन नह

जाने हैं। दानुन करना सबसे कायदा करता है विश्वकर दानुन
जिनके मनुष्य मिले पड़गये और महजहा उनसे र
गिरने लगता है उनको भायदक है।

[२] जल—

बहुतमे साफ जलके बिना जीवन रथा नहीं होसकी।

सबज जलक बभायसे हा भाजबाल हैजा

मादि बहुतमे सकामक रागोंका इनक

मादुभाय दासपडना है कहना हागा कि

धगा रग में काइ मन्ना तालाय ता हे हा नहीं

और दुगल मनपक जिनक नागाय है सब मूगप है। और डा

है वहमी इनक मैल हागये है कि उनक जल पानेवागैका

अधरा सो उपग्र करता है। यदि नडाक पन मि

सक ना यह सबम मन्ना है। यथापि यथा श्रुतुमें नदीका ज

मैला होजाता है किन्तु साफ करनस यह यन्तानोंस साफ

होजाता है। पश्चिम प्रदेशका तरफ कूर का पानी व्यवहार

हिपाजाता है। जिन तातायने खोग छान करनहो और

कपड धातेहो उसका जल कनी न पाना जाहये। जिन

तातायका जल पानक छानने मन्नाहा उनमें छान करना

कर हाडघोता शक्ति है। जिन जाट तातायका मन्ना

पाना न मिलसके यहा कूर का पान व्यवहार करना ब दिना।

यथा पाना हो मूत्र मीगकर काय बालू ने जैर होय
या साफ करनेका ब है। इस नियमपर ध्यान और
यथा न करनेम मन्नाजा है कि सर गेन मन्नाका जैर
क मन्ना है बहुत दुर्भे रागमन नई तन।

दूषित और मैला पानी हा हमारे दशमें रोग उत्पन्न करने का प्रधान कारण है। बंगाल के छोटे छोटे गाँवों में नलकें नरक कुण्डोंके तुल्य हैं और उनका जल मानो साक्षान्त रोग रूप है। जलक दाँतसहा प्रायः हैजा आदि सब भयानक रोग एकस्थान से दूसरे स्थान में पट्टान्त ह । सिर्फ पीने ही के लिये नहीं मात्रान बनाने और स्नान करने के लिये भी अत्यन्त जल्दी आवश्यकता है ।

रागों का किमा प्रकारकी उत्पत्ति आत्र नहीं पीनी चाहिये । रागदा हाजमें चाय काफ़ा शराब आदि विष्कुल वर्तितके । अरिफ़ तस्बाक़ पानामी अनुपपन्नह ।

३ । वायु—

प्रकृति तत्त्व अत्यन्त वायुमा प्रायः रक्षाके लिये परम अल्पक ह । अल्प वायु बड़ाहा सुखम चीजोंके पादा बना करनेमें हा हम पानामूल्य आत्र पानना पासलहै । वायु प्रा कि प्रायः प्रकृति स्वभाव वृक्षादक मनुष्य और मनुष्यों के शरीर में गन्दा हाजनाके लिए हममें अल्प वायु मिश्रण सबह रक्षणमें हाजना ह । आत्र घनी हा आह दग्नि कर्तव्य प्रकृति स्वभाव वायु मयन करना चाहिये । गराब प्रायः मनुष्य मनुष्य में मानने कामकरतहै हमशिये उनका अल्प वायुकी कमी नहीं करना । हमारे हासमें यह बहुत कम मिश्रण है कि वह कममें प्रायः बहुतम आत्मा मानेके लिये अल्प प्रकृति कट नहीं रहना । प्रकृति मनुष्य

निश्वास प्रश्वाम द्वारा प्राय १४ घनफुट वायु प्रतिघण्टामें प्रदूषण करता है । इसीसे एक कमरे या छाटरीमें बहुतस आदमियोंका

साना नहीं चाहिये । आटेके दिनोंमें मर्दान्के कारण बहुतस मनुष्य सिडकी श्रवान

मय संदृष्ट क सोने हैं यहा तक कि छोड़ छोटा छेद हातद्वै उसेभी बंद करखेते हैं और फिर पाउरस्यो महित उमीमें शयन करतेहैं । ऐस कमरेकी वायु थोड़ी देरमेंहा निश्वास प्रश्वाम द्वारा उदरक समान होजातीह । चाहिये कि ऐस मौकेपर छोटकी दा भामने माननेकी सिड दिया अग्रद्व शोलेद ।

रहनेका घर सुग्रा और साफ रहना चाहिये सानका मकान पीला रहनेम भार उममें माछ

रहनेमे वात माभा इत्यादि नाना प्रकार की कठिन पीडाये उपस्थित हानी

है । प्रात छात्र उठते ही मकान क सब दरवाज गिटादिवा खोल देना उचित है और फिर मकान साफ किया जवे । यदि क समय मकान की वायु श्वास द्वारा शरीर म निकले हुए दूषित माप से तथा उन्नत और दुग्ध मय हो जाती है त्रिममे स्वास्थ्यको अत्यन्त हानि पहुंचती है । इसबातपर ध्यान रखनाचाहिये कि प्रतिदिन स्वच्छ दवा घरके भीतर आनी जानीरहे ।

सबसे उन्न और वायुकी तरह स्वास्थ्य रक्षा लिये मूय का प्रयोग और उष्ण परमावरण है । त्रिम प्रकारमुपके

रना भार खलना यदा एक मात्रह । हमार पूयज आग
 रिधमा हानेय इसासे उनकी आयुमी बाध होनीधी ।
 तज काबक युयक कम उमरमें ही जिलामी होजातेहैं ।
 और परिधमसे डरने लगतहैं वम यहीं कारणहै कि उनको
 गोंमे कष्ट पाना पडताहै ।

५। परिधेय (कपडे पहिनना)

सभ्यताक अनुसार तरहतरह क कपडे पहन जातहैं
 म कपड
 अन खासिय
 सरीं गर्मी से शरीरकी रक्षा करनाही
 कपड पहननका प्रधान उद्देशहै । श्रुतु यदखने

साध ही कपडमी बदलन चाहिय । हम आगोंका देश प्रीधम
 धानहै अतएव सयदा गरम कपड पहननकी हमारे दसमें
 आयश्यकता नहीं है । सयदा गरम कपडसे शरीरका ढक
 मन म (यथा फलाखन माजे इत्यादि) शरीरकी सहन शालता
 प्रहाजनाहै भार जगमी सरीं लगतही हुकाम खासी
 खमें दद इत्यादि तरह तरहक राग उपाखित होने लग
 हैं ।

बखिष्ट और परिधमा मनुष्योंकी अगशा रोगी और बुखज
 मनुष्योंका तथा युवा पुढनोंकी अगशा वृद्ध और बाल
 षोंका गरम कपडकी अधिक आयश्यकता पडताहै किन्तु सरीं
 मयम मयदा फलाखनम शरीरका ढके रलना और मका
 के बिना उट्ट मय दग्द रलना अनुचितहै गरमाक दिनोंमें
 हुने कपडा और सरदाक दिनोंमें अगजानुसार गरम कपडा
 दिवना चाहिय ।

पहिनने के कपड़े

कपड़े पर न आकर

हमारे देशमें एक ऐसीधुरी रिवाजहै कि
उमका जिकर किये बिना हमसे यहा
रहा नहीं जाता । यहुतम मनुष्य जिस

समय कहीं जातहै कपड़ताके बारे शरीरके ऊपर अनापसनाप
कपड़े खादलतेहैं । गर्मीके दिनोंमें परमानमे तरहाकर शरीर और
कपड़ों में कैसी दुगंध आन लगतोहै और कैसे मैले हो जाते हैं
यह कुछ कहन की बात नहीं है । इतनी हैसियत तो होती
नहीं कि उनको ठीक समय पर धायास धुखयाते
रहें फिर इही दुर्गंधमय कपड़ोंको पहिनन पहिनते
शरीरमें पीडापे उपस्थितहो तो इसमें नद बात कवाहै । २ कपडा
बाह जैसा पहिना जाय उमका अच्छ रहना परम आव
दरकहै । पहिनके कपड़ोंका अच्छ जखसे धाकर और धूपमें
मुखाकर फिर पहनना चाहिये । मैलापन और अनाचार
हमारे देशमें प्रतिदिन घटनाही जाताहै ।

पहिननेके कपड़ोंकी तरह भादन विद्यानेके कपड़ोंकाभी साफ
रहना नितान आयाकीय हैं । हा तीन दिनयाद विद्यानेकी

एकपारख नरकहासन

आरभक है

खाकर इत्यादि भव पानीसे धोकर घूप

में मुखाखना चाहिये । धाखकोंके पहिनने

तथा मोदने विद्यानेके कपड़ोंकी भार भी

आधिक सफाई दरकारहै । यदि कपड़ोंमें मल मूत्रादि की
किसी प्रकार भा दुगंध आनी रहगी ता यद्येका बीमार
पडनाता समर्थहै ।

६ । स्नान

स्नान करना चाहिये हमारे देशमें यह किसीका सिखा

हमारे देशमें एक एम्प्युरी रिवाज है कि
उमहा जिहर किये बिना हमसे बहा
रहा नहीं जाता । यहूतम मनुष्य जिस

पहिनने क कपड

पहिनने क कपड

समय कहीं आते हैं मरुपताके मारे शरीरके ऊपर अनापसनाप
कपडे धाड़ते हैं । गरमोंक दिनोंमें पसोनेमे तरहाकर शरीर और
कपडों में कैसी दुग्ध भाने लगते हैं और कैसे मैले हो जाते हैं
यह कुछ कहन की बात नहा है । इतनी हैसियत तो हाती
नहीं कि उनको ठीक समय पर धायाम पुखयाते
रहें फिर इहां दुग्धमय कपडोंको पहिनन पहिनते
शरीरमें पोडाये उपस्थित हो तो इसमें नर घात कवा है । ७ कपडा
चाह जैसा पहिना जाय उमका मच्छ रहना परम भाव
एकह । पहिनके कपडोका सच्छ जखसे धाकर और धूपमें
सुखाकर फिर पहनना चाहये । मैलापन और अनाचार
हमारे देशमें प्रतिदिन बढनाही जाता है ।

पहिननेके कपडोंकी तरह भादन विज्ञानके कपडोंकी भी साफ
रहना नितान आवश्यक है । दू ताँन दिनयाद विज्ञानेकी

एकपख मच्छरकन

कारक है

धार इत्यादि मय पानीसे धाकर घूप
में सुखावना चाहिये । धावकोंक पहिनन
तथा ओढने विज्ञानेके कपडोका भार भी
अधिक मफार दरकार है । यदि कपडोंमें मल मूत्रादि की
किसी प्रकार भी दुग्ध भानी रहगी तो बखका बीमार
पडजाना समय है ।

६ । स्नान

स्नान करना चाहिये हमारे देशमें यह किसीका नितान

नहीं व समझनेकी आवश्यकता नहीं है । आन करनेसे शरीर स्वस्थ स्वच्छ और शांत रह जाता है । स्वस्थकी आवश्यकता सर्वात्मक जितन आरुह सव सुखजातहें शरीरका सुगन्धि दूर जाजाताहै और शांत सहन करनेका शक्ति बढ़जातीहै ।

नहीं मन्त्र व पादि में गाता छगाकर स्नान करना अति उत्तम जाताहै । प्रति दिन मानसका मरुद स्नान का भाव एक निश्चय समय जाता चाहिये । स्नान करनेमें पहिल भोजन अनुचितहै । रागी और दुखल मनुष्याको ठण्ड पानाम स्नान नहीं करना चाहिये । उनें वागारुह पाश्चिमर उपाय स्नानका गुणगुण पानाम नहाना चाहिये । स्नानकरवानाचढ़है । शारीरिक परिश्रमक उपरान्त जयन्त विनिश्चयल शक्ति मादूम नहा नहा मजाना चाहिये । जन्म समय समाने मादूम नहानेस मुक्तमान जाताहै स्नान करनेके बाद आरुह वादभाजन करना चाहिये स्नानकरन स पहिल उपायस तल लाना बहुत फायदा करताहै । विनाय कर त्रिमका काग मग (सार्सी) हा उमकाना परम आवश्यक है ।

उत्तर भागा को प्राय सर्वदागी मना खगजाती है अथवा भाषा हाउती है । उमका लला पाना हा व्यवहार करन चाहिये । उत्तरका इध म न का लला करनी चाहिये कि उमका पाना मग विशेष ।

स्नान करन हउर डेग में विनाय कर त्रिमको का विनाय कर है । पहिल उपायस समय उपायस मग उपायस

नियमावली व नोप चउनेप किन्तु घटे सोकहा अवहार है
 कि भाइफल शिखाके दोपते धनका य धन ड वा हाता जाताह
 और इसी कारण शारीरक नियमावलीकी आवश्यकता
 और भलाइकी मोरखे लागोंको विमुक्त देखतहै । देमा हाने
 से हो धर्मन् जन भादार पत्र पहिनेने धादिष प्यति
 कनम पदुमला कृपण हातहै ।

तीसरा अध्याय ।

रोगों की सुख्या ।

रोगों के विषय विषय प्रकार धोरधि उपासीहै उसी
 प्रकार उपासी सदा सुधुना उपहासीहै मन्दर रागीका
 भदा सुधुना व तिय दरवार दयातु दृश्य और परि
 धना पद म । निरुक्त करना कतिपय । रोगा वित्त महान
 में हा बहु महान, भडा विद्यामक आर पहिनेके करह
 मदि तद आर सुभर राग पहिष ।

रोगों का उपाय अथवा उपाय धीरे उपाय आर उपाय
 रोगा धीरे उपाय उपाय उपाय उपाय उपाय उपाय उपाय
 उपाय उपाय उपाय उपाय उपाय उपाय उपाय उपाय

रोगों की सुख्या ।

रोगों की सुख्या । रोगों की सुख्या । रोगों की सुख्या ।
 रोगों की सुख्या । रोगों की सुख्या । रोगों की सुख्या ।
 रोगों की सुख्या । रोगों की सुख्या । रोगों की सुख्या ।
 रोगों की सुख्या । रोगों की सुख्या । रोगों की सुख्या ।
 रोगों की सुख्या । रोगों की सुख्या । रोगों की सुख्या ।
 रोगों की सुख्या । रोगों की सुख्या । रोगों की सुख्या ।
 रोगों की सुख्या । रोगों की सुख्या । रोगों की सुख्या ।

महो। रोगीकी पाम किमी तरहकी गड़बड़ और घेफायदा बकयाद् नहीं होनेदेना चाहिये।

शय्या

रोगीकी शय्या कोमलहो। साफ सुपरा रहना सयक लिये ही अच्छा है विशय

कर रोगीक लिय ता मायश्यकहे ही। यदि रोगी बहुत दिनतक बीमार पडा रह तो उसक आदने विछानेक बप डोका राज धाकर तज धूपमें सुखाना चाहिये। साधारण तोरपर मा शय्यादि यम्रोका धूपमें सुखाना अच्छा है इसन शय्या कामल रहताहे और दुर्गंध मिटजाताहे। रागा क बपड राज बदलयादनाही अच्छा है, परन्तु यदि सब मनुष्य एना न करगयें तो वा जाडी बपड रखनस काम खरमनाहे। राज उर्हीमेंस फकना बदलयाद् और हुमरका भावुन और गरमपानाम धाडाल। बपड बहुमूल्य मरुत नहा परन्तु उनका खरछ रखना परम मायश्यकीय है। बेर पम्मा मय करमनह।

यह परिच्छेद बरगजाणुकाहे कि सफाई माना रागीका जीवनह।

शय्या

प्रतिदिन दानामय घर और शय्यादि भाड हाजना। गछान धूपमें सुखानेदेना और बपड

रुज धाजना परम मायश्यकहे। प्रतिदिन रागाका मुफ खुदवाना दानुन त्रिभि। कगना यदि भायश्यकता पड ता रगाकका मरुत खपडस यम्रोकादना और यदि रागी मरीच खरन हाजयगा ता मरुत और प्रयाचजान मायधानाम मय करना परमावश्यकीयै त्रिस रागी वा त्रिसना माय रकस इ यल बर रागी इनकादा प्रला छाडा क इ यल

तद्वत् पाश्चात् । नयेरोग । अथेति न पश्य कमा न दना
 चाहिये । रोगाकाल्ये पतलो धानका धोजे
 ५४ अच्छो हाताहै । यह अन्तः पचजाताहै ।
 सावुदाना बालो दूध इत्यादि बहुत देरतक रक्छरहनेमे
 सराव होजातहै इसलिये ५ । ६ घट्टेक रक्छरहनेकयद् फिर
 इनको न खिलावे । जिस जिस तरह रोगीका हालत बदलतो
 जाव उसी उमतरह उमक पध्वकोमो बदलत जाना
 चाहिये । यदि उदरामय होतो फल मूल और दूध न देना
 चाहिये । यदि कोष्ठ बद्धता होतो यह सब धाजे घोडा
 पाडा दाजामकाहै । यदि रोगीको प्यास लगतो उभम
 स्वच्छ अट जितना चाहिये दना उचितहै । रोगीको प्यास
 लागीरह और उसको टडागानी न दिवाजावे तो तबलाफके
 ऊर उस यह एक और तबलोफ होताहै । जिस समय
 रोगीको प्रहतिको अटकी आवश्यकताहै यदि उस समय
 इसको जल न दियाजाय तो यह बढी मूर्छताहै ।

रोगीको एकमात्र बहुतसा खानेका दना अनुचितहै ।
 बहुतसा परिभ्रम बचानकलिय और रातका रोगी धार धार
 उठकर खानको न मागे इसलिये उसे पेटमर कर सिलादेना
 बहुतही सुराहै । नियम समयपर घोडा घोडा रोगीको कई
 बार करक पश्य दना उचितहै । रागा यदि विन्बुलही
 बुबुल होजावे तो आवश्यकता से अनुसर एक घण्टा
 अथवा बाये घंटाक अंतरमे पश्य दियाजाताह । घोडा
 घोडा किन्तु धारधार यही रोगीका पश्य दनका नियमहै ।

रोगीके मजानमे इसके सामनही खानेकी धाजे रखदना
 अनुचित है । जिस मजानमे रोगी रहताहै उमकी हवा
 दूषित होनक कारण खानेकी धाजे बहुत अन्दर धिगइजा

महो। रोगीकी पास किसी तरहकी गहयड और घेफायदा
नकयाद् नहीं होनेदेना चाहिये।

राग्या

रोगीकी शय्या कामलहो। साफ सुधरा

रहना सबक लिये हो। अच्छा है विशय

कर रागाक लिये ता मायदयकडे हो। यदि रागी बहुत
दिनतक बीमार पडा रह तो उमक भोटन विछानेक कप
हाका राग धाकर नत्र धूममें सुधाना चाहिये। साधारण
मौसम भी शय्यादि वस्त्रोंका धूममें सुधाना अच्छा है
इसन शय्या कामल रहताहै और दुर्गंध मिटजानाहै।
रागी क कपड रात्र पदलयादनाही अच्छा है, परन्तु यदि
सब मनुष्य एना न करमके तो दा जाडी कपड रखनम
काम खत्मनाहै। रोज उर्हीमेंस एकका बदलयाद और
दुमरका साधु और गरमपानाना चाडाल। कपड बहुमूय
मरना नहा परन्तु उनका खरख रचना परम भावश्यकिय
है। एर एना सब कामलहै।

यद् परि ३३। कशात्राणुकाहै कि सफाई माना रागीका जायनहै।

अच्छा

प्रतिदिन दानोममय घर और शय्यादि भाड

डाटना विछान धूममें सुधारादेना और कप

रुन धाणलना परम भावश्यकहै। प्रतिदिन रागाका मु
बुलवाना दानम त्रिमी कराना यदि भावश्यकता पड ता
दगाहका गीर कपडम धूममें सुधाना और यदि रागी मनीक
एकर कपडका ना मर और प्रथ कडा मयव नाम
सक करनका परमवश्यकताहै त्रिभ रागी का त्रिभना मर
कपड उरना कप राग कपडकी उरना मर
है ३३

तदप्य पादा । नपरोग । छे कठिन पप्य कमा न दना
 चाहिये । रोगीको लपे पनलो खानेका घोषे
 ११४ अचो हातोहै । यह उल्दो पचनाताहै ।
 भाबूदाना बालो दूध इत्यादि बहुत देरतक रकथरहनेमे
 कराव होजातहै इसलिये ५ । ६ घट्टक रकथरहनेकबाद फिर
 इनको न सिलावे । जिस जिस तरह रोगीको हालत बन्ती
 साथ उसो उमतरह उमक पचकोनो बदलन जानो
 चाहिये । यदि उदरामय होतो फल मूल और दूध न देना
 चाहिय । यदि कोष्ठ बन्दना होतो यह सब चीजे थोडी
 थोडी दाजावलाहै । यदि रोगीको प्यास लगेतो उलम
 स्वच्छु जल जिनना चाहिये दना उचितहै । रोगीको प्यास
 लगारहे और उमको ठडागानी न दियाजाये तो तकलीफके
 लार उस यह एक और तकलीफ होतोहै । जिस समय
 रोगीको प्रकृतिको जल्दी भावश्यकताहै यदि उस समय
 इसको जल न दियाजाए तो यह बडी मूर्खताहै ।

रोगीको एकसाय बहुतसा खानेको देना अनुचितहै ।
 बहुतसा परिभ्रम बचानकेलिय और रातका रोगी धार धार
 उठकर खानको न मागे इसलिय उसे पेटमर कर सिलादेना
 बहुतहा बुराहै । नियत समयपर थोडा थोडा रोगीको कई
 बार करके पप्य दना उचितहै । रोगी यदि पिराबुलही
 बुझै होजावे तो भावश्यकता के अनुसार एक घण्टा
 कपवा भाये घंटाक अन्तरसे पप्य दियाजाताहै । "थोडा
 पादा किन्तु धारधार" वही रोगीको पप्य देनेका नियमहै ।

रोगीके मकानमे उसके सामनेही खानेकी चीजे रखना
 अनुचित है । जिस मकानमे रोगी रहताहै उमको हवा
 शुधित हानक कारण खानेकी चीजे बहुत उल्द धिगइना

मरुत पाडा (नपरोग) में कठिन पच्य वमा न देना
 चाहिए। रोगीको लिये पनटों खानेका धौंप
 १५ मच्यो हानी है। यह जन्तो पचजाता है।
 साइदाना शाली दूध इत्यादि बहुत देतक रक्खरहनमे
 कराव होजात है इसलिये १। ६ घंटेक रक्खेरहनेक बाद फिर
 इनको न खिलावे। जिस जिस तरह रोगीका हालत बनता
 जावे उसे उमतरह उमक पच्यकोभी बदलत जाना
 चाहिए। यदि उदरानय होतो फल मूत्र और दूध न देना
 चाहिए। यदि शोथ बढ़ना होतो यह सब चीजें थोड़ी
 थोड़ी होजासकत है। यदि रोगीको प्यास जगतो उत्तम
 ख्यप्य उन्न जित्रना चाहिये देना उचित है। रोगीको प्यास
 रोगीके और उसको दशागनी न दियाजावे तो तकलीफक
 ऊपर उस यह एक और तकलीफ होनी है। जिस समय
 रोगीको प्रकृतिको उलकी आवश्यक्ता है यदि उस समय
 इसको उन्न न दियाजाय तो यह बड़ी मूर्खता है।

रोगीको एकमात्र बहुतसा सनेको देना अनुचित है।
 बहुतसा परिश्रम बचानेकेलिये और रातका रोगी धार धार
 उठकर खानेको न भागे इसलिये उसे पेटभर का खिला देना
 बहुतहा बुरा है। निरत समयपर थोडा थोडा रोगीको कई
 बार करक पच्य देना उचित है। रागा यदि पित्तबुलही
 दुर्बल होजावे तो आवश्यक्ता के अनुसार एक घण्टा
 बादवा साथे घटाक अंतरमे पच्य दियाजाता है। “याश
 येन्दा हिनु धारवार” यही रोगीको पच्य देनेका नियम है।

रोगीके मरुतमें उसके सामनेही खानेकी चीजें रख देना
 अनुचित है। जिस मरुतमें रोगी रहना है उनकी हवा
 दूषित होनेके कारण खानेकी चीजें बहुत जल्द बिगडना

ममें बाधा हासन और उमकी रज्जाके विन्द वाम फाके उमका अस्तित्व करना अनुचित है । यदि बाह गान गाने म कहना भी हो ता बहुत रोगीमें सम्भार कहना चाहिये । रोगीने प्रमद और मनुष्य रानका अत्यन्त आनन्द । रोगीने नाम बहुर रोगी प्रगति अथ उमका मारी फाकल व विषयमें फगा सुना विलुप्त निन्द है । हमारे देशमें रोगी एका मूर्ख लोके कि जे फमी यद निमोक्त दमन जानी है तो दुष्ट वृत्त अष्टवृत्त यकेविना आर शोषण आन् १ घूँ गिराकर उमके विषयमें अती अनुन मत मत प्रकाशन दिय गिना नी रहनी ।

चौथा अध्याय—

रोगी परामा ।—

१ ।—रोगीका उच्चाप और तापमानान्त्र ।

जीव उन्नु जितने दिन तक जीवित रहना उन दिन तक उमके गरीरका उच्चाप एक प्रकार धरणीय समान भावमें ही रहना है । मनुष्य नेह इत्तार सबदाही उन्नत रहना है कारण देहमें अरुण उच्चाप उन्नत हाताहा रहना है । मात्रन विषदुप पशुध देहमें पहुँचते और मानके माथ विषदुप प्राणय धायुस १०५२५५ अथ हात रहते । यद्यपि यह शब्द क्रिया गीत नहीं पढ़नी परन्तु उसका फल अर्थात् गरमा पैदाइना सबदाही अनुभव क्रिया जामता है । अथर्व मानका शक्ति कम नहीं जाती नबतक वह स्वाभाविक गरमा भी - कम नहीं जाता । अित दिन आहार यद होजाता है उमादिन सब

मसी है । इसके मियाय ह्म घत ध्यानेरी रोज रोगाये सामने रहे तो उस में रोगी की अरुचि हो जाती है । जब पथ्य देनेका समय हो उसी समय रोगीक एक चारके ही खान योग्य लाकर उसके सामने रखते ।

अराम हानक समय यदि पथ्यका घाडा बहुत ग
जोय — पथ्यका घाडा जैसा कि चिकित्सक
राम साहसी अत्रोके इमालेय चाराम हानक समय
पथ्याये के विषय में साध्या
रहा गाहक है । अराम होने क समय पथ्य री
रुडा म यदि उरामय हो जाये अथवा पथ्य
जय उथ तो पथ्य जय रण्य अमता है ।
देन उरामय गाहों में विभाव कर उर उठे
गाहों रण्य अमता अरु । चिकित्सा जिना भूयदा उस
पथ्य उनका ध्यानको दना उरिगे है । आहारका भा कुत
पथ्यका पथ्यु भयिना जानक उरसाय परनाह पथ्य पना
पथ्य अजागाह नि अराम हाक उगायन नूर रण्य
रुडागाह, पथ्य समय पथ्य माद प्रनाय साय यदि पथ्य
कान निगागावा ना अणन होयक भूल चिकित्सक मारा
जैगा ।

द्विज प्रनाय अराम घाहके समय दोय दना ध्यानके
पथ्य जानके जमा प्रकाय गाहिक आ मय अरामय घना
कानक दना अरिगे है । रागाक प्रते कमा अम नाय अरामा प्राथ
पथ्य चिकित्साना घटिय । रागाक अरामय
पथ्यकाय अरामाक और साहिक विभाव परना
सावदनादे इमालिये अरामाक रोगीम प्रथ कर उमक विधा

यत्र काममें छायाजाताहै । तापमान यत्र रोग निषय करने और उसके साधानिक मापको निर्णय करनेमें बड़ी सहायता करताहै ।

तापमान यत्र

मुह षगल और गुह्य द्वारके भीतर ताप मान यत्र लगानेसे गरमी निर्णय कीजा

सकतीहै । साधारण तरहपर षगलसे ही गरमी देखतेहैं । रोगी यदि बहुतही दुबला हो जावे तो मुहमें लगाकर शरीरका गरमी देखतेहैं । यदि षगलमें पसीना हातो यमामे टर लगानेसे पहिले सूखे कपड़ेसे उसे अच्छा तरह पोंछ डालना चाहिये । साधारण तरहपर ५।६ मिनट तक रख नाहो ठीक हाताहै किन्तु विशेष आवश्यकता होनेपर आधे घंटे तक भी रखना पड़ताहै । तापमान (थर्मामेटर) का उत्तम होना जरूरहै । नहीं तो उस तापमान यत्रक ऊपर विश्वास नहीं किया जासकता ।

तापमान यत्र रोग और उसके शय फल निर्णय करने में तथा चिह्नित्सा करने में बड़ी सहा

यता करताहै ।

९९. ६ डिग्री के ऊपर

और २७.४ के नीचे यदि थमामेटर

का पारा होना कटना चाहिय कि उस मनुष्य के शरीर में कोई न काहरोग अवश्यहै । शरीरकी गरमी घटनेके साथ साथ नाडीकी घटकनभी घटजातीहै । नाडी

गहरे

और गरमी इन दोनोंमें विरुध सम्बन्ध

देखाजाताहै । यदि गरमी १ डिग्री बढ जावे

वर्षाकालमें

तो नाडी की घटकन १ मिनटमें १० घा

बढजायगा । जैसे यदि शरीरमें गरमी २० डिग्री होतो नाडी

यन्त्र काममें लायाजाताहै । तापमान यत्र रोग निषय करने और उसके साघातिक भावना निषय करनेमें बड़ी सहायता करताहै ।

तापमान यन्त्र

मुह बगल और गुह्य द्वारके भीतर तापमान यत्र लगानेसे गरमी निषय बीजा

सबतीहै । साधारण तरहपर बगलसे ही गरमी दधतेहैं । रोगी यदि बहुतही दुगला हो जाये तो मुहमें लगाकर शरीरका गरमी देखतेहैं । यदि बगलमें पसीना हातो धमाम टर लगानेसे पहिले सूख कपड़ेसे उसे मच्छी तरह पोंछ डालना चाहिये । साधारण तरहपर ५।६ मिनट तक रख नाहो ठीक हाताहै किन्तु विशेष आवश्यकता होनपर आधे घण्ट तक भी रखना पड़ताहै । तापमान (धमामटर) का उत्तम होना अच्छेहै । नहीं तो उस तापमान यन्त्रक ऊपर विश्वास नहीं किया जासकता ।

तापमान यत्र रोग और उसके शेष फल निषय करने में तथा चिकित्सा करने में बड़ी सहा

यागसूत्रक अनुसार

पता करताहै । ९० ६ डिग्री के ऊपर और २७ ४ के नीचे यदि धमामटर

का पाठ होता कटना चाहिये कि उस मनुष्य के शरीर में कोई न का रोग अवश्यहै । शरीरकी गरमी बढ़नेके साथ साथ नाडाकी धडकनभी बढ़जातीहै । भाड़ी

वाशकोर

और गरमी इन दोनोंमें विशेष सम्बन्ध देखीजाताहै । यदि गरमी १ डिग्री बढ़ जाये

वनापमानयन्त्र

तो नाडी की धडकन १ मिनटमें १० धार बढ़जायगा । उस यदि शरीरमें गरमी २० डिग्री होतो नाडी

का थडकन प्रात मिनट ६० वार रहेगा । ६६ डिग्री होतो ७० वार, १०० डिग्री होतो ८० वार और १०१ डिग्री होतो ९० वार इत्यादि ।

कठिन रोगोंमें साश्वतीसे घारधार तापमान यन्त्र लगाना चाहिये । साधारणत दोवार मुषह घाम थमामेटर लगाना ठाकहै । कठिन और पुरान रोगोंमें दिनमें चारवार साय घानों से थमामेटर लगाकर शरारका गरमी को ध्रम से एव वगड पर लिखलना चाहिये ।

२ । नाडी

प्रतिमद या दालमें (जय इत्पिण्ड समाचित होताहै) इत्पिण्डस रक्त यग पूदक टडर खाकर नाडियों मेंस जानिक समय नाडिया चल ताहै अथात् उसा समय नाडी स्पान्त होती है इत्पिण्ड की शक्ति अर धनियों के सना धन सनता दानों हा गाला स्पदन क प्रदान कारण है, अतएव ट्रापण्ड नाडी अथवा रक्त में हिमा प्रकारका पादवनन दानों नाडाका गात में मा परि यतन उपास्वत होन अगताहै ।

रोग निधय कलकलिय गडों परीणा अन्यत अयदय कहे । उरमें नाडा परीणा क पिता कुछ नहा हा सनता । तदुरव और मय्यासस नाडाका उच समुमें अताहै । अग स्वातमें घनताहै उसा अवह न डी की परीक्षा काजासकती है

साधारणतः क्लाह परही नाडी की परीक्षा किया कर
ते हैं, क्योंकि इस जगह नाडी देखने में बहुत सुभीता
रहता है । नाडी देखते समय बहुत सावधाना शर
धारता रखनी चाहिये, क्योंकि अचानक चिकित्सकवश
उपस्थित होन या और कुछ गड़बड़ होने से रोगीव हात्पण्डका
गति बढ जाता है और नाडी घेहिसाव घडकन लगती है ।
नाडी देखते समय ध्यानमें रखना चाहिये कि हाथ किसी
जगह बधा हुआ टिका हुआ या दबा हुआ न हो । ऐसा
होनेसे रक्तकी स्वाभाविक गति बद् होकर नाडीका असली
हाल मातुम न होगा । बहुत सावधानास क्लाह पर झूठ
और तीन भंगुलियोंसे दबाकर नाडी दखत हैं । नाडी
दखने समय नाडीकी प्रत्येक भयम्पाको ध्यानपूर्वक विचारना
चाहिये । नाडीकी गति अर्थात् प्रति मिनिट उसका घडकने
की सरूपा, घडकनेका नियम अर्थात् एकके बाद दूसरी
घडकन ठीक नियमित रूपसे आती है कि नहीं, उसकी
पूर्वता और बोलता, नाडी दवानसे दयी रहता है और
मातुम होता है कि नहीं, भंगुली रघन से मातुम आता है
मानो नाडी भंगुली को जोर न दटाये दता है । नाडी
अल्प सुद हो अर्थात् यमातुम आता इत्यादि जानो पर
पूरा ध्यान देना चाहिये ।

स्वस्थ शरीरमें अर्थात् जब शरीर में कोई रोग न हो नाडी
की गति समभाष, पूर्ण और धीर आती है भंगुली
का नीचे नाडी धीर २ चलता रहती है । कुछ अण्डका
होने पर धमकी आर्थर (घटा) कटिन
होनेके कारण नाडी भी कटिन होजाती
है । जुही २ अदरपामों में नाडी की

उने समय बाहरी हवा फेंफड़े के अन्दर जाती है, और निकालते समय यही हवा बाहर होजाती है । अथेड अवस्था के मनुष्यका सास प्रति मिनिट में दसबार आता जाता है । रोगका दालत में और बसुरत करते समय इसकी मर्यादा बढ़जाती है । इस विषय में अधिक ध्यान लावाही बामिराह खदान में दूसरी जगह दिया गया है ।

फेंफड़े के क्षयकारी रोग वा उसमें खोर पदार्थ मजबूत होने के कारण श्वास कष्ट उपस्थित होता है । इसके निश्चय डिफ्फरिणिया रोग वा तरह श्वास क रने में इन्निम सिही उपद्रव होता, टोन्सिल गठका बढ़जाना वा जानका सूजना और श्वास होना, हमेंको तरह श्वास मरुतों के मरुतों में घायले आना इत्यादि कारणों से फेंफड़े में वायु जाने में बाधा होती है अतएव श्वास कष्ट उत्पन्न होता है ।

फेंफड़े के साथ हृत्पिण्डका घनिष्ठ सम्बन्ध है । प्राय हृत्पिण्डको ढकने वाली वा फेंफड़े के चारों तरफ रहने वाली हिनामें जल सञ्चय होने से फेंफड़े व ऊपर बाँक पडन के कारण सास आने जाने में कष्ट देखाजाता है । बहुत तरह के हृद् रोगों में भी (दिलकी बीमारी) बेजा श्वास कष्ट होता है । रागीक भन्तिन समय श्वास लक्षण ग्यान पूर्वक देखने चाहिये । इस समय दुर्बलता और रक्तही कर्मीके कारण रोगी को स्वाभाविक श्वास क्रिया बन्द होनाही होता है । अतएव जीवन शक्ति बेग पूर्वक श्वास देने के लिये चेष्टा करती है । जब इस प्रकार का श्वास कष्ट उपस्थित होता है तब धीरे १ पैर की तरफ स रोगी का सब शरार टण्डा हान घर्गता है और अन्त

म फेंफड़ और हापण्डका प्रया वद शक्ति रागा का प्राण पम्बक उडजाता है ।

८ । जिह्वा

स्यस्य अवस्था म तिस प्रकार जिह्वा रसा रसादन का प्रधान यत्र है उसी प्रकार राग जिह्वा की भिन्न भिन्न की हालत में आंतरिक अनेक अवस्थाओं का निणय करन का उपाय भी है । रोग नाशपाय

में जिह्वा पराक्षा अत्यन्त आवश्यक है । प्यान पूवक दखना चाहिय कि नाभ सरस अथात् गाढी है या सूखी है साफ है या मैली स्वाभाविक रङ्ग है या अधिक लाल है स्थिर है या कम्पायमान है । यदि जीभ सूखी होना समझना चाहिय कि शरीर क रस निकलने में कमी है; जीभका ऐसा दान्त प्राय वामारा का शुष्क हालत में और ज्वर में दीप्त पडता है । जीभका सरस रहना अच्छा लक्षण है विशेषकर जीभ यदि पहिले सूखी और मैली हो और उपरान्त सरस होजाय तो अच्छा लक्षण समझना चाहिये । बहुत से स्फोट ज्वरों [फोड़ों के कारण ज्वर] में जीभका रङ्गत घटिसाय लाल होजाती है । विषम-र कर्त्तन उदरामय राग में जीभका यह लाल रङ्गत अग्र भाग और धाम पाम में दया जाता है । दैनिकिक विष्णु का प्रदाह या उलझना में सांस्तिक रागों में सब तरह के ज्वरों में और सब तरह नय और सांस्तिक रागों में जीभका मैलापन दाय पडता है । किसी का कर्त्त विषय रोग न जान पर भी सुबह साकर उठने समय जीभ का रङ्गदहन दाना है; विशेषकर उनका

जो कि तम्याहू पीते हैं । यदि कुछ जीम सफेद रङ्गन की होती वैसे कुछ घुरा लक्षण नहीं है, पीली रङ्गन होने से निगर का दोष समझा जाता है; काबीरङ्गन होने से जीवन शक्ति की कमी और रक्त की दूषित अवस्था समझनी चाहिये ।

जीमका स्पष्ट रहना आरोग्यता का लक्षण है । जीम के अप्रमाण या घास पास से धीरे २ जीम साफ होने लगे तो समझना चाहिये कि रोग अच्छे होने में अधिक देर नहीं है । जीम में यदि किसी प्रकार का मैलापन नहीं तो समझना चाहिये कि पेट में किसी प्रकार की गड़बड़ नहीं है । अति सांघातिक रोग में जीम होठ और हातों पर एक प्रकार का मोटा कठिन मैल जम जाता है । जिस प्रकार जीम दिन २ सुपने लगे और मैली होगी आप समझना चाहिये कि रोगी के पेट और स्नायुविधान सब एक साथ जुड़ते जाते हैं और साथ साथ जीवन की आत्मा भी विह्वल होती जाती है ।

५ । वेदना (दर्द)

वेदना शरीर के अंगों का गड़बड़ सूचित करने वाली है । यह रोग की दान्त और दग के लिए निम्न विषय करने में बहुत सहायता देती है । शरीर के अंगों में और शरीर के अंगों में अंगों में अंगों की वेदना मान्य होती है । वायु अंग (वायु के कारण) या स्नायुविधान (जर्मों में) हर एक अंग में अथा हुआ नहीं रहता; इनका चिह्न २ अंग अंगों की होती है और कमी होती है। वायु के कारण हर एक अंग

अत्यन्त असह्य होता है और फिर मगाने मिटवाना है, थोड़ी देर के बाद फिर और भी जोर म हाने लगता है । घायले के साथ दर्द, दावने से, मलने से सेंकन से, कम होता है । हाथ पैरों में घायले आने से दूध निस्त प्रकार होता है आक्षेपिक वेदना का अच्छा दृष्टान्त है । प्रदाह युक्त वेदना ही सब से प्रबल और ठरने वाला होता है । इससे शरीर की गरमी बढ़ जाती है और नाड़ी तप्त चलने लगती है । दर्द की जगह हिलाने, मुलाने से, दावने से या छूने से दर्द मालुम होता है, स्थिर रखने से चैन पड़ता है । फोड़ा इत्यादि में जो दर्द होता है वह इसका उत्तम दृष्टान्त है । किसी २ समय जलन के स्थान में दर्द न मालुम होकर कुछ मात्र से दूधरे स्थान में दर्द मालुम होता है । हम प्राय देखते हैं कि जिगर में प्रदाह होने से दाहिने कंधे में रग में प्रदाह होने में, घुटनों में, मूत्राधार में पथरी होने से, मूत्र छिद्र पर और दिलके रोग में बाये हाथ में दर्द होता है ।

६ । चर्म ।

आरोग्य रहने की हालत में शरीर की चर्म समान भाव से गर्म और चिक्नी रहती है । चर्म का कड़ा, सूखा रहना या जलन होना किसी भीतरि प्रदाह युक्त रोगका लक्षण है यदि ऐसे उष्ण के उपरांत और २ उपसर्ग कम होने के साथ पसना भी आता रहे तो अच्छा लक्षण नि समुद्र समप्रना चाहिये । प्रदाह युक्त ज्वर कम्पज्वर इत्यादि रोगों में पसीना आने से रोगी को बहुत कुछ आराम दानना है । यदि कोई उपसर्ग कम न होकर पसीना आये

तो समझना चाहिये कि राग कठिन है ।

किसी विशेष स्थान में पसीना आना अर्थात् समस्त शरीर में पसाने न आकर किसी विशेष स्थान में ही पसीना आते हों तो समझना चाहिये कि स्नायु विधान या जिस स्थान पर पसीने आते हों उसका किसी यन्त्र की गड़गड़ है । दुबलता के कारण थोड़ी सी मेहनत करने से ही पसीने आने लगते हैं । रात्रि के समय पसीने आने से केवल दुबलता नहीं समझनी चाहिये, पसीने आने से पहिले सर्दी या ज्वर मालूम होय तो यक्ष्माकास मनु मान की जासकती है ।

चर्म की रक्त भी रोग निर्णय करने में सहायता देती है । चर्मका नीला रंग हृदरोग [दिलकी बीमारी] पीलारंग जिगरकी बीमारी और मुह और अर्धों का टाल रंग प्रदाह श्वेत ज्वर के लक्षण हैं । बहुत से रोगों में जैसे चेचक खसरा बहुत से विकार और आंत्रिक ज्वरों में चर्मकी अवस्था की परीक्षा करना परम आवश्यक है । क्योंकि इन सब रोगों में चर्म के ऊपर एक प्रकार के फोड़े पुनसी निकल जाते हैं ।

७ । पेशाब ।

खूनका सब मैल पेशाब के साथ निकल जाता है । मूत्र यंत्रमें पेशाब उत्पन्न होकर मूत्राधार में धीरेधीरे संचित होने लगना है, जब पूर्ण हो जाता है तब पेशाब की दा उत मालुम होती है । पेशाब की उत्पत्ति बन्द होने से अर्थात् रक्तके भीतर मैल संचित होनेसे मति साधातिर रोग उत्पन्न होजाते हैं ॥

तो समझना चाहिये कि राग कठिन है।

किसी विशेष स्थान में पसना आना मयात् समस्त शरीर में पसाने में बाधक किसी विशेष स्थान में ही पसना आते हैं तो समझना चाहिये कि स्नायु विघ्न या जिस स्थान पर पसने आते हैं उसका किसी द्रव्य की गठबद्ध है। शुष्कता के कारण थोड़ी सी मेहनत करने से ही पसान आने लगते हैं। रात्रि के समय पसाने आने से बहुत दुबलता नहीं समझनी चाहिये पसान आने से पहिले सही या ज्वर माटूम हाथ तो यक्ष्माकास अनुमान की आवश्यकता है।

धर्म की दृष्टि में रोग निरन्तर करने में सहायता देनी है। घमघात माला रोग हृदरोग [दिलकी बीमारी] पित्तारोग शिगरकी बीमारी और मुह और आँखों का छाल रोग प्रसाद शुष्क ज्वर के लक्षण हैं। बहुत से रोगों में जैसे चेचक क्षमता बहुत से दिवार और आंत्रिक ज्वरों में घमघात मयस्ता का पतासा करना धर्म आवश्यक है क्योंकि इन सब रोगों में धर्म के ऊपर एक प्रकार के फोड पुनर्जी विकल आने हैं।

७। पेशाव ।

मूत्रका सब मूल पेशाव के साथ निष्कात जाता है। मूत्र शरीर में पेशाव उत्पन्न होकर मूत्राशय में धारणित मजिक्त होने लगता है, जब मूत्र का उत्पन्न होना है तब पेशाव की मात्रा कम हो जाती है। पेशाव की उत्पत्ति बाद होने से मयात् रक्तके अन्तर्गत मूल सन्निवृत्त होने से साधारण रोग उत्पन्न होजाते हैं।

स्वामाधिक पेशाव थोड़ा कुछ रगतदार और घदबूदार होता है । बहुत तेज घदबू होने से रोग समझना चाहिये । स्वामाधिक पेशाव को रघदेने से उसमें नीचे कुछ जमता नहीं है । बुढ़ापे में पेशाव कुछ गहरी रगत का और तेज घदबूदार होता है । जो लोग अधिक मेहनत करते हैं उनका पेशाव भी कुछ गहरी रगत का होता है । निरोग अग्रम्या में २५ घण्टे में प्रायः चार बार से लेकर ६ बार तक पेशाव होता है, पेशाव करते समय किसी प्रकार का दब नहीं होता और न जोर करना पड़ता है । स्वामाधिक पेशाव जलकी अपेक्षा कुछ मारी होता है अर्थात् जलके साथ तुलना करने से १००० और १०१५ का सम्बन्ध होता है अर्थात् यदि जलका गुरुत्व १००० है तो पेशाव का १०१५ । साधारणतः पेशाव के गुरुत्व १०१५ से १०२५ तक रहा करता है । जवान आदमी दिन रात में प्रायः ५० औंस पेशाव करता है ।

रोग की हालत में ऊपर लिखे हुए स्वामाधिक लक्षणों में बहुत अन्तर पड़जाता है । इस हालत में पेशाव की

निम्न २ शर्तों में पेशाव

की कमी होती

परीक्षा करने से रोग निर्णय करने

में बहुत सहायता मिलती है । पीलिया

अथवा अकृत में गड़बड़ होने से पेशाव

पीले रंगका होता है उधर में पेशाव थोड़ा और लाल रंग का होता है । मूत्र यन्त्र या मूत्राधार के रोग में पेशाव लून मिला हुआ और बिपॉचिवा अर्थात् गोच के समान कासा होता है । वायु और वायुगोला रोग में पेशाव पानी सा और बहुत होता है । इसके सिवाय किसी विद्वान् ध्यान में प्रदाह दान से कमी २ पेशाव

घोडा और निकलते समय बहुत दृढ़ और वेग के साथ हाना है। कभी बहुत कभी चार २ पेशाब का हाजत होना पेशाबके समय बहुत जलन हाना और कभी मग़ीर में हो चार बूद पेशाब होनेके समय दृढ़ होना इत्यादि देखा जाता है। किसी २ रोग में पेशाब के खानाविक गुदग्य में भा अन्तर पाया जाता है। शर्करा [शकरे निलाहुआ] बहुमूत्र रोगमें पेशाबका मुख्य अर्धांश भारोपन १०३० से १०७० तक होजाना है और थापुंगोला रोगमें १०-७ ही रहजाता है। [ध्यान रहे कि पेशाबका मुख्य पानीके मुख्यके साथ आपोचिक अर्धांश उमाके हिमांशमे गुमार कियोजाता है जैसाकि ऊपर लिखमाय है]

८ । माधारण परीक्षा

रोगों परीक्षा होमियेपेथिक चिकित्सा की बुनियाद है। रोगोंके रह में जो लक्षण प्रकाशित होते हैं अथवा अनुभवमें याते हैं वही रोग है। रोगके लक्षणोंके समान मिलान करके ही औषधों दीजानी चाहिये। सदा औषध लक्षणोंके अनुसार बहुत सावधानीमे तजवान करनी चाहिये।

प्रत्येक रोगके कुछ साधारण और कुछ विशय लक्षण होते हैं। शरीरका उत्थाप वृद्धि हाना ज्वरका साधारण लक्षण है क्योंकि ज्वर होनेसे ही सबके शरीरका गर्मी बढ़जाता है। ज्वरमें किसीको प्यास, किसीके दहमें भाग जलना किसीको नहीं लगना किसीको उल्टा होना, किसीके हाथपैर टूटना और भडकन होना और किसीके शिरमें दृढ़ होना इत्यादि प्रत्येक मनुष्य की धातुके अनुसार कुछ २ लक्षण प्रवर्त दृष्टजाते हैं। इन्हीं को विशय लक्षण कहते हैं। व्याय कान नाक इत्यादि सबके ही होते हैं, लकिन शानका चहरी श्यामक चहरेमें नहीं मन्ता। रोगोंका परीक्षा करने समय इन्हीं सब साधारण धार विशय लक्षण

णाको एक साथ न समझनस रोगकी प्रवृत्ति और मम स्मरणमें नहीं आसकत और उस रागका असल औषधि भा तजवीज नहीं बाजासकती ।

साधारण आर विशय लक्षणोंक सिवाय रागी दबते समय और दा लक्षणोंका पराक्षा करना चाहिये । पहिले रागाक दहक उपरा दासन धाल लक्षण दूसर वह लक्षण जा कि रागीका अपन दहमें मालूम हातेहो नाडाका गति जिगर और तिल्ला का घटना फेंफड़े वा हृत्पिण्डका दोष इत्यादि परीक्षा उपरा दासन धाल लक्षणोंका पराक्षा कहलानाहै । चिकित्सकका सबसे पहिले हदी सब लक्षणोंकी पराक्षा करना चाहिये । उपरान्त रोगी और रागाक फल फल सादृशियोंक कष्टदायक भीतर) लक्षणोंक अवयवमें प्रथम करना चाहिये यथा दह दबैनी भूषलगना या भाजनका अनिच्छा इत्यादि रागास प्रथम करत समय सावधाना स धीरर एकर यात पूछनी चाहिये । इस तरह सब लक्षणोंका मालूमकर औषधिक सय लक्षणोंके साथ मिलाकर ठाक सदश औषधि तजवीज करनी चाहिये । जा जितना जल्दी रोगका ठाक सदश औषधिया तजवीज कर सकता है वह उतनाही चतुर चिकित्सक समझा जाता है । लक्षण ही राग है । औषधि द्वारा यदि सय लक्षण दूर किये जासकें तो रागी भच्छा हागया । होमियोपैथिक लक्षणों के अनुसार चिकित्सा है रागके नामक अनुसार चिकित्सा नहीं है । केवल ज्वर होतसेही चिकित्सा शुरू कर दीजाय यह होमियोपैथा क अनुसार नहीं होसकता क्योंकि सबको एकसा ज्वर नहीं आता, जिसको जिस प्रकार के लक्षणों क साथ ज्वर आता है उसका उगदी लक्षणों क मिल्ती दूर दयाद बाजाती है ।

पुत्रा अध्याय ।

होमियोपैथिक औषधि सम्यन्धी नियमावली ।

होमियोपैथिक औषधि विश्वास पात्र और रसायन ज्ञाननेवाले दूरानदारने खरीदनी चाहिये । इस विषय में बहुतसे अतिशयित श्यवमार्या लोग छुपाकर तरह २ की छत्रिमता करते हैं । इस दगावाजीवे कारण होमियोपैथिक औषधियोंका कुछ फल नहीं दीखता । प्रायः नुबसानमी होजानाहै और हमका फल यह होताहै कि रोगीके प्राण जाते हैं और इलाज करनेवाले को बदनामी मिलतीहै ।

होमियोपैथिक औषधिका तीन प्रकारसे आभ्यन्तरिक अथवा भीतरी प्रयोग होताहै । पहिला टिचर वा मरु दूमरा गिनोप्यूल और पिन्पूल अथवा छोटी और बड़ी गाडी और तीसरी ट्राटप्रेटा वा चूर्ण ।

प्रथम,—टिचर वा अर्क । इस सतादिअ जड, पत्ते छाड और फल इत्यादि को पलकाहटमें भिगाकर तिमो विपदा किया द्वारा समली अर्क अथवा मरु टिचर तयार हाताहै । हम मरु टिचरकी १ दूद छेकर इसमें नौ दूद पलकाहल मिलाकर फास्ट इर्सांमल डारन्युटन [प्रथम दशाधिक काम] तयार हाताहै । और २९ दूद पल कोहन में १ दूद मरुटिचर मिलाकर फास्ट सग्टर्सांमल डारन्युटन [प्रथम दशाधिक काम] तयार हाताहै । इसी प्रथम दशाधिक वा दशतमिक कामकी १ दूद लहर उभमें ३ दूद मिलानेभ शिगोप दशाधिक और २६ दूद मिलानेभ दूमरा दशतमिक काम बनताहै । इसी प्रकार तैमरा चौला १०० २०० भांदि बहुत लहर काम [डारन्युटन] तयार हाताहै ।

गायका एक मास न समझनसे रोगकी प्रवृत्ति और मन समझमें नहीं आसकत भार उस गायका असली औषधि भी तजवीज नहीं की जासकती ।

साधारण भार गिनाच लक्षणोंके सिवाय रागी दक्षन समय और वा लक्षणोंकी परीक्षा करना चाहिये । पाश्चात्त रागीके दक्षन उपरी दीक्षत वाले लक्षण दूसरे वह लक्षण जा कि रागाका समय रहमें मादूम हागवा हागवाकी गाने त्रिगर और गिनी का पटना फेकड वा हागवाका दाय इत्यादि परीक्षा ऊपरी दायन वाले लक्षणकी परीक्षा कहलातीहै । चिकित्सकका सबसे पहिले इन्हीं सब लक्षणकी परीक्षा करना चाहिये । उपरान्त रोगी भार गायक पास वाठ मादमिवास कहदायक भीगरी लहा वाक विषयमें प्रश्न करना चाहिये यथा दू, बधैनी मूत्रलगना वा मात्रनका आनच्छा इत्यादि रागीमें प्रश्न करत समय सब बधानी से पीरर एकर बात पूछनी चाहिये । इस तरह सब लक्षणका मादूमकर औषधिक सब लक्षणोंके साथ मिलाकर ठीक सदस्य भाषित तजवीज करनी चाहिये । जा त्रिना अन्ती गायकी टाक सदस्य औषधिया तजवीज कर सचना है वह उनतारी अनुर चिकित्सक समझा जाना है । लक्षण ही राग है । औषधि हाग यदि सब लक्षण दूर हिय आसके ना रागी मच्छा हागवा । हागियायिक लक्षणों के अनुसार चिकित्सा है रागक मात्रक अनुसार चिकित्स नहीं है । कल्प भार इ नमरी चिकित्सा मुह कर हागवा वह इ मियायी के अनुसार नहीं हागवा क्ये हे कदक एहना उर नहीं आना त्रिना त्रिना उपर के लक्षणों के साथ उपर भाग है उमका उर लक्षणों के निदर्न दूर दूरे हीजती है ।

पुत्रा अध्याय ।

होमियोपैथिक औषधि सम्बन्धी नियमावली ।

होमियोपैथिक औषधि विश्वास पात्र और रसायन ज्ञानवेषाले दृष्टानदारने बरौदनी चाहिये। इस विषय में बहुतसे अरिष्टिन व्यवसायी लोग दुपाकर तरह २ की हथिनना करतेहैं । इस दयाबाजके कारण होमियोपैथिक औषधियाँछा कुछ छुट महौ दायता। प्रायः नुदसानमी होजाताहै और इसका फल यह होताहै कि रोगीके प्रायः जते हैं और एनाज करनेवाले को बदनामी मिलतीहै ।

होमियोपैथिक औषधिछा तीन प्रकारसे मन्मन्तरिक अर्थात् मीठरी प्रयोग होताहै । पहिला टिचर वा मर्क दूसरा पिल्लेप्लूत और पिल्लूत अर्थात् छोटी और बडी मोती और तीसरी ट्रांस्ट्रोरुन वा चूर्न ।

प्रथम,—टिचर वा अर्क । इस लकारिके अड, पसे

छाट और कठ इत्यादि को पेटकोहलने निगोबर हिमी विशेष चिदा द्वारा मसली मर्क अर्थात् महर टिचर तयार होजाहै । इस महर टिचरकी १ बूद लेकर इसमें मी दूद पलकहल मिलाकर फास्ट इसीमिल इन्ड्यूशन [प्रथम द्यनिक क्रम] तयार हाताहै । और २१ दूद पलकोहल में १ बूद महरटिचर मिलाकर फास्ट सेन्टसीमिल इन्ड्यूशन [प्रथम पततामिक क्रम] तयार होताहै। इसी प्रथम द्यनिक वा शततनिक क्रमकी १ बूद महर उभमें ४ बूद नितानेय द्वित्राय द्यनिक और २४ बूद नितानेय दूमरा शततनिक क्रम बनताहै । इसी प्रकार तीसरा चौथा १०० २०० अदि बहुत तरहके क्रम [इन्ड्यूशन] तयार होतहैं ।

णाका एक साथ न समझनम रोगकी प्रकृति और मम समझमें नहीं आसकत और उस रोगका असली औषधि भी तजवीज नहीं बाजामकती ।

साधारण और विशुद्ध लक्षणोंके सिवाय रागी देखते समय और दो लक्षणोंका पराक्षा करना चाहिये । पहिले रोगके दृढक उपरान्त दोखन घाल लक्षण दूसरे यह लक्षण जा कि रागाका अपन दृढमें मालूम हातही नाडाका गति जितर और जिल्दी का पटना फेंकड वा इतिपण्डका वाय इत्यादि परीक्षा उपरान्त दोखन घाले सस गोंकी परीक्षा कहलानाहै । चिकित्सकका सबसे पहिले इही सब लक्षणोंकी पराक्षा करना चाहिये । उपरान्त रागी और रागाके पास घाल मादमिर्वाने कष्टदायक भीतरी सहा गोंके विषयमें प्रश्न करना चाहिये यथा दह, बचैनी भूखलगना वा माजनका अनिच्छा इत्यादि रागासे प्रश्न करते समय सावधानता न घीरर एकरे बात पूछनी चाहिये । इस तरह सब लक्षणोंका मालूमकर औषधिक सब लक्षणोंके साथ मिलाकर ठाक सदृश औषधि तजवीज करनी चाहिये । जा जिनका जल्दी रागका ठाक सदृश औषधिया तजवीज कर सकता है यह उननाहा चतुर चिकित्सक समझा जाता है । लक्षण हा राग है । औषधि द्वारा यदि सब लक्षण दूर किये जासकें ता रागाभच्छा हागया । हामियोपैयिक लक्षणों के अनुसार चिकित्सा है रागके नामके अनुसार चिकित्सा नहीं है । कयल ज्वर हाजेमही चिकित्सा शुरू कर हाजाय यह हामियोपैयी के अनुसार नहीं होसकता कयोंकि सबको एकमा ज्वर नहीं आता जिसकी जिस प्रकार के लक्षणों के साथ ज्वर आता है उसका उही लक्षणों से मिलती हुई दवा देजाती है ।

ही दुमरा बमबा मौगंध देदन है । प्रत्यक्ष दुकान में सब द्यारों को रहतो हो नहीं हम लिये एक द्या पे बदल दुमरा द्या देन में भी नहीं चूकते । धनएव सबधो सापधाना में मच्छी तरह जाय परतात कर विद्यास पात्र दुकानदार म द्यारों परीदनों चाहिये । औगंध के द्या म बहुत म बग- दामियोपैधिक विक्रिसा को निगा होतो हुए हमने सुना है ।

दवाइयों का वक्स ।— प्रत्यक्ष गृहस्थ को एक

दयाका मता दुमा बकम भार एक पुनत्र मवण्य समनी चाहिये । उन वकम में । मयाय द्यारों व दुमरा कोर चात्र न रखा जाय । दयाक वकम में नाना गगाहर पना जगद रकम जहाकि प्रकाश वा मत्र गंध भादि कुछ न हो । एक दासी में दवार निहाल कर पौनन उन में छोट लगे देना चाहिये । एक गीली को द्या । मयाय डाट दुसरी दाया में न लपका चाहिये । कनावपनाम मवाह जन्द धराप हात्रनों है धार विर व पलायन नहीं करती ।

जावधी व्यवहार करने कनियम ।— छाटा

वा बहा लगी मयादा । उन के ऊपर एक देन म पाए जासका है । यदि मछ हो ता वह माक गना क म प मिताकर गिलागजना है । गौदन (दाम) एक बरिब क देना दुबडा बुर निगन के लिये क म में लाया जागा है । पर बहुत कम दाममें मिगन है । हम बाबधे दुबड वा बहा रिम्मा लगी है न नर दबहर मयापनाम लगी दरो बाके छोट रिम्माही मय दबाएया दू दासीशानों है । शिबरा बुरिबा जहागहा शबहर लगीमें छोट लया दनी बरिब विर लगे दुमरी दस रिक दू दानवेधा जद

हो दूसरे कमरा भौण्डि देते हैं । प्रत्येक दुकान में सब द्यार ताँ रहनी हो नहीं इस लिये एक द्यार के बदल दूसरा द्यार देने में भी नहीं चूकत । अतएव सबको सावधानी में अच्छी तरह जाँच परतान कर विश्वास पात्र दुकानदारों में द्यार खरीदना चाहिये । औषधों के द्यार में बहुत स भगर होमियोपैथिक चिकित्सा की निन्दा होना शुरू हमने सुनी है ।

दवाइयों का बक्स ।—प्रत्येक गृहस्थ को एक

दवाइयाँ भरा हुआ बक्स भारत एक पुस्तक बंधन्य रखना चाहिये । उस बक्स में सवाय दवाइयों के दूसरों को खरीदना न रखा जाय । द्यार के बक्स में ताला लगाकर एमो जगह रखने अर्थात् प्रयोग या गज मन्थ आदि कुछ न हो । एक शीशा में द्यार निकाल कर पौरन उम में डाल लेना चाहिये । एक शीशा की देवा भयना डाल दूसरी शीशा में न रगाना चाहिये । असावधानीसे दवाइ उतर कराय दवाइयों हैं और फिर ये फलदा नहीं करती ।

आपधी व्यरहा कर्ने कनियम ।—छाटा

या बड़ा गला मूसादा आग के ऊपर रख दन से तार आसनी है । यदि मछ हो ता वह साफ पाना के साथ मिश्रकर रिलाना जाता है । निरिन् (टॉम) एक बाव का टटा दुबोडा बूद गिगत के लिये कम में लाया जाता है । पर बहुत कम दानमें मिलता है । इस बावके दुबोडा का बड़ा हिस्सा रानीके मंतर हाथकर सावधानीसे गाने टटा बावके छोट हिस्साकी तरह द्यारों की बूद दवाइयों है । जिनकी बूदोंका अकलता शरकर शा मि छोट लेना देना चाहिये फिर यदि दूसरा दवाइयाँ बूद दालवडा ...

रत पड़े ता उस कायक दुकडका अच्छातरह धाला बिनी
तरहका पाला नली या आर काइ चीज खुद डालनक
काममें न लाना चाहिये कयाक यह फिर अच्छातरह नहीं
धाई जासकता । तिस घतनम न्वाइ तयार करे यह
बिठकुल भाउ हा और कमा तरहका गंध न हा । घर
तन पाच चीना पथर या मशका हाता ठाकई ।
दयाइ तयार करनक बाद उसका किमा कागजमे वा
पथरक घतनम रक्खना चाहिये । इस घतनम किमा
पथरवा कगारा या कायका रम्मचमें आयाइ डालकर
रागाका पिन्वाये फिर उस कगारा या चम्मच का पानास
अच्छातरह धाकर रक्खे । हरवक जुदी २ न्वाइक लिय
जुद २ पात्र जाना अताई । हाभियापायक भाषधि व्यवहारमें
हरतरहम सफाई बहुत जरूरीई ।

समय ।—याइ दावार भीषाउ मवन करनक लिय कहा
जाय ता प्रात काल और सन्ध्याका समय सबसे अच्छा
है । पुरान रोग में इन दो समय औरभी देनाहा बहुत है ।
तान बार भाषधि सेवन करना भाषदपकहो तो भाजन क
वा तीन घण्ट बाद दुपहर क समय एक मात्रा भाषधि
दाजनामकना ह । हैजा भादि नय और भाषातिक रागों में
राग का घनस्था क अनुमार भाषधि दाजाना है ।

मात्रा ।—याइल यह बात निश्चय करलना चाहिय कि
कतना डायल्यूशन वा कम देना हागा । हम में बडा हाशिय
यता का जरूरत है । मामूला नय रागों में मात्रा क
आर बीबहा कम जैम पाईला दूसरा तासरा छटा भा
चारहुवा दियाजाना है और पुराने रोगों में तीसवा । १००
और २०० अथवा हमस अधिक डायल्यूशन दियाजाना है

पूरी उमर के रोगी के लिये खादे जिम टायल्डूगन का हो एक बूद भक दिया जाता है । पाय उटाक मारु पाता में मिलाकर एक बार पिलाया जाव । उग्र कम हान क अनुसार एक बूद औषधि जल में मिलाकर उमरा दा बार या बार बार पीनेछो दे । छोटी गोली चार, बडा गोटी एक भार टाइट्रोजन या शूर्प एक घन मात्र मुह में डालकर खिलाद । घालकों क लिये हमकी भाषा और यहाँ क खिये इसका औषाद मात्रा होनी है । गाल पानी में मिलाकर भी मिलाए जाता है ।

मात्रा का दुबारा देना—जकरत के मासिक मौरराग की अवस्था क हिमाय से कमी १५, १५ मिनिटमें सभी दिन में दो तौनवार कमी हफते में एकही दफे द्वाह मिलाए जाता है । देडा वापडे रूप भादि कठिन रोगों में मात्र घण्ट या पन्द्रह मिनिट के अन्तर से द्वाह दीजानी है । पुराने रोगों में जितनी कम द्वा दीजायगी उतनाही अच्छा है । कायदा दीखने पर द्वाही मात्रा कम करने २ क्रमश बन्द करदना चाहिये ।

होमियोपैथिक मत क अनुसार दो या अधिक औषधि एक साथ मिलाकर देना बजिन है । जब एक औषधि के सब लक्षण रोग क साथ न मिलें तो दोनों औषधि पर्यापन्नम से दीजानी है । पर्यापन्नमसे औषधि जितना कम दीजायगा उतनाही अच्छा है ।

होमियोपैथिक सब द्वाहया बहुत सारु गंध दुग्ध और ऐसी जगह रखना चाहिये जहा धूप न लगे । कपूर प्रायः सब औषधियों का प्रतिपधक है, इस लिये जिस मकान में द्वाह रक्खीजाय उसमें कपूर न रखना

जातिसे । अथर्विदके समय भाग्य पाती में और भाग्य कांक्ष सिद्धी भगवत शम्भर के परतन में दया तवार का विवाही आदिसे विर विमा प्रयाग वा तत्र मसाग्य भगवत शम्भु गुरु गदाग श्याह या कगूर छावहार न कर । श्रीनगी गमिध से भी औपविना एत माराजाना है । दयाए ज्ञान से एक गम्भ गदिल या पील नक तमागु पीना या गुरु ज्ञाना निविद है । बाहरी प्रयाग करन के लिय विना विना दूधा मूत्र अथ काम में लाया जाता है इस लिय विर दूध मूत्र मय म कमी जागत कमी दिनीगष्ट या कमी मरुम तवार विवाहाना है । नो भाग साध तत्र अलिय वा सागियर का तत्र भगवत मङ्गल में एक भाग दया निग्य दूधा मसागी अथ विगत म यथाक्रम लोशन इत्येकमष्ट वा मरुम तवार हाता है ।

हमारा ज्ञान में धन वही दयाग्यो वा गुरु गमिध वा अथ ही है । इसमें त्रा २ अम लिय है प्रयाग वही ज्ञान में धन है । विगत २ भागों में त्रिन विगत २ कर्मों की प्रयागवचना हाता है इनका भागों क यथा न समय निम्न ।

प्रधान २ औपविगों की साधिका ।

| कोटि | भाग | प्रमाण | क्रम |
|-------|-----|--------------|------|
| काग्य | ४ | इदमविमवा | ३ |
| अथ नक | २ ३ | इदमवा | ३ |
| अथिद | ६ | नक तत्र | ६ |
| अथ नक | ६ | वाग ३ मयुगना | ६ |
| अथ नक | ६ | न ३ मयुगना | ६ |
| अथ नक | ६ | न ३ मयुगना | ६ |

| भौषधि | राम | भौषध | राम |
|----------------|-------|----------------|--------|
| एमिड फार्फारिक | ६ | ब्रायभोरिया | ६ ३० |
| एपिस | ६ | पेटादुम-एन्वम | ६ |
| भाषियम | ३ | धरादुम विारट | ६ |
| कमामिला | १२ | माफूरियम-कर | ६ ३० |
| कालि-अ रूड | ३ | माफूरियम-मख | ६ |
| कालियाश्चामिडम | ६ | माफूरियम-भाइपट | ६ |
| कन्चिडम् | ६ | मास्सम | ६ |
| कनिहाइडो | ६ | रमटस | ६ |
| कफिया | ३ | खेकेसिम | ६ |
| कपालहरिया—काचं | ६, ३० | खाइबोपीडियम् | ६ |
| काबो—थेडीटबलिस | ६, ३० | साइनिमिबा | ६ ३० |
| कातासिध | ६ | सल्फर | ६ ३० |
| कोबिम्सानिया | ६ | सिपिया | ६ |
| कैनाविम | ३ | सिना | ३, २०० |
| कैयारिम | ६ | सिबलि | ६ |
| कोकूलस | ३ | सिमिभिफिडुगा | ३ |
| कापना | ६ | सैबाहना | ३ |
| जेबसिमिनम् | ३ | स्पडिषा | ३ |
| डिडिटोलिस | ३ | स्टामोनियम | ६ |
| डोमेरा | ६ | स्टाफिसैप्रिया | ६ |
| इत्कामारा | ६ | हापर-सल | ६ |
| नकममोमबा | ६ ३० | हमामडिम | ३ |
| एन्सेगिला | ६ | हाइड्रास्टिस | ३ |
| पाइोफार्लम | ६ | हापोनायमस | ६ |
| फोसफोगम | ३ | हेडीबारम | ३ |
| थठडाना | ३ | | |

आयुर्वेदीय २४ औषधियों के नाम ।

| औषधि | क्रम | औषधि | क्रम |
|-------------------|------|-------------------|------|
| १ आभतिष | १ | १३ पाल्मेयिला | १ |
| २ आतिषा | २ | १४ फोस्फोरस | २ |
| ३ इतिषा | ३ | १५ बलुयाना | ३ |
| ४ गन्धाना | ४ | १६ प्रायमानिया | ४ |
| ५ कैमरिषा | ५ | १७ वशादुम | ५ |
| ६ कर्षिका | ६ | १८ मातृरिवम मूत्र | ६ |
| ७ कर्षिका-कार्पा | ७ | १९ रमन्थम | ७ |
| ८ कर्षिका-वशादुम | ८ | २० मूत्राकार | ८ |
| ९ कर्षिका | ९ | २१ मातृरिवमिया | ९ |
| १० कर्षिका-वशादुम | १० | २२ कर्षिका | १० |
| ११ कर्षिका | ११ | २३ मूत्रा | ११ |
| १२ कर्षिका-वशादुम | १२ | २४ कर्षिका-वशादुम | १२ |

लगानकी औषधि ।

| | |
|-----------|-----------|
| औषधि | औषधि |
| कर्षिका | कर्षिका |
| वशादुम | वशादुम |
| मूत्राकार | मूत्राकार |

कर्षिका-वशादुम-मूत्राकार

६ अध्याय ।

साधारण रोग — (क) रक्ताधिकारके रोग
चेचक ।

चेचक साधारण और मशामक रोग है, अर्थात् बहुधा इस रोगमें पीड़ितहोकर विशेष आदमी मरतह और लून्य एक दूसरेकेनी हाभाताहै। हमारे देशमें मशामक उत्तर पश्चिम प्रदेशमें यह रोग बढ़े आरसे फैलताहुमा देखा गयाह । रोगी के पहिने हुए कपड़े इत्यादि द्वारा यह रोग एक स्थान से दूसरे स्थान में बहुत दूर तक जा पहुंचता है । यह सामान्य रोग प्रत्यक्ष अथवा भार प्रत्यक्ष जाति के लोगों का हाता हुमा देखा गया है ।

लक्षण—इस रोगकी तीन लुही २ अवस्था है । (१)

अप्रकाशावस्था । चेचक का रोग लगाने के १०।१२ दिन बाद शरीर में रोगके अल्प दाग पड़ने हैं । (२) आशमलावस्था । इस समय सर्दी से या कपड़ों के अगच्छ सुगर आना है और शरीर शरीर की गर्मी १०४ डिग्री से १०६ डिग्री तक होजाती है इस रोगकी मुख्य चर बढ़ते हैं । चर के साधारण लक्षणों के साथ पेट में दर्द जा मित्त आना व चर हाथ उठती होता सब शरीर में विशेष चर किन्तु में और कमर में दर्द, निरमें दर चेहर की लाल रंग आर कनी २ इन्हे उरगत रक्त अनाशिव अल्प अंगे अर्थात् अनाशिव अनाशिव अनाशिव इन्हे रोग पड़ता है । बहुधा इस अवस्था में लुहे में दर्द आता है और लुहे में दर्द पड़ता है । (३) अंगवस्था अथवा

अधिकता बचना रोशनी अमल्य मास्य ज्ञान पीठ में बहुत
 रूढ़ कुम्भी बैठन का होय और मुद सुजा हा सराये
 क माय स्वामी पशाच करत समय रूढ़ मात की इच्छा
 रहत पर भी नींद न आना और आत्मा में जलनहो
 इत्यादि लक्षणों में यह रूढ़ रीजानी है । रोग क अन्त में
 कर्मी सुखकर जब सुख उचलता हा आर सुरसुराह्य हा
 ना बहदाना दनम सुजला मिश्रजानी है ।

मरुपूरियस ३, ६, ३० शक्ति—कुम्भी एकजाय

और रूमी मयस म ज्वर हा ना यह दया रीजानी है ।
 मुद न चार गिरना मक्ष में पाय श्याम में यद्वु मून क
 भाष उदगमय सूजा रूढ़ नरम और शिथिल जीम, जीम में
 दानों क दाग पन्नाय पमीन आना किन्तु तथ भी पुत्र
 येन मास्य न पदना ।

एपिम मेल ६, ३० शक्ति—वजन ज्वर और माधा

एव दिखन म रुढ़ मास्य होता समहा और गल में
 विमय (एक तरह का जहराया प्रदाह) की तरह खाद्य रोग
 और सुजन तथा उमक भाष अथवा शान्ति का ना जलन, जलन
 पैदा करन का रूढ़ गैमिष्ठ गाँठ और गल में मूल रूप पाय
 री मिश्रजानी और उखरी आना पशाच वन्द श्याम रुढ़
 सायही बेधेनी और लपकरी ॥

ध्रामैनिक ६, १२ ३०, शक्ति—अन्त

पुवजन और माधमे जलन पैदा करन वाला उपाय तथा
 अन्तय वैधेनी, नाही मत्र मुद और काँपनी रूढ़ हानिपट
 की दिख बहियाच री मशाल मूर्ति और जगादूर मुद
 मूत्र मूत्र अन्तय पान, बाप २ जलन पाह २ वरी

अधिकता बकना, रोशनी ममह्य मालूम होना, पीठ में बहुत दूर कुम्भी बैठने का हों चर्म और मुँह सुखा हो सरासे का मांस ब्यासी, पंशाथ करने समय दूर सामने की इच्छा रहने पर भी नीचे न आना और आँसों में जठरहा इत्यादि लक्षणों में यह क्या बीजानी है। रोग के अन्त में कुम्भी सुन्नकर जब सुन्न उचलता हो और सुरसुराहट हाँसी बहडाना दन्धे सुन्नला मिटजाती है।

मरक्यूरियस ३, ६, ३० शक्ति—कुम्भी पकजाय और इसी सबब से ज्वर हो तो यह क्या बीजानी है। मुँह से खार गिरना गंध में घाय, श्याम में बद्धू मूत्र का साथ उदरामय मूत्रा मूत्र गरम और शिथिल जीभ, जीभ में दाँतों के दाग पड़जाय, पसीना आना किन्तु तब भी सुन्न केन मांस न पड़ना।

एपिस डेल ६, ३० शक्ति—बहुत ज्वर और साधा रण हिचन से टह मालूम होना चमड़ा और गले में विमय (एक तरह का जहराँवा प्रदाह) की तरह खार रोग, और सुन्नन तथा उमक साथ बुरक मारने का सा ज्वर जठर पैदा करने का दूर टॉमिच गाँ और गले में मूत्रे मूत्र घाय जी मिचडामा और उचगी आना, पंशाथ दूर श्याम कर सायरी येधनी और बरधया ॥

श्रामैतिक ६, १२ ३०, शक्ति—अल्प सुन्नना और अल्पे ज्वर पैदा करने का उलाय तथा अल्प येधनी, बारी मत्र शुद्ध और चंपनी मूत्र हाँगाइ की चिन्ता बहडाना प्रीमडाल मूत्रा और चंगीदूर मूत्र शुद्ध-दूर अल्पे ज्वर कर दे लडिन घाँट। ३ वरी

पीना, श्वास कष्ट, श्मर उधर कषट लेना, मल्यन्त उदरामय, विकार के लक्षण ।

वेपटिशिया — मल्यन्त निरमे दद, जीमिचलाना, पीले उल्मी होना मल्यन्त कमजोरी और पीठ के नीचे की तरफ मल्यन्त दद, घमडे की अपेक्षा गले में बहुत पुम्बी निकलना, बदबूदार श्वास और बहुत खार गिरना, चहर के काबो रगत श्वास कष्ट और अत्यन्त स्नायविक आभिरता (येचैनी) आनाशय रोग की तरह मल्य यरीर के निकलने वाले मय पदार्थों में बदबू प्राय इम दवाकी नीचे की शक्ति व्यवहार में लाई जाता है ।

हापोसाडमस ॥ ३ , ॥ ३० ॥ शक्ति —

फुंसियों के निकलने में देर और उमी कारणसे स्नाय तदक उल्लेखना, गिठिने म उठनेकी चष्टा करना, खाद्य रग का घमषती हुए आले और पचक न मारना गले में मुकडन मादूम पडना, निगलने की शक्ति न रहना शत में येमात्रम दस्त निकलना, पेयाव शन्दहोना, शत चिष्टिकडाना ।

खेकेमिस ६, ३० शक्ति—सोद के बाद मय

बदबूको का दटना, बेहोना और गुनगुनाहट के साथ बचना आम मूर्खों हूँ बाल या बाली रगत की फटी हूँ जिममें के हून घटताहो, श्वास निकलने समय हर्गो में दद मात्रम हाना , पानी पीने में कष्ट निगलन समय कष्ट में हुए पुम्बान का सा दद गले की गाठों में पाउ पैरा हाशिल कारण के श्मदन किमी दालन वाले रग का पनप्रा मून गिरना ।

विद्येने क ऊपर किन्तना चाहिये । इसने लिय पुर्णत
 परमैद्रोण कार्बोसिक एसिड आद् बहुत अच्छे हैं । त्रिकि
 ल्यास खाग तथा रोगी की सेवा करने वाले लोगों का
 त्रिपना वाग रोगी क शरीर का हृद्य उतनी ही धार
 हानान न हाथ धान स्यात्तिय ।

था० गरम पात्रा में कार्बोसिक एसिड मिलाकर
 कमी २ सारा क शरार का पौछ बना चाहिये । जब
 पुष्पको कृष्णों तय कार्बोसिक एसिड मिठ हुए
 पाना न शरीर धायागनाय ता सुजना मिट जाती
 है और कम्बिया मूलभावों तय शरार में तउ मलकर
 गुनगुन पानी न बनान कराया जाय ता सुज उचय
 जाना है । कृष्णीया ककतान पर यदि बहुत कठो ता
 गरम पानी न मिणाकर गरम उनको मोड देन न तउ
 नार कम हाज ना है ।

तउ की अथवा जाला न यदि आरक प्रदाह हो
 ना मर न बार का टुकडा टाउन न बहुत धेन
 मादूम पटना न । पकरी वगत क मर रहन न रागा
 का पीठ आद् क्याना में साथ न जायाय हम त्रिपे
 हमारा ककत वदतवान कता स्यात्तिय ।

सकल क दान न पदत्राय इत्यतिथ बहुत शशियारी क
 मण्य वि कता कता इ नन है । बहुत बागक मुर न
 कुष्णों का ककतान क इत्यतिथ न न मवदा कार्बोसिक शरार
 न ककतान दान पदन का बहुत कम मरनायन न । यह
 ककतान ककतान कागव कि यदि कु मया मरुड क ऊपर न
 कम मरुड क न में इत्यतिथ हो न बहुत कम दान पदन ।
 ककतान क मरुड ककतान में कुष्णों दान में त्रिप क न

पदना लेना नहीं आ सकता है।

पद्य—दृष्ट्य रूप जैसे बालों, मयारो, रूप इत्यादि देना चाहिए। इनके कल्पित अतिनाचाइ पानी दिया जा सकता है। इस रटी कावल सिबड़ी यदि रोग मारान होने को मन्त्रिम मन्त्र्या में घंटेदिना असह्य है।

मन्त्रमण निवारण दून (मिटाना) इन मिटाने का मर से अच्छा उपाय यह है कि रोटी के छन्दे और दिठाने केरह मर उपायले अंद । यदि उपाय न आसके तो एके में गुरु मन्त्रर उरधो अच्छी तरह घो टाना चाहिये । जिस घरमें रांगे रहा हो उसके सिटछो करवाउ मर बाद कर मयक उपाये । मर उपाय कारे निक मन्त्रर उिडक और ईवरो पर मन्त्रो कपारे ।

चेचक के भेद—इस रोग में इस रोग का मयक एक मर मरी है तुरे २ मन्त्रों में समत चेचक, नाम यदि तुरे २ मन्त्रों से पर रोग पुकारा जाता है। इसको साधारण और मयक मन्त्रके अनुसार हटा मन्त्र बडी मन्त्र मोरों मन्त्र इत्यादि कहते हैं । मन्त्रेन नाम में विद्वित मन्त्र मन्त्र से इसके मन्त्रों को परमन करने में कहिनो पदती है मन्त्र मन्त्रों विद्वित्य ह मन्त्रर उा तुरे २ मन्त्र रिये दने हैं उरी का निबन्धन यह है ।

विकिपोक्त ।

यह रोग साधारण तो है परन्तु मन्त्ररिक्त मर है। उक्त रोग में चेचक का मन्त्र देना है परा मर कि चेचक का ही मन्त्र देना है किन्तु चेचक का मन्त्र

के काठे हुयके समान लाल रगतकी सी दीर्घ पड़तीहैं और फिर धीरे-२ बुल एक घंटोंमें हा उनके भीतर पानी इकट्ठा होजाताह। उन पुंसियोंमें प्रदाहके लक्षण बुल नहीं होत, शरीर पर गरम तेल या पाना पड़नेसे जिस प्रकार छट-२ फफाल पट जातहैं इसकी पुंसिया भी ठीक वैसेही हानी है। ३ म ५ त्रिक मीतर सब एक घर फूट जाताह अथवा योंही सुग जानीहैं। पुंसियों पर जा खुलत जमतहैं घेमी ४ या ५ दिनमें उचल जातहैं। घमडके गहर स्थानमें पुंसिया नहीं हानी इस लिय सिफ बुल दिन तक सामान्य लाल मा दाग रहताहै। चेचकी तरह गट कमी नहीं पडत। इस रोगकी पुंसिया सब एक साथ नहीं निकल आती इसलिये सब एक साथ सूखती भा नहीं। पुंसों निकलनेक समय रागीके शरीरमें खुपला चलताहै इसके सिवाय और कोई उपसग उपस्थित नहीं हाता।

यह रोग साधातिक नहीं है अतएव इसका भागी फल भी कमी बुल नहीं हाता। इसका चर प्राय साधारण हाताह, शरीर की गरमी शायदही कभा १०१ डिग्रेस ऊपर उठतीहै। सग्दी प्राय रहतीहै। इस रोगसे मृत्युका भय बहुतदा कम हाताहै।

निनिर्ना।—अथवा अच्छा सदायस्त और रोग आराम हाजानके बाद घाड दिन तक साथधानी से रहने क सिधाय किसी दूसर इलाज की आवश्यकता नहीं पडता। एक मात्र ध्यानकी औपधि रसटकभ है। यदि ज्वर अधिक दाघ पड तो एकनाइट दिया जासकाहै। पुंसिया निकलने क समय यदि खुजली बहुत होतो पापिस फायदा करताहै। अधिक शिर दद और गलेमें दद होतो घटाटना दसकतहै।

इ कुत्सियोंमें मवाद पड़जायतो मरकपुरियस या एटीमोना की भावश्यकता होसकतीहै ।

महकारी उपाय ।—रोगीका अद्वित हिगना झुलगा न हिय और हृत्का पथ्य दना चाहिये । पथ्यके लिये दूध कम भण्डाहै । शरारमें तल मलनम खुजगीको बहुत कुछ यदा हाताहै । यद्योकी बहुत कुछ सावधाना रचना हिय कि बहुत न खुजा डायें ।

टीका ।

बहुत दिनों स हमार देश में न मसूयाधान प्रथा अघान रुपय दह स अथक क बीज का लकर दूसरे दह में पाग करना प्रचलित था । यूराप में सय से पहिल सन् १८७७ ई० में कास्टम्टीनापिल नाम नगर में प्रचलित इ धार सन् १७२७ ई० में इङ्ग्लैण्ड देशमें इसका आरम्भ हुआ । सन् १८७२ ई० में हमार देशमें इस प्रथा के बदल न-मसूयाधान अघान गोबीज टाका इप्रति गपरमन्त्र में प्रचलित किया ।

गा-मसूयाधान या बीज टीका गाग का अथक से अथक गाग का अथक क बीज स उत्पन्न हुये मनुष्यके देह में बीज लकर दूमर दहमें प्रविष्ट कर केन को गोबीज टाका कहत हैं । मगतक अथक स रक्षा पानक लियेहा यह टाका टगाया जाताहै ।

इङ्ग्लैण्ड देशमें माहात्मा जनरल सवने पहिल लम्हो चलया था । सन् १७२६ ई० में ८ वर्षक लडक को सवने वाला गोबीज टाका लगाया गया । हा तीन महीन बाद उहा अथक क देह में अथक क बीज का प्रवेश का

एरोपा को १५ पाँ बिन्दु चेचक के छोड़ लक्षण प्रकाशित नहीं हुये । इनारे दग्गें गेबोड टोका प्रबोधित होगया है । गवनेट ने सर्व साधारण की स्थान रक्षा कलिये प्रत्येक घटक क टोका लपने का हानूत्र जासंकर दिना है ।

प्रतिषेवक प्रभाव—चिकित्सा सत्तार यह बात छप की सम्मति से निघय हा चुकी है कि गेबोड टोका लपने से चेचक का राग बहुत रोका जानाहै यदि किमी हो हो नी तो प्राय सरय नहीं रहता ।

डाक्टर मार्लेन ने २० वर्ष में १०० चेचक के रोगियों को देखकर अपनी सम्मति इस विषय में निम्न देखानुसार प्रकाशित का है —

वसन्त राग की प्रत्येक भेन्नी को
जुदी २ भेन्नी । सेंकडे पीठे न्यु सख्या ।

(१) । दिनको टाका नहीं लगा ३१

(२) । टोका लगाया गया किन्तु

टोके का कोरं चिह्न नहीं २३ १७

(३) । दिनको टोका लगाया गया उनमें

(क) दिनको १ टाके का दाग है ७७३

(ख) दिनको २ टाके क दाग है ४७०

(ग) दिनको ३ टाके के दाग हैं २९१

(घ) दिनको ४ टाके क दाग है ०११

इससे स्पष्ट मानून होगा है कि गेबोड टोका देनेसे चेचक रोग की न्यु सख्या बहुत कम होजाती है यहा तक कि प्राय नहीं के हो दरखत है । इसके सिवाय और ना देना मया है जिनका गप के टाक का दाग जिनका

अधिक शगाड़ी रहा उनको इस रोग से उतनाही कम रोग्य भव है ।

टीके का बीज—गाय की चेतक का बीज मयया उसी द्वारा मनुष्य का दह म उत्पन्न करा हुआ बीज लेकर टीका लगाया जाता है । गायीन द्वारा टीका लगाने में मनुष्य की दह में काह दूधित राग यथा उपद्रव [मातृशक] गयहमाया बहुत तरह क श्मशान आदि होन का भय नहीं रहता । यदि गायीन के बदले में मनुष्य बीज का व्यवहार करना होता तो दो बात बिना ध्यान रखन की हैं—(१) गायीन द्वारा परिशे निनके देह में टीका लगाया जाये और उससे लेकर फिर और जितनी क बगान जाय उत माही यह कमजोर हाता जायगा इस बिषय दखना चाहिये कि जिसका टीका म बीज बिया गया है वह कितन देहों में हाता हुआ आया है (२) जन्मका टाक से बीज बिया जाता है उसका श्व या पैलूक (पता माता से) उपद्रव की तरह काह दूधित धातु गत राग है कि नहीं । इसबिषय सम्पूर्ण श्व और दाय शून्य मनुष्य क दह से बीज खता चाहिये । यह बात ध्यान म रह कि बीज खत समय रून न निकले ।

टीका लगाने का समय ।—यदि बच्चा खल हो तो दांत निकलने से परिशे ही टीका लगाना चाहिये । बच्चे को २ तीन महीने की उमर में ही टीका लगाना उचित है । सामान्य थोडा उबर या उदरामय होने से टीका लगाने में देर न करन चाहिये । यदि बच्चा पैसा हुआ हो तो सुब उमर में ही टीका लगाना जा सका है ।

दुबारा टीका लगाना । षष्पन में टीका लगाये जाने पर दीवनायका के आरम्भ में फिर टीका लगाना चाहिये । १५ वर्ष से १८ वर्ष तक दुबारा टीका लगाने का समय है । जिन्हो पहिली बार टीका ठीक न लगा हो उनको दुबारा अथवा टीका लगाना चाहिये । अथवा पहिली बार के टीके में किसी प्रकार का भी सन्देह रहा हो तो दूसरी बार टीका लगाने से न रकना चाहिये ।

टीका लगाने का स्थान । दोनों बांहों में चमड़े की छींच के एक २ बांहों में दो २ जगह के हिसाब से कुल चार जगह टीके लगाने चाहिये ।

चिकित्सा । टीका लगाने के बाद टीके के स्थान की सुउबो से रक्षा करनेके सिवाय और किसी चिकित्सा की बहुधा आवश्यकता नहीं होती । यदि टीके के स्थान में बहुत जलन हो तो गीला कपडा उस पर रखा देना अच्छा है । टीका लगाने के बाद ज्वर होता है यदि ज्वर सामान्य हो तो किसी औषधि का आवश्यकता नहीं । किन्तु यदि ज्वर घेय पूर्णक भाव और टीके के स्थान में अत्यन्त जलन हो तो 'बेबेटोवा' अथवा 'एकानाइट' देना चाहिये । टीका सूख जाने के समय दो एक मात्रा सलफर देना अच्छा है । टीका देने के बाद यदि किसी प्रकार का उपद्रव पया उद्दामप आदि उत्पन्न हो तो सायबेरिया कायदा करना है । टीका जल्दी सूखा देने के लिये उसके ऊपर कोर दवा लगाना उचित नहीं । टीकेके ऊपर सफेद चन्दन की पिसकर लगा दिया जा सक्ता है उस से जलन की जगह तर रहती

है। अतः जित्त पर यदि काह प्रयुक्त उपसर्ग रहे उतत दिन पथ्य का आर दृष्टि गमना चाहिये।

मीजिल्म ।

(इस का फल समग भी कहन हें)

सय प्रकार क रोग-प्रसंग य एक अति सामान्य और सरयाग रोग है। य रोग सामान्य रोग है। घर में एक का जित्त सय रोग होना सम्भव है। यह रोग अत्यन्त ही म रोग कहना उचित है। य रोग का रोग-प्रसंग (मारने वाला कमा र रोग है। जकन का रोग इसके पीछे होने पर उपसर्ग य रोग कहना उचित है। यह रोग दान क माथी माथी र फफुड में गडबड होकर जीवा का म रोग है।

चिकित्सा— इस रोग के उपचार के लिये दीख

(१) अथवा उपसर्ग प्रायः आठ दिन तक रहता है। जकन का रोग जित्त ही उतत तक रहता हुए दृष्टि गम है। स रोग का रोग-प्रसंग लक्षण प्रकाशित नहीं होता

(२) आम-सानस्यः—शरीर अक्सर सरदा या कप कप म रोग होता है। सामान्यतः उपर बहुत उष्णता नहीं होता। शरीर का तापमा १०१ या १०२ डिग्री होती है किन्तु कमा र उपर अन्य र प्रयुक्त हाकर १०४ तक हो जाता है। शरीर अत्यन्त लक्षण हा सय म स्पष्ट प्रकाशित और प्रयुक्त दान है। शरीर का रोग लक्षण आर पानी भर

हुआ आगों में दहें और फिरकिण्ट, रोदानों से चौथा मानूम दाना पलक बुद्ध २ लाख और सुजे हुये रहत है ताव न बराबर पानी गिरता रहता है और ठोस जाती ट हमेषा गामी रहती है सास जन्दा धाना जाता ह, पट और गल में दह और मर भग आदि लक्षण भी दान पदन है । यह अयक्षया तीन दिन से ५ दिन तक रहती है साधारणतः ४ दिन तक रहती है ।

(३) क्वाटापष्वा ।—शरीर पर पुमिया प्राय चौधे दिन गहब्र जाता है । कभार मान आठ दिन वा देर ग हा जाता ह । साधारणतः बेहद पर बिन्दु बर ग्लाट पर पाठ शरीर में और मय न पाठे 'हाथ पैरों में प्रकाश दाना है । यह इतना साधारण रोग है कि इस का यक्षन दिश्य बान को आवश्यक नही ।

पुमिया उम २ निबन्धन जाता है यमे हा यमे मदी के लक्षण १४४ बन्ता जाता है तथा शरीर में सुब्रवा और उबन मानूम दान खगती है । गडा का गति प्रति मिनिट १०० न १५० यदा तब कि १६० तक हा जाता है और शरीर का ताप १०४ न १०६ डिग्री तक होते हुए दया मर है । अक्सर शरीर को ताप १०२ वा १०३ डिग्री से ऊपर नहीं दाना । इस दान में न क मुद और न में उबन ना बहुत होते खगती है ।

पुमिया पूर और बर निबन्धने पर प्राय दूसरे दिन से दिश्य खगती है । पुमिया के मिटवे क सादरी दर्द को गामी बम होते खगती है । शरीर को गति धीमा होव लगी है और शरीर के लक्षण में मरव लगे है । पुमिया निबन्धने के लक्षण मित शरीर में और

जिस समय निकली घाँ मिटने के समय भी क्रमसे एक के बाद १-उसी स्थान में मिटने लगती है । पुगिष्य छोप होने के समय शरीर से पतखेर गुराट उचटन लगत है और रोगी को आराम होने लगता है ।

परती (पीठे होने वाले) उपसर्ग ।— इस रोग के बाद इस के साथ के बहुत से रोग उपस्थित हो जाते हैं । इस रोग के आराम होने पर भी बाँझक यह सब रोग कष्टसाध्य हो जाते हैं । इन में नीचे लिखे हुये प्रधान हैं —

(१) श्वास यंत्रों के रोग, जैसे खासा, फेफड़ में प्रदाह यक्ष्मा की खासी इत्यादि । (२) बहुत से स्थानों में प्रदाह जैसे भ्रूण नाक, कान इत्यादि और उन से पीठ गिरना । (३) कृशा बगल आदि शरीर के जुड़ने स्थानों का गाला में प्रदाह होना । (४) उदरामय, कमीरे यह उदरामय पुराने उदरामय के समान आकार धारण करता है ।

चिकित्सा ।— एकानाष्ट समस्त निश्चयन के पश्चात् श्वर और मर्दों के क्षत्रियों में शायदा करता है । यह श्वर का काम करना है और रात्रि के समय खासी और श्वर के कारण जो बचनी हानी है उसका रोग करना है । यदि पुगिष्य दूर से निकल या पठ जाय और अल्पक प्रवृत्त श्वर के साथ निश्चयना और वायट मान का दण मादूम हाता जैवभासीनम बनायाहय । मस्तिष्क वा क्नायुदिक उचटना और इस के साथ २ वायटोंक मयिहय हा बिबा क्कड के रक्षाविकष (रूल की मयि

काह) होने का मय होय तो 'पिरेटूम-विटिड' कायदा करता है। ससरे की पहिली दाबत में यदि कठ या गले के नीतर उचनना, खुशकी और ठहर कर भाक्षेपयुक्त खासी, बचना इत्यादि लक्षण उपस्थित हों तो बेबेटौना कायदा है। नास और आँसों में सरदी के लक्षण यथा लगातार बहुत पानी गिरना, आँसों में दर्द होना आदि-लक्षण हों तो 'पूफ्रेसिया' देना चाहिये। सूयी खासी पूफ्रेसिया का प्रधान लक्षण है। सूयी खासी स्फोटायत्सा के प्रारम्भ में स्नायविक उचनना, पाकाशय की गड़गड़ हो तो 'पबसे टिला' देना चाहिये। फुंसिया यदि और रगत की हों अथवा वे समय में बैठ जाने की हों और विकार के लक्षण दाँव पड़ें तो 'आमोनिया देना चाहिये।

एकोनाइंट ६ शक्ति । अत्यन्त प्रयत्न, ज्वर, नाडी

पूरा कठिन और तेज अस्थिर निम्न, नई के समय में हाथ पैर चलाना और बनक उठना, नाक की जड़ में बहुत शोक महसूस होना, दाँत बिड़बिड़ाना, कंठी में सुई चुभाने जैसा दर्द सरदी और छोक, पाकाशय और आँसों में दर्द, साप ही उबरी और उदरामय।

एपिस १२ शक्ति । एक स्थान में बहुत सी

फुन्सी निकलना और घमटे का सुजना, आँसों के पबछों का सुजना रात रात, अत्यन्त लाल रंग की फुन्सी आँसों में सरदी के लक्षण और उदरामय, दुबलना और बचना।

आमोनियम कार्व ६ शक्ति । नाक रची हुई और अवन पैदा करने वाला पानी गिरना, गले के नीतर

कांस पडना और बार बार समारने की इच्छा करना प्राची रात के बाद शांती बढना। पुमियां बैठ जाने के कारण श्याम जड़ बच्चे का सोते २ थमक उठना एसा मान्दम हाता मानो श्याम नहीं क्रिया जाता। सांघातिक पुंके बना ।

येलेटोना ६, ३० शक्ति । नमागत निद्रासता

अथवा प्राये मुही पडना परन्तु नींद न आना, चंद्रा और प्रायो का साथ रग, साते समय चौक उठना और उठत पडना नाक की खुशका, सिर दर्द, बार २ छीक, गध में हरे और श्याम मग, पूर्वी प्राच्य युक्त और सारभग के साथ शर्मी रात में शर्मी का बन्ना, थोडे कारणा से ही सब ही श्यों का अधिक उत्पन्न हाता, पापडे भाता ।

वाइश्रीनिपा ६ शक्ति । पूर्वी तर्फीक बेने

बनी श्याम बार साथ ही गध में खुशकी मान्दम होत, अन्तत एवम बर बार ऊरी साते चलना, केन्द्र में रग अरुच हाता हानी में अन्त अडना या सुद ही पुवता मरग साथ बन में या छाडन में हम दर् का बढना, सांसत समय बगध निबल आता सब शरीर में गान्या के बाव सामान हन होना मुं बयो का बैठ जगना और उनी कारण अन्तत दुपडता और उतर अत्रिगत विदोत स उठ बेन पर प्री विचलना और मुदा ।

खेटिमियम १,३,३० शक्ति । थोड हण्ड में

जगती अथवा हीट घना और गध में विद्वर कर शंय अथवा का सुदपुण्डा इन्तरे समय का बरु हण्डा बने बदन से अन्धा निरत और उठन अन्ध में दर् मा दुप

होना, निगलनेक समय कानमें दर्द, गर्भमें दर्द और दृष्टिमें इच्छा
हाना, बहुत कष्ट देनेवाली सासी ज्वर क साथ बहुत
भयङ्गी खगना (नाद सी जाना), पुन्ना बैठ जाना और
मस्तिष्क विकार के लक्षण । मरदी के लक्षण अधिक रहने
से निम्न छद्म मस्तिष्क और स्नायुमण्डल भाङ्गात होने
से उच्चक्रम दिया जाता है ।

इपीकाकूत्राना ६ शक्ति । मरदी और सुरमुता
हठ के साथ सासी गले में कफ सराना बहुत जी मिय
लाना और उल्टा हाना पुन्नी निश्चलन में विषम्य और
साम धने में तल्लीक । यह दया रोगों को बहुत पायदा
करती है ।

मरक्यूरियस ६ शक्ति — नाक से बराबर पानी
गिरना और होंक धना आगों में ज्वन और पानी गिरना
टॉन्मिल गाठों में प्रगाह और घाव होंकने में पाँ घामते में
हानों में दाहने तरफ सुरि सी चुपना कष्ट अथवा आय
मिला हुआ उदरामय रक्त मिला हुआ आमाशय ।

पलसेटिखा ६ शक्ति — पतला वा मूला कफ साथ
ही बार बार होंके, स्वाद और मूघन का शक्ति का भाव होना,
आसों से पानी बहुत गिरना रात में चपके चलना दाहिन
कानमें खपकन होना या कटे जाने कीमी तहलाफ होना कान
में दर्द, कान के मात्र उल गि ने कामा शब्द हाना रातम
या हाग्याक समय मुखा कामा विशेष कर मान के बाद
गोर्बे सासी बार उबठीक साथ कफ निश्चलना तथा
शक्ति में उदरामय पाकाशय की गडगड । समरा निश्चलने क

बाद गीली खासी पुरानी होजाने पर यह दवा बहुत फायदा करती है ।

सलफर ३० शक्ति । — कुत्तियां बैठ जाने के समय और जरूरत पड़ने पर बीच २ में एक एक मात्र ही जाती है । शाम के एक सात से सूर्योत्थासी, खान के पुराना पीय गिरना और पुराना उदरामय ।

पीछ हानवात्र उभरगों का विक्रिसा —

कण्ट प्रदाह [मानों में जखन] — मरकुरियस बर, सलफर हीपर-मख एकोनार्ड, वेन्नडाना ।

कान बन्ना वा यत्रापन ।— पटमात्रिका, सलफर, सारणी त्रिया, माकुरियस, हीपर-मख ।

गांठ कृत्तना ।— मरकुरियस-माइयाड, केडरुटिया-बार्ड, बार्डियाडियम ।

केश में प्रदाह ।— फास्फोरस एग्जीमनी-टार्ट ।

पुराना खासी और मग इत्यादि ।— कार्बोरेट, हीपर मख बाधा-बार्डकामिक, स्पत्रिया आमनिच, कस्टीडन कार्बो बार्डियाडियम मखदर ।

अरगण ।— मखदर माइयाडियम आमोनिक ।

अधमन कृत्तना ।— काना कसिह-फास्फोरिक ।

प्रदाह ।— माइयाडियम एगन, बरडाना ।

प्रतिवेचक उपाय । — गंगा, स घुमा घुन न करन ही इय न न म बव रहने का समय अच्छा उपाय है । इय को कृत्तना के खान क एक मात्रा ही घुन क न म बवना कर्दिय । बिनी २ ही सम्मति है कि यह

सोढिया दिन में हो बार सेवन करनेसे इस रोग का मय नहीं रहता ।

सहकरी उपाय । जब तब पुग्लिषां न बैठ जावे और शरीर बिह्वुद्ध ठीक न हो जाय घर से बाहर जाना उचित नहीं । रोगीके घर में कुछ अन्धेय तो उकर दो किन्तु मच्छी तरह हवा के माने जाने के लिये माग रहना चाहिये । बिह्वीने की बाहर पहिनेने के बपटे हमेषा बदल कर तथा गरम पानी से घोकर व्यवहार में खाने चाहिये ।

रोगीको ठंड लगना या ठंडे पानी से स्नान करना बर्जित है क्योंकि छोटी सररी लगने से ही रेन्ड्रे में प्रदाह आदि सांघातिक उपसर्गों का उपस्थित होना सम्भव है । पान के लिये ठंडा पानी दिया जा सकता है । छोटे गाँवों की अवेदा बड़ शहरों में यह रोग सांघातिक होते हुए आंचक हुआ गया है । इस लिये कह सके हैं कि पूव काल में यह रोग मा सामान्य था और इसकी चिह्नित्सा भी सामान्य थी । परन्तु आज बस इसको सामान्य समझना उचित नहीं क्योंकि इस के द्वारा सैकड़ों मृत्यु काण्ड हुए मालुम देखने हैं ।

पण्य । —इलहा पण्य देना चाहिये । श्वरक समय आगोट, बरही का मन्दूरानि और उवर घटजागर कृष बनिया दिया जासकता है । आहार के विषये कुछ दिन बाद मक मा सावधान रखना उचित है क्योंकि सरुड में हा इरामय होजाना सम्भव है ।

श्लेष्म। ७

निर्वाचन।—पहिल समयो में श्लेष्म कहनेस किता बीजा द्वारा बहुत स आदमियों का पीड़ित होना और मरना सामान्य जाता था किन्तु आसकल श्लेष्म शब्द से श्लेष्मोनिज श्लेष्मक अर्थ समझा जाता है। यह एक प्रकार नया तेज सामक श्लेष्म राग है। श्लेष्म क साथ राग आदि श्वानों की गाँठें पूर जाती है और प्रथम दान खगती है तथा कभीर मयाकष पाय वा दास भी हुआता है।

डातवृत्त।—१८६६ ई० पहिलसही भारतय ६ जकन श्वानों स यह राग दीज पहाया किन्तु इसका बन्धन मरुत नगरा में बड भीषण और सामक रूप इसका प्रादुर्भाव हुआ। यह जमाना भारत यो के सभी श्वानों स बहुत बुरी है दात में काद दरा भी इसका आक्रमण स वासन नहीं हागा।

कारणानुसंधान।—**कोको-बैसिलम्** (cocco-bacilli) नामक आणु (बहुतही छोटरे आणु) किधी तरह स शरीर क मानव प्रजा कइस इस पाया का उत्पन्न करत है। एसा क मधुमूत्र आर श्वाना आदि में यह जीवाणु द क बनत है। बहुतों की यह राय है कि श्लेष्म का विष मिट में रहता है। नव पर श्वेत स यदि पैर में किधी जगह कण वा लुसपन हुआ इध राग-क दान का विष स बनता है। श्लेष्म इन्फेक्शन क राग हासकता है किन्तु

* इस श्लेष्म के उत्पन्न क शरीर किन्तु विषाणु का विषाणुकी प्रकृत क क जगत् प्रादुर्भाव कण की उत्पन्न कलापर है।

बहुत कम उमर बचे और बूढ़ों को नहीं होती। इस रोगके पूर्व-
वर्ती कारण दाह्य रूढ़ा व नियम भंग करना और
उपशुक्त कारण संभव होसकते।

मक्रमण । कृत्तकों बीमारियों का तरह
यह भी एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य को होसकती
है। स्पर्श द्वारा श्वास प्रश्वास द्वारा, यदा तक विनाश
द्वारा भी इस पादा का शरीर में प्रवेश दासक्या है।
सेप्टीमिक ग्रेग और न्यूमोनिक ग्रेग जितनी संशामक हैं
प्यूवोनिक ग्रेग उतनी संशामक नहीं है।

प्रकार भेद । रोग-विष अथवा जीवाणु सब के
एक होन पर भी यह जुदे जुदे लक्षण होने के कारण
जुदे जुदे नामों से ही पुकारे जाते हैं। यथा —

(क) प्यूवोनिक अथवा गांठ बढ़न व साथ पीड़ा।—
साधारण तरह पर इस को पांच भागों में विभक्त किया
है। (१) फिमोरल (पैर में) (२) इनगुइनाल (राग में),
(३) एक्रिबरी (बगल में) (४) सर्पाइक [गरदन में] ;
(५) टाक्सिलर (ताडुमलीय अथवा तारू की उड़ में) ।

(ख) बिना गांठ फुलन के राग।—यह भी अठारो
हा भागों में बांटा गया है। [(१) सेप्टीसेमिक [रक्त
दोष के कारण] (२) न्यूमोनिक [फेंकोडे के प्रदाह के
कारण] ; (३) गैस्ट्रोटेस्टाइनल (आंत और पाका
नायका) (४) नेफ्राटिक (भूख प्रथि सम्बन्धीय) ;
(५) सेराप्रल [मलिष्कोय] ।

लक्षण ।—[क] प्यूवोनिक या सर्पाइक युक्त पादा ।
[गांठ बढ़न के साथ रोग] इसमें गांठ बढ़ की तरह

प्लेग । ॐ

निर्वाचन ।—पहिले समयों में प्लेग कहनेसे किसी पीडा द्वारा बहुत से आदमियों का पीडित होना और मरना समझा जाता था किन्तु आजकल प्लेग शब्द से व्यूथोनिक् प्लेगका अर्थ समझा जाता है । यह एक प्रकार नया तेज सत्रामक ज्वर रोग है । ज्वर क माघ राग आदि स्थानों की गाँठें फूट जाती हैं और जखन होने लगती है तथा कभीर मपाक घाव या फोडा भी हाताता है ।

इतिवृत्त ।—१८६६ ई० पहिलेसेही भारतवर्ष क कितने स्थानों में यह रोग दीख पडाथा, किन्तु इस वर्ष १८९६ महा नगरा में बड भीषण और सत्रामक रूपसे इसका प्रादुभाय हुआ । यह क्रमश भारत वर्ष के सब स्थानों में पहुच चुकी है काल में कोई देश मा इसका आक्रमण से यक्षित नहीं हागा ।

कारणान्तर । —कॉको-वैसिलस (*cocco-bacillus*)

नामक जीवाणु (यद्युही छाटर जीव) किसी तरह से शरीर क भीतर प्रवेश करके इस पीडा का उत्पन्न करते हैं रागी के मखमूत्र आर श्लष्मा आदि में यह जीवाणु दा पडने हैं । यहूतों की यह राय है कि प्लेग का विष मिट्टी में रहता है । नग पैर गूमने से यदि पैर में किसी जग घाव या खुरसट होता हम राग-के होने की विश मभावना है । प्रत्येक उमरमें ही यह रोग हासक्ता है कि

• इस रोग के निषेधमें धरि विषय अवरोध का चिकित्सा विज्ञान का एक प्रविधि का नाम की कन्नक नगराकेर्तव्य ।

गठि कमी एक कर फूट जाती है और कमी बौही बैठ जाती है उवर १०२। १०३ वा इस से अधिक नी होजाता है। दाहिनी ओर की गांड यदि फूल उठे तो इसको दुरा लक्षण समझना चाहिये।

[२] इगुगैथ (Ingual Type) यह भी पहिली धेपी मेंही गिना जाता है। साधारणत इस में रग की गांड फूड जाती है। यह दोनों प्रकार को पीडाएँ अधिक बेग पूर्वक प्रकाशित नहीं होती।

[३] ऐरजोबेरी (Axillary Type) ऊपरका भग यथा हाय भादि द्वारा यदि प्लेग का विष शरीर में प्रविष्ट होता इस प्रकार के लक्षण शरीरन प्रकाशित होते हैं। बगल के भीतर गहरार में गांड फूल उठती है, इससे अकस्मात् कपकपी लगती है। बेग पूर्वक उवर होता है स्वष्ट वात मुखसे नहीं निकलती इत्यादि ऐसे लक्षण प्रकाशित होता है।

४) सवार्थैल (Cervical Type) यदि ग्लेग का विष टांमिअ गांड के द्वारा शरीर में प्रविष्ट हुआ हो यह पर इन के पास याडी गांड के फूडन से ही उना जाता है। इसमें अकस्मात् उवर होगा है मानसिक अयसाद् [मनका सुख पड़जाता] इत्यादि लक्षण प्रकाशित हात है।

[५] टांमिअर (Tonsillar Type) इसमें पाँहुने की तरह लक्षण प्रकाशित होते हैं। गर्दन की उगाह सूखकर दुनी वा खौगुनी होजाती है। इस प्रकार के रोग में दगाम दह उने के कारण रोग के प्राय जानामी समझ है। फूडी दुर गांड अस्तकके जितने ही अधिक पास होगी उतनी ही खूबुखी अधिक सम्भावना है। इस प्रकार लक्षण प्राय रोगों में ही अधिक देखे जाते हैं।

पृष्ठ उठती है इसी कारण इसको श्यूपोनिक ग्लेग कहते हैं । पश्चिमी शरीर में अम्लच्छन्दा उपरान्त सिर बढ़, भिर घूमना और प्रकृत कणकपी के साथ उयर के लक्षण उपस्थित होते हैं । बात कहने में जीम कांपती है और मुह से साफ आवाज नहीं निकलती, बेचैनी जी मिचलाना उखटी, उजाड़ से भय मादूम होना और आंखों का कुछ कुछ झाल रग होना आदि लक्षण दिखलाई पड़ते हैं । शरीर की गन्धी १०१ से १०४ तक बढ़ जाता है यहाँ तक कि कमी कमी १०६ व १०७ तक हो जाती है । नाड़ी की गति साधारणतः १०० से १३० तक चलने में आर है । पश्चिमी नाड़ी मध्य और द्विधात गूण [गृहरी] (Dicrotic) पीछे साथ और वेग मुक्त हो जाती है । जीम मन्द गैब से दूर दूर नीचे न आना विज्ञाने म उठन की चेष्टा करना, अम्ल प्यास लगना मय मादूम होना बेहद चिन्तायुक्त बनना वगैरह रोग, जीम का नागे में म किसी एक का पूरा उठना और ठहर ठहर कर अत्यन्त मात्रा का मा दने मादूम होना आदि लक्षण दिखलाई पड़ते हैं । कमी कमी उयर अधिक हावर मन्तिर के लक्षण भी दिखलाई पड़ते हैं । बच्चों का इस रोग बचने आन लगते हैं । आचारणतः उनके शरीर की गन्धी १०३, १०४ व अधिक नहीं जाती । इस क निम्नाय बिदे विद्यक प्रकार के और लक्षण नाच लख हैं :-

[१] निमोरक [(Peculiar Type)] — बच्चों के १ बच्चा पैरों के लहने आदि लक्षणों में होकर यदि दूग लक्षण शरीर में प्रकृत हुआ होना तो आचारण निमोरक के लक्षण आचारण उमक नाम बच्ची मय मादूम एक म आचारण लक्षण लक्षण कुछ उठती है । यह पूरा है ।

गठि कमी एवं बर फूट जाती हैं और कमी बौही बैठ जाती है जब १०२।१०३ वा इस से अधिक भी होजाता है । दाहिनी ओर ही गाठ यदि फूट उठे तें इसको बुरा लक्षण समझना चाहिये ।

[२] इगुरगैड (Ingurged Type) यह भी पहिची धेपी मँही पिना जात है । साधारणतः इस में रोग की गाँठ फूट उठता है । यह दोनों प्रकार की पीड़ाएँ अधिक रोग पूर्वक प्रकाशित नहीं होती ।

[३] ऐडजोबेरी (Adjutory Type) ऊपरका रोग यथा हाथ आदि द्वारा यदि रोग का विष शरीर में प्रविष्ट होता इस प्रकार के लक्षण शरीरमें प्रकाशित होते हैं । बगल के भीतर गहराई में गाँठ फूट उठती है, इससे अकस्मात् कपकपी लगती है । रोग पूर्वक ज्वर होता है स्वप्न बात मुखसे नहीं निकलती इत्यादि ऐसे लक्षण प्रकटिते होता है ।

४) सवारटैल (Cervical Type) यदि रोग का विष टांक्सड गाँठ क द्वारा शरीर में प्रविष्ट हुआ हो यह शरदन के पास धाधा गाँठ के फूटने से ही उना जाता है । इसमें अकस्मात् ज्वर हाता है मानसिक अरुसाद [मनका सुत्र पडजाता] इत्यादि लक्षण प्रकाशित होते हैं ।

[५] टांक्सडर (Tonsillar Type) इसमें पहिने की तरह सब लक्षण प्रकाशित होते हैं । गदन की उगह सूखकर टूनी या चौगुनी होजाती है । इस प्रकार के रोग में रगास रुक जाने के कारण रोगी के प्राण जानामी सम्भव है । फूली हुए गाँठ मस्तकके जितने ही अधिक पास होगी उतनी ही मृत्युकी अधिक सम्भावना है । इस प्रकार लक्षण प्राय बच्चों में ही अधिक देसे जाने हैं ।

पूछ उठती है इसी कारण इसको व्यूयोनिक ग्लेग कहते हैं । पश्चिमी शरीर में अस्वच्छता उपरान्त सिर बंद, भिर घूमना और प्रयत्न कपकपी के साथ ज्वर के लक्षण उपस्थित होते हैं । पात कहते में जीम कांपती है, और मुह से साफ आवाज नहीं निकलती, येचैनी, जी मिचलाना, उखटी, उजाड़ से भय मालूम होना, और आँसों का कुछ कुछ बाल रग होगा आदि लक्षण दिखलाई पड़ते हैं । शरीर की गरमा १०२ से १०४ तक बढ़ जाता है यहाँ तक कि कभी कभी १०६ से १०७ तक हो जाती है । नाडा की गति साधारणत १०० से १३० तक बधने में आँ है । पश्चिमी नाडी सख और द्विघान पूण [बुहरी] (Dicrotic) पीछे घाय और वेग युक्त हो जाती है । जीम सफ़द मैख से ठकी हुए, नींद न आना पिछोने न उठने की चेष्टा करना, असह्य व्यास लगना भय मालूम हाना चेहरे चिन्तायुक्त बकना, बगल राग, और काम की गाठों में से किसी एक का फूल उठना, और ठहर ठहर कर चयके मारन का सा दर्द माशूम होना आदि लक्षण दिखलाई पड़ते हैं । कभी कभी ज्वर अधिक हाजर मस्तिष्क के लक्षण भी दिखलाई पड़ते हैं । बच्चों का इस रोग में बायडे आने लगते हैं । साधारणत उनके शरीर की गरमा १०३।१०४ से अधिक नहीं होती । इस के सिवाय विशेष विशेष प्रकार के और लक्षण नीचे लिखे हैं -

[१] फिमोरल [(Femoral Type)] - नीचे के भय घया पैरों के तखवे आदि स्थानों में होकर यदि गुग का शय्य शरीर में प्रविष्ट हुआ होतो गोष्ठाकार फीमोरल स्थान के नीचे भयघा उस के पास घाली सब गाठें एक साथ भयघा अलग अलग फुल उठता है । यह फुला हुए स

गाँठें कभी एक बार फूट जाती हैं और कभी बौही बैठ जाती हैं उबर १०२।१०३ या इस से अधिक भी होजाता है । दादिना ओर ही गाँठ यदि फूट उठे तोरुमको घुस क्लृप्त समझना चाहिये ।

[२] इगुगैष (Ingungul Type) यह भी पहिची भेषी मेंही गिना जाता है । साधारणत इस में एक ही गाँठ पूरु जाती है । यह दोनों प्रकार की पीडाएँ अधिक बेग पूरुष प्रकाशित नहीं होती ।

[३] ऐषनाखेरी (Axillary Type) ऊपरका भग यथा हाथ आदि द्वारा यदि प्लेग का विष शरीर में प्रविष्ट होता इस प्रकार के सरुष शरीरम प्रकाशित होते हैं । बगल के भीतर गदराए में गाँठ पूरु उठती है, इससे अकस्मात् कपकपी लगती है । बेग पूरुष उबर होता है, उबर यात मुखसे नहीं निकलती इत्यादि ऐस लक्ष्य प्रकटित होता है ।

४) सरुषरुषैठ (Cervical Type) यदि ग्लेग का विष टॉगिषुष गाँठ क द्वारा शरीर में प्रविष्ट हुमा हो यह सरुष रुन क पास बाधी गाँठ क पूरुष से ही जना जाता है । इससे अकस्मात् उबर हाता है, आतिसक भयसाइ [मनका सुष पडजाता] इत्यादि लक्ष्य प्रकाशित हात है ।

[५] टॉगिषुषरुष (Tongular Type) इसमें पहिचे की तरुष सरुष लक्ष्य प्रकाशित हाते हैं । गरुन की ऊपर सुषरुष रुनी या पीगुनी हाजाती है । इस प्रकार के रोग में रगांग रुष ज्ञाने क क्सारुष रोगे क मासु जानामी सम्भव है । पूरुषी हुस गाँठ क्लृप्तके जितने ही अधिक पास रोगी लगती ही सुषुषी अधिक सम्भावना है । इस प्रकार क्लृप्त मासु रुषों में ही अधिक रूष उबर है ।

फूँल उठती है इसी कारण इसको प्युयोनिफ ग्रेग कहते हैं । पश्चिम शरीर में अस्यच्छदता उपरान्त सिर दर्द, भिर घूमना और प्रबल कपकपी के साथ ज्वर के लक्षण उपस्थित होते हैं । घात कहते में जीम कापती है, और मुँह से साफ आवाज नहीं निकलती, बेचैनी, जी मिचलाना, उखटी, उजाड़ से भय मालूम होना, और आँधों का कुछ कुछ खाल रग होना आदि लक्षण दिखलाई पड़ते हैं । शरीर की गरमी १०२ से १०४ तक बढ़ जाता है यहाँ तक कि कमी कमी १०६ से १०७ तक हो जाती है । नाडा की गति साधारणत १०० से १३० तक देखने में आर है । पश्चिम नाडी सख और द्विघात पूण [जुहरी] (Dicrotic) पीछे साय और वेग युक्त हो जाती है । जीम सफेद मैख से ढकी हुए, नींद न आना, बिहोने से उठने की चेष्टा करना, असह्य प्यास लगना, भय मालूम होना चेहरे चिन्तायुक्त बनना बगल राग, और कान की गाँठों में से किसी एक का फूल उठना और ठहर ठहर कर चपके मारन वा सा दर्न मालूम होना आदि लक्षण दिखलाई पड़ते हैं । कमी कमी ज्वर अधिक हाकर मस्तिष्क के लक्षण भी दिखलाई पड़ते हैं । यहाँ का इस रोग में बापटे आने लगते हैं । साधारणत उनके शरीर की गरमा १०३ । १०४ से अधिक नहीं होती । इस के सिवाय बिशेष बिशेष प्रकार के और लक्षण नीचे लिखे हैं —

[१] फिमोरल [(Femoral Type)] — नीचे क मंग यथा पैरों के तखये आदि स्थानों में होकर यदि ग्रेग का रोग शरीर में प्रविष्ट हुआ होतो गोखाकार फिमोरल स्थान के नीचे मथवा उस के पास वाली सब गाँठें एक साथ मथवा अलग अलग फुट उठता है । यह फूला हुए सब

५) सेरीब्रल मास्त्रिक्क विचार की एक तरह पीड़ा है ।
 (*Cerebral Typo*) इसमें मस्त्रिक्क विगडकर रोगी अमानक
 दुबल हो जाता है । थोड़ा २ घण्टे आते हैं, बेहोशी या कामा
 आदि आकर माटा गप हो जाती है । यह रोग भा बहुत
 आहतिक है । साधारणत रोगी १२ घंटे से लेकर २ दिन
 के भीतर भरजाता है । यदि रोगी धीरे धीरे देर में न भरे
 तो माट पूरा उठती है ।

गाठ फूटना ।— प्राय एक ही गाठ फूटना है । पूछी
 हुए गाठ के ऊपर समुझी रग्ने से रोगी को बहुत कष्ट
 होता है । प्रतिदिन और दूसरे दिन से लेकर गाठ का टूटना
 शुरू होता है । सातवें या आठवें दिन पच जाती है और
 पचने से आराम होने का आगा भी बीजाभवता है । मरुद
 में घड़ी दुर्गंध आती है । पचने तक या बाबा होता है
 और उसमें अण्डहाव (*Albumen*) रहता है ।

रोगी का अस्थान ।— भ्रम रोगी की बाहरी गाठ
 पूरक में त्रिस तरह की गांठ पूर्ण हो उसके दुसरे ही
 करपर विधाने से आराम महसूस होता है । पैर पसार कर
 नहीं न पड़ता ।

भाषीफूस ।— भ्रम बहुत आहतिक पीड़ा है । इसके
 रोगी २० से २५ पीणरी भरजाते हैं । पण्ड ५ गांठ पूरक
 १० से १५ में और शेष के दिनों दिनों भी गांठ पूरने
 से १५ आराम भरजाते हैं । रोगी को यह बात होकर न
 दूसरे ही दिन गंध काय हाजिर है ।

शुभलक्षण ।— प्रति आराम होने शुरू हो जायगा

(ख) बिना गांठ के फूलने वाले रोगों के विशद
लक्षण — — —

(१) सेप्टिसेमिक (Septicæmic Type) यही विष रक्त में प्रवेश करता है और रक्त दोष के लक्षण प्रकाशित होता है। इस प्रकार की पीडा अत्यन्त साघातिक होती है। शरीर में पुंसियों की तरह छाछ, काछ, नीले और अनेक तरह के दाग उत्पन्न होने हैं। नाक, मुह, फेंफडा, मूत्राधार आदि स्थानों से रक्त बहन छगता है और अखीर सब शरीर में गन्ध शुरू हो जाती है।

२ प्यूमोनिक (Pneumonic or Thoracic Type) इस के लक्षण यह हैं कि श्वास वायु के साथ मिलकर प्लेग का बाज शरीर के भीतर प्रवेश करता है। इससे ग्रॉकार्टिस अथवा खोबूख प्यूमोनिया के लक्षण प्रकाशित होते हैं। यह रोग बहुत ही साघातिक है। प्राय दूसरे ही दिन रागी वा मृत्यु हो जाती है। कभी कभी इस में गांठ फूलती हुई भी दूख जाती है।

(३) गैस्ट्रो-इन्टेस्टाइनल (Gastro Intestinal Type) इन्टेष्टिनल अथवा इससे पाकाणय आर आंतों पर सब प्रबुधता है। कुछ लक्षण सप्रिपान अवरक और कुछ हैजेक से दिख साइ पडते हैं। उबकाह सूखी उल्टी अफरा, उदरामय आदिलस प्रकाशित होते हैं इसका भी मृत्यु संख्या कम नहीं है।

(४) नेफ्रॉटिक (Nephritic Type) - इस रोग में मूत्राण अथवा दोनों कृच्छक (मूत्र पैदा करने वाली गांठ) प्रधान आक्रान्त होते हैं और पेशाब कम उतरता है। पेशाब के साथ रून गिरता है उवर अयसप्रता तन्द्रा और द दिचार उपस्थित होजात हैं।

५) सेरोब्रेल मास्तिष्क विकार की एक तरह पीड़ा है ।
 (*Cerebral Type*) इसमें मास्तिष्क विगड़कर रोगी अचानक
 दुबल होजाता है । थोड़ा २ घण्टे आते हैं, बेहोशी वा कोमा
 आदि आकर नाड़ी लोप होजाती है । यह रोग भी बहुत
 आघातिका है । साधारणत रोगी १० घंटे से लेकर २ दिन
 के भीतर मरजाता है । यदि रोगी थोड़ी ही देर में न मरे
 तो गाठ पून उठती है ।

गाठ फूटना ।— प्राय एक ही गाठ फूटती है । फूटी
 हुए गाठ के ऊपर अगुबी रमने से रोगी को बहुत दर्द
 होता है । पहिले और दूसरे दिन से लेकर गाठ का फूटना
 शुरू होता है । सातवें वा आठवें दिन पचजाती है और
 पचने से आराम हान का भाग भी कीजासकता है । नदर
 में पड़ा दुग्ध आती है । पशाय लाल वा काडा होता है
 और उसमें भयङ्कर (Albumen) रहता है ।

रोगी का अवस्थान ।— दुग्ध रोगी को काह गाठ
 फूटने से जिस तरह की गाठ फूटी हो उसके दूसरे और
 कसबट बिगाने से आराम महसूस होता है । पैर पसार कर
 लेने से पचजाता ।

भागीफल ।— दुग्ध बहुत साधारण पीड़ा है । इसके
 रोग ७० से २० पीसदी मरजाते हैं । बगल की गाठ फूटने
 से ७० आंसी और नीचे के हिस्से दिग्धे की गाठ फूटने
 से १५ आंसी मरजाते हैं । अन्तिम को यह रोग होने से
 दूसरे हा दिन गर्भ पान होजाता है ।

शुभलक्षण ।— यदि आराम हाना शुरू होजाय तो

(ख) बिना गाठ के फूड़ने वाले रोगों के विशेष लक्षण —

(१) सेप्टिसेमिक (Septicæmic Type) यही विष रक्त में प्रवेश करता है और रक्त दोष के लक्षण प्रकाशित होते हैं। इस प्रकार की पीड़ा अत्यन्त साधातिक होती है। शरीर में फुंसियों की तरह खाख खाख नीले और अनेक तरह के दाग उत्पन्न होते हैं। नाक, मुँह, पैरों, मूत्राधार आदि स्थानों से रक्त बहने लगता है और अखीर सब शरीर में गड़गड़ाने लगती है।

२ प्यूमोनिक (Pneumonic or Thoracic Type) इस के लक्षण यह हैं कि दशास वायु के साथ मिलकर प्लेग का बीजाणु रक्त के भीतर प्रवेश करता है। इससे प्रोकाइटिस अथवा छोटी प्लेग प्यूमोनिया के लक्षण प्रकाशित होते हैं। यह रोग अत्यन्त ही साधातिक है। प्रायः दूसरे ही दिन रागी बी मृत्यु हो जाता है। कभी कभी इस में गाठ फूलती हुई भी दशा जाती है।

(३) गैस्ट्रो-इन्टेस्टाइनल (Gastro Intestinal Type) इसमें अत्यन्त इससे पाकाण्ड आर आतों पर सख्त प्रभाव पड़ता है। कुछ लक्षण सन्निपात उबरक और कुछ हैजेके से दिख लाए पड़ते हैं। उबकार मूसा उल्टी अफरा, उदरामय आदि लक्षण प्रकाशित होते हैं इसकी भी मृत्यु संख्या कम नहीं है।

(४) नेफ्रिटिक (Nephritic Type) - इस रोग में मूत्रपिण्ड अथवा दोनों कृक (मूत्र पैदा करने वाली गाठ) प्रधानतः आक्रान्त होते हैं और पेशाब कम उतरता है। पेशाब के साथ रक्त गिरता है, उबकार, अयसन्नता, तन्द्रा और मूत्र विकार उपस्थित होना है।

में घाम मानम हान कीमी तदर्थीर हाश वाह बगल का
गाठ का सूजन और दह हाना मान २ अथक उठना और
बहुत पर्याप्त माना ।

क्राटलम ६ शक्ति ।—जिन प्रकार की रोग में रून
गिरने व लक्षण क्रॉपिक हा उसमें यह दिया जाता है ।
बढ़ना बढ़ना अन सूजन के फल में प्रदाह, राग और
बगल की गाठ में प्रदाह मान सूजन ।

लकोमिस ६ शक्ति ।—अवसरचा आर रक्त में प्रपाद
विषयापन भलाभासिक) भादि लक्षणों में दिया जाता
ह । बहागा गिर दह बहुदर दहन मर नर्षी आर
बंट नर्षी में रूनम दह हाना भ्रास बए के साथ बहना
और घाव में महन गुरु हाना ।

नेजा ना कोररा ६ शक्ति ।—बाच्छत वा रैवमिस
का अथवा यह बहुत तज दया है । इसका अंतर रक्त का
अपदा आयु मरुत क ऊपर अधिक हाना है । दुयवता
आर हासिगड का क्रिया क लय हान की भागदू हाय
पर यह दिया जाता है । नाडा तज और अनियमित ।

फोस्फोरस ६ शक्ति ।—रफडा आक्राणत हाने पर
यह बहुत फायदा करता है । घना, बढ़ाशा गिर दह,
बान नाक और मसूद में रून गिरना राग का गाठ सूजा
दुर बनालूम हल या रक्त-निमार भ्राम बए, रून मिजा
हुम कए के फल स रून गिरना घना व शय्य क रुमान
हासिगड का परिना शब्द । नाडा बहुत छोटा और घ म लूम
तथ आर मसिपान व घशय ।

धुवार कम होने लगता है। पसीन बहुत आने द। मस्तिष्क की उत्तेजना कम हो जाती है और नाड़ी सफल चलने लगता है। गाठ पक कर घब सूख जाता है और सड़न आरम्भ नहीं होती।

चिकित्सा ।— डाक्टर सरकार का मत है कि प्रारम्भ में ही इग्नेशिया दन स राग उतना ही होकर नष्ट हो जाता है अथवा ओर नहीं बढ़ता। दूसरी अग्रम्या में अघात राग बढ़ना शुरू होने पर ज्वर प्यास घबैनी आदि लक्षण उपस्थित हो ता एफानाइट देना चाहिये। यदि इससे ज्वर कम न हो और शिर का दर्द अधिक हातो घेलहाना अच्छा दवा है। इसका सिधाब बहुत स चिकित्सक कहते हैं कि परिब से ही ररटक्स देने से इन सब हालतों में बहुत फायदा दीसता है। अतएव नाचे लिखी दुर दवाइयों में से खसब मिलाकर दवा तनवीन करै।

इकोनाईट २x, ३x शक्ति ।— अत्यन्त ज्वर, प्यास, घबैनी मृग्युमय शिरघूमना शरायी फीसी हाबत, मुह स घान साफ न निकलना अत्यन्त शिर दर्द दस्त और जी मिचलाना, होठ और पट में जलन दित की धडकन और नाडा की गति कमगोर। नाडी पूण, तज और कटिन पट्टों की दुयलता और सघर शरीर में चिनचिनाहट होना।

वेलेडोना ६ शक्ति ।— पागखपन कभी २ हसन चिल्लाना और दात विडकिडाना अत्यन्त शिर दर्द, मासों क डाब रगत, पिछौन साचना, रोपनी और शब्द न सह सकना सापड थड कगन तातुर और कतपटी की गाठ में तप चाये तरफ की राग में घबक चलना, दाहन तरफ का रा

में घोष मालुम होन कौसी तबजोर होना, यारि वगल की गाठ का सूजना और हद होना, साते २ खमक उठना और बहुत पनीने आता ।

क्राटेलम ६ शक्ति ।—निस प्रकार की रोग में रून गिरने के लक्षण अधिक हो उसमें यह दिया जाता है । देहेशी, बहना और सूजना, फेफड़े में प्रदाह, राग और बगल की गाठ में प्रदाह और सूजन ।

लेकेमिस ६ शक्ति ।—ब्रवसप्रत्ता और रक्त में मवाद विषेखापन (मेप्लीमामिष) आदि लक्षणों में दिया जाता है । बहानी शिर हद बद्धुदार दस्त, स्वर नहीं और बंठ नहीं में रूनस हद होना आस छष्ट के साथ चबना और घाघ में भडन गुरु हाना ।

नेजा वा कोवरा ६ शक्ति ।—क्राटेलम वा लेकेमिस की अपेक्षा यह बहुत तेज दया है । इसका असर रक्त की अपेक्षा खासु मण्डल के ऊपर अधिक होता है । दुपखता और हृत्पिण्ड की क्षिया क लप होने की आशङ्का होने पर यह दिया जाता है । नाडी तेज और अनियमित ।

फोस्फोरस ६ शक्ति ।—कैफडा आशङ्कत हाने पर यह बहुत फायदा करता है । बहना, बहोशी शिर हद शान नाक और मसूड में सूज गिरना, राग का गाठ एडो हुइ बमानून इस्त वा रक्तनिमार आस छष्ट, रून मिखा हुम छष्ट फेफड़े से रून गिरना चबना के शरि बमान हृत्पिण्ड का परिण शरि । नाडी बहुत छोटा और ये मन्म तप और मन्मिषान के छमप ।

। १। लुप की जड की गांठ मृजन भादि पक्षणों में यह दया की जाती है अथवा सप्रिपात व छक्षणों में इस से बहुत फायदा होता है।

पार्डरोलीनम् ६, ३० शक्ति । रोगी क अचानक मृत्यु न होकर ज्वर तेज हो, सप्रिपात के छक्षण दौख पडे, फेफडा मात्र और पाकाण्य के छक्षण दिग्छार पद, यकना भादि लक्षणा उपस्थित हो तो यह दया आश्चर्य रूप से फल दिग्नाती है । यदि द्वा एक मात्रा से आराम न हो तो धैर्य के साथ और भी दो एक मात्रा देना चाहिये ।

वेडीयागा ३x शक्ति ।—गाठ पटन की पीडा में यह एक प्रसिद्ध औषधि है । बहुत से रोगियों को इस से फायदा हुमा है । गाठ कडी हो उस में मवाद पडजाय, गदन और गछा खुज जाय यदि ऐसे लक्षण हो तो यह दया देना चाहिये । पूछी हुई गाठ के ऊपर छगाने के लिये इस दया का मूख अक या १ + शक्ति व्यवहार करना चाहिये ।

प्रतिषेधक उपाय ।—यदि चारों तरफ नृग रोग फैला हुमा हो तो नाचे बिचे हुये नियमों का पालन करना उचित है ।

(१) हमेशा साफ रह और साफ कपडे पहिने, घर के भीतर तथा बाहर किसी प्रकार भ्रंजापन न होने दे । रहने के घरेमें हवा आने जाने के लिये माग रहना चाहिये तथा एक घर में बहुत से आशुमियों को कदापि न रहना चाहिये । नृग रोगी अथवा उसके कपडे बिहान भादि कदापि न छुन चाहिये । नीचे क घर की अपेक्षा ऊपर की

नेप्टेशिया १ x शक्ति ।—सन्निपात ज्वर के लक्षणों में दिया जाता है

आर्गेनिक ६, ३० शक्ति ।—पाकाशय और अन्न पर असर करने वाले पृष्ठ में तथा सन्निपात के लक्षणों में यह दवा दी जाता है । बहुत प्यास लगना, दस्त और उबला रान में बरना लक्ष्यहानि यदि चहूर पर मुदनी निगलन में उष्ण पद में चरन राग में सुखी डूबना पेशाब यह दवा या कम हाना श्वास कष्ट हृत्पिंड की उत्तेजना । नाडी भ्रम तथा एक ही न चलना प्रायः मालूम होता है, टा पर्वत माना ।

मादयूगियस कर ३ शक्ति ।—गाठों के, पाकाशय और अन्न के लक्षण उपस्थित हान पर यह दवा दी जाती है । बरना बहुत शिर दद नाभ और भ्रुह से रून गिरना उबला हाना रागों में दगाद सा मालूम पडना और दई दगा मानों गांठ पृष्ठ उठी है हृत्पिंड का पद्व उदर पर होत नाडा कम अनियमित पसान बहुत माना ।

कॉर्नाजिटेरलिस १२ शक्ति ।—बहुत कठिन, सांधा अथवा शरीर के ठंड होने का अवस्था नाडी छोप, टंडा पभात श्वास तत्र टंडा हाना, सय शरीर घरफ की गन्ध उडा आदि लक्षणों में यह दवा दी जाता है । और धातु हैस की गिरना के ध्यान में दया ।

रगतम ६, ३० शक्ति ।— अधिक ज्वर, बेचैती शरीर, उदरामय तन्द्रावता (तद्रा ध्यान नीदसी माना) शरीर में दद, धार २ नाभ से रून गिरना, पापनी और

निस्तुय को जड़ की गाठ मूर्जने भादि लक्ष्णों में यह दवा दी जानी है अर्थात् सत्रिपात के लक्षणों में इस से बहुत फायदा होता है।

पाटुरोजीनम् ६, ३० शक्ति । रोगी के अर्थात् मृत्यु न होकर ज्वर तेज हो, सत्रिपात के लक्षण दीर्घ पड़े, फेफड़ा मात्र और पाकाशय के लक्षण दिनधारे पड़े, पचना भादि लक्षण उपस्थित हो तो यह दवा आश्चर्य रूप में फल दिगन्तता है। यदि दो एक मात्रा से आराम न हो तो धैर्य के साथ और भी दो एक मात्रा देना चाहिये।

वेदीयागा ३x शक्ति ।—गाठ घटने की पीडा में यह एक अतिशय भोग्य है। बहुत से रोगियों को इस से फायदा हुआ है। गाठ कटी हो उस में मवाद पड़ना, गर्दन और गला सूज आय यदि ऐसे लक्षण हो तो यह दवा देना चाहिये। फूँको हुए गाठ के ऊपर अंगान के लिये इस दवा का मूत्र छूट या १ + शक्ति व्यवहार करना चाहिये।

प्रतिषेधक उपाय ।—यदि चारों तरफ ज्वर रोग फैला हुआ हो तो नाँवे बिये हुए लिपनी का पावन करना उचित है।

(१) हमेशा साफ गद् और साफ कपड़े पहिन घर के भीतर तथा बाहर किसी प्रकार निवाएन न होने दे। ररने के घरेमें हवा मान जान क लिये माग रहना चाहिये तथा एक घर से बहुत से आरमियों को बहाए न रहना चाहिये। ज्वर रोगी अथवा उसके कपड़े बिहने भादि कपड़े न हुन चाहिये। नाँव के घर की दरवाजा ऊपर की

नेष्टेशिया १ x शक्ति ।—सन्निपात ज्वर के लक्षणों में दिया जाता है ।

आर्भोनिफ ६, ३० शक्ति ।—पाकाशय और आंतों पर असर करने वाले पद्यों में तथा सन्निपात के लक्षणों में यह दवा दी जाती है । बहुत व्यास लगना, दस्त और उष्ण रक्त में यकृत क्षयहीन शक्ति, चहरे पर मुदनी, निगलन में दृष्ट पट्ट म नग्न राग में सुइसी दूबना पेशाब बंद होना या कम होना व्यास कष्ट हृत्पिंड का उत्तेजना । नाडा मृत्त तत्र एकही न चलना प्रायः मालूम ही न होना, टड परी न माना ।

माक्ष्यूरियस-कर ३ शक्ति ।—गांठों के, पाकाशय और आंतों के लक्षण उपस्थित होने पर यह दवा दी जाती है । यकृत वृद्ध शिर दद नाक और भ्रूह से रक्त गिरना उबटो होना रागा में दवाइ सा मालूम पडना और दई दवा मानों गांठ फूट उठा है हृत्पिंड का चब्द ठहर कर होना नाडा कम अनियमित पसाने बहुत माना ।

करोमजिटेवस्तिम १२ शक्ति ।—बहुत कठिन, सांघातक शरीर के टड होने का अवस्था, नाडी छोप, टड पभात श्वास तक टडा होना, मय शरीर घरल की गन्ध टड मान लक्षणों में यह दवा दी जाता है । और घात दई की गिरना के बयान में दलो ।

रगतहम ६, ३० शक्ति ।—संयुक्त ज्वर यकृत क्षय उदरामय तन्द्रावता (तन्द्रा अव्यक्त नीदसा माना शरीर में टड बार २ नाक से रक्त गिरना कनपरी और

६) एपूगेनिम जग की और एक अच्छी काला दवा है। जग फैलन क समय इसकी १२ वा ३० प्रतिदिन एक मात्रा सेवन करने से बहुधा जग क माकनष स रसा होती है।

(७) यदि घर में किसी को जग हो ता रागी घर में भलग एक तरफ एक सून मकान में रखना चाहिये और उस कमर दवा भान ज्ञान क लिये अच्छा तरा रास्ता रहना चाहिये। रागी का मल मूत्र उल्टा इत्यादि किसी एक घरतन में लकर भलग फेंक देना चाहिये तथा रागी क कपड़ों का उला देना चाहिये।

[८] इस घर में रागी रहा हा उसका अच्छी तरह स माक करन क बाद वह कम में लायाजाय, इसमें काबों लक पांसद छिड़कना अच्छे और रात की घूनि देना तथा कुछ दिनतक इसक दरवाज बिलकुल खुल रखना चाहिये ताकि सच्छे दवा इसक मातर जाता रह। पट्टय ।— पहिले पानी में साबूदाना पका कर उस में मसूर और नाडू का रस डाल कर दिया जाव। मूष सब स अच्छे पण्य है। इना २ मसूर दाल का पानी ना दिया जासकता है।

विसर्प ।

[यूर्तिसापलम्]

घमड के मोथ घाल कोष में तन्मों क विसरप प्रद ह क घर का विसरप राग कहत है। साधारण तरह पर राग चाट लगन से या तून बिगडन क कारण उत्पन्न है। यह भी एक सधामर राग है।

१८) इतरेति नून की और एक अर्द्धा रोचन वाली दवा है। नून पैलन के समय हमें १२ वा ३० मिनट दिन एक मात्रा भक्षण करने से बहुत नून राग के आक्रमण भ रक्षा होती है।

(७) यदि घर में बिभी को नून हो ता रागा को घा में भक्षण एक; तथा एक गून मजान में रखना चाहिये और इस वमों दवा भक्षण जाने क लिय भण्डा गरह राखा रहना चाहिये। रागी का मूल मूत्र उलटी इत्यादि बिभा एक घण्टन में लहर भक्षण पेंक देना चाहिये तथा रागी क उल्टी का उला दना चाहिये।

[८] त्रिम घर में रागा रहा हा उनको भण्टी तरह से भाक करन क बाद यह काम में लायाजाय इसमें कावों लक एसिड लिङ्गना लक और राट की घृति दना तथा कुछ दिनतक एक दरवाज विन्डुल खुले रखना चाहिये ताकि भण्ड दवा इनक मात्रा भर्ती जाना रह।

पटप १— पहिल एका में सावूदाना पका कर उस में लक भार मू का रस डाल कर दिया जाय। नूध मय स भण्डा एक है। कर्नी २ ममूर दाट का पावो भी दिया जायकना है।

विसर्पः ।

[पूर्वाभाषणम्]

घनद के नास वाले काय में तन्मों क विशेष श्रु ह नून चर का विसर्प राग कहत हैं। साधारण तरह पर यह राग थोटा लगने से या गून विण्डने क कारण उत्पन्न होता है। यह भी एक सद्यनक रोग ह।

लक्षण ।— मरुत्मात् कण्ठयो, शरीर में ज्वर, उष्ण पीडित्वात् बहुत लाल रंग का, मूत्रा हुआ और गरम, उममें ज्वर हान और दद हाना, शिर दद हुर और गल के नली के भातर दद इत्यादि लक्षणों क साथ साधारणत इस पाडा का प्रकाश हान है । यह रोग कितन दिन रहता है इसका कुछ निश्चय नहीं पर मे दा मशर तक रहता है । यह प्रशर ममश व्याप्त हाकर मय गहर पर केर जाता है । आँखों के पलक इतने सूख जात है कि आँसु का पुनली दिखता है नहीं पडता । शय घमर क उपर छोटी २ कुभियां हा जाता है । इन क पूरन म पनामा गिरन लगता है अथवा कहीं २ मयाद् माया जाता है । शय पैर माकास्त हान म कुश शरीर में मा व्याप्त होमकता है । नाडा मरु अधिक उपर मूत्र न लगता मभिष्क के लक्षण उपस्थित हाना और बकना मादि लक्षण उपस्थित हाकर रोग का सांभानिक रूप हाजाता है ।

चिकित्सा ।— एफोनाट ३ शक्ति- अत्यन्त उर प्रशर शवेना मगु मय ।

वेलेडोना ३, दी शक्ति ।— मूत्र हुय ज्ञान का काल रगत और विदना अत्यन्त उर बकता मफल गरम पैर टड म हा मूत्र और कृत्ति शिर दद व्याप्त और पाहित ज्ञान में बकक बकता ।

पथमेट्रिग दी शक्ति ।— एर ज्ञान मच्छा हाकर कति रोग शिर विधा मूत्रर ज्ञान में हा ता दिवा ज्ञान है । वेदा का ज्ञान वेदा मूत्रा मा मागुम हा विशयकर मय टनी म लक्षण शिर दद उरगमय । *

गार्डभोनिया ३, ३० शक्ति ।— जोड़ की जगह में पीड़ा हो हिगान में पड़ती हो, रोग हटजाते पर आस कष्ट और उदरामय आरम्भ हो ।

एपिस ३, ६ शक्ति ।— आँसों में पानी भरना, पुंसियों का झाला कर्मी पैनी रा, उलन, धयके चलना, चोट लगने व कारण पीडा ।

आमेनिक ३, १२ शक्ति ।— अत्यन्त घेचैनी, विशार, शरीर में पीच की ओर गडों के पास घाछे स्थान का आशान्त होना सडना प्याम ।

केन्चैरिस ६, ३० शक्ति ।— नाक के ऊपर से लहर दोनो ओर क मथनों पर विशेष कर शक्ति आर आशान्त होना फफों के साथ प्रशर उलन अत्यन्त प्याम किन्तु पादी पीच की अनरुपडा ।

रसटकस ३, ३० शक्ति ।। लान लान रग के फफों, अत्यन्त घेचैनी ।

एद्य १— यदि रुर होतो पानों में भारुसात वा वार्गी इसर उरयान्त पुष्टिपर पद्य मूय इत्यादि देता मच्छा है ।

सान्निपातिक विकारज्वर ।

(टाइफस फीजर)

यह रुर समानक और सापानिक होता है । शीतल रुराउरर मद्यात तात पुमो घाणे रुरो की तरह इस में ना एक प्रजा का मिव होता है, आ रुर ज्वर

रहने हैं जिन की सहायता में यह विष उनके शरीर में सहज ही प्रवेश कर जाता है। यह कारण राग के भावमय करण में अधिक सहायता देने हैं। कारण यह है — (१) अमिताधार अथवा खाने पीने सोने इत्यादि स्वास्थ्य सम्बन्धीय नियमों का पालन न करना; कम खाना अथवा पुराने किसी राग के कारण स्वास्थ्य विगड़ना । (२) बहुत आदमियों से भर चुप कम स्थान में रहना जहाँ अच्छा तरह से हवा न आती जाना हो; (३) स्वयं अथवा परिवार का मैलापन (४) अधिक मानसिक भ्रम बिना अथवा रोग का भय होने से उदासा। इन्हीं सब कारणों से साक्षिपात विकार ज्वर शरीर आदमियों को अधिक होता है जो बहुत आदमियों से भरे हुये मैले स्थानों में खेटर घरों में एक साथ बहुत से आदमी रहते हैं।

लक्षण — (१) अत्रकाशावस्था; यह अवस्था प्रायः २ दिन से १२ दिन तक रहती है कभी २ छ दिनसे अधिक नहीं रहती। इस अवस्था में सर्जनी लगनी है साधारण तर्कतीय और तर्कपत कराव रहना, वैचैनी शिरमें दद, भूख न लगना आदि लक्षण उपस्थित होते हैं और कभी २ ऐसा भी होता है कि चार लक्षण दिखलाई नहीं पड़ते।

(२) आवनपावस्था; यह अवस्था अचानक अथवा क्रमशः आरम्भ होसकती है। साक्षिपात विकारके आरम्भमें कपकपी दकर बुखार आता है। यह कपकपी का बुखार लगानार दो तीन दिन तक होता है। शरीरिक और मानसिक अत्यन्त दुपटना इस ज्वर का एक प्रधान लक्षण है—रोगी बहुत ही जल्दी गिरजाता है। उठने की शक्ति नहीं रहता और दुबल प्रोजाना है।

का उत्पन्न करता है। यह विष बहुत आदमी से भरे हुए पुर्नोत्पन्न भीर ऐसे ज्ञानमें होता है कि जहाकी हवा मराने है। आत्यन्त दुबलता सब शरीर में बढ़ तेज बुद्धि और बलता भादि इस क विनाश ब्रह्मण हैं। और सजागत उदरी की तरह यह भी एक दफे के सिवाय फिर पुनरी बन नहीं जाता।

कारण । परिण ही कहा गया है, कि यह

उपर आध्यात्म क विकार क कारण विष से उत्पन्न और अन्य न मजामक है। यह विष क्या है सा मात्र तब निश्चय नहीं हुआ। यह विष रागी क समुद्र और फेंकने के निश्चयता है। रागी क शरीर से एक प्रकार बहुत आती है। इस उपर का विष बहुत दूर तक नहीं जासकता है। इस का भाव क्रमण हीन तक जाता है। रागी क व्यवहार और दूर दूर भाव से प्रकृति तरह साधन रसम क हिस नहा ना बच आत्मन दूमर आत्मने इस क उत्पन्न वदुवन मजामक । उपर रागी का आराम हान लगाने लवण इस विषका छुन दूमर पर पदन की प्रसिद्ध भावक रूपक है। क २ कहते हैं कि बहुत आदमियों से म दूर ज्ञान में अर सम हान से भी यह विष उत्पन्न होजाता है। दूमर का कहते हैं कि तब सब प्रकृति विष उत्पन्न करने में सहयोग करना है और विष उत्पन्न करने का इन सब धनकारों में बढ़ जाता है।

पुनोत्पन्न, क उत्प । --- इस उपर का विष सब क उच से तरह से प्रकृति कहना है वह सब यदि है कभी क उत्पन्न में वदुवन से दूमर का पुनरी होना

रहने हैं, जिन की सहायता से यह विष उनके शरीर में सहजरी प्रवेश कर जाता है। यह कारण रोग के भावमय करण में अधिक सहायता देने हैं । कारण यह है — (१) अभिताचार भयात खाने पीने सोने इत्यादि स्वास्थ्य सम्बन्धीय नियमों का पालन न करना; कम गाना भयवा पुराने किसी रोग के कारण स्वास्थ्य विगडना, । २) बहुत आदमियों से भट हुये ऐसे स्थान में रहना जहा भच्छी तरह से हवा न आती जानी हो । ३) स्वयं भयवा परिवार का मैलापन (४) अधिक मानसिक धम, विता भयवा रोग का भय होने से उदासी । एहा सब कारणों से सन्निपात विकार ज्वर गरीब आदमियों को अधिक होता है जो बहुत आदमियों से भट हुये जैसे स्थानों में होटर घरों में एक साथ बहुत से आदमी रहत है ।

लक्षण |— (१) अकालीयम्पा, यह अवस्था प्राय २ दिन से १२ दिन तक रहती है कभी २ उे दिनभ अधिक नहीं रहती । इस अवस्था में सनी लगती है साधारण तबलीय और तबायठ खराब रहना, पंचेनी तिरमें दर्द, भूख न लगना आदि लक्षण अवस्थित होत हैं और कनी २ पेमा भी जाना है कि कार लक्षण दिखलार वही पडने ।

। २ आकालीयम्पा, यह अवस्था अचानक भयवा अचानक आरम्भ होतवती है । सन्निपात विकारक प्रारम्भमें कपटया देकर सुधार आता है । यह कपटयों का सुधार लगानार का तयन दिन तक होता है । उदीरिह और मानसिक अलम्प दुपडना इस ज्वर का एक प्रधान लक्षण है—सोनी बहुत ही ज्वरी विरहाला है । उन्ने की लम्ह नहीं रहता भट हुयन गोजता है ।

सब अङ्गों के पट्टों में दर्द मातुम होता है और हिलाने हाथ पैर बाधने हैं। आयोगिक विचार क लक्षण धी मर्गी तरह प्रकाशित हाकर प्रयत्न होजाते हैं। मध्यम शिर दर्द माया भारी और माथ में लपकन, पुमता, गुठ गुनाह कम पटना का मंतरहर के पुनार पन्ता उठाया हुआ मातुम होना, येथैनी तर्कीय क माथ नींद आना परतु अन्तर हागकी लगा रहना आद प्रधान आयायक लक्षण हैं। मानि भयम्भायी गीक नर्दी रहता—स्थान समय सामने हाता है, कानर आरमी लुट है यह सब रागी ठाक वनबाय सकता, आग दिन आग्ने दिन के मातर व मुक हाता है। परित्र इस वकन की हागत दरयक एष नर्दी रहती इस त्रिय रागा का उतान क कभार प्रय उलर वा मी सवन है। यवन क नरव्या हमसा सब एहमी नर्दी हाती कमा वन रर आया कमी यडे क ववन लमता। मी १५५५ उ कमादा हाजाता है, क आस पास क विमी यरना का नर्दी सामम सकता क आग्ने गगल हाजाता क भाग चरर का रगत क कर्दी।

त्रा विर ना नर रती हागत नर्दी हाती । परित्र नीकी आ माग्ने रागा मैर क कर्दी हुए है हिम्नु उन्द हा गुडर गग का हाजनी है । रागी का कानर विररर रर विरर नर्दीरध मदन हिम्नु क रदी । वदुन एष क मूय विरररर क लमता प्रहमा क रररर य क कर्दी, कदुमय तथा प्रय विररी क आदे कया हाता है। एर क वदुन एषम नर्दी वदुन

गौर मरी हुई घड़कन मिनट में १०० बार और कभी
 बाह्य दुष्यष्ट रस और ऐसी मालुम-दात्री है मानो एक
 साथ दोषार घड़कती है। सर्दी और खासो प्रायः घड़ती
 ही है ।

(३) स्फोटारवस्था साक्षिपानिक विकार ज्वर को फुसिया
 प्रायः चौथे या पाचवें दिन निकलता है किन्तु अभी २
 तासरे दिन से सातवें या आठवें दिन के भीतर भी निकल
 लाने हुए देखागए हैं। बालकों के प्रायः फुसो नहीं निकलती।
 यह फुसिया कलाई के पाँच की तरफ घगल में और पेट
 के ऊपर सत्र से पहिले दिखलार पड़ती है तथा पाँचे
 शरार में और हाथ पैरों में निकलती है। चेहरे पर या
 गरदन में एक भी नहीं दिखलाई पड़ती। साक्षिपात की
 फुसिया एक या दो या तीन दिन के भीतर ही निकल जाती
 है। इस के बाद फिर और नई फुसिया नहीं निकलती है।
 बैठने के समय भी निकलने की तरह सत्र फुसिया एक साथ
 बैठजाती है। फुसियों के टहरने का कोई स्थिर समय नहीं
 है यह प्रायः १४ वा २२ दिन के भीतर बैठजाती है।

स्फोटारवस्था में पहिली आक्रमणारवस्था के प्रायः सत्र लक्षण
 बढ जाते हैं। रागी अत्यन्त दुयल होजाता है/ विस्तर से उठा
 नहीं जाता और उसके होशहवास में सरक पड़जाता है।
 रोग में दिखने मुलने की भी शक्ति नहीं रहती, चित्त पडा
 रहता है घायें मुगी हुई या अक्षिमुली रहती हैं धीरे २
 बढा करता है और प्रश्न करने स कुछ उत्तर नहीं देता,
 होत २ ऐसे विटहन अज्ञान होजाता है एहे कायन और
 सुदुडने लपने हैं विटैना साँबने लगता है अभी २ वापट
 भी आने लगते हैं ऐसा भी देखाजाता है कि रोगी की

रने पर पड़ जाता है । जीम चौड़े समय में साफ हो जाती है ।
सूय बढ जाती है । और सप्रिपात क विकार का ज्वर फिर
आक्रमण नहीं करता ।

शरीर की गरमी ।—साप्रिपातिव विकार ज्वर में शरीर
का गरमी क विषय में अच्छा तरह समझ लेना बहुत
जरूरी है । यह गरमी चौधे या पाचवें दिन के सम्भवा
समय तक धीरे २ बढता रहती है । उस समय सुषुप्त
को स्वर विन्दुल कम नहीं होता । इस ज्वर में शरीर
की गरमी कभी १०४.२ अथवा १०५ डिग्री से कम नहीं
होती परन्तु कभी कभी १०७ डिग्री तक बढ जाती है ।
यदि राग बढित हो तो तीसरे या चौधे दिन सप्पा के
समय शरीर गरमी १०५ डिग्री और सामान्य हो तो
१०३.५ डिग्री से ऊपर नहीं बढता ।

पचियाम और टहताव ।—दामिपोपेथिच चिकित्सा से
अधिकतर रोगी आराम होते हैं । इस रोग से मृत्यु संख्या
सैकड़ों पाठ ४ १५ वा २० तक होती है । यह रोग
अधिक १४ दिन बिन्दु कभी कभी २१ दिन तक टहरता है ।
उपगत प्रसन्न होने पर रोग बहुत दिन तक भायता
रहता है ।

चिकित्सा —

- १। ज्वर के लक्षणों में—एचोकाहट, अन्वयिषां अँटासि
निचम देपटीशिया ।
- २। अलिप्त टहताव—हामोसन्दस बटेडाम, बेरादम
बिदि ब्रुमोबिचम देरोबिन्द ।
- ३। अवेदा—अदिता बटेडाम अँटासि निचम ।

४। मोक्षमाय (वेदोशी, — औषधीय, रसटङ्गल) ।

५। मध्यम बुद्धिमाय—एसिड-गिगूटेडिक आसैतिक, एमि
वासायित ।

६। कृतेने लक्षण—कोल्फोरस, मात्रोनिया, एसा
माय ।

७। पश्चात्त [मकरा] रसटङ्गल सिद्धयनियां, विज्ञ
व्यापना ।

८। गहन—कायावक्रियानिष्ठ, आसैतिक, रसटङ्गल
वर्ग । गवा ।

९। आशय हान क समय म—एसिड कोल्फोरिक, एमि
वासायित वायता सायित ।

अथ मध्यम मे ।—मध्यम मानसिक पद्धि म के वा
वचनक यदि अथ हयानिन ना तथा मध्यम बुद्धि
माय इ ना त्रैयामियम, अथ क प्रारम्भ मे ही मय
लिङ्ग इय अयना शान का कम हाता और जाराय ई
का मन्दा ज्ञाना एते वर मयानिया पदिक साय
अथ मन्दा ज्ञाना एते मे मयहन माय का पता अथ
जिज्ञास म दूय वचना मार आ कामरानी कता हा इ
क विद्य मे वचना ना ना प्रायजातिया दिया ज्ञाना है
मन्दिनक वा मयान क लक्षणो क मयान्य मे
म मयान्य मे एते क इह हाता मयान्य ही घमनीया मे
अथ अथ मयानी मयान्य आर २५ वचना हा ता अरुदना
कामर । मन्दिनक क लक्षण यदि इन ज्ञाना क मयान्य मे
म = बुद्धिमत् क मयान्य ही। एमी मयान्य मयान्य मे
म मयान्य हा म मयान्य मे मयानी इरे मयान्य वचना और वि
म मयान्य क मयान्य मयान्य दि लक्षण मे एते मयान्य

दिया जाता है; बिहार और बरुने के तराय इतन अधिक हों कि रोपी मचानक बहुत दुबल हो जावे और मृत्यु सम्भव मात्र हो तो स्नामोनिपन दिया जाता है; बच्चैनी और हाथ पैरों का कपना साथही बिछौने से उठने की इच्छा करता हो ता एगारौकास; ज्वर का घेा कम हो किन्तु छायाविक दुर्वलता अधिक होता फास्कोरिफ एसिड बार २ बहुत जोर से बचना और कभी कभी पेहोश हो जाना घराटे के साथ भ्यास बचना भयवा माहनाथ इतना अधिक होना कि मस्तिष्क क पराधात की सम्ना घना हो, पेशाब घन्दहान और इनी कारण पेहोशी हाना इत्यादि हालतों में भापियम दते हैं। पेहोशी की हालत में घदबूदार दस्त होना जीन के ऊपर काले रंग का सैप्पा इकट्टा होजाना इन हालतों में रसदरस दिया जाता है। पेशाब घन्द होने क कारण घापटे आना, घमालुम दस्त निरस्त जाना अत्यन्त दुर्वलता, जीन सूजी और फटा हुई होवे से मासैनिक दते हैं।

जिस गाठ से तार निकलती है उसका सुजना और प्रदाह होते मरफ्यूरस-विवापड मोनफाटिस होते सेनगा भयवा एटीमिनीडाट; पेंफट के लक्षण और छायाविक दुर्वलता होडा फास्कोरिस गलन होना मालुम हानो मामनिक भयवा कार्वोथिडिरेवलिंस ।

एकोनाईट ३, ६ शक्ति ।— अत्यन्त कृत्यका भय मलक छाबी मालुम होना । तलाट पर घार और मारी मालुम होना माने मस्तिष्क से ऊर्ध्व जोर के साथ निरुत पडैगी अतन क साथ तार दद ऐमा मालुम हाना कि मस्तिष्क में गरम एना घूनरहा है । तत्र प्रदाह क लक्षण लड प्रपान

और ताज्जतर भाइमियों के लिये यह बहुत फायदेमन्द है।
 एपिम ६, १२ शक्ति ।— माहमाय और उसके साथ २ भाइस्तो २ बचना नींद सी आना और पीच २ के जोर से चिन्ता उठना, जीम में सूफन सूफी और करीब तथा घाय होगये हों और मुश्किल से निकाला जाय। एपि मारी ४ म्याग का झुनेम दर मातुम होना, पेट में इत और भयग वार २ यद्यूदार येमातुम दस्त होना। पेशाब बन्द होना भयत दुर्बलता और विज्ञान में वार वार खिसल जाना।

अर्निफा ६, १२ शक्ति ।— गुमहोजाना, यमडे क ऊपर कुछ २ पील रंग क और बडे २ पीलापन लिये हुए रंग के दाग हाजाना बहुत यथायत मातुम होना इसी कि मद्दतुम विछीन में पडा रहना तथापि एसा कहना में विच्छेद अच्छा ह, वात कतर मूत्र जाना, प्रथम उल्ला देनकी इच्छा न करना, तिर क नीतर गडबड मातुम होना और लगाट में दादिना और कोफ मातुम पर खाने भान न बचना सात समय यमका देनेवाले हाता विछीना बहुत कमा मातुम हाता इसी लिये सतक कर मोने की इच्छा करना होर और जीम म्हुं न न का हाट कायना ये मातुम पशाब और विच्छेद जाना दागा क यमडे क ऊपर सून जम जाना यमहरी न नवारी नने नीली पदजा।।

आर्मेनिक ६, ३७ शक्ति ।— भयान्त्र बेधेनी चिन्ता मूत्र ३ दिवगिनर, तिर और हाथ पैर चलना बन्दे कनक मा ३ लज्जना हाट मूत्रजाना, कटजाना मार उर के ३ अर जाना जीम काट रग की और यमडे

तरह, मुह सुखा हुआ और प्यास धारदार किन्तु घोंडा पानी पीना, उम बड़ी पड़जाता आवाज साफ न निकलना, टहर टहर कर बहुत उलटी आना ये मालुम पैसाब निकल जाना दुपलारन आर कायना और हरर नगरी तरह भाषाज निकलन नाही तेज छाटा कापती हुए आर टहर कर चलना हुए ।

वेष्टेसिप १×३× शक्ति । - नर के माथ की और बिना हा स्थिरता न रहना अत्यन्त स्थापविक धमिरता विशेष कर पत्रि में, फिर हृद मना बंधै दिप देता है माया मानो पूर्ण हुआजाला है उस पूर्ण के हृदय करन की चला, विद्यान पर एसा मालुम होना कि आर आर हुआ सोरदा है, हाथ बड़ मालुम होना एसा में हृद विद्यान बड़ा मालुम होना, दुग्ध सुद्ध मल, मूत्रादि निकलना ।

वेसेडोना ६.३० शक्ति । - विषार की पहिली अरुन्धे मसिण्ड के मंतर हृद अथिह मालुम होना अत्र एह वेहरा और माथे गार एव ही, बाँद बहुत आना परन्तु मोन नबरा मोन समय बी ह पडना, जोरस पडना मालुम, पाम ह भाग्नी का करना काटना कपडा ऊपर धुकर एह आर टहरती कापहर एकरा, माथ पर पले में आर एव में चमकी का बहुत पडचना ।

जेन्मिदियम १×३× शक्ति । - अरुण्डस्य में अत्यन्त दुःखना ह कापट काटना हृष्टा हरन परनी एव है अतिर बडना मालुम एह और मालुम अग में हृद नगी मालुम एव एसे में हृद मालुम होना, हृद

भाषा सोता हुआ कर्मी भाषा जगता हुआ माउन्
वेमिल्लिने वचना, शिर धूमना तथा छायाविक
वा यग ।

कारोत्रिजीटेविलस १२, ३० शक्ति ।—

मदध्यामे तथा वेसी अवस्थामे जयति मृत्यु निवृत्त
हे तव यह भीयति बहुत पायदा करती है । सय
शक्ति मिया मृत्यु हाताय, हाय वेर ठडे और उ
पक्षीना आता हृदिषण्ड बन्ध होआना, गाडी बहुत उ
तन भीर छाटी तथा कराव २ डूयी हुई, वेहोशी, प
वतान पर मी खेत न करना, जानों से सुतार
भीर माणों स न दीणना, नाक धीर मुह से मृत

हाओमापमस ३, ६ शक्ति ।— पूरी वह

इन्द्रियों की क्रिया ठकी हुई मयो इष्ट मित्रों को
आजना धीर २ और गडबड वचना वदत २ वि
बेचना बहुत वौनी विष्ठ न स उछल उठना
अथवा साह न निवृत्ता मउजान सुय और
वेनाटुम विष्ठ न पर मल त्याग, सामन की थ
वही वा मलर्न हुए दीनता प्रसन्न करने पर डीक
किन्तु धाटन २ फिर वदत लगना शरीर क क
का शरीर लुटा खान की इच्छा करना गल
मुहदव मरुन हाता, कोर धीर निगल न म
चिह्नितान वमड की मनमय शक्ति की मवि

मृगुमिष्टिक एभिड ६ शक्ति ।— दिन मे

कोर मल वे मी न न मल प्रर मरुदध मरुदध
इन्द्रियों की मरुदध प्रर मरुदध मरुदध

की तरह भारी, इस लिये मुह से घात न निकलना, नीच के जावड का लटक पडना, घेमालुम मल मूत्र निकल जाना, नाडी तेज किन्तु अत्यन्त दुर्बल, अत्यन्त दुर्बलता ।

श्रोत्रियम ३ शक्ति— नोंद आना या बेहोशी, किसी तरह से जगाया न जासके अथवा यही मुशिक्रम के साथ जगाया जाय, घोल घम्द, आँखें खुला हुए, हाथ पैर सख्त, साँस धारे धीरे चलना, लम्बे गहरे भ्यास की तरह, गले के मीठर रूप घटघटाने का सम्भ होना, कम्भ अथवा दुग्ध युक्त पानीसा उदरामय, घे मालुम दस्त निकलजाना, पेशाब रुन्द होना ।

रसटाक्स ३० शक्ति ।—प्रथम का ठीक उच्चर देना किन्तु आहिलर, धक्का, सिर दद करना, आँखें खोलने और इपर उपर देखने में तकलीफ घटना, नाक से खून गिरना विशेषकर आधी रातके बाद, होठ सूखना, जीभ का आगेका भाग थिकानाकार लाल रंगत का, उदरामय, रात में बहुत दस्त होना, सोतेर घेमालुम दस्त होजाना, खासी प्रत्येक भग में घात गठिया) का सा दद, स्थिर रहनेसे दद घटना, हिलनेसे और करघट पदलने से कुछ आराम मालुम होना, हमेशा बेचैन रहना और तडफडाना, बेचैनी के साथ नोंद आना अथवा नक म्भ्र दाखना और धार धार जग पडना, गाँठ खुनी हुए, ठंडा पाना और ठंडा दूध पीने की इच्छा करना अत्यन्त कमजोरी और यथावट ।

ऊपर लिखी हुए औषधि के सिवाय लक्ष्मी के अनुमार और बहुतसी औषधिया दीजाती हैं । नीचे लिखी हुए दवाएया मा इस लिये प्राय जरूरी पडतीहैं—पगाराँक्स, माओ

मीया, थायना, बोफूलस, हेनीपोरस, लैकेसिस लॉ
 कोपोडियम, मारफूरियम, नक्सवामिका, फास्फोरस, फे
 स्फारिक-एनिड, स्ट्रामोनियम ।

सहकारी उपाय ।—सज्जियात धाले विजा
 श्वर में स्वास्थ्य रक्षा के नियम पालन करना और
 रोगी की सेवा शुश्रूषा करना औषधि की अपेक्षा
 अधिक आवश्यक और उपकारी है । बहुतों की यह राय
 कि औषधि के द्वारा इस श्वर की गति को रोकना अथवा
 इसका अर्थ हटा देना नहीं हो सकता किन्तु रोग बहुत
 साधारण न होनाय इस त्रिय स्वास्थ्य रक्षा के नियम पालन
 करना और मन लगाकर सेवा शुश्रूषा करना तथा जीव
 शक्ति की सहायक लिय अच्छी सज्जियात का
 सेवा का सेवन करना अत्यन्त आवश्यक है ।

इस रोगक गुरु हानही रागीका चारपाईमें लिटा देना चाहिए
 और देन उपाय करने चाहिये कि जिससे वह स्थिर र
 बाह भी कारण न पहा तक कि मूत्र त्याग करने
 स्थिति भी विद्योत में उगना टाक नहीं । शारीरिक अथ
 मानसिक मद्य प्रचार का परिश्रम वर्जित है । रागी के
 में मद्य न रहनी चाहिये तथा मात्र जाने के लिये रा
 रचना चाहिये, रागी को पूर्ण आराम मिले और कि
 मद्य का अर्थ मद्य यह परम आवश्यकियत है । बहुत
 स्वच्छ वायु की रोगी का अत्यन्त आवश्यकता है इस वि
 मद्यन के विरुद्ध दवात्र अर्थकर बहुत में आराम
 का इस में देन रहना उचित नहीं ।

यह राग मकरन्द है । इस स्थिति संक

(११) निवारण करने की उचित रहती है । रोगी को व्यवहार किये हुए बपड़े तथा और और चीजें अच्छी तरह साफ होय हुए चीये बिना किसी दूसरे के काम में न लाना चाहिये । रोगी का पिछोना और शरीर के बपड़ साफ रहना जरूरी है ।

एम्प्रा—एह पांडा ३५ दिन तक टहरने वाली होसकी है इसलिये इतने क्रिस तक रोगी को सहज में बपड़ी तरह पचन धाला तथा पुष्टिकर माहार मोहार देना चाहिये । बारंबी बरारोट और यदि पेट की कुछ गडबड न होतो पाडा २ दूध दिया जासकता है । बाबुनी बनार का रस अच्छा पच्य है । पाडा के बाल में दाल दलिया भयवा और कोई देसी चीज इमकन है । रोगी को जगाकर भोजन कराने की आवश्यकता नहीं किन्तु यदि जगला होतो दा तीन घण्टे के अनंतर स कुछ पाडा २ खाने का देना चाहिये । पानी जितना रपटा हो पिलाया जासकता है । यदि मुह का विपलन वा शक्ति न हातो माहार स धार की चीजों की विषकारी देना आवश्यक माना है ।

यदि बाल रहला हातो गरम पान में साबुन मिलाकर विषकारी देना अच्छा है । विचार के लक्षणों में पच पाकर रोगी को अच्छेला उदमा मिलेगी । तथा यदि बहुत विचार भरत है तो उसपर दौध करना तथा बसमोप द्रव्य करना अच्छा है । बहोला के मजब रोग को कुछ बड़े रसक कारम रस को कारना वा बनवाना नहीं नहीं चाहिये ।

ले। उप अच्छे ही गतये नब उरुको होउलगाभे रकना कन्द
रपड है । एउ तरह काला चरिचम कपरा कथिरदि

आहार उचित नहीं । इस रोग के बाद मायदया बढ़ना बहुत अच्छा है ।

शुक्रिय, पञ्चमे, सप्तमे, नवमे, त्रयोदश इत्यादि अयुग्म दिनों में रोग बढ़ता है इस लिये इन दिनों में सावधानी और होषियार से रागी व पाभ विषय कर रात्रि में आदमा रखना आयदयकई इस बात पर ध्यान रखना चाहिये कि राग के बढ़ने के विभासानी से और अच्छी तरह कटनाये । उचित औषधि तर्जवीज होत से प्राय इस प्रकार रोग नहीं बढ़ता ।

आतिसारिक विकार ज्वर ।

(टाइफाइड फीवर) ।

यह बहुत स्वाभाविक और तरुण ज्वर है । यह प्राय २८ दिन अथवा इस से अधिक रहता है । इस का वातद्वैभा विकार ज्वर और आंत्रिक ज्वर भी कहत है ।

कारण ।—यह ज्वर एक विशेष प्रकार विरसे उत्पन्न होता है । सत्रियात विकार ज्वर से यह बिलकुल जुदा है । यह सत्रामक नहीं होता । रोगी का मल ही विषाक्त हो जाता है और उसी से यह ज्वर पैदा होता है । रोगी के मूत्र से दूषित मांस उत्कर हवा को जहराली कर देती है, इन्हीं जेहराली हवा से रोग उत्पन्न हो सकता है । एक कारणही यह रोग मनुष्य को लगजाता है । किसी तरह भेभी विषाक्त मल पानी के साथ मिलकर इन पानी का पीना है उन्हीं को बीमार करदेता है । पानी मिला हुआ दूध भी इन बीमारी का दुबरा कारण है ।

जमा कभी आतिसारिक विकारके पीछे मलम निकलनेके

समय तीव्र और तेजशाली नहीं रहने, यह निकल कर विशेष किमी किसी अदसा में संरोधित होने पर उत्स्रेघन किया द्वारा अघात किसी तरह पर संचि जाने से अघातक आकार धारण करते हैं। यह रोग हूठ से नहीं होता। इस रोग के मूत्र में रहने पाल बहुतही छोट जीव ही बीज हाव है जो कि दूध में प्रवेश कर असह्य बीज उत्पन्न कर देते हैं। जिस समय में यह बीज बढ़ते हैं उसीको इसको अग्रहाशावसा कहते हैं।

पूर्ववर्ती कारण ।—इस रोग का प्रधान पूवर्ती कारण उमर है। बहुत छोटे बच्चे अथवा बूढ़े मनुष्य को यह रोग बहुत कम हाता देया गया है। प्रायः १५ बय से लेकर ३० बय तक हाता है। छा और पुच्छ, घनी और हरिद्र, मयको सदान रूप से इस के द्वारा यामार होनेकी भाशना रहनी है। यदि पुराना अदसा और कोर रोग हो तथा गन्बनी द्वियोंको यह रोग प्राय नहीं होता। अत्यन्त परिधम मानसिक फल, दुयवता रहने पर इस रोगको हाता बहुत समय है।

लक्षण ।— (१) अग्रहाशावसा, आशिशि चर की अग्रहाशावसा किन्तने दिन टहरनी है इस का कुछ नियम नहीं है। यह अवस्था ५० दिन अथवा उन से अधिक समय तक टहर सकती है। इस समय विशेष किमी प्रकार के सद्य घतमान नहीं रहने। प्रायः यह अवस्था बहुत छोटे समय तक रह कर अघातक, उल्टी चर यदि उपस्थित होकर रोग अरन्ध होते इसा गया है।

(२) अघात आक्रमणावस्था इस रोग को हुआ हुआ

अवस्थाओं में विभक्त करना कठिन तो है, किंतु चुरे चुरे समयों में विशेष विशेष लक्षणों से इस के विभाग किए जा सकते हैं । आक्रमणावस्था बहुत धीरे धीरे उपस्थित होती है, इस लिये यह निश्चय नहीं हो सकता कि रोगी किस दिन बीमार हुआ है । शिर दद, शिर घूमना, कानों में शब्द, प्रायः सर्वदा शरीर में दद और आलस्य हाहा, धैर्यही, सोत समय बार बार जग उठना, घोड़ी घोड़ी सर्दी लगना उदरामय, भूख की कमी, जीम मैली, जा मिचलाना और उलटी होना इत्यादि ब्रह्मण रोगके आदि में देखे जाते हैं । कभी कभी पेट में बहुत दद होता है, प्रायः उदरामय ही एक मात्र प्रधान लक्षण प्रकाशित होता है । प्रायः बारबार नाक से खून गिरना देखा जाता है । इस के बाद हा ज्वर दिखलाई पड़ता है, यह ज्वर सग्या समय बढ़ता है । प्रायः यह रोग धीरे धीरे घे मालुम भाकर उपस्थित होता है कि रोगी बहुत दिन तक इस के विषयमें कुछ जान सकता है न समझ सकता है ।

प्रथमावस्था ।— इस रोग से शमार होकर पहिले आठ दश दिन के भीतर नीचे लिखे हुये लक्षण पाये जाते हैं । रोगी का चेहरा देखन से अधिक दुबलता नहीं मालुम होती । ज्वर रहता है, शरीर गरम प्रायः सूखा हुआ, कमी कमी पसाजा हुआ, नाडी का धडकन १०० से १२० तक कुछ कमजोर और कोमल, दोनो हाट सूखे हुये, व्यास लगना, भूख बन्द प्रायः जी मिचलाना उलटी हाहा, जाम पर सफद अथवा पाले रंग का मैल जमा हुआ और पहिले जीम का गोली रहना आदि लक्षण उपस्थित रहते हैं ।

पेट के लक्षण ।—यथा हृद विशेषतः पेट के मांस दाहिनी और छोटा बहुत पेट अवर जाना और उस में हवा भरजाना पेट दाबने में गड़ गड़ शब्द होना तथा उदरामय बहुत ज्यादा रहना । परीक्षा करने से तिथी बड़ी हुई दाँव पड़ती है कभी कभी आम्लों से रक्त गिरता है । उदरामय की लक्षा बढने घटने लगती है । २४ घण्टे के भीतर दस्तों की संख्या हाँस लकर बारह २० अथवा इस से भी अधिक दर्शा जाती है । प्रायः तीन स लेंबर ६ बार तक दस्त होता है । इन दस्तों के कुछ विशेष लक्षण है जिन के द्वारा आंत्रिक ज्वर के दस्त निषेध किये जाते हैं । दस्त की शक्ल मटर की पत्ती के पानी में भोंटे हुए के समान, दुग्ध और प्रायः पमानिया भाप के समान गंध । निकलते समय यह दस्त एकसाही रहता है किन्तु किस अरतन में कुछ समय तक रखने से उस के ऊपर पीछे पीछे रंग का पानासा सञ्चित होजाना है और नाचे छार हुए चीज के अंश, एपीपॉलॉयम, रक्त, आर्तों के सड़ हुए तुकड़ आदि नाचे पड़ रहत हैं ।

इस समय मसिष्क के लक्षण प्रकट नहीं होत । गिर हृद रहता है साथ साथ सिर घूमना है बार बारों में शब्द सुनाए पड़ते हैं । रात्रि के समय नींद अच्छा तरह नहीं आता, किन्तु मानसिक अवस्था ठाक रहता है रात्रि में भा रोगी नहीं बकता । उस समय नाक से रून प्रायः गिरता है और याही याही आँसू के लक्षण प्रायः रहत हैं ।

स्फोट ।—आंत्रिक ज्वर के सब स्थानों में न शतो

पेट के लक्षण ।—पचा ददं विशेषतः पेट के भाँचे दाहिनी ओर थोड़ा बहुत पेट अफर जाना और उसमें हवा भरजाना, पेट दाँवने से गूँट गूँट शब्द होना तथा उदरामय बहुत ज्यादा रहना । परीक्षा करने से तिहरी बड़ी हुई दाँव पढ़नी है कभी कभी आन्तों से रक्त गिरता है । उदरामय की तेजा बढ़ने घटने लगती है, २४ घण्टे के भीतर दस्तोंकी संख्या दो स टेकर बारह २० मयवा-हम से भी अधिक दया जाती है । प्रायः तीन स टेकर ६ बार तक दस्त होता है । इन दस्तों के कुछ विशेष लक्षण है जिन के द्वारा आन्त्रिक रज के दम्ब निषेध किये जाते हैं । दस्त की शब्द मटर की पानी के पानी में मीठे हुए के समान, दुग्ध और प्रायः एमानिया भाष के समान भाष । निश्चयके समय यह दस्त एकसादा रहता है किन्तु किस वाहन में कुछ समय तक रहने से उस के ऊपर पीछे पीछे रंग का पानीसा मश्रित होजाना है और नीच साह हुई पीछे के भाग, एपिप्लोप्लिक, रक्त आन्तों के सड़ हुए डुकड़ भाँचे भाँचे पड़े रहते हैं ।

इस समय क्लिष्ट के लक्षण प्रकट नहीं होत । फिर दद रहता है साथ साथ मिर घूमता है बार बारों में शब्द मुबार पड़त है । रात्रि के समय में ह बप्टा तरह नहीं आती, किन्तु आन्त्रिक कबला ठेक गड़ती है रात्रि में भ्रं होती नहीं बप्टता । उस समय बच में सूत्र प्रद गिरता है और दाहिं पीछे काँची ह बप्टा भाँचे रहते हैं ।

रसोट ।—कान्तिर उर के सब कानों में ३ शत

अवस्थाओं में विभक्त करना कठिन तो है, किन्तु इनके समयों में विशय विशय लक्षणों से इस के विभाजन किया जा सकता है । आक्रमणावस्था बहुत धीरे धीरे उत्पन्न होती है, इस लिये यह निश्चय नहीं हो सकती कि एक किस दिन बीमार हुआ है । शिर दद, शिर घूमना, कर्ण में शब्द, प्रायः सषदा शरीर में दद और माहस्य होने, घेघैनी मोत समय बार बार जग उठना, थोड़ी थोड़ी सर्दी लगना, उदरामय, मूत्र की कमी, जीम मैली, ई मिचलाना और उल्टी होना इत्यादि लक्षण रोगरूप में देखे जाते हैं । कभी कभी पेट में बहुत दद होता है, प्रायः उदरामय ही एक मात्र प्रधान लक्षण प्रकाशित होता है । प्रायः बारबार नाक से रून गिरना देखा जाता है इस के बाद ही ज्वर दिखायदा पड़ता है, यह ज्वर सामान्य समय बढ़ता है । प्रायः यह रोग धीरे धीरे वे मानुस मरण उपस्थित होता है कि रागी बहुत दिन तक इस के विषयमें कुछ जानसकता है न समझ सकता है ।

प्रथमावस्था ।— इस रोग से बीमार होकर पीछे आठ दस दिन के भीतर नीचे लिखे हुए लक्षण पाये जाते हैं । रोगी का चेहरा देखने से अधिक दुबलता नहीं मानुस हानी । ज्वर रहता है शरीर गरम प्रायः सूखा हुआ, कभी कभी पमाजा हुआ, नाड़ी की घडकन १०० से १२० तक कुछ कमजोर और कामल जाना हाट गूथ हुए, व्यास लगावा, मूत्र बन्द प्रायः जी मिचलाना, उल्टा होना जीम पर शब्द सषदा पीछे रोग का मैल जमा हुआ और पीछे जीम का माली रहना माली लक्षण उपस्थित रहते हैं ।

पेट के लक्षण ।

—यथा दद विशेषतः पेट नाचे दाहिनी और छोटा बहुत पेट बफर जाना उत्तम हवा भरजाना, पर दाघन स गड गड शब्द हो तथा उदरामय बहुत ज्यादा रहता । परीक्षा करने से तिह वदों हुर बाँध पडती है कभी कभी आन्तों से रक्त गिरता है । उदरामय का तर्जो बढ़ने घटने लगती है, २४ घण्ट के भीतर दस्तों की संख्या दस से लेकर बारह २० मयवा इस से भी अधिक दखा जाती है । प्राय तौन स लेकर द बार तक दस्त होता है । इन दस्तों क कुछ विशेष लक्षण है किन क द्वारा आंत्रिक ज्वर क दस्त निर्णय किये जात हैं । दस्त की संखल मटर की पत्ती क पानी में भोंट हुये के समान दुगंध और प्राय एमानिया भाष क समान गंध । निरलते समय यह दस्त एकसाही रहता है किन्तु किस दरतन में कुछ समय तक रखने स उस के ऊपर पीछे पीछे रंग का पानासा सञ्चित होजाता है और नाच साह हुर बाँध क मदा, एषापीडायम, रक्त, आन्तों क सड हुये डुकड भादि नाचे पड रहत हैं ।

इस समय मसिष्क क लक्षण प्रबल नहीं हात । निर दद रहता है, साथ साथ सिर घूमना है और कानों में शब्द सुनाह पडत हैं । रात्रि क समय नींद अच्छी तरह नहीं आती, किन्तु मानसिक दस्ता टाक बढ़ता है, रात्रि में भी रोगों नहीं बरकता । उस समय नाच से सून प्राय गिरता है और घादी घादी ही के लक्षण प्राय रहत हैं ।

नोट ।—आंत्रिक ज्वर क सब लक्षणों में न शकते

अधिकांश स्थानोंमें शरीर में एक प्रकार की कुसियाँ उत्पन्न हैं। यह कुसियाँ यद्ये अथवा अधिक उमर के बाल के शरीर में प्रायः नहीं निकलती। यह मात्र और १२ दिनों के मातर ही निकलता है किन्तु कभी कभी २० दिनों के देर में होजाती है। पेट छाता और पीठ में अक्सर निकलता है। यह कुसियाँ सब स्थानों में सब एक साथ नहीं निकलती बल्कि दिन में एक ५ दिन तक रहकर निकलती हैं। रात २५ या तीस दिन तक इस प्रकार कुसियाँ निकलती हुये रहना जाता। ऐसे इन कुसियों का मरुपा एक साथ अधिक दिनों तक नहीं पड़ता अगमग १२, २५ या ३० एक ३ स्थान में एक एक बार निकलती है।

रोग बढ़ने की हालत।—ऊपर कहे हुए लक्षण नहीं बढ़कर आराम शान के समय तक इसी हालत में रहसकत है—यथा हालत में जाय गाया रहता है बहुत ज्यादा दुःखना या अनायासक खभाव नहीं रहने किन्तु कभी बड़े सब लक्षण बन्द कर और बहुत राग का बहुत बर्तन कर बन है। रागी दुःखना और कमजोर होकर अगमग गिर जाता है और उत्तन का गति नहीं रहती। यदि छाती पर अगुड़ी दारा जाय अ चोट मारा जाय या यथा मादुष्य हालत है कि पर मच्छुका और कटिब होकर मूलत है उदर होजाता है धरना का रगत खाल माने मूल म मी हुः आसना पुतली किधी हूँ। उदर का एक समान रक्त न हूँ बहुत नक्त किन्तु दुर्बल मया इन्धिरा का विषा मीन में पुनत न जना है । नाम मूला हूँ और गहरी कला हूँ हूँ अत हूँ मय स्थान में दुर्बल यथा आरि रण्य परत है। पर क अज्ञान कम न हाकर न हूँ

जाने है और कभी कभी आँसों से लून गिरता है और
 बेमातुम दल और पेशाब भी निकल जाता है तिली बहुत
 बढ़ जाता है ।

स्नायुविधान में स्पष्ट लक्षणों मातुम पड़ती
 है । १० दिन से अधिक १४ दिनक भीतर शिर दद और
 शरीर में दर्द कम होता जाता है किन्तु अधिक शिर घूमना
 और बढ़ावन मातुम होता है । मानसिक अवस्था में भी
 और बढ़ जाता है यथा नोद की आना, मानसिक पदपद,
 धरक पड़ जाता है यथा नोद की आना, मानसिक पदपद,
 बढ़ना इत्यादि । यकना पहिले केवल शक्ति में ही
 होता है और दिन क समय रागा नाद कीमी हालत में
 रहा जाता है । पहिले कबल गहकड़ बढ़ता है और योही
 विज्ञाना है पाछ कमरा मयानक भाधार धारण करना है
 बिडेनस गूडा हा जानें मय पाकर चिडता है, विज्ञाने
 सावना धारणकरता है इस समय भी नाक से लून
 गिरता है ।

सास उल्दी उल्दी चलता और सरदी और साखी
 लक्षण दिखलारं पड़ते हैं । पनाब बहुत और बदन
 साधारण पनाब का अर्थना हल्का हाता है । कभी पेशाब
 हो जाता और कभी दस्त आत समय कमातुम पेशाब निकल
 ता है । जिस करकट रागा साता है उही स्थानों में
 सावन उपभिक्षत हा जान हैं । आंत्रिक ज्वर जिस समय
 होने लगता है बहुत धारे २ घटता है शरीरकी गरमी
 धरे कम होकर स्वाभाविक हा जाती है । आठेग्या
 अथवा रोग न रहता और नाहा का बहुत धोर
 दिसलारं पड़ती है । इस अवस्थामे कमा कमा फिर
 हा है और पाँठ हात याद बहुत स उपसर्ग साधार

अधिकांश स्थानोंमें शरीर में एक प्रकार की फुसियाएँ उत्पन्न पड़ती हैं। यह फुसियाएँ कभी कभी अधिक उमर के लोगों के शरीर में प्रायः नहीं निकलती। यह मात्र और १२ दिन के भीतर ही निकल जाती हैं किन्तु कभी कभी २० दिन के भीतर भी हो जाती है। पेट छाती और पीठ में अक्सर निकलती है। यह फुसियाएँ सब स्थानों में सब एक साथ नहीं निकलना दो दिन से लेकर ५ दिन तक रहकर बैठ जाती हैं। राग २८ या तीस दिन तक इस प्रकार फुसियाएँ निकलते हुये देखा जाता है। इन फुसियाओं की संख्या एक साथ अधिक दिखलाई नहीं पड़ती अगभग १२, २५ या ३० एक ही स्थान में एक एक बार ही पड़ती है।

रोग बढ़ने की हालत।—ऊपर कहे हुये लक्षणों के पढ़कर धारणा होने के समय तक इसी हालत में रह सकती है—एसा हालत में जाय गीर्वा रहती है बहुत चाय दुग्धना या क्वायाक खाना नहीं रहने किन्तु कभी कभी सब खाना बन्द कर और बड़कर राग को बहुत कठिन कर देते हैं। रागी दुग्ध और फसजार होकर अतमे निकल जाता है और उष्ण का शक्ति नहीं रहती। यदि छाती पर अगुर्वा द्वारा जार से जोर मारा जाय तो एसा मानस होना है कि पेट मुकड़कर और कठिन होकर फूलता है उष्ण हाजात है चहरा का रंगन खाले गून से भरी हुई मांसका पुनर्वा फसा हुए। उष्ण का एक समान रहना नाहीं बहुत नच किन्तु दुग्ध तथा इपिण्ड की दिशा और भी दुग्ध हाजात है। नाम मूत्रो हुई और गहरी पटी हुई शान और हाट मैत्र भ्याम में दुर्गंध आना यदि उष्ण दास्य पढ़ने है। पेट व खज्जन कम न हाकर व

जाने है और कभी कभी आँसों से रून गिरता है और चेमात्रुम दस्त और पेशाब भी निकल जाता है, तिल्ली बहुत बढ़जाती है ।

स्नानुविधान में स्पष्ट नदरीबी मात्रुम पढ़ती है । १० दिन स खेकर १४ दिनके भीतर शिर दर्द और शरार में दर्द कम होता जाता है किंतु अधिक सिर घूमना और बहरापन मात्रुम होता है । मानसिक अवस्था में भी खरक पड़जाता है यथा नोंद सी झाना, मानसिक घड़घड़, बहना इत्यादि । बहना पहिले बेबल रात्रि में ही होता है और दिन के समय रोगी नोंद कीमा हालत में रहा जाता है । पहिले बेबल गड़बड़ बहना है और योंही चिल्लाना है, पाछे कमश भयानक भाजार धारण करता है, पिछोनेसे रुडा हो जाता है भय पाकर चिल्लाना है, पिछोने खाँचना आरम्भकरता है इस समय भा नाक में रून गिरना है ।

सास जल्दी जल्दी चलता और सग्दी और साँसों के ग्भन दिखलाई पड़ते हैं । पेशाब बहुत और बनन में साधारण पेशाब की अपेक्षा हल्का होता है । कभी पेशाब घन्द होजाता और कभी दस्त आने समय चेमात्रुम पेशाब निकल जाता है । जिस करघट रोगी सोता है उदा स्थानों में शर्यावत उपस्थित हो जात है । आत्रिक उ्वर जिस समय बन होने लगता है बहुत धारे २ घन्टा है शरारकी गरमी थीर धीरे कम होकर स्वाभाविक हो जाती है । आरोग्या बस्था सघान् रोग न रहना और नाडों की बहुत थीर गाँठ दिखलाई पड़नी है । ह्म अवस्थाने कभी कभी फिर बन्जाता है और पाँच होने वाले बहुत से उपसर्ग आराम

नि को रोक देते हैं ॥

शरीरकी गरमी ।--आग्निज्वर में शरीर की गरमी यह विच्छिन्न ढंगसे बढ़ती हुई देखा जाता है । पहिले ३-४ दिन तक यह बढ़ता रहती है । प्रातःकाल का पेशा-संख्या को दो डिगरी अधिक होता है, शरीर की गरमी प्रातःकाल पहिले दिनकी संख्याके अपेक्षा एक डिगरी कम होती है अर्थात् प्रति दिन एक डिगरी बढ़ता जाता है । शरीर की गरमा का ठीक इस प्रकार बढ़ना आग्निज्वर का प्रधान लक्षण है ।

पहिले सप्ताह के अन्त में शरीर की गरमा को देखकर भावी मृत्यु निश्चय किया जा सकता है । इस समय १०३ डिगरी तक बढ़ना अर्थात् १०५ डिगरी तक शरीर की गरमी का क्रमशः बढ़ना अच्छा है । पहिले सप्ताह के बाद ५-६ दिन तक शरीर की गरमा १०५ डिगरी रहना अत्यन्त सम्भवता चाहिये तथा अन्त सप्ताह में शरीर की गरमा का अधिक बढ़ना अत्यन्त ही बुरा लक्षण है ।

डाक्टर विल्सन ने ४०० रोगियों की चिकित्सा करके शरीर की गरमा का अनुसार इस रोग द्वारा सैकड़ पाठ मृत्यु संख्या इस प्रकार निश्चय की है ।

१०४ डिगरी से अधिक जिनके शरीर की गरमा नहीं बढ़ती उनमें सैकड़ मृत्यु संख्या १-६ । १०४ अथवा इससे अधिक जिनका गरमा बढ़ जाता है उनका सैकड़ मृत्यु संख्या २१-२५ । १०५ अथवा इससे अधिक जिनका गरमा बढ़ता है उनका सैकड़ मृत्यु संख्या ३०-४० होता है तथा १०६ डिगरी तक जिनका गरमा बढ़ जाता है वह प्रायः सब ही मर जाते हैं ।

ज्वर जब कम होने लगता है तो शरीर का गर्मी बहुत घीरे २ कम होता है । प्राण काल और सन्ध्या के समय शरीर की गर्मी में दो तीन डिग्री की घट बढ़ हीष पडती है । पूरा आराम होने में अघात शरार की स्वाभाविक गर्मी होने में बहुत समय लगता है । यदि उपसर्ग आदि कुछ उपस्थित होजाय तो इस समय बहुत कुछ बढ़कर तथा दुबारा आक्रमण होने के कारण शरीर की गर्मी फिर अधिव होजाता है । इस रोग में प्रतिदिन दोनों समय नियमितरूप से शरीर की गर्मी को लिख लेना बहुत आवश्यक है । यह रोग मालुम होत ही पौरन एक तापमान यत्र अघात घरमाघटर लाकर रचना चाहिये ।

पुनराक्रमण । (बीमारी का एक बार आराम हाने के

बाद फिर बढ़ना) मात्रिक ज्वर आराम हात होते कोई होय उपस्थित हो अथवा नहीं, फिर भी वह आकर उपस्थित होजाता है यहा तक कि एक एक राग को तीन तीन बार बार भोगते हुए देखा गया है । कभी केवल ज्वर और कभी इस रोग के सब लक्षण छोट जाते हैं, शरार की गर्मी स्वाभाविक होजाने क दशदिन बाद यह पुनराक्रमण उपस्थित होना है । यह रोग ठीटने परमा प्राय रागी अच्छा हाजाता है । इस समय भोजन और, धार और स्वाभ्य सम्य-धाय नियम प्रतिपालन करने से जल्दी आराम हाने की भाशा होता है ।

आनुसंगिक (साथ में रहने वाले) और

परवर्ती उपसर्ग । [अघात पाळे उपस्थित होने वाले उपसर्ग]—

सन्निपात विकार ज्वर में जो सब उपसर्ग दिखे गये

हैं इस ज्वर में भी ये मय उपमर्ग उपोष्यत होत के सिषाय आतों में छेद हाजाना तथा आतों के वाली किल्ला में प्रदाह होना इस राग में मयस धिन्ता करनेवाला उपमर्ग है । प्राय तीसरे सप्ताह में ही आतों में छेद होजाते हैं । आतों के गिरना भी बहुत साह्वानिक उपसर्ग है । यह लक्षण २४ दिन के भीतर प्रकाशित होता है ।

परन्तु उपसर्गों में यक्ष्माघातों, मानसिक शक्ति कमजारा अथवा पातलपन, पाडा दर रहन वाला बहुत देर रहन वाला साधारण अथवा ब्यानाय पर स्नायु-मूड कान से मवाद निकालना यहिरापन, अस्थि का कमी कमजारी और कुचलापन प्रधान हैं ।

अग्रस्थिति और परिणति (रागका टहराव तथा परिणति) ही लिखा आशुका है कि आन्त्रिक ज्वर घात २ और ये मातुम उपोष्यत होता है कि राग ३ दिन गुरु हुआ है यह राग निश्चय नहीं कर सके यह राग प्राय तीन या चार सप्ताह तक टहरता है । ३० दिन से अधिक मा खगजात हैं । बहुत से इन्दीम वा महाइम दिन के भीतर ही अच्छे हाजान उपसर्ग रागका फिर होना इत्यादि द्वारा इसक टहराव समय और भी बढ़तका है ।

मात्रमण्यारस्था १ से ५ दिन तक । गांड काना ३ से १५ दिन तक, घाय की अवस्था १० से २० या २५ तक रहता है । नासक सप्ताह के अन्त में मय से घाय बन्द होना है । मृत्यु प्राय २५ दिन से पहिले होता है ।

बहुतही भवतिष्ठानु (सहन करगकी शक्ति न रहना) और
 यही किता बातका भलमनमानके माप उत्तर न हे
 सक्ता कहूर और सम्भवतः गत्त यमीने ।

चायना ६,३० शक्ति ।—बहुत ध्यानका परवर
 मयाइ उपायका, इसीसे कमजारी विना दूरक उपायका,
 जामि रगका मन पानीका समान विद्वान्तर एत्रिक समय ।

गाईनेशिया ६,३० शक्ति ।—उप धान इति
 सुखनही तिनु धारे मुखे अथवा स्थान स्थानमें नाम
 ६३ १० ३ ।

मलफर ३० शक्ति ।—नय ध्यान स्थान में गग
 नृद्विषयका नडे ध्यान पाव सुधाका वीर दग दिपका
 न पद, पायक धारों कर कदम सुकना उपाय
 और मयाइ ।

बहुरी काइ स्थान उपायों को उपायका उमी समय करन दूर
 रना माइये । उपाय सुद स्थानमें हवा रगका विरुद्ध विधि १ ।
 यदि बहुतना काम कायका हाथों उपायका एक माथ
 सायबर काय काम उचित नहीं थाउ ५ १० का नमा
 और उपायका मात करलाग । उपाय सुकना उपाय नही
 रगका बर मायुम नही रू पैला नही उपायका पदके
 रगकाके छे नरर हर कादि विधिों कम करला उपायों
 न । उपाय उपा सुद स्थानमें पायका उपाय १० उपाय ।
 यदि बर बर काय नडे का नमा मायका म सुकना
 नोउकर काम विधान रना पा १० १० उपाय काय

रुग्णा आदिव कि चमडा न उडनाय । घात सुखनाथ समय घात
रुग्णा आदिव कि किमी प्रकार मङ्ग विद्यति महा जय ।

—०—

सर्दीसे हाथैर फाटना ।

शीत कृत्वमे महीं घमकर हाथ पैर, कान, नास, मरि
रुग्णा एत प्रकार पट जात और उममें रूढ़ हाता है ।
यह कभी कभी भासा बहुत फूल जाताहै, खुपला घना
है, जउन होना है और तराता है । यदि अधिक गरम
पट लगे ता घमटक नीचे रम उत्पन्न होजाता है और
यह रम निरुठ जापर एत प्रकारका घायना रहजा
है । इस घायको कटिवतास आराम होना है ।

चिकित्सा ।—अन्ध न जन्म और खुपला, तथा
गर्मी नरा रुग्णा एता हाता र एताक पातामें १५ । २० रू
टिक्टर कैथेरिस मित्राकर लाशानतवार करहेना आदिव तथा
इस आशाम दूक स्थानका सवदा घोना स हिय । यदि जून
हा और इट इट हाता हातो इसा प्रकार आर्निवा लाश
पायदा करता है ।

लक्षणां च धनुमान तीन विधा रू मौषध कान
र हिय —

असैनिक ६,३० शक्ति ।—गरम मार उन्नत
एत रगदा क्यात हा उममें चलन हा पाय हा ता पैरकी
अमुन्धियो तकरोनी इसा प्रकार घाय नरा हुआ ।

फुंगफोम ६,३० शक्ति ।—निरुधकर हा

पेटोका मगुलियों में फटपाना भी घाय होना, घाय न होना
 व फल रसका बदलन खुबली और चल्न जाना ।

दलमाटिला ही सुचित ।—उत्तम मोक्ष ह ।

मलफर ही, ३० शक्ति ।—पैरवा मगुलियों में
 घाय फल फल ।



घान अथवा फटजानेसे घाय ।

होए घान फट जानेम नाच लिख हुए निबनों पर घ्या
 रचना चाहिये —

[१]—खून गिरना बन्द बनना चाहिये । यह जनेक
 प्रकार न किया जासकता ह जैसे घाय क स्थान को दवा
 रचना से जया कर रहने म ठण्डा जात मयरा दरफ
 लगान से इत्यादि । यदि दाह धमना कर पायतो उा
 में दे बडे जार म रक्त निबन लगता है । ऐसे समय
 पर घमनों के मुह का बाध दना पडता ह । घाय क स्थान
 पर हठे-हुला लाशन प्रयोग करना चाहिये । इस म खून
 गिरना बन्द होगा और मत्रादन पडगा ।

[२]—घायक स्थानको माधधानों से साफ करना चाहिये ।
 निम लिना चात्र से कजाना है मात्र उसका गुण कान गांत
 क भंतर रहजाता ह । अतएव घाय क स्थान को दवा करे
 मे रहने मठडा तरह परीक्षा कर देखना चाहिये कि उन
 क भंतर किना प्रकार का मेल, घात्र, बाधना हुडडा,

बाटा भयथा लकड़ी आदि का कार पाव ता न रहगयी है ।

[३]—घाव क दोनों मुहों का इच्छा पर बांध वन आदिय । इस से बहुत शीघ्र मुह बंद रहने के कार्य घाव सुख जाता है ।

[४]—घाव क स्थान का स्थिर रखना चाहिये । हाथ पैर क जान पर काम करना नयथा घूमना निगिम्न है ।

[५]—घावक स्थानका प्रतिदिन अच्छे रखना चाहिये । साफ करत क समय पहले गरम पाना से घाव क ऊपर क सब कदह और घाव भिगाकर सावधानता से बांध डालना चाहिये । यदि इस प्रकार न किया जाय और ऊपरी और ऊपर से कपड़े बाल जाय तो रोगी का बुरा होना है और अधिक रक्तस्राव होकर घाव सुखने में देर लगजाता है ।

चिकित्सा ।—टिक्थर कैलंगूडा, मूठ मठल मरक-

सब प्रकार क घावों पर लगवा कट जाने पर इसका ऊपर प्रयोग कबना करता है । इस म ग पाना म एक माल भेवव मिटाकर उस में कपड़ा भिगाकर सगडा घाव क ऊपर टक रखना चाहिये । इस प्रकार करने रहने क घाव शीघ्र सुख जाता है और उसमें मवाद नहीं पाने पाता ।

ऊपर उपाय का इलाजों क भिवाय कभी कभी काल क निव ३० रवा इन की आवश्यकता होना है । पर परम ल देकरनाथ का मर्दिना व्यवहार करने से घाव क रोग दूरजाता है । घाव में मवाद दूर हो सुख गया हो मच्छर से रक्षाविषय के कारण मिला दूर मादि रक्तों में से ।

हाना धान गन्ध दहन पर दापन-सद्व्यवहार की गृह्यण से विनिर्माण
होना चाहिए ।

पेयानादि ३,६ शक्ति ।—इसमें अथ और धान
सिद्ध करने के लिये धान को मनुष्य के अन्न
उपयोग है ।

आर्निवा ३,६ शक्ति ।—इसमें धान को
अन्न के रूप में ही मनुष्य के लिये उपयुक्त हो
कर अन्न के रूप में ही धान को
होना चाहिए । इसमें धान को
अन्न [अन्न के रूप में ही उपयुक्त है]
आदि के लिये विनिर्माण पर धान
की वृद्धि पाठ्य है ।

वैमोमिला ६,१२ शक्ति ।—बहुत अथवा पैदा हो
धान अन्न के रूप में ही धान को
धान के लिये उपयुक्त है ।

प्रायना ६,१० शक्ति ।—आपके लिये धान
धान को धान के लिये धान को
धान के लिये धान को धान के लिये धान को
धान के लिये धान को धान के लिये धान को
धान के लिये धान को धान के लिये धान को

हीवर सलफ १२,३० शक्ति ।—अथवा धान को
धान को धान को धान को धान को धान को
धान को धान को धान को धान को धान को
धान को धान को धान को धान को धान को
धान को धान को धान को धान को धान को

धान को धान को धान को धान को धान को
धान को धान को धान को धान को धान को
धान को धान को धान को धान को धान को
धान को धान को धान को धान को धान को
धान को धान को धान को धान को धान को

धान को धान को धान को धान को धान को
धान को धान को धान को धान को धान को
धान को धान को धान को धान को धान को
धान को धान को धान को धान को धान को
धान को धान को धान को धान को धान को

काटा भयवा लकड़ी आदिका काट पाप तो नष्ट रहगयी है ।

[३]—घाय व दोनों गुशों का इकट्ठा कर बाँध इस आशिय । इस से बहुत शाल मुह घब रहने के कारण घाय सुख जाता है ।

[४]—घाय व स्थान का स्थिर रखना आशिये । हाथ पैर कान जान पर काम करना अथवा घूमना निषिद्ध है ।

[५]—घाय व स्थानको प्रतिदिन स्वच्छ रखना आशिये । साफ कटा क समय पहले गरम पाना से घाय क ऊपर क सब कण्ड आर घाय भिगाकर सावधाना से कान्ड शास्त्र धालने । यदि इस प्रकार न किया जाय तो अन्ती भोज जाय व कण्ड खान जाय तो शरीर क कण्ड हाता है और अधिक रक्तधारा हाकर घाय सुखन में दर शक्यता है ।

चिकित्सा ।—त्रिखर के लण्डूटा, मूल मयल मरु-

सब प्रकर क घायो पर भयवा कट जान पर इसका ऊपर प्रयोग कयदा करता है । इस भाग पाता में एक भाग मैत्रय मिष्ट कर उस में कण्डा भिगाकर सगदा घाय क ऊपर टट रखना आशिये । इस प्रकार करन रहन स घ व श प्र म्ब जाता है और इसमें मवाद नहीं पडने वाली ।

ऊपर कण्ड का कण्डो क भिगाय कभी कभी जान क त्रि म कदा दन का म्बदयकन हाती है । कव यद्वय ६ ६५ कण्ड का आदिहा व्यवहार करने का प्रक कण्डा हाकना है घाय में कण्डा रईहा मून गया हो कण्ड में रक्तधारा के कारण भि रई कादि लण्डो में कव

होना घाव गह बटने पर हापर-सलफर और सुघन में तिलग्न्य
है ता साहयेदिया दना चाहिये ।

एकोनाईट ३,६ शक्ति ।—उपर, भय भार मान
मिष्ट उग्र रक्तप्रधान घातु बाले मनुष्य व न्पि
उपयोगा है ।

आर्निका ३,६ शक्ति ।—ऊगरा चाट भादि
लगकर क्लेश भी घातुगत रक्त उपस्थित हो इस औषध
क सेवन करने से आराम होता है । तराना, मानों पिचछ जानश
समान [रक्तक्षत भा उपकारी है] चाहे जैसे विद्याने पर साथे
समी बड मातुम हों ।

कैमोमिला ६,१२ शक्ति ।—बहुत मयाइ पैदा हा
और अत्यन्त दद, घाव सूखना न चाहता हो घात सधारना
और कष्ट न सह सवना ।

घायना ६,३० शक्ति ।—अधिक रक्तस्रावक कारण
दुबलता और बलक्षय (फासफाटिव एसिड भा उपकारा है
मूच्छा, बहरे पर मुरापन और रक्तशून्य रक्तस्रावक कारण
रक्तजन और सिर दद ।

हीपरसलफर १२,३० शक्ति ।—अत्य त सामान्य
दटा घावभा पक उठ, गण्डमाला दूषित मनुष्यक टिय
उपकारी है ।

घाव से बहुत सदजमें रक्तस्राव हो—एकोनाईट
आर्निका, घायना, फासफाटस ।

घायमें बहुत मयाइ पैदा होनेपर—घायना, माडूरियस

एकदम मिमोक्षर दृष्टि के आनन्द पर ध्यान आदिये । साधकों
 धर्मिका या रक्तक्षत आनेवाली हों आदिये । जैम जैम
 दृष्टि कोना यादें धारा धारी हाथपैरोंका हिलानेकाभी
 धारा हर्षित आदिये । रक्तक्षत दृष्टि विरुद्ध आरम्भ नहा हाथभे
 काम और पैरल चलना निषिद्ध है । दृष्टि विरुद्ध मन्त्र
 नहा और धारा धारा रक्तक्षत तभीस चलना फिरना गुरु
 धाराका जाय यथवा काम गुरु कर्तव्यता जाय तो दृष्टि
 मन्त्रा नदोकर पातक समान रक्षता है ।

धर्मिका—भीतर घाट ।

एकनादृष्ट—परम, सुखी, मूर्ख, गीर्वाही उक्त व्यास
 बचन इत्यादि ।

रक्तक्षत—मात्र आज्ञाना साधकों सुखत मार मन्त्र
 दृष्टि विभ्रम धारोंसे दृष्टि बढ़ता और सर्वोत्तम काम होता ।
 धारा धीम उदाहर धीम और रक्तक्षत मात्र ध्यानत
 रक्तक्षत रक्षता है ।

दार्शनिक—रक्तक्षतक समान दिव्य द्रव्य मय प्राणुओं
 पर मारत हा तब दृष्टि विशेष उत्पत्ती है ।

बहि रोग पुरातन धारोंसे भा नाये लिखा औषधोंकी साथ
 दृष्टि होना है—कैवल्यकी साथ रक्तक्षत धारकोरम (जोड़ा
 की धर्मजोरी), मायोनिषा (दिव्यसे दृष्टि रक्षता) धारद्विषय
 (लोहासे रक्त रक्षित होता) ।

भीतर घाट ।

दिखा भीतर धारोंसे रक्षा रक्षता रक्षित रक्षित रक्षित

आश्रित ज्वर का परिचय तान प्रकार भ होता
 आराम हुआ जाता मरना अथवा हमेशा के लिये
 मध्य विगडजाना । मृत्यु हापतो नीचे लिखे हुए कारणों
 होती है ।

(१) दुबल हात जाना और साथ साथ खून की
 मी । (२) रक्तधाय—नाक और आँसू से, (३) रक्त
 पित्त हाता ४ । अति प्रबल ज्वर १ । उपसर्ग यथा
 आँसू में छेद होना या आँसू का टवने वाली रिल्ला में
 गह । साधारणत इस रोगका मृत्यु सङ्घाया का सैन्डा २०
 जाता है ।

आश्रितानिक विकार—ज्वर ।
 एग्रीडमिक ।
 अत्यन्त सद्यमानक ।
 अचानक आश्रितमण्ड ।
 ज्वर १४ दिन तक ।
 शायदही कमालौटकर मरता है
 भावका पुनर्जी सुकड जाती है
 अत्यन्त खून नहीं गिरता ।
 अ—बमडा बहुत गरम ।
 अनी कभी एमानिया की तरह
 मध्य जाकती है ।
 अ—कुमिया का अधिका सख
 मर्हों में टसो जाती है ।
 १०—कुसी पाचने धा छठे दिन
 निवृत्तता है; एर एर शाम
 रोग के अन्त तक रहना है ।

आश्रितानिक विकार ज्वर ।
 १—एग्रीडमिक ।
 २—महामक नहीं ।
 ३—धीरे धीरे आक्रमण करता है ।
 ४—तीन ४ मताह तक टहरता है ।
 ५—प्राय खौटकर आता है ।
 ६—आघ का पुनर्जी प्राय पैश
 जाता है ।
 ७—नाक से प्राय खून गिरता है ।
 ८—शरार पर प्राय सट्टा पसोना
 आता है ।
 ९—कुमिया कम और प्राय आता
 और एर पर दिखला पडता है ।
 १०—कुमिया ७ घं और ९ घं
 दिन के अन्तर निवृत्त धानी
 है । एक एक राग सिर तान
 दिन तक रहना है ।

११-शरीर का गरमी बहुत जल्दी बढ़ जाती है। दूसरे दिन के बाद ही १०४ या १०२ डिगरी हो जाती है ।

१२-शरीर की गरमी १२वें या १४वें दिन के बाद ही बहुत जल्दी कम हो जाती है ।

१३-बचना और बहोरा रहना पादक से ही इन दोनो पादकों का स्पष्ट प्रकाशित होना ।

१४-पेट के अंगों का न रहना ।
(क) बल (म) पेट भरकरना नही रहना ।

१५-दुखरागन कम कमपारा उपादा ।

१६ बच दिन के मीनर भरना है ।

१७-मैदर पीठ मृगु मृगुवा ।
१ म ३० नद ।

१८-शरीर में क ६ क्वर्न व शान नही रहना ।

११-शरीर की गरमी से शामतक २ डिगरी होना है और दूसरे सवेर १ डिगरी कम है ।

१२-शरीर की गरमी दिन प्रात काल १०४ डिगरी हो जाती है और चाप सल में ममदा स्वाभाविक हो जाती है ।

१३-मसिष्क के लक्षणों के ममदा उपस्थित होना और बहुत दिन तक उदरना ।

१४-पेट के लक्षण ममदा है (क) उदरामय, (म) पेट भरकरना और ममदा रहना ना पेट की दाहिनी ओर मीनर नरक दाया से होना ।

१५-दुखरागन बहुत ।

१६-शावदही कर्मी १४ दिन के मीनर मृगु हाती है ममदा मीनरमाह और रमस दा उपादा है ।

१७-मैदर पाठ मृगु मृगुवा ।
१७-१० ।

१८-उदर मीनर और दा लक्षणों में ममदा रहना है ।

सब उमरों में हो सकता है । १९—वेजल जबानो कोर है अधिक होता है ।

चिकित्सा।—यह रोग बहुत साधारण है, इसलिये नवा चिकित्सा का भार किसी होशियार चिकित्सक के पंथ में देना चाहिये । जब तक रोग निश्चय नहीं सामान्य प्रकारका औषधि दी जासकती है ।

चिकित्सा सार सग्रह ।

- १। आश्रमणारणा—वैष्टेशिया—
- २। उपसर्ग गुन्य साधारण राग—वैष्टेशिया आसन्निक, स्ट्रुक्स ।
- ३। अत्यन्त दुबलता—आसन्निक, म्यूरोटिक-पेसिड ।
- ४। प्रबल उदरामय—आसन्निक, गिरटून-अलथम, इपीका, फॉर्बेनिटापिलिस ।
- ५। आतों से रक्त गिरना—डेरॉविन्य, नारट्रीक—पेसिड इपीका ।
- ६। सब उपसर्ग—फान्फोरस, बेलडाना, ओपियम, ।
- ७। रोग आराम होने के बाद कमजोरी—फास्कोरिक्-पेसिड, इगनशिया एमोनियम-शार्ब फेरम, सल्फर, चायना, नफमवानिका ।

प्रधान प्रधान औषधि ।—जिस समय इस रोग का विष शरीर में प्रवेश करने लगता है उस के कारण जो ज्वर आता है उसका रोकना बहुत कठिन है । यदि आग्नि के विकार ज्वर के कोई विशेष लक्षण प्रकाश होने से पहिले ही यदि रोगी चिकित्सा के अर्थान होयतो घेष्टे गिया और आपमानियां देने से रोगही तेजी कम हास

कता है, अथवा उसका घटता रहना आमकता है ।

इस रोग के प्रथम सप्ताह में एक मात्र उत्तम औषधि व गंधिया है । नाड़ी कामल और पूर्ण किन्तु राज शिर र्ति और बजता, आगम हात का मरामा न रहना, भ्यास म बरतू आता मय शरार म इव मान म कष्ट मातुम हाता इत्यादि व गंधिया के लक्षण हैं । जिस रोग में जावता रक्ति बहुत कम हाता हुआ गीलपन उस में यह बहुत कायदा कता है । रोग के प्रारम्भ में एक द्वाह दाज्ज पर रोगकी लक्षा बहुत कुछ कम होसकती है ।

प्रायप्रानिया मा एक उत्तम औषधि है । घाय हात म गंधिये एक ल्पा मरुती है । क्तायावक लक्षण रहन परमा विराम क्त रात्रि में पण्डित स्नि क कय न र कामों क लयन में बरता इत्यादि हात्यों में दीक्षता है । कभी कभी यहा एक द्वाह बहुत थपटा व र दिशहाता है ।

रमरुदस धारक लक्ष रोगा म कायदा कता है यह सब अवस्थाओं म विराम कर मात्त्रक मद्यान मान म र्ति लक्षण प्रदानित न न पर द्वाहा जता है । इस रोग के विराम प्रकार का मरु द्वाहाइ इता मरु सुधादि बहुत हाता ज्ञान म्था हुए माग क निरुध म लाल र्ति के विरामाह क वान धार मात्त्रा की लक्ष सब पर र में हुए हाता (शिर र्ति म कृत्त) लक्षण म एक द्वाहा र्ति ज्ञान है । रमरुदस म वरि उदरामय मराम न हाता कामेनेह कता मात्त्रिक । इस रोगका क दूधर लक्षण में एक लक्षर मरुद में पर बहुत क वहा कता है । मरु क्त रोग का बहुत बरतू लक्ष मात्त्र उव रोग क लक्ष में है । रमरुदस क्त हुए र्ति म ना कर्त्तनेह इता कर्त्तव्य

आमैतिक होने से बार बार पशाथ का वेग, पेशाथ कम होना और जलन होना इत्यादि को जल्द आराम हो जाता है ।

शारीरिक और स्नायविक शक्तिका कम होना अत्यन्त दुर्बलता व कारण रोगा का मधु तरफ से दिल हट जाना आदि लक्षणों में फास्फोरिक-एसिड अच्छा दवा है । रोग व प्रारम्भ में यह दवा देने से उदरामय बन्द हो जाता है, विशेषकर मल यदि पाल रद्द का और पानी सा हाथ, जीभ की रगत बदला हुए गीली और थोड़ा जल सा लगा हुआ । कम मायाविक रोगों में कम सुनाह पड़ना और स्नायविक दुर्बलता रहने पर यह दवा बहुत फायदा करती है । दा चारमात्रा केल्वेरिया काथ देकर पाठ गार्कापोस्टियम इनसे फुमिया निकलने में देर होने व कारण जो उपमग बन्द जाते हैं, रागा धीरे धीरे बन्द हो जाते हैं और पेट फूल जाता है इत्यादि लक्षणों का बहुत फायदा होता है ।

शरीर में गलन की मालूम पड़ने पर ग्यूरियोटिक—एसिड फायदा करता है । कभी कभी सड़े हुये मल में घाव इत्यादि उपसग होने हैं । उन में ग्यूरियोटिक-एसिड फायदा करता है । इसके सिवाय यदि आतों के घाव से रक्त गिरना हो और नार गिक-एसिड से कुछ फायदा न हुआ हो तो यह बहुत फायदा दिसलाती है । बिछान में बगबर सरक जाना इस का एक प्रधान लक्षण है । कठ और म्पर की जगह में घाव हो जाना और अत्यन्त दुर्बलता मरक्यूरियस-साय फाइड का लक्षण है । मल बदल रहे रोग का रुग्णा मिला हुआ, और आम मोटी, सफ़ेद मैल से ढकी हुए, आतों में

फिर एक बार अज्ञानता, घराटु के साथ श्वास चलना, बेहोशी इतनी होना कि मस्तिष्क के पश्चात्तक का सशय होतो आयुष्य दना चाहिये । यदि आयुष्य से कुछ फल न दास तो लेवेसिस बहुत फायदा करता है विशेष कर यदि नीचे का जावडा गिर पडने का लक्षण है । बेहोशी के साथ व मातृम दस्त निकल जाने के लक्षण में अर्निका दिया जाता है ।

अन्तर्गती औषधे ।—य जो उपसर्ग या लक्षण प्रथम हों उस समय उनको आराम करने के लिए और आयुधि देने के साथ साथ में जो दवाइया दीजाना है उनको अन्तर्गती औषधे कहते हैं । इस राग में नीच लिखी हुए अन्तर्गती औषधे प्रधान है ।

पहिली हालत में नाक से खून गिरना—मरकुरियस-साब या लाडम् ।

अन्तर्गती अथवा में नाक से खून गिरना—फास्फोरस ।
कनपटी का गाठ में ज्वर होना (पैरटाइटिस) घेल्डोना या मरकुरियस-वाइस ।

हाथ पैरों के घाँवड़े—कारोलीरमस ।

जाडी के दोष उपस्थित हो मयात् क्षीण हो जायतो—
थार्मेनिक, कार्बोवर्नाटिलिन ।

अथवात्त ।— कार्बोवर्नाटिलिन फ्यूरिक-एनिड या मिडगा ।

आराम्य हान के समय मूत्र न लगना—हाकुलम,
बहुत मूत्र लगना—याचना अर्थात् होना—नकमवोभिजा
यदि आराम हान में दर हानों सारानम्, एलम्टानिण

प्रधान औरधों के लक्षण —

त्रायोनियां ६ १२ शक्ति—सामान्य कारण से उभे

जित हो जैर - रोगो सहज में हा विडम्बाय
 अत्यन्त कटुदायक शिर दर्द, शिर घूमना मानों मल्लक
 गोत्राधार हाकर घूमता है। आस बन्द करने से तरह
 तरह क द्रव्य होखना रात्रि क समय बरकना विशेष कर
 पहिले दिन के शान कञ्ज के विषय में बरकना, कान में
 मों मों शब्द होना और बहरापन नाक से खून गिरना;
 विशेष कर प्रातःकाल के समय सोकर उठत समय
 मुह में सुखी, होठ फटे हुये, मुह का तेज कडवा स्वाद,
 अत्यन्त प्यास, एक साथ बहुत अल्प पीना, जो मिचलाना
 और बहर आना, इसी कारण उठकर बैठ न सकना;
 सुखों भांसी, छाती और जिगर में सुई चुभना, पूष, कठिन
 और तेज नाडी हिलने सुलने से पीठ और हाथ परों
 में दर्द होना, पेंवनी के साथ नाँद, सोते समय गुनगुना
 हट का शब्द मान्द्रम पटना और चबाने की तरह मुह
 घटाना; बहुत कमजोरी और पशवट ।

चायना ६ शक्ति—बेहरा रकहीन, बराबर हाथ
 पैर फैलाना और उमड़ बढाने की इच्छा करना जिगर
 और तिली का बटना मुह का कडवा अपधा लहू
 स्वाद वाली उशर आना, दूध पीने से न पचना पेट
 सूजना, बिना दर्द के मजीम की तरह मल निघटना
 सोते समय बहुत पसीना आना; विशेष कर जिस बरषट
 राग सोता हो बहुत कमजोरी शरीरग्यावस्था बहुत दिन
 तक टहरनेवाला ।

कोकूलस ६, शक्ति—बात बहने से आसानीसे श्रमकता हो, पिछौने से उठने समय शिर घूमना और मिचलाना, इस लिये मजबूरी सोते रहना, आँसों के पानी भारी मालूम होना, पानी बहने की तरह कानों में शब्द सुनाई पड़ना, मूत्र न लगना, मूत्र का स्वाद तामि का सा पकितों में गले से उतरते समय गडगड शब्द होना, पेट बहुत फूलना और गडगड करना, कर्णों के पर्दों की कमजोरी ।

लेकेसिस ६, ३० शक्ति—अत्यन्त मानसिक शारीरिक पश्चाद्यट, नींद आना परन्तु सो न सकना, समय सब खर्चों को बटाना, बहुत बकना, एक विषय ऊपर दूसरा विषय, मुँह बैठजाना, नीचे का जायदा निकल जाना, जीम सुखी हुए लाज रंगत की वा काँची, फटा हुआ और उससे रक्त गिरना, जीम बाहर निकालते समय कापना अत्यन्त बढ़वृद्धार मख, आँसों से रक्त गिरना शब्द कट, कम गहरा घाय घाय देखने से नीँट वा काँट रंग का मालूम होना ।

लाईकोपोडियम १२ शक्ति—बेचैनी के साथ नीँट मुँह से सही हुए बरू आना, जीम के ऊपर कुम्हिली मीठी खीन खाने की इच्छा होना, थोड़ा खाने से ही पान खरा मती हुए मालूम होना और उसी कारण से पान भरजाना और मूत्रजाना, थोड़ी, थोड़ा और नमकीन पान निकलना एक घैर ठंडा और एक घैर गरम, आँसु निकलना रुक जाने से पहिले सरलान्त्र में (सूखी आँसु) ठंड मालूम होना पेशाब से बपड़े में खाल और पान का तरह दाग पड़जाना ।

मरकूरियस ई शक्ति—शिर भासो मालूम पडना, नींद

बहुत आना, धीरे २ बातका उठते देना, कापना, कमजोरी
भौर पकावट, जीम सूनी हुई, नरम, जीम के ऊपर दातों
के दाग पडना, मुह से सही हुई बरबू आना जिर
की जगद दर्द होना, लसदार वा पानी सा, पित्त मिखा
हुमा उदरामय, पेट सूना हुमा, रुडा और दर्द होना, राग
की गाँठों का सूजन और पकना, बार बार पेशाब करना,
पेशाब को रखे रहनेसे नीचे सफेद सफेद उमजाना, राठ के समय
पसीना आना, पसीना पीठ रंग का, सोते समय नाक से
रून गिरना ॥

नाइट्रिक-एसिड ई, ३० शक्ति—चिन्ता और मृत्यु

मय, शरीर के सब स्थानों में बार बार दर्द होना, अचानक
बद हो उटना और अचानक बन्द होजाना, सडिया, धूना
और मिट्टी खाने की इच्छा करना, जीम के ऊपर सफेद
मैब, मुह और गले के भीतर घाब, गले के भीतर सप्या
इच्छा होजाना, पेट बहुत सूजाहुमा दापने से दर्द मालूम
होना आठों से रून गिरना, हरे रंग का चिटचिटा दुर्गंध
युक्त मूत्र, रून मिखाहुमा कफ, घाब, दुबलापन विशापर हाप
और हातीपर, शिर के बाल छडना पाय खाने से जो
कुकुड होता है उसके बार-बार बहुत कायजा करनी है ।

नवमवोमिका ई ३०, शक्ति—सोते समय बुरे २

रस दीखना, घोडे से हिजने म सररी धगना, मुह और
जीम का अग्रभाग सूखा हुमा भोजन के उपरान्त पेट
हुला हुमा चरबी मिखा हुमा भोजन खाने की इच्छा

करना, मूत्र लगना किंतु खाने की इच्छा न होना प्यास
धर्मसे अनियत और उदरामय, दुग्धलापन ।

पलसेटिजा ई शक्ति ।—ठिनकता अथवा रक्त

इच्छा, करना, ठण्डलगना मयावन खन्न वीमना पुर
दुर्गंध निकलना, प्यास न लगना किंतु जीम सू
हमेशा यूक्ते रहना मुद्द का कडवा स्वाद, मोत्रन कर
एक घट के बाद पाकधली में दूद मालुम होना रात्रि
समय आपान के साथ पेट गडगडाता, रात्रि के स
उदरामय अत्यन्त कमजोरी ।

और औषधियों के लक्षण सांनिपातिक विकारउपर में द
चाहिये ।

सहकारी उपाय ।—सांनिपातिक विकारउपर का

तरह आतिसारिक विकारउपर में भा औषध स तबजाफ एव
का समय कम नहीं किया जासकता, इस लिये जल्दा जल
भाराम करने का इच्छास जल्दा २ और बार बार औषधि
देना युवा है । किंतु बहुत औषधि देने से रागी कमण
दुबल होजाता है और उपयुक्त औषधि तज्जवीन न इन
से पीडा अत्यन्त बढ़सकती है । आतिसारिक विकारउपर
की चिकित्सा में इसलिये धीरे और साहस के साथ प्रति
दिन बहुत ध्यानपूर्वक रागी की पराक्षा करनी उसक पचन
आदि सेवा नुर्भूवा की धीरे ध्यान रचना और जिन समय
जो उपसग चापड़े उनक उसी समय उचित इलाज करना
यही एक मात्र चिकित्सा है । उहरत पहन पर कभी न
रकने ही दिनतक रागी का पिना औषधि रक्ता जासकता
६ ।

रोगी को अच्छी तरह से जातीय और मानसिक विभाजित देना चाहिये, रोगी का शरीर, घर छाया और पहने क कपड़े आदि साफ रखने चाहिये, राग के घर में कोई आदमी न रहे, आवाज न हो और बहुत आँगियों की आवाज रखन न हो रोगी को दम देना चाहिये साथ धानीसे हूट देना चाहिये, शय्यसत्र न होने पावे एमचिये पारर रोगी को बरबट बदलवाना चाहिये प्रतिदिन नियम से परनामेटर खगाकर शरीर की गरमी जायगी चाहिये, और प्रति दिन की गरमी एक चापत्र पर लिखने रहना चाहिये । घाट आदि जिन जगहों में अधिक शोष लगना है वहाँ ही गद्दी बनाकर उसपर लिफ्ट के साथ आर्निहा मिलकर रखना चाहिये । हाथ के भागसे गुच्छ उचल जाने पर वहाँ ज्योतिष्ठ एसिड का छौशन बघवा केले खुदा विनीमेष्ट खगाना चाहिये ।

पृथ्या—रोगी का यदि कमजोर होने का भय हो तो हम अच्छी पुस्तकों के अनुसार अधिक पर्य देवेके पक्षपाती रहा है । राग के पहिले सप्ताह में दूध अथवा मासक शेरवा देना अच्छा नहीं ।

अधेज शोष अभाव सेही जिस प्रकार अनापसनाप मास और अट साथ है उनके हिसाब से दूध बघवा शीरवा हड्डा पर्य हासकता है । किन्तु हमलोग अन्न नहीं हैं हमारे बिये तो यह गुरुपाठ ही है । देश बल बार बार के अनुसार पर्य निष्प करना चाहिये, किसी पुस्तक विशेष अनुसार बघना बहाचित उचित नहीं है ।

पहिले सप्ताह में साधारणतः बर्न सावधाना बघवा

बारखी व सिंघाय और कुछ देना अच्छा नहीं है। यदि मतिसार, खाँसी होतो दूध थिड़थुछ न देना चाहिये। यदि जिगर में विशेष कोई दोष नहो और रोग बहुत समय तक टहलकर नाही सुख होजाय और मतिसार रहेतो वर समय छोड़ना दिया जासकता है। यदि लार कम नहो दूध देना उचित नहीं। जो लोग साधुना भयना बारखी नहीं खासकते उनके बिधे बीजमना अच्छा खाद्य है। यह मतिसार रहने पर भी दिया जासकता है। मगूर और मनार रोगकी सब हाथनो में अच्छे पथ्य हैं। मतिसार में किशमिष विधाना उचित नहीं हैं। मतिसार रहन पर सिंघाड की दूधियाछि सब से ज्यादा फायदेकर्य हैं। यह दूधिया बारखी की तरह पानी में मिजाना होता है। उपर उयो उयो छाडता जाय लो की मैशकी रंटी का तीन दिन देने के बाद कुछ दिन तक एक समय खावज और राति का राटी देना उचित है। उपर माराम हानक समय भोजन व नियम के सम्बन्ध में सावधान रहना आवश्यक है, क्योंकि मथिष वा मतिसार नियम साधार स दुबारा उपर हामाना है।

सधिराम उबर ।

इटरमोर्टेंट फीवर ।

सधिराम उबर का बहुत स नाम है। साविच्छर मर

• मरम पना में मन्त्री कील डाल कर मरमि फिर इसका ठान कर निमनी मरमना मरु का रम मरम निमि का नाम चाहिये।

• मन्त्री नेवार कानकी तरह ही सिंघाड के मन्त्री वा दूधिया नेवार कान का १४ ।

का ज्वर, पारीक्षा ज्वर, मैथेरिया ज्वर, इत्यादि यह बहुत से नामों से पुकारा जाता है। निराश में हमको विषमाज्वर कहने हैं। सखिपाम ज्वर ही हमारे देश में अधिक प्रचल है। तथा बंगाल में येना चारं नाम नहीं उहा मैथेरिया के कारण यह ज्वर फैलना हुआ नहीं हीणपडता। वर्तमान, रंगपुर, ज्योदर, मरिया आदि बंगाल के नगरों में इस ज्वर का कारण का उपद्रव होने हैं ही किसी से पुना नहीं है। हमारे प्रांत में तथा भारतभर के और और जगहों में यह ज्वर फैलता तो है परन्तु एका जैसा मयानक रूप बङ्गाल में देखने में आता है ऐसा और नहीं।

यह ज्वर मैथेरिया विष द्वारा उत्पन्न होता है इस ही दो मयसायें होती हैं। पटना और बटना तथा ज्वरमाना और ज्वर उतर जाना। बटने के समय, सखी खगना, बसाप और पक्षीना यह तीन मयसायें लगातार होती हैं और बटने के समय योही मयसा अधिक दर तक ज्वर की दहादह मयसा विज्वरता उपस्थित होती है। ज्वर की दहादह मयसा विज्वरता का स्थापितवहे अनुमार सखिपामज्वरको प्रतिदिन मानेयाया इच्छता यानी २४घण्ट के अंतरसे माने याया, त्रिजारी मयात् ४८ घण्टेस माने याला और चौथेया मयात् ७२घण्टे पर माने याया इतनी मयसायें विभक्त करसक्तेहैं। दैनिक ज्वर प्रति दिन, इच्छता एक दिन छोडकर त्रिजारी दोदिन छोडकर और चौथेया तीस दिन छोडकर आताहै। इसके सिवाय दिनमें दोबार माने याला ज्वर मयात् द्वैकाटिक आदि ज्वर के मयसायें पडने हैं।

सखिपाम ज्वर मैथेरिया विषसे उत्पन्न होता है। मैथेरिया क्या चीज है यह मात्र तक विषय नहीं हुआ। मात्र कठ

है। इसको प्रायः उग्र आमा कहते हैं।

दूसरी, ज्वरकी आक्रमणस्थिति।—उग्र आमे पर स्पष्ट तीव्र जुही जुदी अवस्थयें देखी जाती हैं। यथा ठण्डकगना, शरीर की गरमा घटना और पसाने आना। [क] पीठ में छाने, मध्या हाथ पैरों में और अन्त में सब शरीर में भरती लगती है और कुछ शरीर कापने लगता है। चमड़ा एक सूख और सुकड़ने लगता है तथा शरीरमें रोमाञ्च गड़े हो जाते हैं। चेहरा एक सूख, होट आर अगुलिये नीचे रगने होजाते हैं, सरसी अन्नश यदमे लगती है दात बड़कदान लगने हैं हाथ पैर आदि सब शरीर कापने लगता है। और आनो सब शरीर में अघामक गड घट पैल जाती है। मूद से आवाज नहीं निकलती आनो गळे का शब्द बज आता है अम आनी रघटने लगता है आम लेने में टानी पर बोध मातुम होता है माडो भुट नेत्र और बडिन, मानसिक विचार न रहने पर भी कभी कभी बकना आता अथवा चित्तुता इत्यादि लक्षण रहत है। शरीर पर हाथ रखने से शरीर की आनाबिच भरना की अयेगा भी कम मातुम होती है किन्तु मूद अथवा अगत में तापमान का रहने से १०४ या १०५ डिग्री तक हाजाता है। मूद गुला हुआ, बहुत प्यास की निघटाना वा उलगी आदि लक्षण बलेंनन रहने हैं। यह माध अट म भरत नीर घट गच रहती है। निर घीर घीर अथवा एकमाध इष्ट लगना बन्द होजाता है आर मर्या मालुन होना है, (ख) उमाप चला अघान् पुगायका पूरा एलत । चेहरा एक सूख और सुकड़ा हुआ मही रहता किन्तु पहिल से विपरान अगान् एक पूरा और घट्टा हुआ शरीर की गरमा स्पष्ट बडा हु और १०५ डिग्री का दना बमा

को बुखार का जाना भी मातुम नहीं होता । ऐसे मोके पर केवल शरीर का गर्मी और पसीनों से ज्वर मातुम होता है ।

तीसरी, ज्वर की विरामावस्था ।—रोगधी पहिली अवस्था में इस विराम काल में रोगी को बहुत बदन मातुम होता है किन्तु बाहर ज्वर का आक्रमण होने से रोगी दुबला होता जाता है शरीर में रक्त नहीं रहता और धीरे धीरे बिच के सम्पूर्ण उद्वन दिखलाई पड़ते हैं ।

चतुर्थ, ज्वर के प्रकार ।—रोग आने वाले इकतरा तिजारी, चौथेपा आदि ज्वरों को बात पहिले दिख चुके हैं । यह तीन प्रकार के ज्वर हमारे देश में अधिक होते हैं । इनमें पार्वत बुखार कहते हैं । पार्व का बुखार बहुत बुरा हादर होता है, और आसानी से आराम नहीं होता । इन साधारण पार्व के ज्वरों के सिवाय और भी कई तरह के निल हुए पार्व का ज्वर हैं । इन्हादिह ज्वर दिन में दोबार आता है । प्रातःकाल बड़े -पंग से आता है और सांझा समय कुछ हल्का । इस प्रकार का ज्वर माना बहुत अगुम लक्षण है । मैलरिया बिच से धातु सम्पूर्ण दिवाह और कूरमान से देह उद्वरित नहीं होता तबतक यह भयानक तरह नहीं आता ।

पंचम, ज्वर के परवर्ती फल और उपसर्ग ।—

पुराने धार अधिक समय तक रहने वाले रोग में रक्त की कमी अर्थात् रोगी का बदन चौड़ा हाथना, एट बढ़ना घुबन, शिगर और तिजो का भयानक रूप से बढ़ना, रक्त

करी पुनःपुनः, भूय न लगता, अजीर्ण अथवा कष्टकर
 रोगादि दिखता देते हैं। मीठरिया विष क साथ कुशाकर
 १११ रित्त बर और भी पुनःपुनः करता है। कुशकारन और
 ने रियेवा विष से रागी का रुद जीण होजाताहै। मसूडेकी शिकि
 खना चीनों क मसूद और मक से लून गिगता गुरु में पुनःपुनः
 अना मुरु क भीतर पाय हाजाता और उनमें पुनःपुनःपाय,
 इइयाय । भार रजायागय इग्यादि मरुदिया रागीक अन्नि
 मा री क रतए दे।

शिकिमा ।—इस उपर की शिकिमा अन्नि
 करवह । इस उपाय यह करव है कि हासिआपायक में
 मरुद का रुद अन्नि इग्या मरी, उनकी बही भूय है। इस क
 पाय उह मरुद उपर का बहुत अदृष्टः शिकिमा है ।
 पल मरुद का शिकिमा बहुत हाइयार् से ले
 अन्नि से हा जता है । मरुद क मरुदाय करव समय । हमरुद की
 उपर क मरुद उह उपर है -१६६ गावराय, पल
 मरुद के अन्नि से मरुदाय मरुद लपाय । मरुदाय
 लपाय से मरुद मरुद शिकिमा क मरुद है और शिकिमा
 मरुद से मरुद मरुद का मरुद क शिकिमा से रुद मरुद
 मरुद मरुद मरुद इ मरुदाय लपाय मरुद । मरुद अन्नि
 मरुद मरुद मरुद मरुद मरुद की मरुद बही मरुद मरुद
 मरुद मरुद मरुद मरुदाय मरुद मरुद मरुद है । मरुद
 मरुद मरुद मरुद मरुद मरुद मरुद मरुद मरुद मरुद है
 मरुद मरुद मरुद मरुद मरुद मरुद मरुद मरुद मरुद है
 मरुद मरुद मरुद मरुद मरुद मरुद मरुद मरुद मरुद है
 मरुद मरुद मरुद मरुद मरुद मरुद मरुद मरुद मरुद है

ही से सर्दी सी
लगना ।

पसीना—बहुत व्यास, शरीर
हकन से बहुत पसीना,
रात्रि के समय बहुत
पसीना ।

जिगर—व्यास नरहता, अट
पसीन माझना, जिगर
का आन सूना हुआ
भौंर दू हाता, पीली
रगत ।

ज्वर का मय अथवा ठीक
बन्द व बन्द एक उपस्थित
हाना है ।

बन्द आन अ न मसी का
हकन से अथवा व्यास हात
आनना सर्दी दना अ दिय ।
अथवा बहुत पसीन अ म दै ना
आनना अर्द्ध न आये ना न
ह ।

सूत्रा हुआ, बकना बकने
मद हण्ड को दकने के
दू मातुम हाता ।

पसाना—बहुत व्यास, कु
आप पड रहने के
बहुत पसीने आता
हण्ड क बक बहुत
पसाने आता, अथ
में दू ।

जिगर—बहुत व्यास, कुआ
बहुत छोटा देर क
लिये अतरना, अथ
तक दुषाया सर्दी
न दण आप न
तक पमान आता
मय मदद हण्ड अथन
दू होना अथ
बद जानी और अथन
म दू मातुम पडना ।

मये अथवा ठण्ड अर्द्ध
मयम तक रहनी ह अमा म
हाना है कि सर्दी का अथवा
अतिमयम अथवा म ह क
बिगुल न हा ।

यदि शीत और सर्दी की
हालत में व्यास म ह मी
पुनःपुनः दना न अर्द्ध । सर्दी
की हालत क बाधु पसीन अ अथ
ना पुनःपुनः दना अर्द्ध सर्दी
म म दै ना न अथवा अर्द्ध ।

हमारे देश में बुनेन के अपयवहार से जितना बुकेसान हुआ है सोपद् ह्वय संभिरमि ज्वर से उतना भर्ही हुआ । यदि कोई सामाजिक रोगी का शुभ चिह्नक हो तो उसको साहिये कि छोड़े समय के लिये बुखार की दवा इषो अथवा अरती प्रतीसा कएनेके लिये कुदनाएन कदापि न देवे । --

मात्रा ।— बुखार उतर जाने की हालत में दो दो घंटे के अंतर से एक एक ग्रैन देना ।

असैनिक १२, २००शक्ति ।— तिवारों और घोषेदा के ज्वर में, कुदनाएन के अपयवहार के उपरांत, तिल्ली और निगर बहुत बढ़ जाने पर, चहटा पील रंग का सुजन, दस्त, मुह में छात्रे रक्तहीनता, भूम कम लगना सरदी लगन से पहिचे उबासा आना, तथा शरीर बैठना सरदी अच्छी तरह न लगना, मीतर सरदी विन्तु बाहर गत्ती लगना, सरदी के समय प्यास न लगना, पानों पीनेसे सरदी का बहना और उलटी होना, शाना बहना का अरसर न रहना, उचापायसा का अधिक् समय तक प्रबल रहना, अथवा सरदी और उचाप दातों का अधिक् रहना, विन्तु पसीनों का बहुत कम आना अथवा बिटकुल न आना, गत्ना की हालत में बहुत देवैनी रहना घोडा २ विन्तु चार २ पाना पीने की इच्छा करने ज्वर के उपरांत अत्यन्त दुर्बलता ।

पुराने मलेरिया ज्वरमें अब घातु मलेरिया बिचसे अहराती हो जाता है और उसके साथ साथ तिल्ला और निगर बढ़जागदे तो असेनिक कायन करना है । उचाप जितना अधिक् हो और विन्तु दोर अधिक् उहर, प्यास जिनतों अमल और शरार

(१४०)

त्रिकेन्द्रसावत्व ।

विषदात्री है । तिब्बो-भौर-जिगर-यदा हुआ हो तो रक्त का
चाहिये ।

- इपीकुकुआना ६, ३०, शक्ति ।—आहार के अति-
मित होने के कारण बार बार ज्वर आता, ज्वर आने से
पहिले उबोसी धाना अगडार लेना और बार बार
घूकना, बहुत जो मिचलाना और उलटी करना, उलटी
की अवस्था में जा मिचलाना, उलटी करना और सूँ
रासी सर्दी योड़ी दर तक रहने वाली ज्वर बहुत हो
तक, रहना, हाथ पैर ठंडे रहना, यदि पहिले कुनात
दिया गया हो तो यद, बहुत ठीक है । आहार के अनिवाप्त
होने के कारण यदि बार बार ज्वर आवे तो इपाका रक्त
ही समा है । यह इस का विशेष लक्षण है ।

नेटूम, स्यूरियेटीकम १२, ३०, शक्ति ।

यदि ज्वर की कुछ पुरानी अवस्था न होनी यह औषधि
प्राय व्यवहार नहीं की जाती । प्रातःकाल तथा
१० । १२ घंटे ज्वर कम्य देकर प्राय बहुत देर तक और
बहुत आरका मरही लगे उसी समय हाट और नापून
सब नाटा रगत के होजाये, व्यास बहुत लगना, फिर
दद, सिर में माना इपोड स काइ टाकता है । बहुत पसना
धाना पसोना धान से सियाम सिर दद के और सब
शिकायतों का कम हाजाता । हाटों पर पापदी उमता
पुराना हालत में जब रागी रक्तहान होजाता है, मुँह
पीले रंगका दीख पडता है, तिब्बो और जिगर बहुत
रक्त जाते हैं, उस समय यह औषध फायदा करता
है ।

पलसेट्रिखाः ६ शक्तिः १—साधने परः शोः शान्त शोः
 स्वर धाता हो, साधार के मोक्षमिष्ठ होने के कारण फिर
 बुझाऊका साझाना, स्वर की प्राय किसी भवसा में
 व्यास नः रचना, उच्चारण के समय सामान्य व्यास, स्वर
 के मद् अक्षुण्ण शपथर बदलने रते, दो दिने का बुझार
 कमीः पदना- नहीं, चौथेया स्वर हाय पैरों में
 उबन, मुद का साद शराय, साहरी गली प्रत्य
 होना, शरीर श्याडव की इच्छा करना ।

यूपेटोरिबन-यफो-लियेटम ६ शक्तिः १—

दोटे और हाय पैरों की शक्तियों में बने होना, सही लगने
 का हाटक में बल्यक्त व्यास, उच्चारण की भवसा में बल्यक्त
 व्यास और बनेषो उचरती होना, सुबह सात बजे स्वर
 होना, शरीर बल्यक्त में परह न करने वाली व्यास किंतु
 पानी पीने में जो मिष्टाना और उचरती होना तथा
 शरीर बल्यक्त शरीर का अदेहा देव कपी अधिक लगना,
 रसने बल्यक्त न शान्त बल्यक्त बल्यक्त हा दोटे करना ।
 बुझार बल्यक्त तरे नहीं उचरता शोः और बल्यक्त का
 दो बला की तरह पीना रंग होना । सविज्ञ और बल्यक्त
 विज्ञ होयो उचर के उचरों में पर पर उचर बनेषो
 है । इस का उचरने का समय बल्यक्त ही बन है ।
 बल्यक्त मव लिग शोः के स्वर ही तरह हात
 है ।

सीडून १ शक्तिः—पर रसा शोः शोः का बल्यक्त
 बल्यक्त बल्यक्त है । दोबल स्वर और बल्यक्त का पर
 बल्यक्त है । बल्यक्त इस समय स्वर बने हुन

दिन भी घड़ी रखकर देखने से मालूम हो कि ठीक समय आता है । शाम का, ६ बजया ६॥ बजे ज्वर रात को, ३ बजे बजया दिन, को ३ बजे सड़ी लगकर याना, शीत की प्रधानता, शीत के समय व्यास न लगाना, उत्ताप के समय गरम जल पीने की इच्छा करना, इतर जाने पर कमजोरी और तबियत खराब माना होना ।

सीडून की बुखलता प्रायः घायना की बुखलता समान होती है । सीडून की घायना, बुखलता होती घायना की तरह बहुत पसीने के कारण नहीं । बजया शीत बजल रहना इसका प्रधान लक्षण है । क साथ उत्ताप, उत्ताप के साथ कम्प और शीत पसने के साथ शीत और उत्ताप मिला हुआ है ।

अनक समय मलरिया ज्वर विकार की बजया प्रायः हाजाना है । उस समय उस की चिकित्सा मलरिया ज्वर के समान करनी पडना है । उस समय रसय प्रायानया आसैनिज, बलदाना, भारि औषधे लक्षण धनुमार दना चाहिये । इनही रूप बजया और चिकित्सा के सम्बन्ध में साविपातिक और मातिसारिक विकार का चिकित्सा देखो ।

मरिगाम ज्वर के अन्त में तरह तरह के उपसग मलरिया उपसग हात है । यह उपसग कमा कमी बडे मलरिया आजार कारण करत है, यहाँ तक कि रोगी के प्राणों होमाना है । औषध ज्वर मलरिया का मलरिया है । औषध ज्वर भी मलरिया मलरिया हाता, म

औषधों का क्रम ।—सर्पिताम ज्वर में कितना ऊँचा श्रम व्यवहार किया जावेगा उतना ही अच्छा है । ३० २०० आदि कम नितने फेहदापके होते हैं नीचे के कम उतने नहीं होते । कौनसा कम किस मौके पर कितना पायदा करता है, यह अपने तजुबे से—निश्चय करनेना चाहिये ।

पदप ।—रूपका नियम रचनामन्त्र भावद्वय है । प्रायः आहार के अनियम होने के कारण को पाँच बार चर लौट लौट कर आजाता है । सब प्रकार के कटि मार्द से बचनेवाले आहार न खाने चाहिये । ज्वर आने से पहिले, अथवा ज्वर के समय कुछ भी न खाना चाहिये ।

नये बुझार में चावूदाभा, मार्लो आदि हलका पच्य अच्छा है । पुराने ज्वर में अरुणा देकर दूध, दाल का पानी दलिया या पुराने चावल दिये जासके हैं । पुराने रोगी के लिये विशेष कर यदि उदरामय आदि कोर उपसमन हो तो रात के समय चावल न देकर राटी ही खाना चाहिये । अमाशय और पूर्णिमा के दिन प्रायः ज्वर नौट कर आजाता है । इस लिये आवश्यकतानुसार इन दिनों में उपवास कराना अथवा सिर्फ एक समय राटी खाना और यदि चिन्तुल न होसके तो दिन में चावल बार रात में रोग खाना उचित है ।

—
स्वल्प-विराम ज्वर ।

(सिमिटेन्ट फीवर)

जो ज्वर पूर्ण नष्ट से नहीं उतरना है वह किसी क्रिया
(१६)

औषधि प्रयोग करने का समय ।—

बुधवार 'उतरने' पर दवा देना उचित है । पूरा बुधवार उतरने न पाये और पैसेने आते हो एके समयमें ही दवा का ठीक समय होता है । ठीक समय पर एक मात्राही ठीक निर्दिष्ट औषधि बिलकुल बर्तन करसकती है अथवा बुधवार उतर के बर्तन का बर्तन कुछ कम करसकी है । ज्वर क पूरे भराव के समयमें कोई दवा कुछ फायदा नहीं करती । दवा देने के बाद स्पष्ट अथवा कम से यदि उतरती होखण्डे तो और या दूसरी दवा देना अथवा उसी दवा की दूसरा मात्रा देना सुराह की बात है । पर्याय कमसे औषधों का व्यवहार क्रम कम होगा उतना ही अच्छा है ।

सदृश औषधों ।—रोग के लक्षणों से मिलती हैं

यदि ठीक दवा रोगों को मिलजावेगी तो निश्चय और जल्दी आराम होगा । यदि औषध रोग के सदृश नहीं हो तो उस का कम चाहे जितना ऊंचा हो अथवा नीचा क उसकी मात्रा चाहे जितनी अधिक हो परिमाण में औषधि चाहे जितनी अधिक हो, या चाहे जितना जल्दी जल्दी दीजाय उसमें कुछ फायदा नहीं होगा । यह संप्रदाय चाहे रेखेना चाहे कि दवा के गुण से रोग अच्छा हाता है उसके परिधि से नहीं । सविताम धर की चिकित्सा में निम्न लिखित औषध और अथवा दखने योग्य हैं (१) ज्वर के विराम उतरने के लक्षण (२) शीत, उष्ण, और घमसावा के सब लक्षण (३) यह अथवा तीनों में से कौनसा नहीं रहती बल्कि कौनसा अधिक रहती है, (४) रोगों के असामानिक अनियमित और विशेष विशेष लक्षण ।

औषधों का क्रम ।—सिराम ज्वर में कितना ऊँचा

क्रम स्पन्दार कियाजायेगा उतना ही अच्छा है । २० २००
मादि कम कितने फलदायक होते हैं नाचे क्रम उतने
नहीं होते । कौनसा क्रम किस मौक पर कितना
फायदा करता है - यह अपने तदुपरे से निश्चय करलना
चाहिये ।

पदप ।—उप्यक्त नियम रक्षनामन्यत्र गायश्चक है ।

प्रायः माहार के अनियम होने के कारण जो धार
वार ज्वर लौट लौट कर आजाता है । सब प्रकार के कटि
गार्ह से बचनेवाले माहार न घाने चाहिये । ज्वर जाने
से पाँटले अथवा ज्वर के समय हुँड भोजन खाना
चाहिये ।

गर्भे सुसार में सान्द्राणा, बार्हो भादि हलका पथ्य
ग्रह्य है । पुराने ज्वर में मयस्या द्यकर दूध दान का
पानी दलिया या पुराने चाण्ड दिय जासक ह । पुराने
रोगी के लिये विशेष कर यदि उदरामय भादि रोग उप
सर्ग न हो तो रात्र के समय चावल न देकर राटी हा बना
चाहिये । अनायस्य और पूर्णिमा के दिन प्रायः ज्वर लौट कर
आजाता है । इस लिये आयश्चकतानुसार इन दिनों में उपशाम
कराना अथवा सिर्फे समय रोटी खाना और यदि बिन्
हुन न होसके तो दिन में चावल और रात्र में राटी खाना
अचित है ।

—
म्वल-विराम ज्वर ।

(सेमिटेन्ट फीवर)

जो ज्वर पुरो मत्त स नही उतरना केसा हिमो हिमा

समय घोड़ासा उतर जाता है और कुछ कम हावला है उस को सत्य-विराम उतर कहते हैं। यह एक उतर का रहना ही। हे फिर उस के ऊपर एक और दूसरा उतर बड़का है। मायुपेंद छात्र में इस को सतत उतर कहते हैं।

कारण।— भाजकक के विहायती चिन्तितसकों के सविराम उतर की तरह सत्य-विराम उतर का भी प्रीने गिया बिच छारा कल्पन हाता अनुमान गिया है। मायुपेंद में लिखा है कि यह उतर मात, विच, कफ इन तीनों क गत बड़ हात स उलय हाता है।

सत्य-विराम उतर एसे दूधों का ही उतर है उदा प्रचानन मौसम गरम रहता है और मलरिया अधिक रहता है कभी कभी प्ररगिया उतर(सविरामउतर) एसा सत्य विराम उतर में लक्ष्मण हाताता है। भारतका क और दूधों की सगला यह उतर बंगाल में अधिक हाता है। कहा गया है कि महर्षिः कर्णकृष्ण, ईगट्टेड क वाक्याह प्रथम जेम्स और अर्जियर समथयञ्जका एसी उतर स प्राप्तात हुआ है।

लक्षण।—सविराम उतर की तरह सत्य-विराम उतर ह न स पहेल लगीत में बड़ सत्यन, उवाभी प्रगत ई चिन्तितसा मूय स लक्षण, सिफ बरे मंद न सत्य का न लक्षण वैध प्र न है। यह लक्षण रहन रहन सत्यन गत निच लगीत प्रगत नक्षण भाजकता है। यह सत्य सविराम उतर की तरह कभी उतरदा सत्यन एत मच रहन काही नही है। एसी उतर एसा सत्यन सत्यन क उतरदा क उतरदा सत्यनी उतर सता है। यह उतर एसा सत्यन उतर एसा सत्यन उतर उतरदा है।

समय शरीर की गर्मी १०५ या १०६ डिग्री तक हो जाती है । मुँह सूखा हुआ, आँखें लाल रंगकी, देहकी छात्र सूखी हुई और बहुत गरम, अत्यन्त सिर दर्द, पीठ और हाथ पैरों में दर्द, गहरा प्यास, तेज नाड़ी (प्रति मिनट ११५ से १२० बार अथवा इस से भी अधिक) अत्यन्त प्यास, जीभ पीठ रङ्ग के लेप से ढकी हुई, उल्टी में पित्त निकलना, येचैनी और घबराहट । किसी किसी को उल्टीयाँ अत्यन्त बहकर होती हैं ।

कितने ही घट्टों के बाद यह सब कष्टदायक प्रबल लक्षण धीरे धीरे कम होने लगते हैं । ताप २-३ अथवा इस से भी अधिक डिग्री कम होजाता है । कभी २ थोड़ा २ पसीना आता है । जीभ मिचलाना, उल्टी, पेट फूलना आदि लक्षण प्रायः सपनाते रहते हैं, और सिरका दर्द भी बहुत कुछ कम होजाता है । यही ज्वर के उतरने का समय होता है और इसी समय दवा देनी चाहिये । यदि रोग कठिन हो तो यह विराम की अवस्था होन नहीं पाता या इतनी कम हाती है कि मातुम नहीं पड़ती तथा होते-होते फिर ज्वर बढ़ने लगता है । साधारणतः विराम काल २ घंटे से लेकर १२ घंटे तक रहता है । अधिकांश यह विरामावस्था सुषुप्त के समय होती है,—रातके दोप भाग से शुरू होती है और १० या ११ घंटे तक रहती है, तथा दुपहर में फिर सुषुप्त बढ़ने लगता है । स्वल्पविराम-ज्वर में प्रायः योगी को कष्ट रहता है किन्तु यदि रोग के बुरे लक्षण हों तो उद्दामय उपस्थित हाता है तथा पतला बहुत बहबूदार और कभी कभी गून मिला हुआ दस्त हाता है । यही साक्षिप्रातिष्ठ विकार ज्वर के लक्षण ।

स्वल्प-सिराम ज्वर १ से १४ दिन तक रहता है । एक ता राग को रात दिन ज्वर चढा रहना है और उस क कारण कष्ट भोग करता है, जिसपर फिर प्रति दिन दूसरे ज्वर का आना, रोगी कमश दुःख हान लगता है, यहा तक कि विकार प्रसन्न हो जाता है । इस समय रोगी का देखने से सात्रिपातिक विकार ज्वर क रोगी का भ्रम होता है, किन्तु यथाथ में यह सात्रिपातिक विकारज्वर नहीं होता । इस समय सात्रिपातिक भार आतमारिक् विकारज्वर के अनुसार चिकित्सा करना पडता है । इस समय उदरामय, प्रलाप बहग, खासी आम सूखीहृद, गडा यहुत धुद्र और कमभोर तथा रागा पूरतगह विकार को प्राप्त होनाता ह ।

यहा पासना है कि यह ज्वर सविराम और सात्रिपातिक ज्वर क पाच का है क्योंकि ज्वर का प्रकाश प्रबल हान पर यह सात्रिपातिक की तरह, तथा कम हान पर सावराय-ज्वर का तरह रहता है । सविराम ज्वर का प्रवृत्ता इस ज्वर का आक्रमण नात्रातिक होता है । डाक्टर मैकलान न कश है कि सविराम ज्वर के अगेवा इस ज्वर क द्वारा मृग्यु सख्या १० गुनी अरिक् दाना है ।

चिकित्सा ।—१ । पाचाशय के लक्षुणों के प्रबल होने पर—इराका नकमय मिक्ता पटसाटिहा, पर्टीमानियम मृग्यु तियम ।

विष क लक्षुण प्रबल हान पर—एकनाइट, प्रायानिया अथवा अगरेम नकसराभिका याडागार्डम, पटसाटिहा

३। श्लेष्मा के लक्षण प्रबल होने पर—मार्कुटियस, पल्सेटिला, रसटकस इपीका, नक्सयोमिका ।

४। विचर के लक्षण प्रबल होने पर—बेलेडोना, प्रायोनिषा, रसटकस, आसेनिक, पैप्टेशिया, हायोसायमस, इपीका ।

५। कृमि (काड) के लक्षण—पेकोनाइट, बेलेडोना, म्कूरियस, सीना, सल्फर, नक्सयोमिका ।

६। ज्वर सांनिपातिक व्यापार का होने पर—बेलेडोना, प्रायोनिषा, रसटकस, आसेनिक, वाय यज्ञ, धायना, पैप्टेशिया, हायोसायमस ।

७। यज्ञीय के कारण—इपीका, नक्सयोमिका, पल्सेटिला, ऐन्टिमनी-टाट, ऐन्टिमनी बूड ।

८। सर्दी लगने से—पेकोनाइट, नक्सयोमिका, प्रायोनिषा, इपीका पल्सेटिला, म्कूरियस ।

जेडसाभियम १×शक्ति 1—यह प्रथम सप्ताह में विशेष फायदा करता है । इस को देने से ज्वर पाचवें दिन के भातर ही उखड़ जाता है । यहाँ को स्वल्प-विराम ज्वर होने से यह एक बहुत उभदा दया है । २५हर रात से ज्वर का घटना सुषह के समय ज्वर का उतरना, ज्वर के साथ पर्मोन धाना, ज्वर आरम्भ होने के साथ यहाँ की शक्ति कम होने के कारण रोगी में उठने की शक्ति न रहता ।

प्रायोनिषा ६, १२ ।—यह भी जेडसाभियम की तरह ज्वर के पहिले सप्ताह में बहुत फायदा करता है । शाम को ज्वर घटना का उतर उतरना स्पष्ट मालूम न हाना सिर में सख्त दवाय या पसा मालूम हाना कि पटा

स्वरूप-विराम ज्वर १ से १४ दिन तक रहता है । एक ता रागी को रात दिन-ज्वर चढा रहना है या उस व कारण कष्ट भोग करता है, जिसपर फर प्रति दिन दूसरे ज्वर का आना, रागी प्रमत्त दुबल बाने लगता है, यदा तक कि विकार प्रसन्न हो जाता है । इस समय रागी का देखने से साक्षिपातिक विकार ज्वर व रोगा का घम होता है, किन्तु यथाय में वह साक्षिपातिक विकारज्वर नहीं होता । इस समय साक्षिपातिक और मानमारक विकारज्वर व अनुसार चिकित्सा करना पड़ता है । इस समय उदरामय, प्रलाप बकन, नासा जाम सूखी हुई, नाडा बहुत शुद्ध और कमजोर तथा रागी पूरुतर्ह विकार को प्राण हाजाता है ।

कहा जासता है कि यह ज्वर सविराम और साक्षिपातिक ज्वर क बीच का है क्योंकि ज्वर का प्रकाश प्रवृत्त हान पर यह साक्षिपातिक का तरह तथा कम हान पर साविराम-ज्वर का तरह रहता है । सविराम ज्वर का अणुदा इस ज्वर का आक्रमण साधातिक होता है । डाक्टर मैकलान न कहा है कि सविराम ज्वर क अणुदा इस ज्वर क द्वारा गृह्यु सदया १० गुनी अधिक हता है ।

चिकित्सा ।—१। पाचनार्थ क लक्ष्मणों क प्रवृत्त होने पर—(१) कडा नकमयः (मका परमादिना एकीमनियम गृह्यु नियम ।

२ निज क लक्ष्मण प्रवृत्त हान पर—एक नाईट साधोनिया अणुदा व गैस नकमयः (मका परमादिना एकीमनियम गृह्यु नियम ।

प्यास और यत्ने में उठना, जो निश्चयाना का उलटो होना, पाककली में कष्टन मालुन पडना, पाककली विपर और निष्ठा के कर्णों में बोध मालुन पडना तथा यँठन की तरह दर्द, नारी के स्थान में पैठा, कष्ट और धार धार हल जाने की हाडत होना, परन्तु दल नहोना अथवा पोटा पोटा पतला मान निटा हुआ हल होना, चिनकना, सरही और यत्नी निष्ठा हुई मालुन होना । अधिक का शुद्धपाक मात्रन करने से, शराब पीने से, रात्रि जागने से, श्री सङ्ग तथा मानसिक भय के कारण ज्वर होने से। यह दवा बहुत फायदा करती है ।

पलसाटिका ६ शक्ति ।—जीन सजेद रग की रतेष्वापुष्ट रंग से दबी हुईं मुह का स्वाद खुषा वा खराब मालुन होना, भूख न लगना, मुह में पानी माना, पाक कली में कष्ट मालुन होना, और सात बह बख्त अथवा रात्रिमें बदरामप, राम का खुषार का बटना ।

बेलेहोना ।—मल्लिह गिर दर पसा मालुन होकि बरल बिहटा पडता है, मुह सुखा हुआ । विगतन में बह दिन में मालुन और रात में नोद न माना अथवा सुखा हुआ गल, प्यास, शीत हाथ में मरदा लगना, गिर बहुत गलन और खून की शक्ति बर ।

पट्टीमोनिपम-कूडम १२, ३० शक्ति ।—

अधम क कारण ज्वर, शीत का पबसेटिला के फायदा न होने पर, उन्न दूध की तरह सजेद और माटे बर से दबी हुई, हनेटा बहार माना और उन्न में कष्ट हुए

जाता है। सोने से कम होता। यदि प्रलाप हो तो काज और रोजगार के विषय में बकना, पिछा होना, पशु, छाती के दोनों ओर घुई सुमान का दर्द।

यूपेटोरियम-पर्फॉलियेटम ६ शक्ति ।-

यह पिल कल्पण मिले हुए अल्प-विराम उबर करती है। हृत्पापों में बहुत भड़कन, सब शरीर में दर्द, और जो मिथ्याकर पीछे विलक्षण उबर होना, पीठिया का तरह पीछा, जीम मोटी पीछा रंग ही म दही हुए त्रिगुण आन में पूणता और दर्द, बहुत मारपित। सुमापनला दर्शन।

इपीया ६, ३० शक्ति ।—मोजन करन का

बनाना विशयकर पी मयवा तल की चीज, जी मिथ्या और इली आना मुह में दृग्मय, मुह का तथा सब बापों का कटवा खाद, पाकस्थली मरी और उसमें म म्म हाना।

मार्शूरियम ६ शक्ति ।—सम्प्या क समय में

उबर मारपीगत का उम उबर का बहुत बडना, माथे कमहायन रंग का मुह का आद और इकर और उ सब कटवा नही चीज आन को बहुत इपला हना विन से म्म आना से म्माम्म कटवाही और त्रिगुण दर्शन से दर्द म्माम्म हना।

नइमरोमिका ६, ३० शक्ति ।—रूप मूर्वी

उबर मयवा रीज रंग कटपुन दर्दी हुए

प्लाम और लगे में जलन, जी विषयाना का उठता होना, पादकटी में कटन मातुम पहना पादकटी डिगर और मिट्टा के स्थानों में बोध मातुम पहना तथा पैठन का तरह दद, गर्मी के स्थान में पैठा, कष्ट और बार बार दम जाने की हास्य होना, परानु दम नहोना मयदा दोहा पादा पतन आम मिला हुआ दम होना, विनयना सरदी और गरमी निची हुई मातुम होना । अधिक् का गुदपाक भाजन करने क, पुराव पीने से रात्रि जागन भे, छा मूत्र तथा मानसिक भय के कारण ज्वर होने का यह सब बहुत पापदा करती है ।

पलसाटिछा ६ शक्ति ।—ओम सचेद रग की दरभायुक्त लेप क दधी हुई मुँद का स्पर्श बहुतो का करताव मातुम होना भूष क हाका मुँद में पना कथा एक बरती में बाध मातुम दया, और साम कद कष्ट मयदा रात्रिमें बदरामद, दम का बुखार का बढना ।

बैलेदोना ।—काल टिर दद पला मातुम होदि कदर विदला पढला है मुँद मूबा हुआ । मिगनब में कद टिर में माडरु और राग में बंद क हाका, कयदा गुबा हुआ गन पदास, बीच दंभ में सारा सगका, टिर दून दम और दूर की कधि रने ।

पुटीमोनिपन—मुँदम १२३० शक्ति ।— कर्षण के कारण गद, होना का ददमिदल ने कयदा क होने लद ईन दूद की तरह कदर और कदर के क हाकी दूद, ददर ददर कका और ददर में कद दूद

[Faint handwritten text or signature at the bottom of the page]

जाता है। सोने से कम होता। यदि प्रलाप हो तो वाज्र और रोजगार के विषय में बचना, विस्त होना, वाज्र, छाती के दोनों ओर सुर शुभान का दद।

यूपेटोरियम-पफॉलियेटम ६ शक्ति।—

यह पित्त के लक्षण मिले हुये स्रव्य-विराम उ्वर में फल करती है। हृदयों में बहुत भङ्गन, सप शरीर में दद, और जो मिथलाकर पीछे विलक्षण उ्वर होना, पीठिया का तरह पीला, जीम माटी पीली रंग की म दही हुए, जिगर खान में पूणता और दद, बहुत भार पित्त मिथ हुआ पनला ददन।

इपीका ६,३० शक्ति।—मोजन करन का एक

नहाना, विशयकर घी भयवा तेल की चीज, जी मिथला और उलटी खाना, मुह में उर्गभ्य, मुह का तथा सप के खानों का बहवा खाद, पाकस्थली मरी और उसमें एक माष्टय दाना।

मरकूरियम ६ शक्ति।—सग्धा क सामय प्रक

उ्वर, मापीरान को उम उ्वर का बहुत बन्ना, मासों को समझा पीछे रंग का मुह का खाद और उच्चर और उलटी भय बहवा, लही चीज खान को बहुत इच्छा दान, मथ पित्त और सग्धा क मरकूरिया, पाकस्थली और जिगर के दानन स ६३ मरकूर दाना।

नरमबोमिका ६,३० शक्ति।—जीम सूधी हुई

जोरे सद्धर भयवा पीछे रंग क कदस, लही हुए हुए

न लगना । ज्वर परावर होने दिन, पाच दिन अथवा सात दिन तक रहकर पीछे पसीने आकर उतर जाता है । उल्टी प्रायः नहीं होती, लेकिन ज्वर पहिले भोजन आदि की गड़बड़ से उल्टी प्रायः होजाती है । अक्सर कोष्ठबद्ध रहता है, अतिमार शायद, मुद्द का प्रायः घुटाखाइ अथवा कड़वा साद रहता है ।

बालक बालिकाओं के पेट में कीड़े हो तो यह ज्वर हमेशा ही रहता है । उनको ज्वर होने से कुछ दिन पहिले ही भूख कम लगना पेट में दर्द, रात में नींद छूट जाना, बिना घन रोना, नाक गुरचना या खुजलाना श्वेत पीसना, मलद्वार खुजलाना आदि लक्षण देखे जाते हैं । ज्वर प्रकाशित होने पर और लक्षणों के साथ अत्यन्त धैर्य, शोध भाव, पेट में दर्द, बकना आदि लक्षण वर्तमान रहते हैं ।

चिकित्सा।—एकोनार्डिट ३ शक्ति ।—गरमा के बाद सरदा और सरदा के बाद गरमी लगना, गरम और मून्ना हुना घमड़ा छँक इत्यादि । नाड़ी उपनरु स्वामाबिह नदी होती और शरीर पर पसीने नही आते तबतक प्रति दो घण्टे के मंतर एक मात्रा एकोनार्डिट देना चाहिये । कभी कभी दो चार मात्रा एकोनार्डिट देने से पसीना आकर ज्वर उतर जाता है ।

घेलेडोना ६ शक्ति ।—अत्यन्त शिर दर्द, चेहरा और हानो आँसू लाल रक्त का धन पट्टी ली घर्मनियों का उपरचना मगने रहना, नींद न आना, दकना इत्यादि मनिष्ठ क लक्षण । ज्वरत पड़ने पर एकोनार्डिट और देडेडोना एक क बाद एक दावे जासकते हैं ।

प्राण का स्वाद, मूत्र न लगना, जी मिचलाना, गलेमें कण्ड उ रहना मालुम पडना, इसी लिये बार बार छकारना, मूत्र छप दिगु खान की इच्छा न होना, भोजन करने से पेट सूज उठ पडुन कमजारी और भयसम्पत्ता ।

रसटक्कस ६, ३० शक्ति ।—बहुत दुबलना, बार बार बुद्धार पतला दम होना, जीभ सूखी हुई, व्यस सांनिपातिक के लक्षण ।

सामान्य उजर ।

(सिम्पिल फीवर)

सान्नेयिक, पिचनेयिक आदि ज्वर इसी प्रकार आता है । अनापशनाव और भयोजन मोजन करने से तथा सरदी लगन से यह ज्वर अकसर आता है । यहा इस क प्रमाण कारण है, । अधिक धूर घेरे में भोजन बहुत परिधम करना, रात में जगना, भय, विना उत्रण आदि कारणों से यह ज्वर हमेशा आता है । आ आदि मानसिक कारणों से ए इका लडकियों का सर्वसरी आता है ।

लक्षण ।—उत्पाप और व्यास यही वा इस ज्वर क लक्षण है । सामान्य उजर-ज्वर (लगानाउजर) के पहिले किछ खाइ उभ्रम मालुम नहीं पडने मधानक उजर आरम्भ हो जाता है । उजर गरम नहीं तत्र, व्यास बहुत । उजर क आरम्भ से ही कुछ बहुत छिर चर्दें चरीर में मजबूत होकर वेदना कम जीभ की रगत मजबूत मजबूत हो जा के किछ से दही पूर मूत्र कम लगना मालुम दिगु

मलगता। ज्वर बराबर ठीक दिन पाच दिन अथवा सात दिन तक रहकर पीठ पसने भावर उतर जाता है। उलटी प्रायः नहीं होती लेकिन ज्वर पहिले भोजन आदि की गड़बड़ से उलटी प्रायः होजाती है। अक्सर कोष्ठबद्ध रहता है, अतिनार शायद, मुह का प्रायः बुरा स्वाद अथवा कड़वा स्वाद रहता है।

धातुक शक्तिधर्मों के पेट में कंडे हो तो यह ज्वर हमेशा ही रहता है। उनमें ज्वर होने से कुछ दिन पहिले ही भूख कम लगना पेट में दद रात में नींद छूट जाना बिना बन्त रोना, नाक खुरचना वा खुजलाना दात पीसना मलद्वार खुजलाना आदि लक्षण दसजाते हैं। ज्वर प्रकृति होने पर और लक्षणों के साथ अन्यत्र ध्वनित शोध मान, पेट में दद बहना आदि लक्षण धतमान रहते हैं।

त्रिक्रिया।—एकोनार्डट ३ शक्ति।—गरमी के बाद सरसों और सरसों के पद गरमी लगता, गरम और मूना हुआ घमंडा हॉक इत्यादि। नदी ज्वर का स्वाभाविक नहीं होती और शरीर पर पसने नहीं आते तबतक प्रति दो घन्टे के अंतर एक मात्रा एकोनार्डट देना चाहिए। कभी कभी दो चार मात्रा एकोनार्डट देने से पसने अ कर ज्वर उतर जाता है।

वैलेडोना ६ शक्ति।—अत्यंत गिर दद, चेदरा और होने आधे टाल रंग का कान एनी की घमन्दी का उतरकना, अगले रहना नींद न आना, पसने इत्यादि लक्षणों के लक्षण। उकरत पसने पर एकोनार्डट और वैलेडोना एक के दद एक दद होव जासकते हैं।

त्रायोनिया ६ शक्ति ।—शिर दद, दिलने से मसप होना, शिर फटाजाना खासी, खासि लने में कप, एर खली में कप, पील रंग की लेपदार जीम, जी मिषलान कप, सामाय का चिडचिडापन ।

केमोमिला १२ शक्ति ।—घान क पदाथों में मोह मुह में कइरा स्वाद, मुह में जुगघ, मूत्र न लगाना, जी मिषलाना शरीर में दद, काष्टवद भयया हर रंग उदरामय, अत्यन्त बचेता, ध्याययिक लक्षण प्रबल ।

धोर धोर धौरधियों क लक्षण स्थल्प-विराम उवर देसा ।

पथ्य ।—उवर में लघन धोर उवर उतर जाने क हल्का पथ्य दना चाहिय । मातुराना पारली, बवक अगमक अरु पथ्य हैं । प्रबल उवर में यदि प्यान लग के पानी त्रिनता चाह पीन का दा । धारारिक धोर मानसि सव प्रकार का उषजना छोट दनी चाहिय ।

हेजा ।

(शंत्रा)

हेजा अत्यन्त अमानक अर साधारिक रोग है । मनुज जनि में त्रिनन लग देने जाने है उन में सब से सार निद हेजा हा दीन वदना है । मानसके ही इस रोग प्रथम छल्लच्छ है । मने वन त्रिनन मनुष्य इस मीन रोग के हृद में बहका वमान मने है इस का उ दिखाने कही । इस रोग न मान बकान का मने के उवर दनी हुआ । इस रोग में हेजा म अरु क

करने वाली होमियोपैथिक चिकित्सा है, इसे सब कोई स्वीकार करते हैं। दुर्दिन। कृत्रिम ज्ञान में भी होमियोपैथिक चिकित्सा प्रचलित हुई है यदा हूजे की चिकित्सा के सिद्धांत हमने मान्य नहीं पाए हैं।

काण्ड।—हैज का कारण प्रधान दो हिस्सों में बंटा जाता है पहला दूरदर्शी कारण, दूसरा उत्पन्नक कारण। और और एक ही दो दूरदर्शी कारण हैं इस रोग के भा प्रत्येक परा है। अधिकांश हैजा ही उद्दानय से उभर प्रकटकरता है उद्दानय कठिन होन पर प्राण संश्लेषित हैजा हो जाता है। अधिकांश हैजा का प्रधान कारण दुर्दिन व अथवा पित्त रोगों में उत्पन्न होता है। इस का सिद्धांत अत्यन्त विज्ञान के अंतर्गत और ऐसे स्थान में जहां अधिक संश्लेषण उत्पन्न होता, बहुत जार कि और अधिक उत्पन्न कनिष्ठित स्त्री संश्लेषण करते हैं।

हैजा का उत्पन्नक कारण क्या है वह कुछ मध्य सिद्ध नहीं हुआ। हैजा का कारण तब तक नहीं है कि वह उत्पन्न है उद्दानय (एक तरह का रोग) है यह उत्पन्न है उद्दानय है और यह उत्पन्न है। यह उत्पन्न है। हैजा का कारण किंवा उत्पन्न का किंवा उत्पन्न है किन्तु यह किंवा उत्पन्न है उत्पन्न उत्पन्न है। यह उत्पन्न है उत्पन्न उत्पन्न है। यह उत्पन्न है किंवा हैजा का किंवा उत्पन्न है उत्पन्न है।

रोग फैलाने के नियम।—हैजा उत्पन्न है

त्रायोनिया ६ शक्ति ।—शिर दद, हिलने से महत्त होना, शिर फटाना, खासी, सांस लने में कष्ट, पाठ खली में कष्ट, पीले रंग की लेपदार जीम, जी मिघटाना वज्र, स्वभाव का चिह्नचिह्नपन ।

केमोमिला १२ शक्ति ।—घान के पदार्थों में और मुह में कड़वा स्वाद, मुह में दुग्ध, भूख न लगना, जी मिचलाना, शरीर में दद, कोष्ठमद अथवा हर रण का उदरामय, अत्यन्त बचनी छायायिक लक्षण प्रचल ।

और और औषधियों क लक्षण स्थल्प-विराम ज्वर में देखो ।

पथ्य ।—ज्वर में लघन और ज्वर उतर जाने पर हल्का पथ्य देना चाहिये । साबूदाना धारला, अथवा सरारोट अच्छे पथ्य हैं । प्रचल ज्वर में यदि व्यास लगे हो पानी नितना चाह पीन का दो । शारीरिक और मानसिक सब प्रकार की उत्तजना छान देनी चाहिये ।

हैजा ।

(फालेरा)

हैजा अत्यन्त भयानक और साधातिक रोग है । मनुष्य जाति में निम्ने रोग देखे जाते हैं उन में सब से साधा तिक हैजा हा दास पडता है । भारतवर्ष ही इस रोग का प्रधान लालाखल है । प्रति थय कितन मनुष्य इस भीषण रोग क हाथ में पडकर यमान मरते हैं इस का कुछ हिभाव नहीं । इस रोग से प्राण बचान का अबतक कोई उपाय नहीं हुआ । इस रोग में सब से अधिक कायदा

करने वाली होमियोपैथिक चिकित्सा है, इसे सब कोर स्वीकार करते हैं। पृथिवी के डिम स्थान में भी होमियोपैथिक चिकित्सा प्रचलित हुई है वहा हैजे को चिकित्सा के विषयमें इसने बहाय कीर्ति पाई है ।

काण्ड ।—हैजे का कारण प्रधानत दो दिस्तों में

बंटा जाता है, पहिला पूर्ववर्ती कारण, दूसरा उत्प्रेरक कारण। और और रोगों के जो पूर्ववर्ती कारण हैं इस रोग के भा प्राप्त वहा हैं। अधिकारा हैजा ही उदरामय स जन्म प्रद्वपकरता है, उदरामय कठिन होन पर प्राप्त साधानिक हैजा हो जाता है। अधिकारा हैजे का प्रधान कारण मुर्च्छित म पचन वाले पदार्थ भोजन करना है । इस के सिवाय स्वाभ्युषा बिगाडन वाले और मैले स्थान में रहना पहिसाव खानापाना रात जगना, बहुत शारीरिक और मानसिक परिश्रम, अनियमित स्त्री सहवास आदि हैजा के पूर्ववर्ती कारणों में गिन जात हैं।

हैजे के उत्प्रेरक कारण क्या है यह आज तक निश्चय नहीं हुआ। हैजा का कारण फाई कहत हैं विर है, फाई कहते हैं ओषणु (छाट टेटे जीब) हैं फाई कहत हैं अग्निदाणु हैं, और फाई कहते हैं कि भाप इत्यादि । हैजे का कारण किसी प्रकार का विष हासकता है किन्तु वह विष क्या है उसको प्रकति क्या है तथा कहां म उपपन्न होता है वह मान न म अनुम नहीं हुआ । बहुतों को यह राय है कि हैजे का विष रोगों के उन्म और उन्टी में रहता है ।

रोग फैलने के नियम ।—हैजा कभी कभी बहुत

स्वापरकृत से प्रकाशित होता है, मर्दान बड़े आर से फैल जाता है । यह रोग किस प्रकार एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य पर आक्रमण करता है अथवा किस तरह यह फैलकर एक गाव से दूसरे गाव अथवा एक कन्ये से दूसरे स्त्रिय में चलता है यह नीचे लिखे हैं —

(१) श्वाश द्वारा । मेला, हाथ व्यवसाय, तीर्थ आदि कारणों से बहुत से लोगों की आमदरकन से इस रोग का बीज एक स्थान से दूसरे स्थान में पसुय जाता और वहाँ तरफ फैलता है ।

(२) वायु द्वारा, (३) पानीय द्वारा । पानी और दूध जैसे क चीज का एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना ही प्रथम उपाय है । [४] रोगी के व्यवहार की दुर दृष्टिसे उत्पन्न ।

उत्पत्ति ।—वजन करने के सुभीते के लिये आदि से अल्प तक इस रोग का । ३ अवस्थाओं में बाण जाता है यथा —

- (१) अत्यल्प वा अकारणवशात् (इस के आक्रमण होने के अवस्था) ।
 - (२) पूर्व विकृत वा रोग के पूर्व प्रादुर्भाव के अवस्था ।
 - (३) अल्प वा वा दलनवशात् (तिर्यक की उत्पत्ति) ।
 - (४) अत्रेया अकारण वदुर्भवशात् ।
 - (५) अत्रेया अकारण वदुर्भवशात् ।
- यह व ची अवस्था दूर तक अल्प अल्प रूप से बढ़ कर बढ़ती है । अतिरिक्त बड़ो अल्प

त्रिबिन्सात्र ही देखने के लिये नहीं मिलती और रोगी भी कल्प उस को मातुम नहीं करसकता । द्विती विन्सी समय बिनाप कर अब राग हल्का होता है । अब पाचवीं मधस्था नहीं जाती, चौथी मधस्था के साथ ही साथ रोगी बिलकुल मध्याहासता है । रोग को इन मधस्थाओं में तीसरी और पाचवीं मधस्था अत्यन्त मधकर जाती है, क्योंकि मृत्यु प्रायः इन दो मधस्थाओं में से एक में जाती है ।

प्रथम— श्राकमण्डावस्था ।—

वस्था उदरामयकी मधस्था है, रोगी दिनरात में पाच वार पतला कमा पिना पचा हुआ पदार्थ दान जाता है । कौह जोई कहत हैं उदरामय क रोगी को एक प्रकार मकाबट दुबलता मानसिक मधसप्रभाव, शिर घूमना, जी निचलाना, पेट में शोक और दद मातुम होताहै । अब घटों में ही उदरामय रोग हाकर पानासे सपर रोग के दम हाते ही रोगकी प्रथमावस्था अन्त हो जाती है । प्रथमावस्था में ही अच्छी विबिन्सा होसे रोग बढने नदी पाना और भुर में दो नष्ट हाजाता ह । चारो ओर हीजा पना रहन से उस समय प्रायः उदरामय हाता है, इन उदरा मय क विषयमें कमी लापरवाह नकरनी चाहिये ।

द्वितीय, पूर्ण प्रादुर्भावस्था ।—

सफद रगना पानी सा चावल घोपहुये अथके समान दन्ध और उलटा हान के साथही दूसरा मधस्था का मरम्भ होजाता है । रोग की तेजा क अनुमार चावल घाये हुये पाना की तरह बहुत उलटी और दन्ध, बहुत प्यास, चुप

व्यापकरूप से प्रकाशित होता है, अर्थात् बड़े जोर से फैल जाता है । यह रोग किस प्रकार एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य पर आक्रमण करता है अथवा किस तरह यह फैलकर एक गाँव से दूसरे गाँव अथवा एक स्थान से दूसरे स्थान में चला जाता है यह नीचे लिखा है —

(१)स्पर्श द्वारा । मेला, हाट व्यवसाय, तीर्थ स्त्री कारणों से बहुत से लोगों की आमदृष्ट स इस रोग का बीज एक स्थान से दूसरे स्थान में पहुँच जाता और चारों तरफ फैल जाता है ।

(२) वायु द्वारा, (३) पानीय द्वारा । पानी और दूध ईजा के बीज को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना में प्रधान उपाय हैं । [४] रोगी के व्यवहार की दूर वस्तुओं द्वारा ।

लक्षण ।—बणन करो के सुभीत के लिये आदि स अन्त तक इस रोग का पाँच अवस्थाओं में बाँटा जाता है यथा —

(१) आक्रमण वा अकुरिनायस्था (रोग के आक्रमण करने का अवस्था) ।

(२) पून विकार वा रोग के पून प्रादुर्भाव का अवस्था ।

(३) अवसाद वा पतनायस्था (गिरने की हालत) ।

(४) वातक्रिया अथवा पुनजायनायस्था ।

(५) आवापन वा परिणाम का अवस्था ।

यह पाँचों अवस्था देर तक अलग अलग रहते हैं यह बात नहीं है । अत्रिहारा पहिली अवस्था

चिकित्सक को देखने के लिये नहीं मिलती और रोगी भी स्वयं उस को मालुम नहीं करसकता । किसी किसी समय विशय कर अब रोग हल्का होगा है । अब पाचयी अवस्था नहीं होती, चौथी अवस्था के साथ ही साथ रोगी बिल्कुल भच्छा होजाता है । रोग की इन अवस्थाओं में तीसरी और पाचयी अवस्था भयान्त भयकर होती है, क्योंकि मृत्यु प्राय इन दो अवस्थाओं में से एक में होती है ।

प्रथम— आक्रमणावस्था ।— अकन्या-
वस्था उदरामयकी अवस्था है, रोगी दिनरात में पाच
द्वार परछा बना बिना पचा हुआ पदार्थ दल जाता है ।
कॉई कोई कहते हैं उदरामय के रोगी को एक प्रकार
धक्कट, दुर्बलता मानसिक अवसथभाव, गिर घूमना,
जा निचलाना, पेट में बौक और दद मालुम होता है । अद
घटों में ही उदरामय रोग होकर जानामे सकेद रोग
के दम होने ही रोगकी प्रथमावस्था प्रथम हो जाती है ।
प्रथमावस्था में ही अच्छी चिकित्सा होनेसे रोग बदन नहीं
पना और अदुर में ही गृह होजाता है । चारों ओर हेजा
पैंग रहने से उस समय प्राय उदरामय होता है इस उदर
मय के दिव्यमें कमी लागवडा नकरनी चाहिये ।

द्वितीय, पूर्ण प्रादुर्भावावस्था ।—

सकेद रोगी जानी सा चापन घेदहुये अथक समान दस्त
और उठती होने के साथही दूसरा अवस्था का मरान
हाजाता है । रोग की तेजी के अनुसार चापन प्राये हुये
पाना की तरह बहुत उलटा और दल बहुत प्यास चुर

बना ठण्डे पसीन के साथ देह ठंडा, स्वप्न, म
 शक्ति और पेशाब बन्द हुआ जाता है, हाथ पैरों का
 शिथिलता में घोंघट आते हैं, बेहतरा और जीम आदि
 बहुत ठंडे और नीची रंग ब होजात हैं आँखें बंद
 हैं, शरीर में समता गाला और बेचैनी माजुम होने
 है हाथ पैर और शरीर शिथिल होजात हैं। इनही
 लक्षणों में किसी का दम अधिक होने है, किसी
 डरती बहुत हाना है किसी का घायल ज्यादा आते
 शक्ति अधिक गुन हान म आठ सरर घंटे क म
 चीर चीर म विमगुन अथवा नीच रंग का हो
 है। मर क बहुत क साथही ऊपर लिख हुये क
 कश्क लक्षण भी कम हो जात हैं। यदि रोग को
 न हा ना वहा म नामकी अथवा मारम हा जानी

तृतीय, पातायस्था ।—तृती अवस्था क

पूरी मरमयता हानी ह नाडा शक्ति हान शक्ति है
 क क कश्क की आशा कम हानी जनी है। इसका
 अन्त की हालत कहन है। यह पूरी मरमाद् (शरीर
 अन्त की हालत) का हालत हानी ह। ककार में
 का कश्कन माजुम नही पटना मान बहुत चीर
 अथवा है कनी कमा क बहुत अन्ता किन्तु कश्क
 अन्त हानन अन्त म म मना ह कनी गुणमान वि
 कश्क हान है अन्त नर्मन में कृपा हुआ क
 शक्ति हान नीच कश्क का अन्त अन्ता मुदे आशा
 अन्त है। इस अवस्था में दम और डरती अन्त कश्क हान
 कश्क कनी कश्कन म क मना अन्त निरन्तन कश्क
 का दम कश्क कश्क कश्क कश्क अन्ता है। इस अवस्था

मौल अधिक होती है।

चतुर्थ, प्रतिक्रियावस्था ।— प्रतिक्रिया

वस्था ही पुनर्जीवनकी अवस्था है । पतनावस्था के बाद कबाले में नाड़ी छोट घाने के साथ साथ प्रति क्रिया आरम्भ होती है । प्रतिक्रिया के समय हस्त और उल्टी फिर घोंडे घोंडे होत है और धीरे धीरे जीवनी शक्ति बढ़कर रोगों भटा होत लगता है, हस्त पुन हरे और पाळे रग के होकर अन्दी रिक्त मिर्तीदुर द्रव्य के दाधाने है, मठ धीरे धीरे गढाहोने लगता है पेशाब उतरता है, यदि न उतरे तो पेशाब बनकर मुत्राशय में इकट्टा दानके कारण पेडू फूल जाता है और आसों की ज्योति लौटने लगती है तथा श्वेत ही रोगों को बहुत कुछ आराम मानुम होने लगता है । यह स्वामाबिक प्रतिक्रिया हमेशा सब को होनेका नियम नहीं है । किसी किसी समय पोही प्रतिक्रिया दिखता है इकर फिर पतनावस्था उपस्थित होती है ।

पचम ।— परिणामावस्था ।— प्रतिक्रिया यदि

पूरे तरह से न दासक ता तरह तरह क उपसर्ग या मीश्र होते हैं । वह उपसर्ग अत्यन्त कष्ट हायक होते हैं, यदा तक कि इन से मृत्यु भी हो जाती है, अरसाद के उपरांत प्रतिक्रिया दख कर रोगी, रोगी के घर वाले तथा बिच्छिस्तक प्रसन्न होते हैं, किन्तु उस के उपरांत उपसर्ग प्रबल होकर रोगी की मृत्यु होशाय तो कुछ का पारावार नहीं रहता । परिणामावस्था में उबका, बुचकी, बिकार पेशाब पद होने के कारण बिकार ज्वर अरुता, भाष, मुह भादि में घाव इत्यादि प्रधान उपसर्ग हैं ।

बना ठण्डे पसीन के साथ देह ठंडा, स्वरमंद्र, रक्त क्षीण और पेशाब बंद होजाता है, हाथ पैरों का शूलियों में घायले आते हैं, चेहरा और जीभ आदि सब बहुत ठंडे और नीली रंग के होजाते हैं आँखें बंद जाते हैं, शरीर में असह्य ज्वाला और बचैनी मात्रुम होने लगते हैं, हाथ पैर और शरीर शिथिल होजाते हैं। इनहीं सब लक्षणों में किसी को दस्त अधिक होते हैं, किसी को उलटी बहुत होता हैं, किसी का घायले ज्यादा आते हैं। रोगका अवस्था गुम होन से आठ से १२ घण्टे के भीतर धीरे धीरे मल पित्तयुक्त अघात पीले रंग का हो जाता है। मल क बदलने के साथही ऊपर लिख हुये बहुत क कष्टकर लक्षण भी कम हो जाते हैं। यदि रोग को आराम न हो ता यही स तीसरा अवस्था आरम्भ हो जाती है।

तृतीय, पतनावस्था ।—दूसरी अवस्था के अन्तमें पूरी अवसन्नता होता है, गान्धा लाप होने लगती है और रोगीके बचने की आशा कम जाती जाती है। इसको शीत मान की हालत कहते हैं। यह पूरा अवसाद (शरीर गिर जान की हालत) का हालत होता है। कलार में नाडी का घडकन मात्रुम नहीं पडना, साव बहुत धीरे धीरे चलता है, कभी कभी बा बहुत जल्दी किन्तु बड कष्ट क साथ हापने हापन सास आता है, रोगी सुपचाप शिथिल पडा रहता है ठंडा पसीने में डूबा हुआ, लावण्य विहीन दह नाल रङ्ग का और चेहरा मुँह कासा हा जाता है। इस अवस्था में दस्त और उलटी प्राय बंद होजाते हैं, कभी कभी बमात्रुम घोडा घोडा मल निकलता रहता है या दस्त बंद हाकर पेट फूल जाता है, इस अवस्था में

मौल अधिब होती है ।

चतुर्थ, प्रतिक्रियावस्था ।— प्रतिक्रिया

वस्था ही पुनर्जीवनकी अवस्था है । पतनावास्था के बाद श्वासा में भारी लौट आने के साथ साथ प्रतिक्रिया आरम्भ होती है । प्रतिक्रिया के समय इस्त और उल्टी फिर पाड़े घोट होन है और धीरे धीरे जीवनी शक्ति बढ़कर रोगी अछा होने लगता है, इस्त कुछ दर धीरे पील रग के होकर उल्दा पित्त मिग्गदुरं शकल के हाशाने है, मल धीरे धीरे गाढाहोन लगता है, पशाब उतरता है, यदि न उतरे तो पेशाब बनकर मुत्राशय में इकट्ठा दानवे कारण पेहू पूर जाता है और आसों की ज्योति लौटने लगती है तथा श्वासी रोगी को बहुत बुद्ध कारण मानुम होने लगता है । यह स्वामाबिध प्रतिक्रिया हमेशा मर को होशाने नियम नहीं है । किसी किसी समय दोही प्रतिक्रिया दिखलाह इकर फिर पतनावस्था उपस्थित होती है ।

पचम ।— परिणामावस्था ।— प्रतिक्रिया यदि

पूरे तरह से न दानव ना तरह तरह व उपसर्ग या मौजूद होते हैं । यह उपसर्ग अल्पतः कुछ शकल होते हैं, यहाँ तक कि इन से मृत्यु भी हो जाती है, अस्तौर व उपसर्ग प्रतिक्रिया इकर कर रोगी, रोगी के घर पाड़े तथा चिकित्सक प्रसन्न होन हैं, किन्तु उक्त के उपसर्ग उपसर्ग प्रकल होकर रोगी की मृत्यु होजाय तो दुःख का शाराकार नहीं रहता । परिणामावस्था में उपसर्ग, उपसर्ग दिखर पशाब रुन्द होने व कारण दिखर अर अरता, अंश मुह अदि में श्वासी इस्तौर प्रधान उपसर्ग हैं ।

चिकित्सा ।— प्रथमायस्था की चिकित्सा —

केम्फर ।—केम्फर हैजे की अच्छी दवा है। हैजे में डाक्टर क्वीनीका स्थिर केम्फर दिया जाता है। उदरान, सरसी लगना, पेट में दब भादि हैजे के पहिल लक्ष हीसत ही केम्फर सफेद चीनी में [पाना में नहीं] मिलाकर दश १५ मिनट के अंतर से देना चाहिये। मात्रा अयान और पूरा उमर के आश्रमियों के लिये प्रति बार पाच ग्रुद है, बच्चों के लिये एक वा ग्रुद । यदि इस औषधि को पाच सात बार देने पर भी यदि रस ब द नहीं और चाबल धाये हुये पानी क समान रस नगें तो उसी समय दवार बद कर और दूसरा दवा देनी चाहिये । प्रथमायस्थामें क्लोराडाइन भादि अपाम मिनी हुए दस्त बद करन वाली दवार क अपेक्षा केम्फर द्वारा शुनी अच्छी है।

एकोनार्डिट मूल वा १ शक्ति ।— अत्यन्त प के दद के साथ दस्त होना, नाडी तेज और पूण, उत्प के साथ मिली हुए सरसा, अत्यन्त गरमी में घूमन क बाद अथवा अचानक सरसी लगन क कारण, प्यास, बधेती, मृग्यु भय, पेट दापने स दद, मादुम होना । इस दवा की एक एक ग्रु अत्येक दस्त के उपरान्त देवी चाहिये।

पलसेटिला ६ शक्ति ।— यदि तेज या ची मिले हुये पराध के जाने से रोग की उत्पत्ति हुई हो, मलका दिस्ता हरा और पिठला केवल आमाशय की

तरह । यह दवा स्त्रियों के लिये तथा स्वभावतः दुर्बल प्रकृति के मनुष्यों के लिये बहुत फायदा करती है ।

नक्सत्रोमिका ६, १२, ३० शक्ति ।—मुदिक्त से पचने वाले पदार्थ भोजन करना, रात जगना, शराप पीना, अत्यन्त मैथुन, दमाधर दवाइ खाना अथवा मानसिक परिधम क कारण उदरामय बार बार थोड़ा थोड़ा दस्त होना अथवा दस्त की दृष्टत होना जितनी दृष्टत हो उतनी दस्त न होना, दस्त आते समय किंचना । जिनको अन्ध रोग है उनको यह दवा बहुत फायदा करती है ।

चायना ।—बलमूढ आहार करने से रोग उत्पन्न होना, दस्तके साथ साथ बहुत कमजोरी, पीले रगछापतला पानीसा दस्त दस्त के साथ खाया हुआ बिना पचा पदार्थ निकलना गर्मी के समय उदरामय, पेट फूलना, वायु सरना । मात्रा नक्सत्रोमिका की तरह ।

कालोमिन्य ३, ६ शक्ति ।—उदरामय के साथ पेट के भीतर असा मरोड़ा, यह दर्द दादने से [यथा उलट्टे होकर पेट के नीचे लकिया रखने से] कम होता है, दर्द टट्टर टट्टर कर होता है ।

केमोमिला १२, ३० शक्ति ।—बच्चों के उदरामय में बहुत फायदा करता है । क्या बहुत चिदचिडे स्वभाव का होकर कोर खोज देने में उठा कर सँकड़े गोरी में लेने से बचने के लिये बड़े पित्त मिठे हुए और हरे रंग

के दस्त । १२ कम अधिक फलदायक है । दात निश्चय समय बर्षों को हरे रंगके उद्दामय में इस से बहुत फायदा होता है ।

इषिका ६ शक्ति ।—जी मिचलाना, उपहार मय्या कष्टी होना, दस्त की अपेक्षा उल्टा अधिक होना, मराहा और दूद क साग उद्दामय, घास क समान हरा दस्त, मल में अत्यन्त दुग्न्ध, मल में रक्त और घाम मिळा हुआ ।

मरकूरियस करोसाईभस ३, ६ शक्ति ।—

घाम मिळ हुये लून क दस्त हाता कबल लून क दस्त । केवल लून के दस्त होना इयाका और मच्छी घोष हुन पाना क समान दस्त हाता मरकूरियस और रमन्धम दिया जाता है । रक्त यदि उपर छान रग का नडा और कालापन लिय हुये लच्छ रग का हा तथा एक साथ अधिक होना हो ता हमामलिम ३ X कम दिया जाता है ।

डिर्नापामस्था की चिकित्सा —

इस मय्या की प्रथम औषधि विराटूम-एल्यम आमैनिज कृष्ण मिर्ग एकाताइ कृष्ण-आमैनिज एर्गीमनिगम-टाए और टबकम इत्यादि हैं ।

विरेटूम-एल्यम ६, १२, ३० शक्ति ।—यह देजा की एक बहुत मच्छा दवा है । मय्याक चायक चाये हुए पानी के समान दस्त और उल्टी बनेनी बहुत कामगारी मय्या-कट शक्ति साथ हाजाव कर्ता नीजे और उहा बहुत दस्त और लच्छी मय्यक व्याथ वाचादय में जस्त क साथ दूद और हाथ पैरों में कपट ।

आर्सेनिक ३, ६, १२, ३० शक्ति ।— विरेद्य की

तरह आर्सेनिक भी हैजे की एक मण्टी दया है, किन्तु इन दोनों औषधियों के लक्षण एक दूसरे से इतने मिलते हैं कि प्रायः अन्तर बिपर नहीं किया जासकता, इस लिये अन्तरों खोग भूल स प्रायः विरेद्य की जगह आर्सेनिक और आर्सेनिक की जगह विरेद्य दे बैठने हैं । दोनों में अन्तर यह है—विरेद्य में अितने दम होने हैं उसी हिमाव में विपिलता भी होती है आर्सेनिक की विपिलता दमों के साथ गुना अतन से अधिक मज्जुम हाती है । विरेद्य के लट्टी और दम परिनाय में अधिक होने हैं और आसानी से बिहान जाते हैं आर्सेनिक के लक्षण इस क टी.क विरात है, अघान दम और लट्टी परिनाय में कम हात है, हादयुल लेज और न दुरत बागी प्यात होनी ही में परती है किन्तु नेद दम में इतनारी है कि बिरेद्य का रोगी एक साथ अधिक और आर्सेनिक का रोगी पाटा छोडा किन्तु बार बार पानी पीता है, उस पाड सोद पानी पीने स ही दम और उता होना बह जात है । पहिले विरेद्य हेवे में कुछ बाधता नरा और बादी क विपिलता बहत अय नटा का बह स जात यह लार होकर बबबा नीर लक्षण अतन दम और लट्टी कम बादि लक्षणों में आर्सेनिक रिण जात है ।

दृग्म-मेडासीकम ६, १२, ३०, शक्ति ।—

अर लीन लक्षण, हाथ री में अधिक बहत बहोरी बादी इके इर परतार । दम अतन विरेद्य के साथ

पण्याय क्रमसे दिया जाता है।

कूप्रम आर्सेनीकोनम ६ विचूर्ण, ३० शक्ति ।—

कूप्रम और आर्सेनिक दोनों ही क लक्षण रहने पर इन मीश्रण का चूर्ण पानी में मिला कर देनेसे बर्षों का मौर एसा जीम के ऊपर डाल कर थिरा देने से बड़ मार मियों को बहुत फायदा करता है । यह धान नहीं है कि कूप्रम कबल बायटों का ही आराम करता हो, किन्तु इन के द्वारा हात्पाद का बन्धान होता है । जिस मीश्रण हात्पाद की क्रिया शिथिल हाजाय और आर्सेनिक क लक्षण दिखलाई पड़ उस समय देना चाहये ।

सिकेली ३, ६, ३० शक्ति ।—कूप्रम इन पर भी

यदि बायटों का आराम नहा और जिन पदों से हाथ पैर फैलाय जान हैं उन में बायटों भाये तथा मगुठियां गुन कर टंगी हाजाय बेहरा टडा मालुम पडे, बिना कष्ट क गग्या हा और उलटी क बाद आराम मालुम होगे यह दवा दा जानी है ।

ट्रेक्म ६ शक्ति ।—इस दवा हान क उपरान्त

भी यदि उबटी और उबजाई जाती रहे ता यह दवा फायदा करता है । कुछ दिव न से उबजाइ और उलटियों का बटना शरार में टडा पमीना पट में इह, पयगाइह, खवेनी, मय शरार में बायट और इह मारि इन क लक्षण है ।

गिर्मीनाम, ३, ६ शक्ति ।—यह मगुठी क बाये का मर है । इस दवा में इन्स मरिह हान हो उभा में बड़

होजाता है, नाड़ी आज्ञाती है, जीम और शरीर गरम होजाती है, मुह से भाषाज निकलती है और भाषा ज्वोति मालूम होने लगती है । मात्रा १२५म ।

हाईड्रोसीयनिक एसिड १, ३, शक्ति ।—

अत्यन्त श्वास कष्ट, बाँवटों के साथ श्वास चलना मर्याद टहर टहर कर हापने की तरह कष्ट के साथ श्वास, रोगी का चेहरा बिलकुल मुँह के समान आदि लक्षणों में अदवा दीजाती है ।

चौथी अवस्था की चिकित्सा ।—

श्यामाधिक प्रतिक्रिया में पथ्य क नियम पालन करना ही प्रधान चिकित्सा है, भौषधि की प्रायः आवश्यकता नहीं होती । इस समय थोड़ा थोड़ा दस्त उल्टी होना से फायदा निवाय कुछ नुकसान नहीं होता, इस लिये उन का बन्द करना उचित नहीं । अघातक दस्त और उल्टी एकमात्र बन्द होजायेंगे रागा का पट फूटजाता है । दस्त और उल्टी अधिक होने लक्षण क साथ दूमरी अवस्था की दवाएँ देनी चाहिये ।

पाचवीं अवस्थाकी चिकित्सा —

अन्तिम अवस्था में तरह तरह क उपसर्ग प्रवल होत हैं । उनका नाम और चिकित्सा मात्र लिखते हैं ।

१ । उल्टीयों का उपद्रव और दिक्कियाँ—इसीके एक मात्र उपाय, टैबलैट कममशानिका बरखाना, उसके टीका करने—उत्तम उपाय ।

२ । दिक्क—अपिचय, रमन्धम, मासेरिड श्वास नियंत्रण, एतम ।

३ । चेहरा बन्द हान क कारण विचार—मासेरिड

बेनेटोना, हादमोनायमस, बे-पेरिस, टेरीबिग्य, स्ट्रामोनि
 सन, मापियम ।

४। पेट पृत्ना—मोपियम, मक्सबोमिछा, चाबो-वेडी
 टेबलिम, आरबोपोहियम ।

५। कीटों का उपद्रव—सीना, सल्फर ।

६। पेटे हुए श्व—डैकसिस, मारैरिच, चाबो-वेडी
 टेबलिम ।

७। पेटे भादि—दीपर, साइबोशिया ।

८। ज्वर—एडोकार्ट, बटडोना, मारुयोनिग, फ्रासफोरस,
 मक्सबोमिछा ।

सहवारी उपाय ।—इस विषय पर बहुरूप ध्यान

करना चाहिये कि किसी प्रकार रोगी के मन में जय
 प्राप्त न हो किन्तु ध्यान और भरोसा रहा जाये । रोग
 के लक्षण बँट कर इस के विषय में रोगी का दाह बढ़ता
 भावों परभाव का कुछ काम न्याय न करना चाहिये ।
 रोगी का ध्यान विद्युत और बपट भादि सर्वथा बन्द
 रखे जाये । इस और उल्टी भादि बहुत दूर पहुँचे चाहिये ।
 प्यास बुझाने के लिए शर्बत का पानी दवा उचित है ।
 यदि उल्टियाँ अधिक होंगी तो नीचे पानी चिल्ला कर
 होमडे दिया जाय । इस रोग में बन्दे बन्दन बह कर
 उत्पन्न है । बन्दे जाने के लक्षणों को धीरे धीरे
 श्व से श्वने से कुछ काम न्याय न करना है ।

पद्य ।—देखें कि कहीं कुछ और लक्षण

करना से जागरण कर लय न दवा चाहिये जब
 एक बन्दे का मन बह लक्षण बह की श्व

देना उचित नहीं । किंतु यदि पतनायुष्मा दंत तक छे हो
 भाष्यकता के अनुसार चारली या भरारोट का पानी
 दिया जाता है । प्रतिरक्तिया आरम्भ होने पर साधारण
 अथवा भरारोट का पानी अथवा अनुसार नीचू का रस
 मिला कर दिया जाता है । जब तक मल हरे या कड़े
 रंग का और गढ़ा ना हो तबतक चार्ई पथ्य देने का साहस नह
 किया जाता । मल क्रमशः स्थानाधिक होने पर मधुर का
 दाल का पानी, कषा केला अथवा भाखू का भाळ रिया
 जाता है ।

डिपथीरिया ।

डिपथीरिया एक प्रकार का संक्रामक और सांगतिक
 रोग है । इसमें गळ में घाय होजाते हैं । पहिले एक
 दूधिन होता है और पीछ गळ में इस के स्थानीय लक्षण
 प्रबल हाजाते हैं । इस लिये चातुगन रोग पर ध्यान न देना
 केवल स्थानीय लक्षणों के अनुसार चिकित्सा करने
 मूल है ।

लक्षण ।—डिपथीरिया दो प्रकार की होती है, एक सामान्य
 और दूसरी सांगतिक । सामान्य रोग में (जाकि प्रायः हाता है
 निवहन में अल्पकाल रह, गळे में रुद शरीर में अल्प
 हाथ देते में रुद आदि लक्षण उपस्थित हाते हैं । सामान्य रोग
 सामान्य चिकित्सा से ही अच्छा हाजाता है । सांगतिक
 रोग में निष्ठ स्थित लक्षण प्रकाशित हाते हैं । मशान
 उक्त रोग रुज उठती मशानक मशानक कमजोर
 बेचैनी और न तरस चहरे का लाल रंगत गळ में रुद
 का दो अर्थ निर्णी का लाल रंग टागिधर नाम

दोनों-गाँठों का फूल जाना, और उन पर एक प्रकार का भफड़ परदा पड़ जाना, यह भफड़ परदा क्रमशः बढ कर सब को ढक लता है, इस लिये निगलन और भ्वास लेने में कष्ट भाव्युम होता है। यह परदा दसन में एक चमड़े की तरह दिखलाह पड़ता है । गल का सब गाँठें फूल जाता हैं और कभी कभी कानों तक बढ़ मातुम होने लगता है तथा गदन सहन होजाता है, यदि रोग अधिक हातो रागी बहास होजाता है और जब तक परना जा रहे साथ बाहर न निबल पड तब तक निगलने और भ्वास लेने में कष्ट होता है अथवा रागी का भ्वास बढ़ होकर या विकार का प्राप्त हाकर उसका प्राधान होजाता है।

चिकित्सा ।—१। सहज राग की पहिली हाडत में पेकोनार्सिट बेटेडोना या वैप्टशिया ।

२। साधातिक रोग में—कली-परमगैलम, एसिड-म्यूरियाटिक डेला-बाइबमिक, आसैनिक, ऐमानियम-बाब ।

३। परवर्ती (पीछ उपासित होन बाल) उपसर्गों में सरमद्र में फासफारस, फास्टोडका कमजोरी में घापना ।

वेलेडोना १ शक्ति ।—साधारण और साधातिक होना प्रकार के रोगों की प्रथमावस्था में यह डाइव्युशन मल्लत फायदा करता है। यदि ४८ घंटे क भीतर इस से कुछ फयदा नहो अथवा एक बार फायदा होकर फिर यह स्थाय नहो अथाव फिर राग बढन लगे तो फिर इस दवा को बन्द कर देना चाहिये ।

एसिड-न्यूरियेटिकम् २, ३ शक्ति ।—

सांघातिक रोग बदनू दार घाय, साम म दुर्गंध मातुम होना, अत्यन्त कमजारी ऊपर लिखे हुए मम २१ घट ब मगर से देने चाहिये । इस दवा के कुछ भी ह्रास जान है । ४ भाउगस पानी में १० युद मिला कर हुले कराने चाहिये ।

मर्कुरियम-आयोडेटम २, ३ शक्ति (चूर्ण) ।—

गठ और गर नाला में परदा पडना, गल को गाटों का फूटना निमग्न में कर और दर्द, हार निजालने वाली गाटों का फूटना, और गल में सड हुए घाय ।

केर्ली-परमैंगेनम ६ शक्ति ।—

बदरुदर की निचलता साम लत में बदरू । सड हुए घाय हाने पर १४ क युग कराय जान है ।

थार्मेनिक ६ शक्ति ।—

राग की लाबीरी हासन में कमजारी नाडी चीन मुड में दुर्गंध गल का फूटना, नाच म चुगना बदरुदर मवाद निजलना ।

काठी-शार्टेकम ६ शक्ति ।—

गठ के मीनर मवाद गुल और मैला चीन म टका हो हार मंगद मार लावा गौदक सामन विनथिना कर निचलना । गठ के मीनर पय कममूट की गांठ का फूटना ।

लेकैमिम १२, ३० शक्ति ।—

पद दवा लाम

हर उम समय दीजाती है जब गले क बायी ओर रोग उत्पन्न हो (दाहिनी ओर होने से लाइकोपाडियम दिया जाता है)। गले के भीतर और बाहर सूजन, गले में इतना दर्द कि रागी घड़ा क्षय या और कोई चीज न नगान दे, नींद के बाद रोग और बढ़ का बटना ।

फाईटोलेका ३ शक्ति ।—इस रोग की यह एक उत्तम दवा है। श्वास में अत्यन्त बदन मन्दता कमगोरी, खाडा न हो मचना बिछौन से उठ कर खड़े होते ही सिर घूमना हो और खर्रर आते हों ।

श्रोपध प्रयोग ।—यह रोग कठिन होता है, इस लिये इस रोग की औषधि २।३ घट के भन्तर से मषवा आबरूपकटी क अनुसार जब तक फायदा नहो और भी जन्री अर्दी दाजासछी है। जितना जितना फायदा दीखने लग दवा को भी घाडा घाडी दर बाद देना शुरू करे । यदि एक औषधि से फायदा नहो ता और दूसरी दवा ठडवीड करनी चाहिये ।

सहकारी उपाय ।—रोग क प्रारम्भ में पुडटिस लगना सुरा नहो है, किन्तु जब रोग कठिन हान लगे और उसका सापानिक रूप दाजाय ता पुडटिस लगाना नहो चाहिये । गरम जल की नार भी फायदा करती है । केवल गरम जल अथवा थोडा हायोबिक एसिड या पेंसॉर्टिक-एसिड मिला कर इला करने से सुर की बदन जाती रहती ह ।

पथ्यः—रोग का सूत्रपात होते ही हल्का और पुष्टि कर पथ्य देना उचित है । गले में दूद रहन पर भी योग्य पोडा कुछ पिलाना चाहिये । दूध या पाली, दूध के साथ मरारोया साबूदाना मिलाकर देना चाहिये । रोग माराम होने पर भी रोगी को कुछ समय तक माषधानों से रचना पडता है । जल वायु परियत्तन अधिक फायदा करता है ।

सप्तम अध्याय ।

साधारण रोग समूह—[घ]धातुगत रोग समूह ।

तरुण वात—ऐकिउट खूमेटिज्म ।

यस रोग अत्यन्त कष्टदायक होता है । यह प्राय देखने में आता है । यह हाथ पैरों के बडे जोडों पर ही प्रथमत आक्रमण करता है । कभी कभी हाथ पैरों के बडे जोडों के सिवाय शरीर के और और स्थानों पर आक्रमण करने हुये भी दया जाता है । यद्यपि यह रोग साधारण तिक नहीं होता परन्तु अत्यन्त कष्टदायक होता है । वात के पर्यन्ती फट और उपमग जिनन पुरान हाठ आवेग उतना हा कठिनता से माराम होंग ।

लक्षणः—पंडिल सर्दी से बुझार आता है और सब शरीर में बेचैनी मातुष पडती है । इसा प्रकार रोग आरम्भ हाता है । पाछ किमी मारम जगहके बडे जोडोंमें दूद गुरू न लगता है । कधा बुझना हाथ घुटने और पैरोंके सब जोड

हठ आते हैं और उनमें दर्द होने लगता है। रक्त रचना होजाना है कि सहन नहीं होसका। रोगी को हिलने मुड़ने की शक्ति नहीं रहती यहाँ तक कि रक्त के स्थानों में हाथ तक नहीं लगाया जाता। प्रायः ओर का खुलार होता है, और नाड़ी बहुत तेज चलने लगती है। रोगी का शरीर गरम रहता है और अधिक तथा छोटी पद्वदार पसीना निकलने लगता है। पेशाब छाल रग का और कम तथा अत्यन्त प्यास इस रोग के प्रधान लक्षण हैं। कभी कभी ऐसा रोग १०-१५ दिन में आराम हो जाता है, किन्तु कभी कभी ५-६ मताह तक रहता है। कभी कभी ऐसा भी देखने में आता है कि रोग पुराना पड़नाका है और बहुत दिन तक आराम नहीं होता। साथ रोग साधारण नहीं होता किन्तु अब हॉस्पिटल पर आक्रमण करता है तो प्रायः साधारण हो जाता है।

चिन्तिता—एकोनाईट १, ३ शक्ति ।—प्रबल

ज्वर और हॉस्पिटल का अधिक घटपना, दर्द के स्थानों पर गरम और लाल रगत। हिलान मुड़ाने और हाथ लगाने से बच मात्र होना, अत्यन्त मय और मानसिक चिन्ता, अत्यन्त प्यास बेचैनी और तकलीफ।

-बेलेडोना ३, ६ शक्ति ।—जाड़ों पर गरम, रगत

लाल और चमक। बहुत रक्त जोड़ों से दर्द गुरू होकर सब शरीर में फैल जाता रक्त चितनी अल्प गुरू हो उतनी ही अल्प जाता रहे ज्वर शरीर सूखा और गरम प्यास, और छिर रक्त, सोजान की रज्जा हो परन्तु अच्छी

पृथग्।—रोग का सूत्रगत हाते हैं हल्का और पुष्टि कर पाय दना उचित है । गले में दूध रहन पर भी योग यात्रा दूध मिश्रता चाहिये । दूध या घाली, दूध के साथ मसूरोंड या भातूदाना मिश्रकर दना चाहिये । रोग आराम होने पर भी रागी का कुछ समय तक आशयाना से रचना करना है । अतः वायु परिवहन अधिक पाया करना ।

सप्तम अध्याय ।

साधारण रोग समूह—[अ]धातुगत रोग समूह ।

तृण वात—पेकिउट ग्युमेटिडम ।

वात रोग समूह कटुपाक जाना है । यह प्राय रक्त में प्राय है पर प्राय पैरो क बड़ जड़ों पर ही प्राय रक्त र समन करता । कभी कभी हाथ पैरो क बड़ जड़ों क मिश्रण पर क भीर आर रोगों पर आराम करन दूध का दवा प्रता है । यथाय यत रोग समूह मिश्र कर दना पर नु समूह कटुपाक जाना है । वात क रोगों पर भी उचित मिश्रण पुरान है । अतः उचित दवा प्रता से समन होगा ।

पृथग्।—य रोगों से बुरा रोग जाना है और यह

रोगों से बुरा रोग जाना है । इसी प्रकार से समन करन से रोगों से बुरा रोग जाना है । अतः उचित दवा प्रता से समन होगा ।

फूट जाते हैं और उनमें दर्द होने लगता है। ऐसे रोगी होना है कि सहन नहीं होसकता। रोगी को हिलने मुड़ने की शक्ति नहीं रहती यदा तक कि दर्द के स्थानों में हाथ ठहर नहीं लगाया जाता। प्राण और वायुधारण होता है, और नाड़ी बहुत तेज चलने लगती है। रोगी का शरीर गरम रहता है और अधिक तथा घड़ी घड़वदार पसीना निकलने लगता है। पेशाब छाल रंग का और कम तथा अत्यन्त प्यास इस रोग के प्रधान लक्षण हैं। कभी कभी ऐसा रोग १०-१२ दिन में माराम हो जाता है, किन्तु कभी कभी ५-६ मसाह तक रहता है। कभी कभी ऐसा भी देखने में आता है कि रोग पुराना पड़ जाता है और बहुत दिन तक माराम नहीं होता। साथ साथ साधारण नहीं होता किन्तु जब हृत्पिंड पर आक्रमण करता है तो प्राण साधारण हो जाता है।

चिकित्सा—एकोनाईट १, ३ शक्ति ।—प्रबल

ज्वर और हृत्पिंड का अधिक घट्टकना, दर्द के स्थानों पर शम और लाल रंगन। हिलान मुड़ाने और हाथ लगाने से बच मान्द्रम होना, अत्यन्त मय और मानसिक चिन्ता, अत्यन्त प्यास बचनी और तक्रलाह।

—वैलेडोना ३, ६ शक्ति ।—जाड़ों पर गरम, रगत

लाल और चमक। बहुत दर्द, जोड़ों में दर्द पुरू होकर सब शरीर में फैल जाना दर्द अतिना अल्प पुरू हो उक्तना ही उल्द जाता रहे ज्वर, शरीर सूखा धार गरम प्यास, और सिर दर्द, सोअने का इच्छा हो परन्तु मच्छो

तरह नींद न आना हो, तीमरे पहर तीन घंटे
सामान्य हिलने भुलने से दृढ़ बढ़ना ।

ब्राह्म्योनिया ६, १२ शक्ति ।—दृढ़ के स्थान

और न मुटना, सुर चुभान अथवा काटने क समान स्थिति
होना जोकि सामान्य हिलने भुलने से बढ़ना, रण
विलकुल स्थिर रहने का इच्छा करता हो, सुर
का कड़वा स्वाद मुह सूखा हुआ और मत्स्यन व्यास
कड़ा और सूखा हुआ मल, रोग यदि और शारीर
छाड़ कर हृत्पिंड क ऊपर आक्रमण करे ता यह रोग
जाता है । इस अवस्था में एकनाइट और काष्ठचिह्न
भी दिय जात हैं ।

कैमोमिन्ना ६, १२ शक्ति ।—दृढ़ क कारण रण
का पागल का तरह हा जाना और चिह्नाना, गरम पर्व
विशय कर मलक पर ।

कालचीकम ३, ६ शक्ति ।—दृढ़ बार बार उग
छोड़ देता हो । (एमा हाउन में थलडोना और पर्व
दिल्ली भी दिये जाते हैं) अग क सामन बैठने पर म
सरदा मा खगना, और वाच वाच में गरमा माहूम हा
शरार क अथ स्थानोंम रोग हृत्पिंड पर आक्रमण क
और खानी तथा हृत्पिंड में सुर चुभान तथा काट डाल
का मा दृढ़ हो मत्स्यन श्रद्धा बद्धूदार पसाना, पशा
कम उतरना ।

लाइफोपेटियम १२, ३० शक्ति ।—रात्रिक समय
और विद्याम करने समय दृढ़ का बढ़ना, पृष्ठ मा

जोड़ों का कड़ा पड़ना, रोग प्रधानतः दाहिनी भाग हो, सूजन हो चाहे न हो, कोष्ठ बद्धता, हृष्यकल पेट मरा मान्द्र्य होना, खाने की पिलबुल इच्छा न होना ।

नम्नवोमिका ६, ३० शक्ति ।—पाँठ, कमर छाती और सब जोड़ों में अधिक बध्, सुनी हवा अच्छी न लगना, पमाना खाने से आराम मान्द्र्य पड़ना, (भर्तृ त्रिपल के विपरीत), मञ्जीष के लक्षण और कोष्ठबद्ध ।

पलमेटिला ३, ६ शक्ति ।—दर्द एक जगह से दूसरी जगह इतरा किरे, (टोंक बलडाना की तरह), गरम मजान में भी नहीं ली लगना, टडा और छच्छ वायु की इच्छा होना गरम हवा से बध् होना, मुलायम और शीत प्रहति का मनुष्य, मात खाद्य मुद का पुरा स्वाद पड़ना ।

रेस्टकन ३, ६ शक्ति ।—आधान स्नान में सूजन

और गलत रूप आधान स्नानों का उच्छेद भा जाता, उन में बदन ली होना, बदन का मन्विष मध्या उलन का साथ हर भर उलक खाद्य बध्मा मा मान्द्र्य पड़ना । हर के स्नानों को त्रिरे रखन न मध्या पहिल दिधान स हर मान्द्र्य होना बिनु कुछ देर तब दिधानस मध्या सेचने से आराम होना ।

सज्जपर १२, ३० शक्ति ।—पुतान काउ रोग और

बाग रोग के पाठ हाव वाले बलों के रिणे यह औषध मन्त्रन उपकारी है । मन्त्रक का ऊपरमन्त्र में बन्नामन मरनी और उदन मान्द्र्य होना, हाथ पैरों में उदन होना ।

तरह नींद न जानी हो, तीमरे पहर तीन घंटे सामान्य हिलने मुलन से दद बढ़ना ।

ब्राइयोनिया ६, १२ शक्ति ।—दद के लान

और न मुडना, सुर चुभान अथवा काटने क सनात होना जोकि सामान्य हिलन मुडने से बढ़ना, रने विल्कुल स्थिर रहने की रच्छा करता हो, कु का कडवा स्वाद, मुद सूखा हुआ और अत्यन्त प्यास कटा और सूखा हुआ मल; रोग यदि और स्थानों छान कर हृत्पिंड क ऊपर आक्रमण करे तो यह रोग जाता है । इस अवस्था में पफ्फानाइट और कायचिड भी दिय जात हैं ।

कैमोमिला ६, १२ शक्ति ।—दद के कारण रागी

का पागल का तरह हा जाना और चिल्लाना, गरम पसीका विशय कर मलक पर ।

कालचीकम ३, ६ शक्ति ।—दद बार बार अग

छान देता हो । (एसी हालत में थलडोना और पलम टिला भी दिये जाते हैं) ; अग क सामन बैठन पर सा सरदा सा खपना, और बीच बीच में गरमा मासूम हाक शगर क अन्य स्थानोंमें राग हृत्पिंड पर आक्रमण कर और खानी तथा हृत्पिंड में सुर चुभान तथा काट डालन का सा दद हो अत्यन्त खटा बदबूदार पसाना, पशा कम उतरना ।

लाइफोबोटियम १२, ३० शक्ति ।—रात्रि क समय

और विधाम करन समय दद का बढ़ना, पद और

जोड़ों में घात अथवा सूजन—बेलेडोना, आइरॉन
कालसिक्म लाइकोपोडियम ।

रोग के स्थान टैड अथवा कटे होजायें—कार्बिकम, टैडि
सल्फर, रस्टकस, सीपिया ।

घात के सहित पक्षाघात—चायना, रस्टकस, कार्बिक
वाकूलस ॥

सेकने से आराम मालूम होना हो तो—रस्टकस, कार्बिक
कम, लाइकोपोडियम, मकूरियस, सल्फर ।

ठंडी चीज लगान से आराम हो तो—पलसेटिला ।
छाना, पीठ आदि स्थानों में रोग आक्रमण करे
आर्सेनिक, मकूरियस, नक्सबामिका, रस्टकस ।

कलाई और अंगुलियों में दद—कालोफिषम ।
बड़ी हड्डियों के सब आधरणों में (डकन बाल)—मै
यम ।

संध्या समय बढ़ना—पलसेटिला रस्टकस ।
आधीरात से पहिल बढ़ना—आइरॉनिका ।
आधा रात व पीछ बढ़ना—आर्सेनिक, मकूरियस
सल्फर यूआ ।

पिछली रात घातकाल से पहिल बढ़ना—काली-
नक्सबामिका, रस्टकस, यूआ ।

गरमी लगने से बढ़ना—आइरॉनिया, पलसेटिला, यूआ

श्रीपथ प्रयोग ।—रोग के गुरु की दाल में

द्वे अलग प्रबल हा २।३ घंटे व अमर से एक
मात्रा औषध देना चाहिये, आराम मात्रुम होने पर ४
- ५ अउर स औषधि देनी चाहिये ।

जोड़ों में घात अथवा सूजन—बेलेडोना, ग्राएयोनिफ, कार्बोफोडियम ।

रोग के स्थान टेढ़े अथवा बड़े होजायें—कार्बिकम, सैकनिफ, सल्फर, रस्टकस, सीपिया ।

घात के सहित पक्षाघात—चायना, रस्टकस, कार्बिकम, कार्बोफोडियम ।

सेकने से आराम मालूम होता हो तो—रस्टकस, कार्बिकम, कार्बोफोडियम, मकूरियस, सल्फर ।

ठंडी चीज लगाने से आराम हो तो—पलसेटिला ।

छाता, पीठ आदि स्थानों में रोग आक्रमण करे तब—आनिका, मकूरियस, नक्सबोमिका, रस्टकस ।

कलाई और अंगुलियों में दर्द—कालाफिलिम ।

बड़ी 'हड्डियों' के सब आवरणों में (ढक्कन वाला)—मैत्राक्युलस ।

सन्ध्या समय बढ़ना—पलसेटिला, रस्टकस ।

आधीरात से पहिल बढ़ना—ग्राएयोनिफ ।

आधा रात के पीछे बढ़ना—मासॅनिफ, मकूरियस, सल्फर, यूजा ।

पिछली रात प्रातःकाल से पहिल बढ़ना—काली-कार्बिकम, नक्सबोमिका, रस्टकस, यूजा ।

गरमी लगने से बढ़ना—ग्राएयोनिफ, पलसाटिला, यूजा ।

औषध प्रयोग ।—रोग के शुरु की हालत में जब

दर्द अत्यंत प्रबल हो २।३ घंटे के अंतर से एक एक मात्र औषध देना चाहिये, आराम मालूम होन पर ४ या ५

क अंतर से औषधि देनी चाहिये ।

जोड़ों में घात अथवा सूजन—बेलेडोना, ग्राइफाका,
कालचिकम लाइकोपोडियम ।

रोग के स्थान टेढ़े अथवा बड़े होजायें—कार्टिकम, रैडमिग
सलफर, रस्टकस, सीपिया ।

घात के सहित पक्षाघात—चायना, रस्टकस, कार्टिकम
मर्क्यूरस ॥

सेकने से आराम मात्तूम होता हो तो—रस्टकस, कार्टि-
कम, लाइकोपोडियम, मर्क्यूरियस, सलफर ।

ठंडा चीज लगाने से आराम हा तो—पलसेटिजा ।

छाना पीठ आदि स्थानों में रोग प्राक्मण करे त-
तानिक, मर्क्यूरियस मक्सथामिका रस्टकस ।

कलार और अगुलियों में रूद—कार्टापिखम ।

बर्दाद दृष्टियों के सब आवरणों में (दृक्न बाल)—मैगार
म ।

सन्ध्या समय बढना—पलमाटिला, रस्टकस ।

आधीरात से पहिल बढना—ग्रायोनिवा ।

आधी रात के पाउ बढना—ग्रासैनिज, मर्क्यूरियम,
सलफर, गूडा ।

पिउनी रात प्रातःकाल स पहिल बढना—कार्ली-कार्या
मक्सथामिका, रस्टकम गूडा ।

गरमी लगने से बढना—ग्रायोनिवा, पलमाटिला, गूडा ।

श्रौषध प्रयोग ।—रोग के शुरू की हालत में उब
ई अत्यन्त प्रबल हा २।३ घंटे के अन्तर से एक दूध
गवा औषध देनी चाहिये आराम मात्तूम होने पर ४ या ६
घंटे के अन्तर से औषधि देनी चाहिये ।



लगती है । कोढ़ कोढ़ रोगा इन पुराने घात रोग की कारण जगभग भी हो जाने हैं । पुराने घात रोग प्रयात घुटना, रग, कधे, कमर और पीठ आदि स्थानों में होते हुए देखा जाता है ।

चिकित्सा । चिन को घात रोग हो अथवा होने की अशक्यता है उनका अपना शरीर सही और बरसात से आवश्यकतानुसार बचाये रखना चाहिये । बहुत मन चालना अथवा कमरत आदि करना या और कोई काम जिस से शरीर के प्रत्यक अंग को हिलना झुलना पर अच्छा नहीं होता । शराब पीना और मांस भक्षण करना बिल्कुल वर्जित है । चिनको घात रोग है उनकी सुली हुई हवा में घूमने तथा ठंड जल से बचाने का अभ्यास कराना उचित है, जिस से उनकी सब शक्ति बढ़ने लगे ।

केलकेरिया—कार्य १२,३० शक्ति ।—सब जोड़ों का फूल जाना और वायु व परिवर्तन से बढ़ बढ़ना, रोगी व वानों पर ठंडे और पनीजे हुए, गडमाला होपप्रस्त रोगा, अभावस्था पूर्णिमा को रोग का बढ़ना ।

कास्टिकम ११,३० शक्ति ।—जोड़ कड़े पर जाना और न मुड़ना, उन में काटने का सा बढ़ होना, नाच व जग का अत्यंत धर्मजोर और बेबस सा मादृष्य होना, सध्या स कुछ पहिले और ठंड घगने से रोग का बढ़ना ।

रस्टकत ६,३० शक्ति ।—जकड़ जाने अथवा का

1

2

3

4

5

Handwritten text, possibly a list or notes, written vertically on the left side of the page.

Handwritten marks or text at the bottom of the page.

कुछ फायदा न हो ता फिर दूसरी औषधि ठहरा करे ।

कमर में घान ।

लक्षण । इस प्रकार का घान रोग कमर और

पर आक्रमण करता है । यह अचानक आरम्भ हो उठता है । विवृणुल मध्य मनुष्य का भा जो कि अच्छा रूप से चलता फिरता हो अचानक मुकन में या बैठसन्ना में मच से असाध्य दर्द पुरु हो जाता है । रागी समाप्त होकर नहीं चला जाता किंतु मुक मुक कर चलता है और पीठ को ठाक स्थिर रखता है । इस में दर्द व स्थान पर सूजन या सुखी नहीं होता और न उबरता है । यह दर्द साधारणतः ८ । १० दिन तक रहता । कभी कभी २ । ४ सप्ताह भी लगाता है ।

चिकित्सा ।—वेनेडाना ३, ६ शक्ति ।—

अचानक वायु के समान दर्द पीठ का कटना, और मुकन समय पीठ में दर्द होना, चला जाना और फिर गम ।

ब्राड्योनिया ३ ६ शक्ति ।— पीठ में राम

अथवा चयका मात्र के समान दर्द रागी का मुकन चलना याड़े से भी दिखने से दर्द का बढ़ना फोह बढ़ना और रोगी का स्वभाव चिडचिडा होना ।

मर्कुरियम ३ शक्ति । मय उच्चों का रात्रम

हो बढ़ना अथवा बरमाना हवा या यादव बरमान में बरमान अत्यन्त दर्मान आना किंतु तपभी दर्द कम न होना ।

रस्टकम ६ शक्ति । कमर में मोच आ जाने अथवा

तता अधिक होना है कि रोगी वैचैत और हुआ हो जाता है (कैमोमिला की तरह), अत्यन्त भय और घबराहट करने समय सिरमें दर्द, रात्रि में बढावा और अत्यन्त बचैनी अदि लक्षण रोगीको यह दवा देना चाहिये ।

श्यासेनिक ६, ३० शक्ति ।—बमी कमी दद होना, अथवा अथवा दृढ मारने के समान दर्द मानो कोरे गरम धुरे घुमोता है असह्य दर्द विशेष कर रात्रि के समय ऐकानाइट और कैमोमिला के समान ।

वेलेडोना ३, ६ शक्ति ।—अथक मारने अथवा पत्थरके समान दर्द, यह दद नितान्त जल्दी आता है उनताही जल्दी चला जाता है, शब्द और उच्चारण सह्य नहीं होता, सभ्य समय बढने लगता है ।

कैमोमिला ६, १२ शक्ति ।—दद होन के समय पाये पर गरम पसीत भाव है और रागी विछान लगता है, बहुत बचैनी, अरासा वात पूछन में चिड उडना, दद सहन न होना हान पर पागल का तरह हा जाता [ऐकानाइट की तरह] ।

कालोमिन्थ ३६ शक्ति । दद प्रमानत वाया लक्ष, पत्थर अथवा कुरी व बाटा व समान दर्द । दद एक स्थान में दृमरे स्थान को दटना यह या टुन में यह पाये पट पत्थर अथवा पच कसने के समान दद, बचैनी और घबराहट ।

नकनरोमिका ६, ३० शक्ति ।—दद व स्थान

से यह रोग हो तो बेकानाइट पायडा करता है ।

मैग्नेडोना ३, ६ शक्ति ।—गरदन अत्यन्त कड़ी और छन स रू होना हा । गरल के भीतर दर और गरदन क सब गाठों में सूजन ।

मायोनिथा ६, १२ शक्ति ।—गरदन कड़ी और दर हाना, घाडाबामी दिखान स दर बढना ।

रसटङ्ग ६, ३० शक्ति ।—जग में भीगने के कारण यह राग हा और दर क ज्ञान का अभाव दिखत स दर का आराम मातुन पड तो यह दया रस धारिय ।

गडमाला ।

(स्वाफ्युक्ता)

खनुण ।—गडमाला धातुगत राग है । इस राग में आण्ड क मात्र गड में, बगल में और राग स कड़ी कड़ी गाँठें भी दिखलाई पडती हैं । इस गाँठों में स कनी काद पकड़ना है और बढन र्त घट रहन है । गरदन क इतर्नि काद बढन दर क अन्व पूचना है स र कीद मन्नी ई रती । गरदन पर गाँठ क सब इन्व हा ज्ञान है शिम क मन्वपर दर बढन ई दूरा राग रू जना है ।

मामाट धातु के निः ।—अधुवन में दर राग क रू और गाँठ का अन्व भाषी में कीद प र में स र द मने हा कल ज्ञान मन्व का

मातृ पर सुध सुजन, अल्प भूष (राधर्षभ) कर्म
गुणा गुमा और कामल, चंद्रा सफर सा रणादि ।

दीपर सलफर १२,३० शक्ति । गडमादाकर
के कारण आगो का सूत जाना, बाघों के पलकों से गुण
जग या मयाद् निवृत्ता ।

मर्कुरियम ६,१२,३० शक्ति । हृदी, सच जग
और भाष इत्यादि क र्द में तथा रागी क शरीर में एते
उद्दद (कुम्भी) और घाय हों ता यह औषध ही
जाता है ।

सार्डोशिया १२,३० शक्ति । माया बडा, माये
क सब छद गुण हूय मयाद् हृदी ज्वर होकर गुण
में विरज्य जाना (इस अवस्था में मर्कुरियम कैल्शिया
भाष मन्कर गैजाती है) । मय गात्र बडी हाकर गऊ उर्गे
हृद्यों म घाय जाना तथा उन का मड जाना, कर्म
मय कर्म और कर्म क माय निवृत्ता, मय कुछ बाहर
निवृत्त क र्द गिर भीतर गुण जाना ।

सलफर १२,३०,२०० शक्ति । यह क्या कर्म
उद्दर क गडमादा क व मय रागी क र्द ही कर्म
मय है । मय कर्म उद्दर शरीर में उद्दद (कुम्भी) है
क र्द कर्म कर्म हृदी तथा कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म
कर्म [इस अवस्था में मर्कुरियम कैल्शिया भी
मय कर्म कर्म] कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म
कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म
कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म
कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म कर्म

क्षय अथवा क्षुब्धता ।

(थार्डेमिस पालोमनालिस)

इस का प्राचीन भाषा में यह नाम भी रहता है ।
प्रतिदिन यह दुःख और सुख होना जाता है इसा शि
इस का क्षय राग कहते हैं । यह प्राणनाशक राग स
धनी क लगो म ल दस्य में जाता है । गडमाग की
तरह यह भी एक प्रकार का अतु गत राग होता है ।
यह राग जगता आरम्भ होने क उगता न हो दस्य में
जाता है अर्थात् ३१)० यस म पण्डित हान नहीं इस
जाता । यह राग जस रागी क शरीर क भीतर धार
धार पण्डित रागा का प्राणान्त जाता है उस तरह दूसरा
काइ राग नहीं जाता ।

लक्षण । यह राग आरम्भ में यथा गुण हुआ
रहता है कि पण्डित काइ इस का निगम नहीं कर सकता ।
अथ गुण लक्षण म वन जाता है तथ हा इस का मान्य
(संज्ञा ना निगम है नाह इस रागक प्रमाण ल ग यई --
अथ ग जस लता न पयता भूत कम लगता रागी
बहुत म ल अथ नैत जता लता में इव याह पारधम
ह ना लक्ष कसभी म ल लक्ष, मान्य प्रीति
अथ लक्ष म लक्ष लक्ष लक्ष में पण्डित आता और
हा क कसभी लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष है ।

लक्षण । यह राग लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष है । राग क
मान्य है लक्ष लक्ष ? लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष
लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष
लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष

जाता है । अन्त में मौत आकर सब कष्ट दूर कर देती है ।

मायाप को यदि यह रोग हो तो सन्तान का भी हो सकती है । गडमाला, कफट राग और उपश्रम आदि रोग राज-यश्मा में परिवर्तित हो सक्त हैं । अन्त कम उमर में पढ़ना अत्यन्त मानासक परिश्रम, सुमकान में रहना जिसमें हवा न आता जाती है, शारीरिक परिश्रम न करना देहका अच्छी तरह न पढ़ना और पुत्र नहोना इत्यादि इस रोग के पैदा हान में सहायता देने वाले कारण हैं । इस के लिये, हल्लैमिथुन, अन्त खी सहायस, हुडुम्न और बहुत पास के नात रिश में विद्या करना आदि इस के सहायता देने वाले कारणों में से हैं ।

चिकित्सा ।—राज-यश्मा जय पूरी तरह से जाता है तब उसका आराम हाना असम्भव है । किन्तु रोग के गुरु होत है आहार आदिका नियम पालन करने और उपयुक्त हार्मियापैथिक औषधि सवन करके आराम हा भा सक्त है । रोग के अच्छा तरह दिसलाने देने परभी यदि उपयुक्त औषधि हा जान ता चाहे आराम महा परन्तु कष्ट बहुत गुरु कम हा जायगा और रात बहुत दिन तक जीना रहगा । अनन्तर लक्षणानुसार चिकित्सा दूर दयास्या दनी चाहिये ।

एकोनाईट ३० शक्ति । अधिक और सूना हा सभी केंद्र स रक्त निकरना पर अधिक हाना हान में दह और प्यास । जिसका रक्त प्रधान धानु हो उस



हीपर सल्फर १२ ३० शक्ति । रोग की पी

अथवा में यहाँ के लिये अथवा गडमाला की प्रकृति व
रागियों के लिये यह दवा बहुत फायदा करता है
गल में घट्ट घडाहट के साथ व्यासी, आधारात के उग
बन्ता, माधारण सही लगाने ही धामा उठने लगे
हथली गरम और सूखा हुए।

सार्डोपाटियम २२ ३० शक्ति । रोग की

शामली उठना गड म अथवा अथवा अथवा अथवा
अथवा उग बन्ता, रोग में धामा अथवा, और हर वक
मडगमलट्ट हाना ।

फार्फारम ३० २०० शक्ति । छाती के

भारमगलट्ट के साथ सूखा शामली पत्रक म बालक
हसन म अथवा बालक अथवा म सुमन म हस शामली
बन्ता अथवा छाती अथवा म अथवा बन्ता, मल ह
साथ अथवा

पलमट्टिला ६ शक्ति । रोग में सूखा त

शामली उग म शामली बन्ता शामली में अथवा
अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा
में अथवा अथवा अथवा अथवा

सुतार ३० ५० शक्ति । सूखा शामली

अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा
अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा
अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा

हाना शरीर शुद्ध रहना धम देगन स रोगीयना मानुम
पडा, मसह में सधरा गरनी मानुम पडा, हाथ पैरों में
जलन ।

१। शूल में—पित्त-हृत्वा मधुमेय निहा ईश्वरिया,
शूल-विषम मधुमेय एतिस-शूल हाथो-पित्तवित्तिस
मामेविष ।

२। शामो—वासपोरम बोटाना हायोमायेम (शामो
शूल शामो) मधुमेय [छात्रा में शुद्धी पुभना] इतानम
[बहुर बर निवृत्ता मीह शाम में पसान धाना] ।

३। शूल गिरना—हमामेयिस इपाका, हासरा धामेयिस
पाम वैषवदिसा मामेविष ।

४। श्याम बर—मामेविष, एतिस-हाट ।

५। शूल शूल शूल शूल शूल में पनीना उदरामय इत्यदि
एतिस पालनारिष, आदना शौर-सल्लर, संशुद्धम
इतानम ।

औषध प्रयोग । उद शामा बरदा और बर
रामर प्रदा हो लव निर ३। ४ बर धामेय शरी बरिदे
की ना धामेयिस इपा २ मात्रा म बरिषट दना उविष
बरे । पामसधराम शूलर पाम मामेविष इत्यदि
धामेय में मे पानन शूलर लल्लर शामा एतिस लव
रिट उरहे भदर हाथे बरिषट इर ब मरदा गदन म
शाम बर में मरदा रे ।

सहकारी उपाय । उरि को लव दाना लवे ल
शामर विष उ व उरवे दिसा में शामे ल व धामेय की
धामेय लल्लरगे व मरदाबना रे । निरुदिय शामर ल

हीपर सलफर १२ ३० शक्ति । राग का पीला

अथवा में यद्यो क द्विये अथवा गडमाला की प्रकृति वर
शागवों क द्विये यह दया बहुत पायदा करता है।
गल में घड घडाहट क साथ साथी, भाधारान क उपाय
बन्ना मात्राण सही लगन स ही खासा उरने लगन
हथी गरम और गूनी हुए।

लाइफापोटियम २२ ३० शक्ति । राग का पीला

साथी उरना गड स अ उर मयाइ नकनता मीय
मानक उर रहता, क द्वि में परीना जाना और हट वन क
मडगानक हता।

फास्फोरस २३ २०० शक्ति । छाती के पीले

समसाहक क साथ गूना सांगा गलन में बलन क
हवन स उरना बलन हता में गुमन स हस साथी क
बन्ना लभन। छाती उरह का जाना, बलन मर हट
साथ नकनता

बलमटिग २४ शक्ति । राग में गूना साथी

की उ वन स साथी वन हान साथीय में बलन क
बल वनन हट नकनता बल की गलन दी गी वा क
में बलनन अर वन हता।

सल्फर २५ २० शक्ति । गलन साथी गलन

बलन क वन उरन अर हट में गूनी हट वनन क
बल में वन हता हट की है। हट हट गलन में क
हने हट वनन क नकनता साथी हट वनन हट हट

हाना, शरीर सुदृढ़ रहना चर्म देखने में रोगीपना मालुम पडना मन्त्र में सबदा परनी मालुम पडना हाथ पैरों में जलन ।

१। उपाय में—पामेन्टिना मङ्गमवोनिडा कैल्शेरिया, लाइबो-डिपम मङ्गलियम ऐन्टिम-वूड वादों-वेजि-डि-वि-सि-स, मासैनिफ ।

२। वासी—फास्फोरस बेलेडोना हायोसादेनस (रातमें मूखां रानी), ग्राफा-नेपा [छात्रा में सुइसी चुनना] स्टानम [बहुत बफ निकलना और रात में पसीन आना] ।

३। शून गिरना—हनामेल्स, इपीका, डामेरा यार्निका फेरस कैल्शेरिया मासैनिफ ।

४। श्याम कष्ट—मासैनिफ ऐन्टिम-वूड ।

५। मानर मानर ज्वर, रात में परानी उदरामय इत्यादि एसिड-फास्फोरिक, चायना, हीपर-सल्फर, सैम्बूकस, स्टानम ।

औषध प्रयोग । जब रानी मयथा और कोई

लक्षण प्रकट हो तब दिन में ३।४ बार औषध दनी चाहिये नहीं तो प्रतिदिन १ या २ मात्रा से अधिक दना उचित नहीं । फास्फोरस सल्फर, फेनन यार्निका इत्यादि औषधों में से ध्यान लगाकर तनपीड हरना चाहिए तब पण उनको भेदन करावे क्योंकि इन से मयथा मयन से रोग बड़ भी सदा है ।

सहकारी उपाय । जिस को राज पटना होने का

सम्बन्ध किया अब उससे शिष्य में माने जाने यदि भी अधिक सावधानी का आह्वय करना है । नियमित समय पर

नहाना, मोजन करा, ह्यच्छ ह्या में एव टरक्य स्वास्थ्यकर और पुष्टिदायक पदार्थ खाना, एम घर में एम जिस में सींग बिलकुल न हो और हवा अच्छा तरह बगी जाती हा प्रतिदिन नियमित रूपसे और स माम हन क अभ्यास करा, मयदा धम पथ पर चलना और मन फीस और प्रफुल्लित रगना अथन आयुदयक हे । अथवा बदलन स भी वहुत फायदा दिखता है एम एव निरस का ना म्वा मय हा समुद्र तार पहाड अथवा और का ए सुदक जगह अथवा प्रकृति के अनुसार जग एव चाहिय ।

पशु । रागी का अदार पुष्टकर और बलकारक हाता चाहिय । दूध बिनोप उपकारी होता है किन्तु यदि उममव होनेो दूधक वन और कोर पथ्य दना चाहिय मान का छोकर अच्छाने । याद उममव म्वा ता कालीया आयुद वहुत फायदा दे । प्रात म्वा व मनय भाजन वान व काई वृ [यदि दाना समय म्वा गहाण पथ्य समय] एव क साथ मिश्रकर दन चाहिय । एम जैम सहन एव ज रे येमदी येम माया व्वा (नामकी है ।

घट्टमूत्र ।

टापेटिटिस ।

घट्टमूत्र एव घट्टमूत्र हाग है । एम का काल म्वा तह क र निधय नगी कर म्वा है । एम राव क म्वा म्वा म्वा म्वा है कि एम व म्वा हाग है । एम म्वा म्वा (म्वा) एम म्वा म्वा का हाग म्वा हाग । क र क र हाग म्वा म्वा म्वा म्वा

पाण्डु शक पेशाव करता है। और एक एक पाण्डु पेशाव में २ स लेहर ३ ओंस तक चीना यत्नमान रहती है, और और रोगों ऐसा भी होता है कि दिन रात में करब ७ पाण्डु से १० पाण्डु तक ही पेशाव करता है।

लक्षण। पेशाव की रगत फीकी हुआ रहना, और भाव मीठा रहना। रोगों का प्रायः अधिक लगना है। रासमी बुधा, हाड दस्त बडा और घाटा चमड़े पर सुदही और शरार हुआ पड़ता मानसिक अदम्यता [बमबोरी] कृष्ण शक का कम हाना वह दुबल हाना हाथ पैर और शरार में जलन हुई का मीठा भाव रहना इत्यादि बहुमुख का प्रथम लक्षणों में से हैं। इस रोग में द्विषाव में पेशाव का मरदान बहुत बढ जाता है। और १-३५ स १० तक हाडना है। यह रोग प्रायः बहुत दिन तक रहता है। जलन कमी कमी यह इतने जार में हान लेता गया है कि हाड का समय में प्रायान कर रहा है।—

इस रोग की ओर ही इस के साथ रहने वाले उष्ण अधिक बढ़कर और प्रथम लक्षण हान है। इन उपरगों में घाटा घाव बढते हुए ही मासिक कष्ट प्रधान है। वृद्धावन [एठ में घन] इत्यादि हान में किम्व च सुगत मारे यह लक्षण एक हानों है कि दुर्गम हान लक्षणों है और हान में प्रायान हा जाता है। गुरुत्व में कमी कमी रासयना हान हुए में जगता जगता है।

एक बहुमुख और तरह का हान है। उस में बंधन

पञ्चाङ्ग का प्रयोग करने और उसमें शकरी या वैश्व
 न के लिये इस प्रकार का बहुमुख प्रयोग
 म के लिये किया जाता है । इसमें लक्षण भी प्रायः पञ्चा
 ङ्ग प्रयोग के समान ही है किन्तु इस राग में पञ्चा
 ङ्ग का प्रयोग १९०३ म १००३ तक
 प्रयोग होता है ।

शिकम्भानन्द ।—ओषध द्वारा बहुमुख के लक्षण

न के लिये प्रयोग करने का नैसर्गिक ओषध मानने का
 म के लिये प्रयोग करने का नैसर्गिक ओषध मानने का
 क के लिये प्रयोग करने का नैसर्गिक ओषध मानने का
 प्रयोग करने का नैसर्गिक ओषध मानने का
 प्रयोग करने का नैसर्गिक ओषध मानने का
 प्रयोग करने का नैसर्गिक ओषध मानने का
 प्रयोग करने का नैसर्गिक ओषध मानने का

शिकम्भानन्द ।—यह माहृम पञ्चाङ्ग का
 प्रयोग करने का नैसर्गिक ओषध मानने का
 प्रयोग करने का नैसर्गिक ओषध मानने का
 प्रयोग करने का नैसर्गिक ओषध मानने का

शिकम्भानन्द ।—यह बहुमुख
 प्रयोग करने का नैसर्गिक ओषध मानने का
 प्रयोग करने का नैसर्गिक ओषध मानने का
 प्रयोग करने का नैसर्गिक ओषध मानने का

यूरेनियम नाईट्रिकम ३ शक्ति ।—यह भी इस रोग की एक उपकारी औषध है ।

लुम्ब्रम् १२ शक्ति ।—यह भी एक उत्तम दवा है । इसकी प्रधान क्रिया वृद्धक अथवा मूत्रकद्र पर होता है ।

हेलोनिन ६ शक्ति ।—डाक्टर "हेल" इस औषधकी प्रशंसा करते हैं ।

बात रोग प्रसूत मनुष्योंके लिये नेट्रम-सर्पूरिफ अच्छा है । यदि और किसी औषध से फायदा न हाता सिन्थानियम मूल भरक अथवा साइलनिया अधिक फायदा करता है । इस के सिवाय और और विनाय लक्षणोंके अनुसार डिजी टलिस, नकमयोमिका, बें-धोरन, मरक्यूरियस इत्यादि औषधों प्रयोग की जा सकती हैं ।

औषध प्रयोग ।—प्रत्येक औषध दिन में तीन चार बार भोजन कर एक सप्ताह तक परीक्षा करना चाहिये । एक औषध से फायदा न दाद्य तो इसी प्रकार दूसरी औषध देखनी चाहिये ।

सहकारी उपाग ।— चिंता, मानसिक धम, दुःख आदि जहातक होसके दूर रखने चाहिये । प्रतिदिन नियम पूषक व्यायाम [कसरत] करना अत्यन्त आवश्यक है । यदि और किसी प्रकार का व्यायाम नहामक तो प्रतिदिन पूष टहलना बहुत जरूरा है । जा लाग कबल बैठ बठ काम करत हैं अथवा बहुत मानसिक परिधम या चिंता का काम करते हैं यह रोग उनहाका दोजाना है । थाब

दृश्य बदलना, देह घ्रमण, स्वास्थ्यकर स्थान में निवास और स्वास्थ्य सवर्गीय नियमों का पालन करना शुभ आयुदयकाय है ।

पथ्य । पथ्य का ठाक प्रयुक्त होना ही इस रोग की प्रधान चिकित्सा है । अन्तर्मास [Starch] वार्त्तीय पदार्थ यथा माटू मात्र इत्यादि जितना कम खाया जाये उतना ही अच्छा है । रोग माना अच्छा है । मास रोग में अच्छा पथ्य है । मिठारे की जितनी चीजें हैं विल्कुट न खानी चाहिये । दूध खाह जितना दिन जाय जितना अधिक होगा उतनाही अच्छा है । मास न निकलना हुआ दूध अच्छा होता है । मासे को धारण करने से अन्तर्मास (Starch-जोय) निकाल हाय्य और उस पुन हुये माट की रानी सिगई जाये तो शुभ अन्तर्मास है । खान की सब चीजें परिष्कृत शक्ति पर निर्भर है । जिससे जितना पचाने की शक्ति हो उतना उतनाही और उमा प्रधान खान का दना चाहिये । नारी चीजें विल्कुट न खानी चाहिये । प्यास रहमत करने ममाते आदि जितना मुगकिल से पचन वाली चीजें विल्कुट न खानी चाहिये ।

शोथ ।

(द्रूपमी-सृजन)

शरीर के मांसर किमा सब में अणुका, अणुके के अणु करी अणु अणु हाय्ये ला उम का शोथ हाय्य है । शोथ का प्रसार का हाय्य है स्वातिष्ठ ममास काय गज ।

सार्वभौमिक शोथ पैर के तलबे से शुरू होकर धीरे धीरे ऊपरका ओर बढ़ता है और शरीर में सय जगह फैल जाता है। स्थानिक शोथ शरीर के किसी विशेष अंग (गदरा) में ही होता है, और आमतौर पर श्वान क हा नाम के अनुसार इसका भी नाम होता है यथा मलिनिक में उल्ल संचय होने से मलिनिक शोथ, यक्ष (उत्त) में उल्ल संचय होने से उत्त का शोथ, हृत्पिंड में उल्ल संचय होने से हृत्पिंड का शोथ और आंतों में उल्ल संचय होने से उदरा आदि कहलाया जाता है।

लक्षण।—शोथ का विशेष चर सार्वभौमिक शोथ (का प्रधान और सुस्पष्ट लक्षण फूल जाना है। फूल हुआ श्वान कोमल और पिट गिला होता है। चमड़ा सफेदना चमकीला बन उठा रहता है। फूल हुए श्वान का उगली से दान में गूदा पड़ जाता है और उगली उठा देने के बाद भी थोड़ा दूर तक यह गूदा रहा जाता है। भूग कम हो जाती है यदि भी घटन लगती है कथका बिलकुल ही रहती प्यास बढ़ जाती है जोर पक्षाघात रगत का और परिमाण में कम होना है। श्वान का आरक्षिक का घटकना कमजोरी और कोष्ठकृता उत्पन्न हो जाता है।

कारण।—अनेक कारणों से शोथ हाए हुए बना जाता है। इस के कारणों में से नीचे लिखे हुए प्रधान हैं। शरीर के किसी भी अंग का प्रदाह, शरीर के उदर [कुम्भी आदि] का बैठ जाना, उदर आदि रोगों में वास्तविक निर्यात हुए

दुषार्थों का अधिक साना, अधिक रक्त निकलना । पुतना ज्वर और चक्क के ज्वर के बाद बहुधा शाय होने पर देखा जाता है ।

स्थानिक शायों में उदरी हा प्रधान है । इस रोग में पद सूजना है और बढ़जाता है । सूजन पटक भीय क माग स आरम्भ होकर क्रमश ऊपर का आर बढ़न लगता है । उदरी रोग में विशय कर बढ़ा हुए भयखा में श्वास कर उपस्थित हाना है रोगी आसानी स चलफिर नहीं सका और शरीर कमजोर हो जाता है ।

चिकित्सा ।—

१ । सार्वगिक शोध—डिजीटलिस, एपिस आमेनिक प्राइयानिया, सनगा, एषामादनम ।

२ । उदरी ।—एषामादनम आमेनिक चायना कान्ट टिंग ।

३ । मणिष्क में जड़ संघय हाना—हलाबोरस, मूरि यस, बलडाना एपिस ।

४ । छाती में जड़ संघय—प्राइयानिया, डिजिटलिस, मार्ने निक हर्गिबारम ।

५ । हृदय में जड़ संघय—डिजिटलिस, स्वाइजालिया आमेनिक ।

एपिस, ३, ६ शक्ति।—गरार क हिसा स्थान में संघय संघ शरार में शाय शरार क हृदय स्थानों में हृदय मरन का सा तथा जलन करन थाग द्द पठाव कर और जटन ।

श्रांसनिक, ६, ३० शक्ति ।—तमन शरीर विशेष

पर चट्ट का शानदी रगत माली या गफ्फरी लिये हुए
पेट भार हाथ पैरों पर शूनन, अत्यन्त बमजारी और दुपला
एक एसा मान्य होना माना रागा वा हम अन्ध जायेगा,
बिन्दु पर रात्रि में, अत्यन्त प्यास, घबराहट, बचैनी और
गुबु भय ।

ब्राधेनिया ६, ३० शक्ति—मामो व गज क

पगों पर शूनन, शरों का माली रगत, मूत्र और पट
हृद। इतिहास वा जगह हुए शुभान वा सा दद, अत्यन्त
प्यास भार वा ब बम हाता ।

चायना ६, ३० शक्ति ।—चरता द्यने से रक्त

हृद और शर्मिण मान्य हा जिगर और जिर्न वा दाप,
अत्यन्त प्यास शर शर घडा घडा चानी पीना,
दृढ मनुष्यों वा यग तथा जा यग रक्त हृद व
उपरी हो ।

कालधिक्रम ३, ६ शक्ति ।—चरता पीना और

एडा हुआ घबडा, गुला हुआ धर टडा अथवा रात्रि में
बनी देहा धर बनी एतम दित धडबडा, घडा और
मैला रक्त होना ।

डिजिटैलिस ६ शक्ति ।—तमन धर वा चली

एतम देहा व द्यने पर द्यने चरता अत्यन्त होये
वा ईन एतम धर रक्त हृद हृद हृद एतम दे
एतम एतम वा शूनन द्यने में हृदित वा अत्यन्त

घड़कना और नाड़ी की गति अनियमित, घुन और मडफोशों की सृजन।

लैकेसिस १२, ३० शक्ति।—तिहा, विर और इतिपद की पीडा के उपरांत शाय, वाय अरुत की सृजन, उसपर दृशय और सुइ चुमाने का सा रा अरायु [यच्छ] का जगद में अरुसा प्रकार का दृश सहन न हा सधना पेशाय काला और घाडी, नई ६ थाइ ही यदना।

लाईकोपोडियम १२, ३० शक्ति।

शरीर के ऊपर का दिक्सा दुबला परनु नाच का मय सूब सूना हुमा, एक पैर गरम दूसरा पैर ठंडा पैर ६ घाघ से रसा निकलना, पशाइ कम दाना और उस में बाहूत की तरह लाल रंग का नीच लमजाना, मधयानादक उपरांत पर राग दान स उपकारी है।

सल्फर ३०, २०० शक्ति।—शोत में

सूजन और उलन, शरीर में मोलेसे दाग, घमडा सुक हुमा, पादरी का कारण न रहने परमी घदुन कडाकर मादूम दाना, (धारिस) इत्यादि घम्म राग् वैडजानेस पीडा दाना यह दया कायदा करनी है।

एपसाइनम ३X शक्ति। और और औषधी

में यदि कुछ कायदा बहा तो यह रोघ के बिने एव उत्तम औषधि है।

फेरम ६, ३० शक्ति। रोगी के शरीर में नून

एव घमडा देखन से एसा मन्डूम दाना माना लून है

हो नहीं, शरीर दुर्बल भोजन के उपरांत जी मिचलाना और कब्ज ।

टेरोविथ ३ शक्ति । पेशाब में यदि रक्त रहे तो यह दवा देना चाहिये ।

ओषध प्रयोग । साधारणतः दिन में तीन बार बार औषधि खिलाए जाव तो ठीक है, रोग की बढ़ी हुई हालत में यदि कष्ट और दुर्बलता अधिक हो तो तीन तीन घंटे के अंतर से दवा देनी चाहिये ।

सहकारी उपाय । सीले हुए घर में रहना अथवा सीखी हुई हवा लाना नितांत धीरे है। घर सूखा होना चाहिये। नीचे धरती में सोना उचित नहीं। यदि ज्वर नहो तो गुन गुने पानी से स्नान कराने में कुछ हर्ष नहीं है ।

पच्य । हल्का पच्य देना चाहिये। दूध अथवा पच्य है प्यास बुझाने के लिये ठंडा पाना पिलाया जा सकता है ।

रक्तालेपना ।

(ऐनीमिया)

शरीर में रक्त का कम हो जाना और उस का पैदा होना का क्रिया में अड़थक होना का रक्तालेपना कहते हैं। रक्त का स्नायुविकता अथवा पदा होना कम होकर यह रोग पैदा होता है। रक्त अथवा रक्त का रोगों का रक्त का कम होकर बहुत रक्त निकालना [यथा अथ अदि रोगों

के कारण] बहुत रज स्राव [मासिक घम क सप्त
मैला गिरना] बहुत दिन तक अधिक पाय निकल
पुराना उदरामय श्वेत प्रदर ज्वर, तिहा और त्रिपर व
पटना इत्यादि इस क प्रधान कारण हैं ।

लक्षणा ।—शरार हाट आस्र इत्यादि सन ल
शुभ, चहुरा सफेद जीमि पडी रक्त शुभ और रक्त
नाही सून के समान कमजोर रागी कमचोर और मजब
में रह चरामे में थक जाये और हापने लग, अग्नि
भूष न लगना दिख घडकना और हाथ पैर ठण
रहना ।

चिकित्सा ।

१। बहुत रक्तदि निकलन स रोग की उत्पत्ति का
घायना एमिड फाम्फारिक करम आर्मेनिक ।

२। मासिक घम कम हान अवस्था न होने क कारण
पटसाटिला करम ।

३। म्लच्छ वायु और मूत्र्य प्रकाण न मिलन क कारण
केरम और पत्रमात्रिका वा नकमथामिका । इस अवस्था में
नेत्र्य-मल्लक्युक्ति अत्युत्तम औषधि है ।

४। पुरान ज्वर क कारण —नटमम्युराटिक, का
आर्मेनिक ।

श्रीरथ प्रयोग । त्रिष कारण से रक्तानता उ
लिन रक्त का उमा कारण पर हांठ रक्त कर म्वा रक्त
व त्रिष । प्रति दिन का का म्वा निरुत्ता ठक है ।

महर्षि टपाय । म्लच्छ मुटी हरे दवा क
प्रार्थन त्रिषता है मक टाटना परम मयमर्षि है ।

निस कारण से तून की कमि उपस्थित हुई हो सब से पहिले उसको दूर करना चाहिये ।

पृथ्वी । भोजन ऐसा होना चाहिये जो आसानी से पच जावे और पुष्टिकर हो । इस के लिये दूध 'स' बढ कर कोर चीज नहीं है । जो चीज आसानी से पचकर तून पैदा करे वही सुपथ्य कहलाता है ।



अष्टम अध्याय ।

मानसिक रोग समूह ।

इस बात का सब जानते हैं कि मनके भाग के साथ स्वास्थ्य का विशेष संबंध है । मन स्वस्थ रहने से शरीर भी स्वस्थ रहेगा । ऐसा बहुत से दृष्टान्त दिये जा सकते हैं, जिनमें भय, दुःख, शोक, नैराश्य आदि मानसिक भावों के कारण मनुष्य अचानक बहारा हागये हैं और सदा के लिये उनका स्वास्थ्य अथवा मन बिगड़ गया है । कुछ विभ्रस से मानसिक और स्नायायक राग आराम हागये हैं ऐसा शायद सबोंने ही देखा या सुना होगा ।

भय ।

अचानक भय पाकर जो सब रोग उत्पन्न होते हैं, उनमें निम्नलिखित बीमों का आना है ।

एकोनाईट ३, ६ शक्ति । यदि रोगी कापता रहे और छाती घटकता रहे मनमें सृष्टुषी आश्चर्या, डर खगन के उपरांत भा मनमें भय बना रहे और किसी

के कारण] बहुत रज स्यात् [मासिक घम क सप्त
मैला गिरना] बहुत दिन तक अधिक पाय निकलना
पुराना उद्गमय, श्वेत प्रदर, ज्वर, तिहा और ज्वर क
बढ़ना इत्यादि इस क प्रधान कारण हैं ।

लक्षणा ।—शरीर हाट आस इत्यादि सन र
गुण्य चहरा सफेद आम बनी, रक्त शून्य और कान
नाड़ी गूत के समान कमजोर रागी कमजोर और बदन
में रह चराम में घक जाये और हावने लग, मूर्ख
भूष न लगना दिख घडकना और हाथ पैर इन
रहना ।

चिकित्सा ।

१। बहुत रजादि निकलन स राग की उपार्ति हो
खायना एमिड फार्मार्तिक फरम आमोनिक ।

२। मासिक घम कम हान भयथा न हाने क कारण
परक्षाटिका, फरम ।

३। सप्त वायु और गुण्य प्रकाश न मिलन क कारण
फरम और परम टिका वा नकमधामिका । इस अवस्था में
नरम-सल्पगुण्टि बन्धुलम धौवधि है ।

४। पुराने ज्वर क कारण —नरमगुण्टि फर
आमोनिक ।

श्रीवध प्रयोग । निम्न कारण से रजस्राव से
जिन रू हा रजस्राव पर हाँके रजस्राव रू हा रज
स्राव । १० दिन का कारण मिलाना है क है ।

मन्त्रांग टपाय । इत्यन्त मूर्खः रू रजस्राव
ज न रजस्राव रू स क रजस्राव फरम आमोनिक है ।

शोक दुःख ।

शोक दुःख त्रिषु प्रकारेण भेदात् न दिन दिन एतत् को सुखाना है यादृ और कोर् इत प्रकार नही सुखा सदा । मन क कष्ट के बराबर प्रयत्न रोग और काई नहीं है ।

शोक और दुःख से बर्बर रोगों की चिकित्सा करने समय ध्यान रखना चाहिये कि उस से मीठी माठी बाने कर और उस को दिलासा दे । इस के सिवाय तीर्थ यात्रा देश विदेश भ्रमण, ब्रह्म वधु याधर्यों के साथ निवास सतीष जनक काय में प्रवृत्ति इत्यादि धानों से रोगों को सबदा नुगये रहे और उस की तविषय को दृष्टये रखने की चेष्टा कर ।

चिकित्सा ।—

इन्द्रोशिया ६ शक्ति । मन में भीतर ही भीतर दुःख का दशा रखता, पाश्चात्य स्थानमा भालूम पडना सबदी धातों में लापरवाही, शोक दुःख के कारण हाय ऐरों में यादृ ।

एमिड फास्फोरिक ६, ३० शक्ति ।— त्रिषु प्रकारेण दुःख और अगत में सबदा धातों से उदासीनता और लापरवाही, धातु चोत करने की इच्छा न होना ।

काकूलात ६ शक्ति । उदासी, चमक उडना, विषय घर रात्रि क समय शोक के उपरांत सिर में दह, किसी रोगी इत निद्र धी श्रुभुवा करने क कारण भीइ न जाना ।

तरह दिल से यह हर न निकल सका ।

बेलेडोना ३, ६ शक्ति । हर लगन से शरीर

माना विशय कर बघों का, रोगा घिटलाये और हाँ
और हाथ पैर पटक मजक में लून मरनाय और घा
लाळ हुआ ।

काफिया ३ शक्ति । अनिश्चय छायाधिक उ

जना, कम्पन और मूच्छा नाए विडहूट न माना ।

जेतमीमानम ६ शक्ति । मन्थनर म

पाकर उदरामय रागी टीक पागळ क समान होजाय ।

ग्राणियम ६ शक्ति । भय पाकर शरीर

अस्वाभाविक निद्रा मराज मग्ना मार मान प्रा
उन में बर हाता । बद श जानना और बकता बमाल
मल मूत्र निकट जाना । याद भाषति इन म प्राय
मे कुछ वायदा न इमयाए पना इम्रागया शक्ति द
थातिव ।

श्रीरंग प्रयोग । भाषदयकता क अनुसार (१)

१ घट क धनर म ।

मृत्कारि उपाय । रागा का लयर भाय म मल

क शक्ति । रागा क शिव इ मालक नाए मात्रनिच । इम
अनक भाषदयक न ते मगा क नाम शिवन क म म र
रने उनर ना अरुहा दे । उन क नाम बहुत क इन म म
प्रमथा म म म क रना इ न न ।



शोक दुःख ।

शोक दुःख जिस प्रकार येनालून दिन दिन शरीर को सुखाना है चापद और कोई इस प्रकार नहीं सुखा सता । मन के कष्ट क यथापर प्रबल रोग और कोई नहीं है ।

शोक और दुःख से यथा रोग को चिकित्सा करने समय ध्यान रखना चाहिये कि उस से मीठा मीठी बातें कर और उस को दिलासा दे । इस के सिवाय तीर्थ यात्रा देश विदेश भ्रमण, दान दानु याधरों क साथ विवास मनोप जनक काय में प्रशुति इत्यादि बातों से रोगी को सबदा मुलाय रहे और उस को तद्विषय को यदुत्पाये रखन की कष्टा कर ।

चिकित्सा ।—

इम्रोशिया ६ शक्ति । मन में मंतर ही मंतर दुःख का दबा रखना पाकाशय कालमा मालूम पडना, सबही बातों में लापरवाही शोक दुःख के कारण हाथ पैरों में बापट ।

एसिड फास्फोरिक ६,३० शक्ति ।—अनिष्ट दुःख और अगत में सबदा बातों स उदासीनता और लापरवाही, बात चीत करने की इच्छा न हाना ।

काकूलास ६ शक्ति । उदासी चमक उटना विशेष कर शक्ति के समय, शोक के उदगत सिर में दद, किसी रोगी इष्ट मित्र की गुप्पुपा करन के कारण नीड न जाना ।

लैकेसिस १२, ३० शक्ति । सो कर उग्र के बादही तथियत सराव और तकलीफ मालूम पडना, गरदन के चारों ओर काइ चीज कस कर बाधने से घुरा मालूम पडना ।

पल्लेसेटिका ६, ३० शक्ति । रोना, उदासता, हर एक बात से तथियत घबरा उठना, हमशा सुस्त रहना और जरासी बात से रोपडना ।

औपधि प्रयोग । आवश्यकता के अनुसार दिन में एक या दो बार ।

सहकारी उपाय ।—निस मनुष्य क हृदय में शाइ सताप घुस गया हो उस पर सिवाय धनु चवा क और किसी तरह असर नहीं होसना । यदि हो तो धन चवा से हा उम क दिल को कुछ हादस बंध सदा है, इस खिय शोक दुख और आपद् बिपद् में ईश्वर पर भरोसा करने क श्रय ही उपदेश देना चाहिये । मुख को तरह शोक दुख भी ससार का नियम है । लगातार मुख भसार में किसी क भाग्य में नहीं लिता है । यह शांकर और इशर विश्वास कर छाती बाधनी उचित है ।

क्रोध ।

क्रोध के समान पराक्रमी शत्रु और कोर नहीं है । क्रोध क कारण जो राग उत्पन्न हो उनमें निम्न लक्षण धोचने पापदा करती हैं ।

... 20 1137 ... 21 1138 ... 22 1139 ... 23 1140 ... 24 1141 ... 25 1142 ... 26 1143 ... 27 1144 ... 28 1145 ... 29 1146 ... 30 1147 ... 31 1148 ... 32 1149 ... 33 1150 ... 34 1151 ... 35 1152 ... 36 1153 ... 37 1154 ... 38 1155 ... 39 1156 ... 40 1157 ... 41 1158 ... 42 1159 ... 43 1160 ... 44 1161 ... 45 1162 ... 46 1163 ... 47 1164 ... 48 1165 ... 49 1166 ... 50 1167 ... 51 1168 ... 52 1169 ... 53 1170 ... 54 1171 ... 55 1172 ... 56 1173 ... 57 1174 ... 58 1175 ... 59 1176 ... 60 1177 ... 61 1178 ... 62 1179 ... 63 1180 ... 64 1181 ... 65 1182 ... 66 1183 ... 67 1184 ... 68 1185 ... 69 1186 ... 70 1187 ... 71 1188 ... 72 1189 ... 73 1190 ... 74 1191 ... 75 1192 ... 76 1193 ... 77 1194 ... 78 1195 ... 79 1196 ... 80 1197 ... 81 1198 ... 82 1199 ... 83 1200 ... 84 1201 ... 85 1202 ... 86 1203 ... 87 1204 ... 88 1205 ... 89 1206 ... 90 1207 ... 91 1208 ... 92 1209 ... 93 1210 ... 94 1211 ... 95 1212 ... 96 1213 ... 97 1214 ... 98 1215 ... 99 1216 ... 100 1217 ...

... 101 1218 ... 102 1219 ... 103 1220 ... 104 1221 ... 105 1222 ... 106 1223 ... 107 1224 ... 108 1225 ... 109 1226 ... 110 1227 ... 111 1228 ... 112 1229 ... 113 1230 ... 114 1231 ... 115 1232 ... 116 1233 ... 117 1234 ... 118 1235 ... 119 1236 ... 120 1237 ... 121 1238 ... 122 1239 ... 123 1240 ... 124 1241 ... 125 1242 ... 126 1243 ... 127 1244 ... 128 1245 ... 129 1246 ... 130 1247 ... 131 1248 ... 132 1249 ... 133 1250 ... 134 1251 ... 135 1252 ... 136 1253 ... 137 1254 ... 138 1255 ... 139 1256 ... 140 1257 ... 141 1258 ... 142 1259 ... 143 1260 ... 144 1261 ... 145 1262 ... 146 1263 ... 147 1264 ... 148 1265 ... 149 1266 ... 150 1267 ... 151 1268 ... 152 1269 ... 153 1270 ... 154 1271 ... 155 1272 ... 156 1273 ... 157 1274 ... 158 1275 ... 159 1276 ... 160 1277 ... 161 1278 ... 162 1279 ... 163 1280 ... 164 1281 ... 165 1282 ... 166 1283 ... 167 1284 ... 168 1285 ... 169 1286 ... 170 1287 ... 171 1288 ... 172 1289 ... 173 1290 ... 174 1291 ... 175 1292 ... 176 1293 ... 177 1294 ... 178 1295 ... 179 1296 ... 180 1297 ... 181 1298 ... 182 1299 ... 183 1300 ... 184 1301 ... 185 1302 ... 186 1303 ... 187 1304 ... 188 1305 ... 189 1306 ... 190 1307 ... 191 1308 ... 192 1309 ... 193 1310 ... 194 1311 ... 195 1312 ... 196 1313 ... 197 1314 ... 198 1315 ... 199 1316 ... 200 1317 ...

(12121212)

12121212

... 201 1318 ... 202 1319 ... 203 1320 ... 204 1321 ... 205 1322 ... 206 1323 ... 207 1324 ... 208 1325 ... 209 1326 ... 210 1327 ... 211 1328 ... 212 1329 ... 213 1330 ... 214 1331 ... 215 1332 ... 216 1333 ... 217 1334 ... 218 1335 ... 219 1336 ... 220 1337 ... 221 1338 ... 222 1339 ... 223 1340 ... 224 1341 ... 225 1342 ... 226 1343 ... 227 1344 ... 228 1345 ... 229 1346 ... 230 1347 ... 231 1348 ... 232 1349 ... 233 1350 ... 234 1351 ... 235 1352 ... 236 1353 ... 237 1354 ... 238 1355 ... 239 1356 ... 240 1357 ... 241 1358 ... 242 1359 ... 243 1360 ... 244 1361 ... 245 1362 ... 246 1363 ... 247 1364 ... 248 1365 ... 249 1366 ... 250 1367 ... 251 1368 ... 252 1369 ... 253 1370 ... 254 1371 ... 255 1372 ... 256 1373 ... 257 1374 ... 258 1375 ... 259 1376 ... 260 1377 ... 261 1378 ... 262 1379 ... 263 1380 ... 264 1381 ... 265 1382 ... 266 1383 ... 267 1384 ... 268 1385 ... 269 1386 ... 270 1387 ... 271 1388 ... 272 1389 ... 273 1390 ... 274 1391 ... 275 1392 ... 276 1393 ... 277 1394 ... 278 1395 ... 279 1396 ... 280 1397 ... 281 1398 ... 282 1399 ... 283 1400 ... 284 1401 ... 285 1402 ... 286 1403 ... 287 1404 ... 288 1405 ... 289 1406 ... 290 1407 ... 291 1408 ... 292 1409 ... 293 1410 ... 294 1411 ... 295 1412 ... 296 1413 ... 297 1414 ... 298 1415 ... 299 1416 ... 300 1417 ...

पर हाथ रखें, दखने में पाए स्पष्ट कारण मात्र न हान परमा जोर से चिह्नायें, तबिय पर सिर उठट पलट और रगड़, उजाला और शब्द अच्छा न लगे, भायें डाल हा जायें, नींद ने भवानक उखल पडे भायें फुकी हुए रहें भयया नींद न भायें, यदि यह सब लक्षण दिखलाई पडें तो मल्लिक प्रदाह समझ कर चिकित्सा करना चाहिये ।

चिकित्सा ।—

ऐकोनाईट ३,६ शक्ति ।—रोगकी प्रथमावस्था में

जब प्रबल ज्वर के सब लक्षण दिखलाई हैं, जैसे गरम मूत्रा हुआ शरार, कठिन और तज नाटा इत्यादि आर मल्लिक में रक्त वाजाय, चहरा डाल हो, अत्यन्त मानसिक घबराहट और मृत्यु भय, नींद न जाना, पचना, कपेटे यह लना इत्यादि दिखलाई पडें तो ऐकोनाईट कायदा करता है ।

वेल्लेडोना ३,६ शक्ति ।—मल्लिक में अत्यन्त छपकन

सिर दह, डाल और उपरी भायें, चहरा भयङ्कर तथा लाल धमकाळा मस्तक में अत्यन्त गरमा, गल का धमना का बहुत फडकना, पचना इच्छान से भागन का इच्छा करना, पास के भादमा का घोंसना, कांठे और मार, रोशनी बार भावाज पिबहु न सुहाय, बार सात समय चमक उठ ।

त्रायोनिया ३,६ शक्ति ।—सिर में बह माना फटा

जाता है, रात में पचना, भागन की इच्छा करना, होट सुष हुए बार अत्यन्त प्यास, पिठहुल सिर रहन की

इच्छा करे कौंकि जरा हिलने से शक्ति, विद्यान पर रोग से बचन करने की इच्छा हाना और बचन करना ही सूखा हुआ और कठिन मल बहुत टिकना ।

द्वायोनायेमस ६ शक्ति । तदा और, बहाला सी में रहना अस्पष्ट बात कहना बचना, एक हा मार टकटका लगा कर देखना अचानक हाथ पैर हिलाना जीभ पर सफेद मैल टका रहना मुहस आग निकलना बह बह करके बचना, विद्यान संचना और समानुर्भ मल सूत्र निकल जाना ।

श्रोत्रियम ३, ६ शक्ति ।—सुप पड़ना घडघटाहट व माथ तुंगट लकर सास लेना, आँसु बन गुला बचना और टकटका बाँध कर दखना चन्ना नाली रोगन का और सूजाया सुनाइ ज्यादा पड़ना, शोक, भय अथवा किसी प्रबल मानसिक आवग व कारण रोग मल बाँधन काग और शुद्ध दार ।

मूत्रोनाियम ६ शक्ति ।—सब शत्रिया सुत्र हा जाना, बचना और भागन का इच्छा करना एसा मारूम हाना मानो इर म आग पड़ना है । दाँन किडकिडाना हागों में पाप और फट हुए, दाँनों पर मैल जम जाना टकटका लगा कर एक मार देखना साँस उठला और परला मल ।

शरार में यदि उपदेश का दाग हा [पहिले मातंग हो शुद्ध हा और उस के मयव गून में बगवों पड़ गइ हो]—मकृतियस । गरदन और मलक क पात्र अधिक

इह—टेटीयोरस । मातृ समय चिह्न उटना—एपिस । मलय गरम, दासा पैर टह और यदि रानी का समय रोग हो—सलपर । ज्वर व उपर्यंत धार जय बलदाना या हलीयोरस दिया जा चुका है—त्रिद्रुम ।

श्रीपथ प्रयोग ।—मातृदयजतानुसार २३ घट के अंतर से या ३४ घट व अंतर न देनी चाहिये ।

सहकारी उपाय ।— यदि दाध पैर टह मन्त्रम पड़े ता गरम पानी बोला में भरकर रोष ह और प्रान्त व स्पेट ह । फिर मुट्ठ्या वर जल वा पही या बरफ लगावे । जल पहा या बपडा गरम न हा न उस का बार बार तर करता रहे । यह बह चार व शरीर का हवा रक्ष । रागी व बिब सम्पूर्ण विश्वास परम धारम्यवाप है । इस लिए निम वनर में रानी हा उम में जार जार व बात बरना वरुण यादनिर्षो वा टहरना वा भाग जामा, अदवा धार विसा प्रचार रोपी वी विदना या एता वाम जिन से उर के मनका बह हा न बरना चाहिये ।

पथ्य ।—सहृदना, बर्गी अदि रहते हन्ना वप्य देना चाहिये, वीठ दूध दिला जानका है । प्यास बुझाने का उपाय देना पाना पान वी देना चाहिये ।

सन्धास ।

(ऐसोप्लेकमी)

मन्त्र में एक दाध होकर बधायक रोग बरान निन्दे ५ र मन्त्र राजा है बहउ रत

और श्वास का आना जाना यही जीवा का जिह दिखना पड़ता है । यद्वारा रक्त शून्य होजाता है मुख मग्न और मग्न की घमनी सब रक्त पूरा होजाता है । इससे घड़घड़ शब्द के साथ बहुत धार पार और कष्ट कसब घटता रहता है हाथ पैर मुँह क ममान गड़ रहत हैं नाग पुण धार धार टहर टहर कर चलत है । इन इस अवस्था में रागा का आगम नहीं होता, बरत मग्न दुबल होना उग जाता है और ८८ घट में मरजाता है ।

मन्यास मांसापतन अचानक मारम ट नाग है किंतु कमी कमी कुछ लक्षण पहल से भी दिखना पडत है जैसे सिर घुमना पसा मारूम होना माना घट कर क बीह आना है, मलक में पत्र प्रवार मानाम्य रू मर बोध मारूम होना विशेषर मिर मुहान में, जीन का जड़ना होना इत्यादि । प्रयोग कर के उपरान्त माघ का राग दन्त में भाग है, धनर मनाप पान का मारम अतिरिक्त मेडिशी चीजें व्यवहार करना, मानामिक रूढ़ि व्यवहार या मामिक गून का अचानक बंद होजाता इत्यादी भी रोग का कारण है ।

चिकित्सा ।— १। पहिले लक्षणों में नफमामिक,

पेचानाइट, बगुना ।

२। राग प्रकटित इन पर—एकानाइट, बरहाय मारिम ।

३। लक्षणों लक्षण पना पहापोत इत्यादि में—एकानाइट बरहाय मारिम, बगुना ।

मानामिक मारूम में क का भावसे लिखा है, इस राग में क कई मर ६ जाता है । उस ऊपर दिन दिन मीठों क लव

लिख चुके हैं उनका फिर लिखना व्यर्थ है । जिन के विषय में नहीं लिखा उनको यहाँ लिखने हैं ।

एकोनईठ ३ शक्ति ।—जान का पक्षाघात, यात मुहमे साफ न निकलना किंतु तुतगवर यात रहना । निगलने में अत्यन्त कष्ट, नाडा पूण और कठिन किंतु खयिराम गति नहीं (टहर टहर कर नहीं) ।

बेलेडोबा ३ शक्ति । नडा रहना, बहोशा और बोल बद् हाथ पैरों का पक्षाघात [लकवा] विशेष कर दाहिनी ओर का [यदि बायाँ ओर का हाता लकामस], मुह एक ओर का टेढ़ा होजाना, निगलने में कष्ट होना अथवा निगल न सकना, रूधने, सुघन और घालन की शक्ति का जोष हो जाना, बेमालूम पशाय निरल जाना ।

आनिका ६ शक्ति । मस्तक गरम खरिन शरीर के और और हिस्त ठण्ड, हाथ पैरों का पक्षाघात, विशेष कर बायी ओर को, बेहोशी और घगटे के साथ साम्र खाना जाना (थोपियम की तरह) आँसों का पुतली सुकड़ी हुए और गिगाह एक तक, लया साम, बडबडाहट व साथ पकना, और बेमालूम मल मूत्र निकल जाना ।

काकूलम ६ शक्ति । राग में पहिले सर बद् और घनमता सी मालूम होग, पक्षाघात विशेष कर नीच की ओर, मस्तक और मुख ठण्डा गरम खाना पैर ठण्ड ।

हायोगियेमम ६ शक्ति । अथानव गिहा कर बेहाश हाथाम मुहस भाग निकलना, गल में पसी

सिन्धुइन दाकि निगला नहीं जाये, मूत्राधार और मूत्र
द्वार का पक्षाघात, शरीर के मर पट्टों का फडकना ।

जैकोमिस १२,३० शक्ति । स्यास सापदा बाप

ओर का पक्षाघात और हात पैर मुँह के समान डड, मुँह
एक ओर टेढ़ा [येलेडोना की तरह], गला छूने से सम्भ
द होना ।

नक्सरोमिका ६,३० शक्ति ।—रोगसे पहिले निर

धूमना, सिरमें दर्द होना कान में मन्नाटा होना, अथवा
जो मिचलाना, नाँचे के जायट का पक्षाघात और प्राय
ही नाँच व अङ्गों का नाँच व अंग ठण्डे और निर्जीव जो
मनुष्य के बट्ट घैटे घैठ काम करते हैं और किसी प्रकार
का शारीरिक परिश्रम नहीं करते हैं, हमेशा घी और ममालू
आदि मिले हुए गरम पदार्थ खाते हैं और नशा करने हैं
यह औषध उनही के लिये फायदा करती है ।

ओपियम ३ शक्ति ।—रोगी ऐसी तद्रा में बेहाश

सा पडा रह निर से यह मात्रम हा मानो सारवा
हे बाँधे अधातुली भाष की पुनरा कैरा डुर, हाथ पैरों
में बायट अथवा सब शरीर नरुन के समान कडा पडना
नाडी की गति धारी ।

ओपियम प्रयोग ।—यदि रोग बहुत कठिन हो त

प्रति २० । ३० मिनिट के अन्तर में द्या देना चाहिये
याँ रागा द्या न निगल मर मा द्या का ५१० गाल
आम पर रध द पमा कान म आप मे आप गाल प
मे चगी जाँगा । फायदा मात्रम पडन पर घोडा घोडा
दर मे द्या नभाय ।

सहकारी उपाय ।—इस रोग से पादित होते ही रोगी को धीरे धीरे लेजाकर गरम विन्ततर पर लिटाये और माथा कुछ ऊचा करदे । रोगी को ऐसे मक्का में रखे जहा खुब ठंडी हवा आती जाती हो । शरीर और गले के सब कपडे खोल डाले जायें । हाथ पैरों को सेकना चाहिये और सिर पर बरफ रखनी चाहिये या बरफ के पानी की पट्टी बाधनी चाहिये । दवाइयों में ऐबोनाइट, बेल्डोना या ओपियम देनी चाहिये । निन लोगों की गदन छोटी हो, रज पूणधानु हो, सहज ही में मुह और आँखें लाख होजानी ही विशेषकर यदि वा थैठ रदठ हों उनही को यह राग अधिक होता है । ऐसे मनुष्यों का चाहिये कि नशा और गरम मसाला आदि मिल हुए पदार्थ खाना बिलकुल बन्द करदे । उनको चाहिये कि यदि वे मास मच्छी आदि खाते हों तो यह भी छोड दें और केवल अन्न हा भोजन करें । प्रतिदिन ठंड पाना से स्नान करना और खुली हुर हवा में टहलना उनक लिये परम आवश्यक है । उनको प्रातःकाल स्नान करन में आलस्य कदापि न करना चाहिये ।

ताराधात ।

(सनस्ट्रोक)

प्रायः लोग इस को सर्दी गर्मी कहते हैं । मज्जक में सूप की प्रबल गरमी लगने से यह रोग उत्पन्न होता है । इस रोग क बहुत से लक्षण मन्निष्क प्रदाद क समान हैं । कभी कभी पहिल सर्दी वा कपकपी लगती है । इस के पाछे नाडा पूष और भरी हुर स्पर लपकन, सर दद

जड़ों का लाल, गिर घूमना और गिर में हरे-धुंधला
बनायी और साधारण कमजारी आदि लक्षण उपस्थित
होते हैं। यह रोग प्रायः गरमा के दिनों में ही होता हुआ
दृष्टा जाता है।

चिकित्सा ।

एकोटाईट ३ शक्ति । यदि मल्लक में तेज
भूत होने के कारण लाल चहला, लगभग, गिरें हैं, और
अल्पतः आर्षादि उपजेता।

वेनडोना ३, ६ शक्ति । तेज गिरें रूढ़ और मांसक
मांसक होना, माना मलक फटा जाता है, गिरें सुवास
में बनना अथवा में जमा मालूम हो माना मलक हल न
कर कर निकल पड़ना सुजन से अथवा बें बें उठ कर
अन्य से गिरें घूमना आँधों में रूढ़, अन्न और उत्राउ से
बौधा लगता।

आयोनिआ ६ शक्ति ।—मल्लक मन्त्री फट कर
रा दृष्टा हो जायगा। सामान्य दिग्ग न में भी बहना सुक
बहुत। अर्थात् मल्लक की निष्कालन के कारण उठ कर बहने लगे
अन्य लूना और कदा मल्लक मन्त्री मन्त्री हो।

एरोनटुन ६ शक्ति ।—गिरें में बहुत मन्त्री को
मल्लक हल के मल्लक रूढ़ अथवा मल्लक में मल्लक निकल
कर मल्लक हल, जो मल्लक मल्लक मल्लक मल्लक मल्लक
हल मल्लक

हर्ज योग्य ६ शक्ति ।—मल्लक का मल्लक मल्लक

पर भी तीव्रता और सर दर रहना ।

विराटूम विरिट ३ शक्ति ।—शरार की गरमी क साथ लगाना प्रतिमार ।

औषध प्रयोग ।—अचानक यह रोग उत्पन्न होने पर जब तक शरार न हो लगाना १५।२० मिमट क अन्तर से धारें देनी चाहिये । कुछ पायदा हीसन पर घोड़ी दर बाद देना चाहिये ।

सहकारी उपाय ।—जा उपाय मस्तक प्रदाह और सम्वास राग में लिख हैं यथा सिर पर धरप क पट्टी बाधना आदि यही इस राग में भी करना चाहिये । घाटा घाटा टटा यानी पीन क लिप दिया जाय ।

पक्षाघात ।

(पैरेसैसिस)

शरीर के किसी अंग की अनुमय शक्ति अथवा सरा एन शक्ति (मालूम करन की और हिलान का) जाता रह ता उसको उस अंग का पक्षाघात कहत हैं । पक्षाघात प्राय अचानक हा आरम्भ दाजाता है, किन्तु कभी कभी पहिल से भी उसक कुछ लक्षण दिखलाई पड़ने लगत हैं । जैसे सर दुर्द भग का मन्त्रानक फडवना इत्यादि । यह राग कभी शरार क एक आर, कभी सिर्फ न्दीच क माग में ही हाता ह । मस्तिष्क या पृष्ठमज्जा क विगडन हा स पक्षाघात होला है । जिन अंग में पक्षाघात हाता है कमच यही अंग कोमल और पतला पदजाता है ।

कभी २ ऐसा भी होता है कि सपूर्ण पक्षाघात न हाक सिफ हाथ पैर कापने ही लगते हैं ।

चिकित्सा ।

१। शरीर के एक ओर का पक्षाघात—बैराग्न-कर्थ, मजमबोमिवा, काकूल्स आर्निका, [विशय वर बाया ओर का] ऐवानाइट ।

२। शरीर के नीचे के भाग का पक्षाघात—काकूल्स, कार्क ग्रामेटम अत्रेग्टा-माइट्रिक, फामफारस, गुम्बग रररर कालागिन्म ।

३। बच्चों का पक्षाघात—जेरसीमितम, बेडडाना डडडामास, गुम्बम ।

४। मुहका पक्षाघात ।—ऐवानाइट मयवा एरररर और डडडामीनम पथ्यावरम स [नये राग में], बैराग्न काथ कार्कडम [मुह का सरीं लगन स] वरररर प्राफाइटिस ।

५। माथ के पक्षों का पक्षाघात—डडडामीनम राग डडडिया वररररर, इडडामिनियम ।

६। डेगटियों का पक्षाघात—ररररम आनवा ।

७। साधारण पक्षाघात—फामफारस बैराग्न-काथ काकूल्स वररररर वररररर, गुम्बम्, अत्रेगत्र-इड्रिक उडडमिनम ।

८। दिरेरेका के कारण पक्षाघात—इड्रिया [मयड काथ] राग मरररम वररररर काकूल्स ।

९। बाव के कारण पक्षाघात—ररररर वररररर [राग वरर में] आर्निका मररर [वररर राग में]

बेडडाना ई गुडि ।—मररर में ररररर

मुद्ग का पक्षाघात, मुद्ग के एक ओर का पक्षाघात, दूसरी ओर साँवट, मूत्राघार का पक्षाघात, अपने आप पक्षाघात निकल जाना ।

कास्टिकम ६, १२ शक्ति ।—मुपमडल, जीम, अथवा शरीर के एक ओर का पक्षाघात । रात्र अथवा और किसी प्रकार के उद्भ्रम(फुन्सि)बैठजाने से यदि पक्षाघात होतो यह दवा देनी चाहिये ।

डल्कामारा ६ शक्ति ।—सर्शो लगने से और फुन्सि बैठ जानने यदि रोग दाबर हाथ पैर और जाम आदिवा पक्षाघात, जिस हाथ में पक्षाघात है वह बरख व समान ठण्डा ।

जेलसीमीनम ६, १२ शक्ति । दिलने की शक्ति न रहना तथापि अनुभव शक्ति कायत्तमान, भाष के पत्रों का पक्षाघात ।

इमेशिया ६, ३० शक्ति । अत्यन्त मानसिक आघात और रोगों व पाप बैठकर रात्रि आगरण के उपरात । रात्रि व मन मन में अत्यन्त दुःख ।

नक्षत्रोमिका ६, ३० शक्ति । भिरघूमता, बहस और हाथ पैर भादि का भागिर [घोटे भरावा] पक्षाघात । स्वल्प शक्ति की दुष्यता भाषों के सामन धरवार और काशों में घंटे से बजना, म्नामाविक कोष्टबद्धता की महति, शराव पीने घाल्य और जो सबदा गरम नखाटे भादि खाता हो ।

में ठंडे पानी के छाटे लगाए चाहिये और कपूर का सरक सुघाना चाहिये ।

जब रोग का कारण माहूम होनासे तब नीय लिथी हुए औषधों में जो उचित समझ में आवें ही जाना चाहिये । यदि डर लगकर मूच्छा आर होता लक्षणों के अनुसार एकोनाइट वा आपिषम ६ ३० शक्ति ।

गिरजान से अथवा किसी तरह चाट लगाए स मूच्छा आर हाना भार्जिका ६ शक्ति ।

यदि रक्त स्राव अथवा और किसी प्रकार के पदार्थ के शरार से निकल जाने के कारण मूच्छा आर होता घायना ६ शक्ति ।

क्रोध अथवा शोक दुःख इत्यादि के कारण से यदि मूच्छा आर हो तो कर्मोमिला वा इमेगिया १२ ३० शक्ति ।

यदि किसी स्थान में असह्य दद हानक कारण मूच्छा हो तो एकोनाइट ६ शक्ति काकुलस वा कर्मोमिला १२ शक्ति ।

यदि सामान्य दद के कारण ही मूच्छा हो तो हीपर-नलपर ३० शक्ति ।

मूच्छा हाने के पहिठ यदि सिर घूमता हो तो कैमागग १२ वा हीपर ३० शक्ति ।

औषध प्रयोग ॥—रोग का अवस्था के अनुसार अब तक आराम न मानूँ हो १५।२०।३० मिनट के अंतर से उचित विचार कर एक एक मात्र औषध देना चाहिये ।

जलातक ।

(हार्डड्रोफोत्रिया)

निर्वाचन ।— पाण्डु जातिगत क काष्ठस्य पत्रस्य
त्रिकराग उत्पन्नं ज्ञातम् । इमं मे पत्रों का माध्य (वायुदे)
कृत्वा अत्यन्तं जलम इत्यादि इत्युक्तं उक्तम्
ज्ञातम् ।

कारणं ।— इमं रागं क विषा प्रसार क संज्ञकं त्री
विशालं पत्रम् । माघाशुष ३० ४० दिन स लेटर का क
तक इमं का अमर लुगा हुआ शरीर क भीतर रहता है।
इमान् दश मे एसा कहायत है कि १८ दिन १८ महीन क
तक कि १८ वरस क उत्पन्न भी राग प्रसारित
ज्ञातम् ।

कारण ।— इमं रागं क विष भौर मगनी मगनी
का अमर तव पत्रा मगी ज्ञातम् । त्रिकु पाण्डु क
क काष्ठस्य म मातु उत्पन्नं रागप्रसिद्धं ज्ञातम् का अ
म इमं का विष रहता भौर क क काष्ठस्य त्रिकु पाण्डु क
उत्पन्नं ज्ञातम् ।

जलातक । त्रिक क पाण्डु ही दिव मे राग प्रसारित
ज्ञातम् । इमं क - १० मग द क मीनर गति प्रसिद्धं जलातक
हन् ज्ञातम् । इत्युक्तं क काष्ठ मे भूतकाल मग क
पुत्रस्य क मगम द क मगम द क ज्ञातम् । क
मगम द क द क मगम द क मगम द क मगम द क
हन् ज्ञातम् ।

अक्सर देखा जाता है कि घाय अच्छा होजाने के उपरान्त रोग उपस्थित होना है । रोगी की जीभ के नीचे छाल दिखलाई पड़ते हैं ।

सब शरीर में बेचैनी और मनमें उदासी यही रोग का पहिला लक्षण है । रोगी उदास और चिंतायुक्त हो जाता है । अच्छी तरह निद्रा नहीं आती, हेरश और भय देने वाले घुले स्वप्न दिखलाई पड़ते हैं । इस के उपरान्त गल नली में खराबी माडुम होता है, जल अथवा और पतली चीजें पीने में ऐसा मालूम होता है मानों हम अटकना है । खोर पतली चीजें पीने में बायठे आने लगते हैं । स्वर नली और गल नली के बायठे से हा इस रोग की उत्पत्ति है ।

रोगी का गला प्यास के मारे सूखा जाता है तथापि कुछ पिया नहीं जाता, यहातक कि किसी पतली चीज का प्यान भी आन से बायठ आने लगत है ।

रोग बढ़ने के साथ बकना, घौरान वा कुछ कुछ मति भ्रम भी दिखलाई पड़ने लगता है । सब शरीर में बायठे आने लगत हैं । रोगी यहा तक स्नायविक [श्लिषकीय] हो जाता है कि शरीर में हवा लगन, दाद हान राशना आदि से भी बायठ आने लगत हैं । बहुत सी लार निकलती है आर मुह से बहती रहता है । नाडी की गति शीघ्र और तेज शरीर का उल्काप १००/१०३ तक हो जाता है । प्रबल आक्षेप के कारण श्वास रुकने से वा कमजोरी से अमश रोगी का मृत्यु हो जाती है ।

चिकित्सा —

लक्षणों के अनुसार वेल्डोना कैथेरिस, हाइड्रोफोसिनम्,

हायोभायमम, खैरलिस, इडामोनियम, भारि धारु
हान हैं ।

बेलेडेना ३,६ शक्ति ।—लपकन के साथ सि
रु, सदरा ला, गुल टडा, तक्रियेमे सिर रगना पारी
निगन्तमे कट हाना हाथ पैरा के बायरे, कुल भारे
आनपरो की पान बजना, काटन की इच्छा करना है
गूठ बना इयादि ।

केन्यारिम ६ शक्ति ।—बाध और बांधन, जल र
म न ग बन्ता । रमण (मैथुन) करन की बहुत इच्छा, और
इंद्रिय क उठन में कट हाना है ।

हाइड्राफागिन ३० शक्ति ।—सिर रुई, हाथ पै
मच्छना इन पनाकी आ रकार मुह में लार रुई हुए भार
पना इन का अतिच्छा इत्यादि ।

हायोभायमन ६,३० शक्ति । गन्तकी क पीक
क अग मे कट अलर क माय कट निहन्ता कय
कट अलर कय कय कय कय कय ।

स्यूमोनियम ३,३० शक्ति । अरुण वेन की
इरुण हान म अलर व हूण का लार कय कय
इरुण कय क इ अरु वेन कय कय कय कय
कय क इरुण कय कय कय कय कय कय
इरुण कय क इरुण कय कय कय कय कय कय
कय कय कय कय कय कय कय कय कय कय
कय कय कय कय कय कय कय कय कय कय
कय कय कय कय कय कय कय कय कय कय

सहकारी उपाय ।—जिम जगह फाट गया हो उस स्थान में फौरन ही चारा लगा देना, अच्छी तरह धोना, या किसी जला दनवाली चीज से जलादेनी चाहिये । प्रायः मूत्र के फाटने में जा उपाय किया जाता है इस में भी वैही है ।

धनुष्टकार ।

(टेटेनस)

धनुष्टकार दो प्रकार का होता है । एक प्रकार का धनुष्टकार चुन विगडन से अथवा घानु की अपत्या मरताव होने से होता है । इस प्रकार का रोग अधिक सांघातिक नहीं होता । आधु विधान की दुबगता, ऋनु साथ अथवा शरीर के और किसी स्वाभाविक साथ के घट होने से, अधिक शारीरिक वा मानसिक परिश्रम करने से और मस्तिष्क रोग होने के कारण यह रोग उत्पन्न होता है ।

दूसरा प्रकार का धनुष्टकार चोट लगने से अथवा कहीं थोड़ा सा बट जाने से उत्पन्न होता है । इस को आभिघातिक धनुष्टकार कहते हैं । इस प्रकार का धनुष्टकार हा अधिक सांघातिक होता है । शरीर के किसी अंग में चोट लगने से उन अंग का स्नायु बट जाने के कारण जो उत्पन्न होती है वही इस रोग का कारण है । सामान्य काम से हाथ पैर बट जाने से, दाटा चुन जाने से, दात उगाडन में, और कान छिदने आदि सामान्य सामान्य कारणों से भी धनुष्टकार रोग हाताता है । चोट लगने के बाद साधारणतः चार दिन से छपर ६ दिन के भीतर ही रोग हाताता है । यह धनुष्टकार साघा निवृत्त होता है । चोट लगने के बाद ६ दिन निवृत्त जाने

पर और रोग उपस्थित होने के १४ दिन बाद फिर इस भय नहीं रहता। वध्या पैदा होने के समय जो धनुश्चक्र होता है वही सय से असाध्य है।

लक्षण ।—जब रोग आरम्भ होता है तो गर्दन और जाघड़े बड़े पड़जाता हैं और उन में दह जाने लगता है। जीभ बाहर निकलने और घात कहने में कष्ट मालूम पड़ता है। कमश जाघड़ अटक जाने हैं और निगलने में कष्ट होने लगता है। जैसे जैसे रोग बढ़ने लगता है घायठे भी शुरू होजाते हैं। रोगी ठहर ठहर कर जोर जोर से हाथ पर खींचन लगता है और थड़ा कष्ट पाता है। यदि रोग साधारण है तो घायठ जल्दी जल्दी और अधिक आने लगते हैं, बाती बिल्कुल बढ़ होजाती है, भ्वास रुक जाता है और अन्तमें या तो कमजारी स या भ्वास बढ़ होकर मृत्यु उपस्थित होजाता है।

चिकित्सा —

एकोनाईट १,३ शक्ति ।—नाडा कठिन, मरी डूब आर तब भय और जी घबराना घहरा एक बार हाक और एक बार फाका होना, ठंड पमीने से शरीर भर आना।

आर्निफा ६ शक्ति ।—यदि घोट लगने से रोग दान का आशङ्का है और सय शरीर में बढ़ होतो यह दया दनी चाहिये।

वेलेहोना १,३ शक्ति । गल में सिङुदन मालूम होना दाना बढ़ दाना मुर टटा पड़जाना और भाग

निश्चयना, धानी पीने ही पीपटे धान खाना पीठ बड़ी पड़ना।

हायोसापेयम ई शक्ति ।—रातीर पीठ की धार

धनुष की तरह टंग हो, राती का पहला भयंकर बिगड़ा हुआ, मुहसे भाग निश्चयना गल में सिक्कटन मांस दाना इन्हीं से बिगड़ुछ कुछ भी विशेष कर पानी में निगल खाना, मधानक हाथ पैर पड़ना, भेष्या समय और राती पीन के बाद पड़ना।

इरोशिया ई शक्ति ।—गर्भ और पीठ बड़ी

धीरे लघु में पूर्व, परदेरा उबारी लन की रच्छा किनु मुद म सुलना, गन्ध मीनर भाग्य एक गांठनी बटवी रहै। राती के मने मन में कुछ रहना और लून हा मधया हिलन मुग्ने से ही राग पड़ना।

नस्ययोमिका १,३ शक्ति ।—इव पाठ पढ़ने

लने और रद पीठ की धार टटा हा जाव निगलने में बर हो, मठ की मही रद की मात्म हो पाठानप में पाठे मान बासा रद, अर्धन चारपड़ना, राता दडुन । बड विद्या, के हाग कमिनायाही असाद कात पा। मान रैन मदि राव बागों में निदम पात्र नही कात उरव निव ही वह कश्चित् उपयोपी है।

एत द सिष्य कृष्ण निवदूरा केदीला निव केशिदर, केहीनास लामोचिरमाव कृष्ण निवम अदि भागों की भी लक्ष्यों के अनुसार कल्पना हो सदा है।

औरदप्रयोग ।—रोग काल टंग ही १०६-३

की ईंध औषध आधे अथवा एक घंटे अंतर से या अथवा
के अनुसार १५, २० मिनट के अंतर से भी दीयासका है ।
३. राम मात्स्य पडने से दया की मात्रा कम करना
चाहिये ।

सहकारी उपाय ।—यह रोग कठिन होता है

इस लिय बहुत होदवार चिकित्सक से इलाज करना
चाहिये । कील चुभकर, काच या और किसी चीज से
कट जाने पर विशेष कर पैर के तल्ले में घाव को
जल्दी गुलाब न देना चाहिये । यदि इस प्रकार का घाव
हाना बन्ने लोशन [एक आउंस पाना में २० ए
मिनाकर] से उसी समय धोकर इसी लोशन की पूरी
साध दी जाय । यदि ऐसा घम हा कि कांटा, काच या
तुच्छा, बकड़ी या हाड की पास यदि कुछ भीतर घावमें
रह गए हा तो उसको उनी समय निकाल डालना
चाहिये । राग के समय मरुद [पीड की हठी] के ऊपर
गुन बरफ रखन से शीघ्र फर दिखलाई पडगाहे ।

मूगी रोग ।

[शरीलेमी]

इस रोग के प्रधान लक्षण यह है कि मनुष्य अचानक
बनास हाकर गिरजाता है और बायड मन लगत हैं । कनी
कनी राग भव दिख मिरदद और मिर घूमना, कनी में मरुद
हना मजद क नी नर मारान मरुद पडना चहरा एक गुन
हाथ की बडी टाण्डा हड्डा की घर लिखना एकर
उदर बरफ हात हैं । किन्तु बहूधा रोग के बाद

पूर्व लक्षण दिखलाई नहीं द्धर रोगी मगनव मूर्च्छित हो जाता है, रोगी को तब होश नहीं रहता । घट्टा और माँस विगडजाती हैं, दात किडकिडाने लगते हैं, मुँहसे हाग निकलते हैं, श्वास पैर विघन लगते हैं, श्वास बृष्ट होता है और कभी कभी मलमूत्र भी अपने आप निकल जाता है ।

प्राय रोग का आक्रमण ५ मिनट से लेकर २० मिनट तक रहता है अथवा कभी इन से अधिक समय भी चल जाता है । रोग का आक्रमण दूर होने पर रोगी को नींद आती है और जब जगती है तो टीक सुस्स मनुष्य की तरह उठबैठता है । किसी किसी का कर दिन तक कमजोरी रहती है, शरीर गिरा पडता है और सिर में दद रहता है । इस रोग से प्राय मृत्यु होने नहीं देया जाता किन्तु रोग के पारवार आक्रमण करने से रोगी की मानसिक शक्ति अत्यंत दुर्बल अथवा विनष्ट होजाती है ।

शुभी एक धातुगत रोग है । ऐसा देखने में आता है कि यदि यह रोग पिता को हो तो पुत्र को भी होजाता है । इस रोग के उद्दीपक कारणों में निम्न विधित प्रघान है — पथा प्रबल मानसिक आघेग भय, दुःख क्रोध आदि, अत्यन्त मानसिक परिधम, अत्यंत खा सहवास या हस्त मनुन, शरीर का पुन्सी घैट जाना और नशीला चीनों का सयन करना ।

चिकित्सा ।— त्रिम समन राग आक्रमण कँट ऊपर नापे के दातों के बीच में एक टुकडा गरम गडडी या एक काक लगादेना चाहिये त्रिम से दातों के बीच में बाहर

यदि रागात् तदा तत्रात् ॥ १० ॥ तदा तत्रात् तदा मस्तकपर
 ॥ मस्तक ॥ १ ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥
 कथितं तदा तदा ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥
 रागात् तदा तदा ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥
 यादा इति मन्त्रात् ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥
 तदा मन्त्रात् ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥
 जाय इत्यदि ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥

पुराने रोग म—क क र ॥-क र म र म भाइशाया ।
 काडा क कारण राग ॥-मन्त्रात् ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥
 हस्त मनुन ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥
 हो—कासकारस एसड फास्फाटक जायना रूप

त्र्योपध प्रयोग ।— त्राकमाण क मनस्य त्रुत्वा उत्पन्न

प्रयोग करना आवश्यक है तनु उभ जातुगत दाय इति
 करने के उद्य सप्ताह म ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
 देना यथष्ट है । इस राग का धातुगत त्राकसा हा प्रधान
 चिकित्सा है । जिन जायधों का शाक नहा लिसा मा
 उन की ३० शक्ति हा साधारणत त्र्योपध फायदा
 करती है ।

सहकारी उपाय ।— इस राग का चिकित्सा कडि

है । इस की चिकित्सा आरम्भ करनेसे पहिले नहा त्र्योपध
 हासके राग का कारण जानना आवश्यक है पाछ इलाज
 करने की चष्टा करनी चाहिये । इसा उद्य इस राग क
 चिकित्सा में हाशियार चिकित्सक की आवश्यकता है ।

शारीरिक नियमों का पालन करना, उचित व्यायाम
 (कसरत) अल वायु बदलना तदी क ठंड पाना में ध्यान

मानसिक चिन्ता और परिश्रम छोड़ देना अत्यन्त उपयोगी है ।

मूर्च्छागत वायु ।

(हिस्टीरिया)

लक्षण ।—यह रोग प्रायः स्त्रियों को ही होते देखा जाता है । रोगी चिह्लाता हुआ अथवा बहता हुआ हो जाता है—प्रायः सोचता है, हाथ पैर छिंचता है पड़ता है । भुद भे माग निकलते हैं और घोल हा जाता है । कमा कमी मूच्छा होते हात पड़ोश जाता है ।

चिकित्सा ।—

कैम्फर ।—मूच्छा के समय यह औषध ली है, विशेषकर यदि शरीर में गर्मी महसूस हो । रोगी पर घी की क भाव अथवा २ बटी गोली १५ । २० मिनट के अंतर से मूच्छा के समय देनी चाहिये ।

मस्यस ।—मूच्छाके समय कैम्फर के स्थान में यह भी ली जा सकती है । इस की चिकित्सा भी है धार रोगी की भाव क प्रायः अत्यन्त सुखदायक है ।

इमेनिया ६,३० शक्ति ।—यह कानून ही मानने में कुछ निश्चय पटना है अथवा यह और गला गला होना महसूस हाय विषय में मैं यह पदपदत हुआ है उदात्त होना ।

नक्सबोमिका ६, ३० शक्ति ।—रान में तानने के उपरान नींद न आना, किंतु ५ बने के उपरान हुआ लगना, काष्ठयद्धता, कडवी डकार, पेट पूछा इम, दिचका, सिर में दद, पाकखली में दर्द, अतु की वा यत् । इस औषध का कुछ दिन सवन करा कर फिर इस बदल सलूकर दना चाहिये ।

पलसाटिला ६, ३० शक्ति — यदि जरायु समशीत कुछ गडबड हो और अतु वेद हाकर पाडा हाता य औषध फायदा करता है । उदरामय व्यास न होना, इमन की उल्टी, जरायु में दद । इम क उपरान सेगाला मधया साइलशिया दिया जाता है । जा स्तिया मुलायम तविय और जल्द रागखली हाती है तथा माटी होना है य उनको अधिक फायदा करता है ।

हमशा चिन्तित रहना—इमशिया नक्सबोमिका । उदास—पलसाटिला । ध्याम कष्ट—कैरिया इमशिया । अनेश—जेठनामानम, नकम, इमशिया । बायट क लिय—सिफूया इमशिया । सिरखर—इमशिया गुाटिना । अतु भार जरायु के कारण—काफूलस, इमशिया पलसाटिला गुाटिना, सापिया ।

सहकारी उपाय ।—रमे किमी काम में रोना ही तवियन लगाय रखना चाहिये जित्त स उस क तवियन बदलना रह । आन्मय इम राग क तविय सिफूया चिन्तित है । कमा कमा सेगाटन करना और इमी प्रकार तवियन का बदलना बहुत जरूरी है ।
 न तरह का [पना अगहन] विलामिना उच्छेदक मात्र

ऐसी पुस्तक पढ़ना जिससे मनमें विकार उत्पन्न हो, दिहणी और गणन उद्याना बिलकुल निषिद्ध हैं । साधारण स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान देना चाहिये । ठंड पानी से धान, नियमित परिधम, स्वच्छ वायु सेवन इत्यादि जितने स्वास्थ्य सम्बन्धीय नियम हैं सबका पालन करना बहुत ही जरूरी है ।

मूर्च्छा व समय करने का कोई कारण नहीं है । ध्यान, मुद्द और जाली पर ठंड पानी के छींटे छगाने चाहिये, और ऊपर लिखा हुए दवाइया प्रयोग करना चाहिये । रोग व बदन पर कुछ ध्यान न देकर पयोषिद्ध सेवा गुथुपा करना उचित है ।

हमारे देश में हिमिटरिया को घुम से भूत चुडेल आनेष आदि समझकर विचिरसा करने लगत है । यह सब बेपर्ल मात्र घुम है ।

शिर पीडा ।

(श्लोक)

यद् रोग इतना साधारण है कि इसका बिलार कुछ क्लम करना व्यथ है । यह प्रायः जिमा घानुगत राग का उपसर्ग भयवा लगन मात्र दाया है । सर्वो अधिक होने से सर्वो क कारण मिर इद पाच्यदाय के दाय क कारण कर्जाशिक शिर पीडा क्रिया व रज प्राय से गदरद हान से आ राग होना रजा दोष अनि शिर पीडा, वायु राग अपथा प्रवृत्ता होना क कारण आ इद हानो अर्थाधिक शिर पीडा, वात रोग हान क कारण हाना वातन शिर पीडा, उत्पट्टों व माय हान से क्लमन शिर पीडा इत्यादि बुदा बुदा भयना मार दहना

से एक ही रोग जुदे जुदे नामों से पुकारा जाता है।

एकोनईट् ३, ६ शक्ति ।—अवसप्रकारक [सुषुप्त होने वाली] प्रबल शिर पीडा, खोपड़ी में घोक और मस्तक में गात्रुम पडना, ऐसा गात्रुम पडना माना मस्तक साग स पाहर निकल पडेगा, बैठे बैठे उठने पर शिर घूमना, सटी पित्त की उल्टी और मृत्यु भय, इतना द्रव हाकि सदन होसक और उसके कारण दताश होजाना ।

आर्सेनिक ६, ३० शक्ति ।—किसी समय पर शिर में द्रव होना, मस्तक में अत्यन्त घोक गात्रुम पडना, शिर पर कपाल में चक्के चलने क समान द्रव और उमिचलाना, यह जोर की उल्टा विशेष कर खान पीन उपरात तेज प्वास, बार बार घाडा घाडा जल पीन पचेनी, कमजोरी और मृत्यु भय विधाम करने स द्रव पडना और चलने फिरने स कम हाना ।

बेलेडोना ३, ६ शक्ति ।—इल्टियो क साथ शिर दर्द ऐसा मालुम हो माना शिर फट जायेगा, मस्तक में रक्त का अधिकता और गरदन का धमनियों की लपकन, अधि लपकन के साथ द्रव, विशेष कर कपाल में जिस से द्रव द्रव रखनी पडे, मस्तक क दाहिनी बार उद करने स समान द्रव, शिर घूमना और शारीरिक अवसप्रता तप आसों के आगे अंधेरा दिखलार पडना, पित्त इलपमा स सुधा पदाप उल्टी में निकलना, तेज उजाळा अथवा गडबड सद्य न हाना ।

ग्राइयोनिया ६, ३० शक्ति ।—सुषुप्त नगत ही मि

दद शुरू होना, सिर में इतना दर्द होना जिस से कि सिर फटा जाये, इस दर्द का माया नीचा करने समय वा चलन समय पढ़ना, चुपचाप बैठे रहने की इच्छा, उठ कर बैठने से शरीर सुन्न होना और जी मिचलाना, छट्टी वा कड़वी उल्टी, कठिन सुषामल ।

कैलफेरिया फार्व १२,३० शक्ति ।—पुराना सिर दद का रोग, सिर में ठडक मात्रुम पढ़ना, दोनों पैर ठडे माना गीले मांसे पहिन रख्य हैं । सिर में फियास, सिद्धी चटने से सिर घूमना, ऋतु समय स बहुत पहिले छाना, बहुत दिन तक ठहरता आर अधिष ।

कैमोमिला १२ शक्ति ।—सर्दी के कारण सिर दद, कपाल में तज दद, एक पनपटी लाख और दूसरी कीकी, कड़वी पिस मिठी हुर उल्टी, शुरू में दद इतना तेज नि सहन न हासके, पट्ट ठ यंचनी, फाद यात पूछने स चिट कर गुरी तरह उत्तर दना, तजटाज दन घाला रज शुल [भाविष्य यम के समय कमर तथा नलों में दद]

काफिया ३ शक्ति ।—तेजी सहन ही में चिट उठ पसा मात्रुम हो मानो मस्तक में काल छेदी जाती है खुडी हुर हवा में पढ़ना, पसा मात्रुम हो कि मस्तक बहुत छोटा है । [यदि पेसा मात्रुम हाकि मस्तक बहुत बडा है ता नकमयोमिका], पीद न जाना, सटो डरार ।

इमेशिया ६,३० शक्ति ।—कपाल में दद, सान से कम होना, पेसा मात्रुम हो मानो मस्तक प एक ओर भाबर से बाहर की तरफ बाहर बालि छरता है, रागी

के मन में दुःख भरना, कोष्ठबद्ध और काय निकषण ।

इपीका ६ शक्ति ।—उपकाह और उदरियों में अधिक प्रयोग होता है । सिर मुफातेही उल्टी होना, इरी, रोग का पतला मल ।

लैकोसिस ३० शक्ति ।—सिर दद, रग में दद, कपूर में घोड़ घीप फल कर १ पहिना जासके, याव मंडकार म दद, [दाहिनी ओर के में दद होतो बलडोना] साकर उदर ही दद घटना ।

नक्षत्रवेमिका ६, ३० शक्ति ।—खट्टा और कर्णी खट्टियोंके साथ सिर पीना, धरसध करने वाली दद । पशु कर प्रात काल में, मानसिक धम से यत्ना सामायिक काय यत्ना, तिनको अश हों और जो लाग समिताचार्य हों भार लोग किमी प्रकार शारीरिक परिधम न करता हो ।

पलसेटिला ६, ३० शक्ति ।—अत्यंत धी पकवान भा खाने के कारण सिर दद, मध्या ममय दद यत्ना, पशु घूमना, विशय कर सिर मुकाने या ऊपर की भार दद से दद, शीतल स्वच्छ मैदान की हवा खट्टी मालुम हो गरम मकान में रहन स पष्ट मालुम हो, जा विवेकय खट्टी होना और भोजन स अदधि, ऋतु अत्यंत शि से होना, घोड़ा या बिलगुय दद, [बहुत पहिल के अधिक—कैल्केरिया काय और सल्फर] गरम मकान में म सदी लगना, रोना और चिल्लाना ।

साइक्लेशिया १२ ३० २० शक्ति ।—दद प्राण एक

और, मानसिक धम, फिर सुनने से, बात बढ़ने से या ठही हवा में बढना, गरम मकान में कम होना, कोट बढ़, मल छोडा सा बाहर निकल कर फिर मल द्वार में घुस जाये ।

सल्फर ३०,२०० शक्ति ।—मस्तक में बराबर उचाप माडुम होना, [दीतलता—शीपिया], प्रात काळ उदरमय, रोगी को हस्पट उठकर पाखाने में जाना पडता है, दिन में ५६ बार उरार क्षयप्र होता है । खाज पफोला, पैठ जानेके कारण राग, वश रोग ।

१२. सर्दीके कारण शिर पीडा ।

लक्षण । अष्टावक शिर दर्द प्राय सुबह के समय कम, मध्या समय अधिक आखें डबड्यार हुए, हॉक भाना, नाक से गरम सांस आर फना सभी बाजार घासी ।

चिकित्सा ।—

एकोनाईट ३,६ शक्ति ।—सर्दी के कारण शिर दद, ज्वर, घबराहट और घेनी ।

कैमैमिला १२ शक्ति ।—ठही हवा गगत अथवा पखाना बंद होन से शिर दद ।

मार्कूरियस सल ६ शक्ति ।—सबदा हॉक भाना, और नाक से अड पडना, टडसी लगना, रात्रि में पखाना, हाथ पैरों में दद ।

नमसत्रोमिका ६ शक्ति ।—शिर में भारापन और नाक बंद माडुम पडना, सुबह तक से पतला घग्गम

के मन में दुःख भरना, कोपयज्ञ और कांश निरुद्धवा ।

इषीका ६ शक्ति ।—उपकार और वल्लिषों में शक्ति प्रयोग होता है । मिर सुकानेही उदग हाना इषी, [का का पतला मन्त्र] ।

लेफ़सिम ३० शक्ति ।—मिर दर, रग में दर, कपूर के काद नीच कर कर १ पणिना जायक बाँध मन्त्रक के दर, [वाहमी आर क में दर हाना बन्ना] साफ़ गला ही दर बरना ।

नकमवेमिका ६, ३० शक्ति ।—नदी और कभी कभीके साध निर पीटा अरमत्र करन बागी दर पल दर प्रात हान में मानिक धम म बरना आभाषक कक बरना तिनका मय हो और प्रा त्याग समिताथारी हो और प्रा त्याग किमा प्रचार शारणिक परिधम न करता हा ।

पटमेटिटा ६, ३० शक्ति ।—मन्त्र ही पटपल शक्ति करन क हान्य मिर दर, मजा समय दर बरना [म मूमना विगय कर मिर मदान वा ऊपर की मार कक म दर हानक अर्थक मैदान ही हवा मरना मन्त्र के मन्त्र मदान में रग म बर मन्त्र हा श्री विमलक इली हाना मौर मन्त्रन म बरधि, कुरु मन्त्र किम म हन बादा वा [बहुत पन्त्र] मन्त्र मदान में ही मन्त्र—दरकरना हान मर मन्त्र] मन्त्र मदान में ही मन्त्र मदान मना मन्त्र विमलक ।

मन्त्रमैत्रिका १०, ३० शक्ति ।—दर हान कर १

भोर, मानसिक भ्रम, सिर मुचाने से, बाठ बढ़ने से या
ठही दृष्टा में बढ़ना, गरम मदान में कम होना, फोए
बद, मल थोडा सा पाएर निरुज कर फिर मड द्वार में
पुस जाये ।

सल्फर ३०,२०० शक्ति ।—मस्तक में बराबर उच्चाप
मात्रुम होना, [शक्तिहता—शीषिया], प्रातः काख उदरमय,
रोगी को हटपट उठकर बाझने में जाना पडता है, दिन
में ४२ बार शरीर व्यमथ्र होता है । छात्र फवाटा, पैठ
जानेके कारण रोग, कश रोग ।

१४, सर्दोंके कारण शिर पीडा ।

लक्षण । बरदायक सिर दद, प्राय सुषद के समय
कम भय्ता समय अधिक, प्राय टपटपाए हुए, हीठ धाना, नाच
त गरम सति भौज बना कभी थोडा २ पार्सी ।

चिकित्सा ।—

एकोनाईट ३,६ शक्ति ।—मदी के कारण सिर
दद, ज्वर, घबराहट और बेचेनी ।

कैमोमिला १२ शक्ति ।—ठंडी दृष्टा ज्वन भयवा
पसना बर होने भ सिर दद ।

माकुरियम मख ६ शक्ति ।—मदरा हीठ माना,
और नाच भ जल पटना, डंडसी लगना सति में पसीना
हाथ पैरों में दद ।

नरमबोमिहा ६ शक्ति ।—सिर में भयभ्रम और
नाच बर मान पडवा सुषद नाच भ पनडा बरमम

निकलना, सञ्चा और रानि को रूना हुआ, मुट्ट रूना हुआ और अत्यन्त व्यास ।

२५, रक्ताधिभ्रम के कारण शिर पीडा ।

लक्षण । माथा रक्तपूर्ण और भारी मालूम पडना शिर घूमना, विशेष कर माथा हिलाने से । माथेक भारी रूपकन माथे में उच्चाप गठ की घमना का जोर से चलना, शिर हिलाने से और मुकाने से दृष्ट पडना ।

चिकीत्सा ।—

एकोनाईट ३, ६ शक्ति ।—मुह लाल और सूजा हुआ, बहोश कर देनेवाला दृष्ट ।

बेलेडोना ३, ६ शक्ति ।—रोग कठिन मालूम पडना पर एकोनाईट क माथे परमायकन से दिया जाता है । रूपकन माथा रक्तपूर्ण, सामान्य शब्द दिखन मुकन प उन्नाल से कष्ट मालूम पडना ।

त्रायानिषा ६ शक्ति ।—माथा मुकाने से पट जाना क समान दर्द अधिक रूपकन, पैदल चलन क विशेष कर आश पावन क जोर दिखन से दृष्ट पडना ।

जेतसीमीनम ६, १२ शक्ति ।—माथे में माथेपक मालूम जाना विनाय कर गरदन आर माथे के पाठ क आर दृष्ट कथों तक फैला । उन्त नरिय क महारा रूपकन बैठ रहने क दृष्ट पडना । आशों के आग माथेपक थाना शिर घूमना आशों अज्ञानता आर सब शरार दुकन और अमुष्य मालूम होना ।

नक्नवोमिका ६,३० शक्ति ।—सिर दद, माथ पर दवाय मालूम पडना मानों फट आयेगा, अथवा झारों व ऊपर ही भयानक दद, माथा मुकामे से तथा घासने से दद पडना, पिछ और अम्न उलटी होना, अधिक मत्ता करना घर में बैठ कर काम करना और मानसिक परिभ्रम व काग्य वृत्, सुषुप्त और खुला हुए जगह में पडना ।

ओपियम ३ शक्ति ।—वचैतय लक्ष्य उपस्थित होने से ।

सहकारी उपाय । सब तरह की उच्छेननाओं को छोड़ देना चाहिये । भाहागदि के विषय में बहुत होरि पारी की आवश्यकता है । मांस खाना और शराय पीना अनुचित है ।

३ व, कोष्ठयह अथवा अजीर्णक कारण सिरदर्द ।

लक्षण ।—नीम मैली, मुदका सुत स्याद अथवा ये स्याद के समान । भूध न लगना, जी मिचलाना या उलटा हागा दर्द के ह साथ उद्विग्यों का पडना ।

चिकित्सा ।—

त्रायोनिया ६ शक्ति ।—यदि मल पडत बडा हो और निश्चयन में कष्ट मालूम पड ।

इपीका ६ शक्ति ।—अधिक जा मिचलाना और उलटी होने क साथ सिर दद में यह अच्छी औषध है ।

नक्षत्रोमिका ६,३० शक्ति ।—मलम्ल कोण्डज, दस्त

जाने परभी दस्त न उतरना, अथवा अधिक सिर दर्द करना, काफा तम्बाकू अथवा काई नशीली चीज खाने से सिर दर्द हो ।

श्रोपियम ३ शक्ति ।—यदि बहुत दिन से दस्त बंद हो

और दस्त की विलकुल हाजत नहो, माघे में भागपन ।

पल्साटिला ३ शक्ति । अजीर्ण के साथ सिर दर्द

का कोई संबंध हो, तल मिली हुई अथवा घीमें पकी हुई कोई चीज खाने से दद हो, दद तीसरे पहर और सन्ना समय बढ़ना, मात काल मुदका स्वाद बुरा रहना ।

सहकारी उपाय । अजीर्ण के कारण यदि सिर में

दद होतो सबसे पहिले भोजन का नियम करना चाहिये । बहुत तल मिली हुई आर दूर से पचन वाली कोई चीज न खानी चाहिये । हलका भाजन करना चाहिये । पुनः हवा में अधिक व्यायाम करना अच्छा है ।

४र्थ, बाहरी कारणों से सिर दर्द ।

चिकित्सा ।—

आर्निका ६,३० शक्ति ।— गिरना, घाट लगना

थाय अथवा पकावट होन से ।

त्रायोनिया ६ शक्ति ।—सर्दी या गरमा उगन से

दवा बढ़ाने से अथवा अत्यन्त गरम होन के कारण ।

नक्षत्रोमिका ६ शक्ति ।—मानसिक परिधम,

और घर में बंद रहकर बैठे बैठे काम करने से, अधिक दिन शोरी क पास रहकर सेवा ग्रहण करने से ।

५ म, मानसिक कारण से सिर दर्द ।

चिकित्सा ।—

कैमोमिला १२ शक्ति ।—क्रोध अथवा उच्छेनता के कारण से ।

ओपियम ३ शक्ति ।—यदि रोग भय से उत्पन्न हो ।

इग्नेशिया ६ शक्ति ।—मानसिक दुःख शोक या दिल हट जाने से ।

६४, स्नायविक सिर दर्द ।

लक्षण ।—रस का प्रधान लक्षण यही है कि यह बर्मी बर्मी होता है । दर्द प्रायः एक ओर अथवा किसी खास जगह पर ही रहता है । दर्द के खान को दाबने से कुछ होना, उजाला, शरीर और मानसिक उद्वेग असह्य होना, सिर दर्द के साथ साथ प्रायः पित्त वा श्लेष्मा की उद्वेग होना ।

चिकित्सा ।—

वैलेडोना ।—रक्तधिक्य के कारण सिर दर्द का प्रधान में देखो ।

त्रायोनिया ६, ३० शक्ति ।—अवका मारने के समान दर्द, विशेष कर दर्द एक ही ओर हो चलने से भार गरम हवा से बचना भार्या में इतना दर्द कि दूर न जासके ।

घायना १२,३० शक्ति—स्त्रियों को ऋतु के अत्यंत रज छाब होने से, अथवा ऋतु अधिक दिन तक उदरने से अथवा और किसी प्रकार के रज छाब होने से, पुराना उदरामय रहने पर फायदा करता है। रोग मानसिक परिधम से बढ़ना। अत्यंत इन्द्रिय सबन हार के कारण या और कोई इसी प्रकार के दोष से मजकूर पीठ के ओर दृढ़ होना।

काफिया दी शक्ति—असह्य दर्द, माथे के एक भाग यथा हुआ सा और बेसा मालुम होना कि उस में कितना छेदी झारही है। माथे कपाल में दर्द, उस के साथ सामान्य उत्तेजना का हृत्प, रात्रि को निद्रान माना।

ज्वलसीमीनम १२,३० शक्ति—भाधों के ऊपर और कपाल में दर्द रहने पर। सिर दर्द व पहिल कुछ भा दिखलाई न पड दर्द माथे के पाछे ही अधिक सब चीने दो दो दिखलाई पडें, दर्द से कानों में शब्द सुनने पडना।

इग्नेशिया ३० शक्ति—सिर में कीलसी शुभता, नाक व यासे में बहुत दर्द, स्थान अथवा अवस्था परिवर्तन करने से कुछ आराम, शयन करने से दर्द कम, साप्तादिक, पाक्षिक या मासिक होता हा।

नक्तनामिका—रज्जाधिक्य के कारण सिर दर्द देखा।

पलसाटिखा ३० शक्ति—गुली हुए दया में उदर

से दर्द को आराम मानूम पटना, किंतु घर में रहने से, सोने से अथवा सुष्या के समय पटना, ऐसा मानूम होवि सिर फटा जाता है।

सीपिया ३०,२०० शक्ति।— स्त्रियों के विशेष कर जिन को बहुत समयकी कोई घरायी हो अधिक पायदा करता है। दूध मारने के समान दद, प्रति दिन एक समय दद होना, उलटी या उबकाई होना।

सैगुनेरिया १२,३० शक्ति।— दर्द इतना अधिक हो कि सहने न दासप और मस्तक आर से मिट्टा में दाय रघना पड़े। मान बाळ दद गुरु टागा दिन में पटना, और सुष्या समय तक रहना, दद दादिनी और अधिक, सोने से दर्द कम होना।

स्पाईजीलिया ६ शक्ति।— अत्यंत दर्द आंखों तक फैला हुआ, सिर नीचा करने से दद पटना, रूय के साथ दद पटना और कम होना, चिता, शम्द आदि से पटना और दाबने से कम होना।

साईलेशिया १२,३० शक्ति।— छायाविष परिधांत के कारण सिर दद गरदन से गुन हो सिर ५ ऊपर पडूये, पीछे आंख ५ ऊपर भाव, सेवने से आराम किंतु दाबने से नहीं, बाल उड जाना।

श्रौपघ प्रयोग।— नये सिर दद में तारवीन की दूर दया की एक मात्रा २,३,४ घट के अंतर से आर राग पुराना पडवान प्रर प्रति २१ मात्रा दनी चाहिये।

सहकारी उपाय । सामान्य विरुद्ध में शान्ति पीने की

... .. अथवा अनुसार
... .. समाजमा उपायविन
... ..

सामान्य ।

(...)

... ..
... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

सहकारी उपाय । छायादिभिः सिरद्द में छाने पाने की

नियम, टड पाना म छाग करता, अधम्वानुसार घोडे पर पैटना चाहिये । यह सिरद्द फमा कभी उपास्त्रिण होता है। यहही समय दु साध्य है।

सिरघूमना ।

(वर्टीगा)

इस रोग में एसा मातुम पडता है कि चारों ओर का सब चाजें घूमता है अथवा रागी म्वय घूमता है । पाकम्वला क राग अथवा दोष क कारण हा शायः यह रोग हाता है किन्तु मन्तकक रक्ताधिक्य क कारण स भी यह राग उत्पन्न हासना है।

सिर घूमने के कारणों में पाकाशयका दाप, अत्यंत इन्द्रिय सेवा नशा करना रात्रि नागरण, मन्तक में घोट लगना अथवा गगरना प्रधान ह । मस्तिष्क में अधिक रक्त सचय हान स जिस प्रकार सिर घूमना गुरू होसकता है ठाक उसी प्रकार माथ में रक्त कम हानस भी सिरघूमने का रोग उत्पन्न हा सका है । इस लिय सिर घूमने के रोग का कारण निश्चयकर, पीछे उसक अनुसार चिकित्सा आरम्भ की जाये तो शीघ्रही कायदा दिखगार पडता है ।

१ म, मस्तिष्कमें रक्त अधिक होने के कारण ।

लक्षण । मस्तिष्क में रक्ताधिक्य दखो ।

चिकित्सा ।

योगाश्च ३, ६ शक्ति ।— थलडाना क साथ पयाय

कम से व्यपहार करना चाहिये, विशेषकर यदि शय्या से उठने समय शय्या गिर नीचे से ऊपर की उठाने समय घूमें तथा चहुर छाट एग वा रहना हो ।

बेलेडोना ३,६ शक्ति।—एकोनास्ट दखो । यदि वेदोशी, शराबी की तरह गिरे पडना मस्तक में रक्त पूणता, और मयानक क्या मादुम हो ।

नक्सवोमिका ६,३० शक्ति ।—यदि घाने के समय, घानेके बाद रुगे हुए दवा में टकते समय मूच्छा के समान मादुम होना, सिर में मन् मन् होना और चहुर आकर गिर पडनके समान मादुम हानो यह दवा फायदा करता है ।

चहुर आकर गिर पडना-बेलेडोना, पलसाटिला रक्तम ।

सहकारी उपाय । मस्तक में रक्ताधिक्य दूखा । प्रतिदिन शान शाल ठह पानी से धान करना और स्वच्छ हवा में ध्यापान करना आवश्यक है ।

२ य, अणक (य्रजीर्ण) के कारण ।

खल्लिण ।—निर घूमना निद्रातुना, विशय वर । २०-
उपगत ही सिर में म रापन, सिर दर प्रान । २०- ११
इमा, मूय न लगना, उल्ले हाना ।

चिकित्सा ।

नक्सवोमिका ६ १० शक्ति ।

घाना शय्या नशा वरन म ।

पलसाटिला ६ शक्ति ।—अधिक घीमें पके हुए
पक्वान के खाने से राग पैदा हो । सुधी
हवा में आराम माहूम पडता, इस के साथ ही
मिचलाना अवशा नये की सी अवस्था में रहना ।

सहकारी उपाय ।—पेट में यदि गड़बड़ हो तो
यास कराना चाहिये और पीछ हलका पथ्य देना चाहिये
पीने के लिए ठण्डा पाना दिया जाये ।

३५, दुर्बलता के कारण ५

चिकित्सा ।—चायना अच्छी औषध है ।

प्रातः काल के समय सिर में दर्द होना—कैलकेरिया
नक्सथोमिका, रस्टफस फासफोरस ।

संध्या के समय—बलडाना, पलसाटिला, सीपिया
लैकोसिस ।

सात समय—पलसाटिला आर्सेनिक ।

उठने के समय—नक्सथोमिका, रस्टफस, लैकोसिस ।

चलने फिरने के समय—पलसाटिला, लाइकोपाडियम
फासफोरस कैलकेरिया ।

सिर दिलाने के समय—कैलकेरिया, ग्राइयोनिषा, सीपिया
छाछा पट में—फासफोरस कैलकेरिया, चायना ।

भोजन के उपरांत—कैलकेरिया, नक्स, फासफोरस ।

सोने के बाद—फासफोरस सीपिया, नक्स ।

हिलाने से आराम माहूम हो—रस्टफस पलसाटिला ।

विधाम करने से आराम माहूम हो—नक्स बलडाना ।

उल्टा के साथ ही सिर घुमने—नक्स, इपाका आर्सेनिक
पलसाटिला ।

१. ...
 २. ...
 ३. ...
 ४. ...
 ५. ...
 ६. ...
 ७. ...
 ८. ...
 ९. ...
 १०. ...

...

१ पद
३ २३

अथवा

गने जाने

सोने के

१, धान

११, यथा

३, धाव

४, अन्धो

१६, निद्रा न

६, न सद्य

११. ...
 १२. ...
 १३. ...
 १४. ...
 १५. ...
 १६. ...
 १७. ...
 १८. ...
 १९. ...
 २०. ...

१ है । प्रथम उत्तर
 प्राप्त होने पर प्रायः
 एक दिन धान, चार, ३
 अथ और पदन लिखते

है ।

— उक्त अधिष्ठाने,
 १२० उत्तर के एक

१३५ ५३५
 ५३५

उद्वेग, येचैनी और उत्कण्ठा, एव द्वारायमे हृदयों क कारण नींद न आना ।

काफिया ३ शक्ति ।—यदि मानसिक चिन्ता वा उत्तेजना हो अथवा बहुत दिन किसी रोगी की सेवा शुश्रूषा में रात्रि जागरण करने से रोग उत्पन्न हो । बिना किसी कारण के बच्चों को अनिद्रा रोग ।

जेजसीमीनम ६ शक्ति ।—साधारण अनिद्रा में दिया जाता है ।

इग्नेशिया ६ शक्ति ।—काफिया क उपरांत कभी दिया जाता है, विद्यपक्षर उत्तेजना क उपरान्त अक्सार् होने पर अथवा नींद की हालत में बहुत येचैना रहने पर । शोक, चिन्ता, उदासा क कारण नींद न आना ।

नक्तबोमिका ६,३० शक्ति ।—असंगत मनोनिष्ठा, मानसिक चिन्ता, रात्रि जागरण क कारण परिपाक शक्ति का कम होना, अथवा रात में जागकर पढ़ने के कारण रोग होने पर, सुषुप्त क समय नींद आना, रात में ३ बजे तक अच्छी नींद आना, ३ बजे के समय आरु सुलजाता और ५ बजे तक जागृत रहना, फिर नींद आता एव बहुत देर तक साते रहने पर भी तृप्ति नहीं माद्रूम पडना ।

पक्षसाटिका ६,३० शक्ति ।—परिपाक शक्ति में गडबड हान से अथवा रात्रि में बहुत भोजन करने से । किसी तरह नींद न आना और सान का भी इच्छा न हाना ।

औषध प्रयोग ।—अनिद्रा रोग होने पर अधिक

हीपर, केल्विरिया, काथ, सार्डेलेशिया ६, १२ शक्ति ।—

किधी प्रकार के प्रदाह वाले रागके कारण बाल उठ जाता ।

पेसिड फासफोरिक, इमेशिया ६ शक्ति ।—मानसिक

शाक, दुःख मथवा बुर विचारोंके कारण ।

हीपर-सल्फर, नाइट्रिक पेसिड ६, १२, ३० शक्ति ।—पार यत्रा

व्यवहार करने के कारण बाल उठना ।

पेलेग्राना, पलसाटिला ६ शक्ति ।—बुरनारन के बेत्रा

व्यवहार क कारण ।

कलकिया-काथ, सल्फर ६ शक्ति ।—प्रसय क

उपरान्त बाल उठ जाने पर ।

कलकिया काथ, माफाईटिस ६ शक्ति ।—मसिफक में अधिक

फोवास के कारण ।

औषध प्रयोग ।—एक सप्ताह तक प्रतिदिन

मथवा एक दिन क अंतर से औषध प्रयोग करना चाहिये । उपरान्त कह ।इन तक कोर औषधि न खाना चाहिये । इस पर भी यदि कुछ फायदा दिखलाई न पड़े ता दूसरी औषधि खानी चाहिये ।

सहकारी उपाय ।—आत्र कल दखते हैं त्रियों

क बाल उठबद बाद गजी हो जाती है, पहले समयों में यह दशा नहीं होतीथा, हमको इसका यहा कारण मालूम हाता है कि आत्र कल विलासिता, अम्ल की पीछा आदि अनेक कारणों के सिवाय रूब बाल काटना और आर से राध देना येही दो कारण प्रबल मालूम दते हैं । रूब कमकर छोटा बाघनसे बाल बिध सिध कर उनकी जड़े कमजोर पड जाता हैं और फिर शीघ्रहा बाल गिर जात हैं । इस

लिये चारदार काटना और बड़ी छोटी चींटी कांचा उचित नहीं। यदि चांद गड़ी हा जाये तो २ ब्राउन्स रस (एक प्रकार की घटाव) में १ बूंद वै पुरिख हा मूल बरख मिला कर उस स्थान पर दिा में ३ बार गगानेसे फायदा भाळूम होता है।

दशम अध्याय ।

चक्षुरोग समूह (आखोंकी बीमारी)

चक्षु प्रदाह (आणखेंलमिषा) ।

मये चक्षु प्रदाह (आखें दूषना) बडा कष्टदायक रोग होता है। इस का प्रधान लक्षण आणखें के मोल में जलन दाना और तुर्की आजाता ह उजाळ आर नहीं देखा जाता और आखें से पानी गिरा करता ह। मयाद जम जाता है, आंख में मसा भाळूम होता है मानो रेत या और कार चीज गिर पडा है और करकराती ह। यदि प्रदाह अधिक हो तो बम क साथ सिर दूद और ज्वर आदि लक्षण भी वपन्धित होसकते ह।

इस प्रकार क चक्षु प्रदाह में एडोनाइट, सेपिस आर्सेनिक वेल्डोना, और माकूरियस फायदा करत ह।

घातके कारण चक्षु प्रदाह।—बाब रोग अथवा धानु के कारण प्राय आखें दूषन लगती है। आणखें मानो दूद के मोरे पटा पडती है, छप वाय गलरुह की हो जाती है आर बहुत पानी गिरने लगता है। जनर समय आणखें गाले और लो में दद होन लगता है। वायु परि

धतनसे भी यह रूढ़ बट जाता है ।

इस प्रकार के चक्षु प्रदाह में एकनाइट, ब्रायोनिआ पल्साटिला, रस्ट्रम फायदा करने हैं ।

गडुमाला दोषके कारण आय दुखना ।—निसका

धातु गण्डमाला दूषण दाती है उसी का इस प्रकार का चक्षुप्रदाह दान हुए दखा जाता है । इस रोग की चिकित्सा में धातुगत दाष दूर करने का चेष्टा करना ही प्रधान उद्देश्य है, पर यद्दा करना चाहिये ।

इस प्रकार के चक्षुप्रदाह की प्रधान औषधि आर्सेनिक, कल्कुरिया-हाउ माफाइटिस, हापरसल्फर, ट्राइकोपोटियम, मारूरियस, सल्फर ।

एक्रेनाइट ३, ६ शक्ति ।—बहुत कीचड़ (मवाद)

के साथ साथ दुखना, सूखा हुआ गरम शरीर और बहुत तेज नाडा आनि तीव्र दह के साथ आंनों में गहरी सुर्ती और सूजन, उचाला बिलकुल असह्य मातुम पडना, देखैनी ।

एप्सिस ६, ३० शक्ति । आंनों के पलक सूजे हुए,

पलकोंका उलट कर बाहर निकल पडना, आंनों में जलन और रुट रुट करना ।

आर्मेनिक ६, ३० शक्ति ।—आंनों क भीतर मांनों

काला लिप हुये छाल गद्द असह्य जलन, रात्रि के समय पलकों का झुड जाना असह्य दह और देखैनी, असह्य पियास ।

नेत्रेडोरा ६, ३ शक्ति ।—य चक्षुप्रदाह, उचाला

आर रुद्ध असह्य नाटुम पडना सुर्ती, गरम आंनु गिरना

अथवा आर्ये विलुप्त मूत्रा दुर्ग, अमानस दद हो उठना और अचानक बंद हो जाना, एवं यौक्तिक, दा यौक्तिक हो जाना, लक्षण और सिद्ध ।

फेलेकेरिया १२,३० शक्ति ।—गण्डमाला कृषित घातु व लिये यह औषध बहुत फायदे मन्द है । आस के काल भाग में सफेद दाग, गले की गाँठ का घुलना और मरुत में पुंभी ।

ग्राफाईटिम ६,३० शक्ति ।—गण्डमाला कृषित घातु व लिये अथवा पुराने अशुभदाह में यह औषधि बहुत उपकारी है । मसूर किरा, बाली पुनली में घाव (सफेद भाग में घाव दाह पर माकुरियस), पलकों व घाव उठ जाना ।

खाइकोपोडियम ६,३० शक्ति ।—पुरानी लाल में और गण्डमान होव रहने पर कोष्ठबद्ध थोड़ा घान पर ही पेट नरा सा मालम होता ।

माकुरियस ६,१२ शक्ति ।—मसूर अथवा गण्डमाला दाह के कारण आस पुसता आर्यो न दाहने अथवा लक्षण के समान रह, आस अथवा उठल वा धार न दस सहना अथवा भाग में पुंभित अथवा घाव, आस : बापट आस और पुंभित जाना ।

पेगिड नाईट्रिक ऑर लीग ६ शक्ति ।—
 सभी अरि भाग में अथवा लक्षण व अमानस भाग ले कारण लक्षण दाह पर व लक्षण दाह लक्षण लक्षण है ।

पेगमेटिका ६ शक्ति ।—लक्षण अथवा लक्षण लक्षण

के कारण आँध बुझना, प्रमेह छात्र पत्र होने से आँध बुझना (इस अवस्था में मकुरियस मा फायदा करता है)। आँधों में खुजली चलना और जलन होना, सन्ध्या के समय घटना ।

युफ्रेशिया ३ शक्ति ।—माँसों से अधिक मांस गिरना और आँसों का लाल रक्त रहना ।

सलफर ३,३० शक्ति ।—गण्डमाला दोष, मांस और आँसों के पत्रों में खुजली चलना और जलन होना ऐसा मजुम हो मानों आँसों में रत गिर गया है, काल स्थानोंमें दाग अथवा घाव, मलक के ऊपर और हाथ पैरों में जलन घम रोग ।

श्रौषधि प्रयाग ।—नयी हाथत में इघण्टे के अन्तर स दया रना चाहिये किन्तु यदि रोग सामान्य दाता और पुराना दाते लगे तो दिन भर घार देना यथष्ट है ।

सहकारी उपाय ।—माँसों को जोर पहुचाने वाली सब चीजें स परहेज करना चाहिये । रोगी का कुछ अन्धेरे घर में पत्र रहना चाहिये । कभी कभी माँसों को गुन गुने अथवा दूध मिल डूप जल से खाना अच्छा है । आँध बुझने क साधदाँ यदि उरर आने लग ता पथ्य का भार विशेष ध्यान रना आवश्यक है । अब माँसों को बिल्कुल भाराम न हो जाय, तथतक धूप, उजाला और गद घूँट मिट्टा स रखा करना चाहिये । इस प्रकार आँसों की रक्षा क लिये नाह अथवा हर रत्र का कश्मा व्यवहार किया जाय ।

पृथक् ।—घाघ दुग्धने पर मांस, मच्छों और मीठी चीज बिल्कुल छाड़ देना चाहिये ।

ध्रजनी (गुहेरी ।

(स्टार्ड)

लक्षण ।—बाँयों के पलकों के किनारों में फुसी की भाँत होकर उन में बहुत रूद हाता है । मवाद निबलतेही धाराम माडुम होता है ।

चिकित्सा ।—

पलमाटिखा ६, १० शक्ति १—प्रधान औषधि, विशेषकर ऊपरके पलक में गुहरी होने पर (नीचे के पलक में गुहरी होतो रस्टफस) । गुहरी हात ही यदि यह औषधि प्रयोग का जावे तो फिर उस में न मवाद पडता है और न पसती है । यदि अत्यन्त प्रदाह हातो पलमाटिखा के पहिल दो एक मात्रा ऐकोनाइट दी जासकती है ।

स्टफिसेप्रिया ६ शक्ति ।—दानों ही पलकों में गुहेरी बिशेष कर ऊपर के पलक में । यदि प्राय ही गुहरियाँ होती हैं और ये पके विना ही खडी पडजायें । सलफर देनस भी बार बार गुहरी होना मग्द हो जाता है ।

ग्राफार्डिस ६, १२ शक्ति ।—बार बार गुहेरी होना बार पलक के किनारे में घाघ हाता ।

श्रौषध प्रयोग ।—सहज अवस्था में एक घूद औषध

पाय छटाक पानी में मिला कर तीन घण्टे के अंतर से देनी चाहिये । यदि पुराना हो जाये तो सन्ध्यासमय और प्रातःकाल इस प्रकार दिन में द्वावार औषध देनी चाहिये ।

सहकारी उपाय ।—पहिले गरम पानी से सेवना चाहिये, जब थोड़ी बड़ी होजाये तो पुलटिस लगनी चाहिये । पकने पर भी यदि न फूटे तो सुर से जरा कुरेद देनी चाहिये । आस्र पर पट्टी बाध कर उसको विभ्राम व और चकाचौंध से उसकी रक्षा करे ।

दृष्टिहीनता ।

(एमद्विषयोपिया)

यह रोग प्रायः हात हुए दृष्टा जाता है । इसका स्पष्ट कोई असला कारण निश्चारित नहीं हो सकता । सब चार्जों का अस्पष्ट दिखलाइ पडना मानों पाना का भीतर से दाखना है । कभी कभी आँखों के सामने काले काले तिरु मित्रे से दिखलाइ पडना । इस रोग के कारणों में बहुत दिन तक रोगी की सेवा करना, रात जागना, बहुत समय तक तेज रोशनी में रहना बहुत पडना विशेष कर दाय के उजाले में, मानसिक चिन्ता और उकण्टा, हस्तमैथुन, अशरिर्मित खा सहयाम, दशन आयुर्माँका पाडा (चित दायु न दिखलाइ पडता है उन में राग) आदि हा प्रधान कारण है ।

चिकित्सा ।—एकोनार्ट्ट ३, ६ शक्ति ।—निर घुगना,

धीर अचानक नचर व द दा जाना, सय धाँसै अस्पष्ट दिख
लाह पढ़ना ।

घेलेडाना ६,३० शक्ति ।—पढ़ते समय अक्षर
बाधते हुए दिखलाह पढ़ना, अस्पष्ट दृष्टि आत्र की पुतली
फैली हुए, दौपक व उजाल व धारों ओर छाल रङ्ग का
मपड़लाहार होयना ।

हायोमायेमस ६, ३० शक्ति ।—दृष्टि दुबैल, दृष्टि
बढ़ होना और विवृत दाजाना, अम दृष्टि, दित्य दृष्टि
अर्थात् अक्षर पस्तु सुदेरी दिखलाह पढ़ना (स्त्रामा
नियम) ।

मार्कुरियस ६,३० शक्ति ।—माथों के सामने बुहार
के समान दिखलाह पढ़ना, माथों का ज्वालि न रहना,
माथों व पदक पढ़ना, उजाधा और अग्नि की ओर द्यने
की अनिच्छा ।

पलसीटिला ६ शक्ति ।—देखा माटूम हो मानो
पूर और बुहार व भातर से देस रह हैं अथवा भास व
ऊरेर बुद्ध पडा हे और उस को भाट देन का इच्छा
करना, सम्य्या समय पढ़ना ।

प्राप्तेनिपस ६ शक्ति ।—व्यास धीर कपाल पर
पर्सना काय ही अस्पष्ट दृष्टि, दक्ष बाज की कर धाँसै
धीर छाल रङ्ग की दाय पढ़ना, माय समूज
बाधना ।

सत्फा ३० शक्ति ।—माथों में बदन माथों के

पङ्कन के समान दूध, दूध के दुग्ध से बनना, विज्ञाना, मस्तिष्क में रक्त की अधिरता ।

मार्कुरियस मल ६ शक्ति ।—शास्त्रात्माहट करना सोचन से बार विन्तर पर रक्त से दूध बनना वान क पूरन से पाम वार्त्त । गरी तक मुन जाना, दूधका वी और दार्त्त तक केर चापा वान से मयाद् निबलना ।

जतमीमीनमद् शक्ति ।—दूध यदि ठहर ठहर कर हा ।

पल्माटिला ६ शक्ति ।—यदि दूध अमल हाताय और निर्मी प्रकार आगम नहो तो यह औषध अनेक समय आध्यात्मिक कायदा करती है । यही जगन क कारण मयया यजनक पमीया वन्द हान क कारण यदि वान में दूध हा वान क भीतर हूठ मारने मयया क पङ्कन क समान दूध हाता, अमल बेरती और हुने भी न हुना ।

कुमायिला ६ शक्ति ।—उत्तम दूध है । वान क भीतर मुक्त अमल दूध प्रदाह और वान से मजिद मयाद् गिन्ता । वान में यदि मुद्द हा गया हाता यह औषध कायदा करत है । यहाँ क वान क दूध में दूध विभव कायदा करतो है । उत्तर गिना दूर औषधों क द्वारा उत्तम विद गिन हा क उत्तम वटव दिना का प्रयत्न बहुत उत्तम करता है ।

महदागी उदाह ।—उत्तम मयका सुधी क वारमी उत्तम कर क मयता करती । दुग्धिय मयका क बहुत

कैन मातुम पडता है। कान के भीतर घोंडों को हटाना
 हनी चाहिये ताकि टण्डी द्वारा भीतर प्रवेश न कर सकें।
 दूध की बचैनी में कान के भीतर को जी में आया घों
 डान दिया यह बड़े बच्चे का बात है। इन न दूध
 आराम होना दूर रहा और बढ़ना है। यदि आवश्यकता
 मातुम दाना घांटा का गुनगुना तेल कान के मातर टा
 दिया जासकता है।

कानसे मवाद गिरना ।

(आटोरिया)

यह रोग प्रायः बाल्यावस्था में ही होते हुए देखा जाता
 है। पहले किसी कारण से कान पर कट उम में मवाद
 पड जाता है। पाछ यदि उमका सुचिकित्सा न का जाये
 और नियम पूरक न रहा जाय तो यह पुराना आकार
 धारण कर लता है। कभी कभी इस मवाद में इतनी
 दुर्गन्धि होती है कि छपम रागा का पथ उम के पास
 वाले को उस से कष्ट मातुम दाना है। अचक अस्तरा
 आदि रोगों के उपरान्त प्रायः कान पर कट मवाद पडता
 हुआ देखा गया है। जितना गण्डमाला दूषित धातु होता है
 उन्ही का यह रोग अधिक दाना है।

चिकित्सा ।— एकोनाईट ३ शक्ति ।—

अत्यन्त जलन और घाव कर्ण याग मवाद निवृत्त ।
 कान में आधा मातुम दाना लघवा का से कर दूर
 पडना ।

बेलटोना ६ शक्ति ।— गरम ह नै दूध

कान के भीतर अनेक प्रकार के शब्द सुनाई पड़ना ।

कैलकरिषा १२,३० शक्ति ।—गडमाला दूषित धातु दुग्ध युक्त मयाद, विदाय कर दाहिने कान से, शरीर का दुबलापन पट बड़ा, दाना पैर ठण्ड और पमाजे, पट्ट कामल और घबघब ।

क्षीपर मल्फर १२,३० शक्ति ।—दुग्ध युक्त मयाद निच्छिन्ना कान से कम सुनाई पड़ना । पारा अपव्ययहार दान के उपरान्त यह अधिक कायदा करती है ।

दाडहोरोडिपम १२,३० शक्ति ।—मयाद घाय बन वाग, कान से कम सुनाई पड़ना । गडमाला दूषित धातु ।

माङ्गुरियसद्, ३० शक्ति ।—दुग्ध युक्त घाय नर नर क वाहक की भार घाय, कान में दकवट हा न । इमरिय का सुनाई पड़ना । उपर्युक्त के विषय क रण राग ।

सामाटिना द, ३० शक्ति ।—कान से कम सुनाई पड़ना, कान में दकवट घाय नर नर क वाहक की भार घाय, कान में दकवट हा न । इमरिय का सुनाई पड़ना । उपर्युक्त के विषय क रण राग ।

मादेरुगिया १२,३० शक्ति ।—कान में मयाद घाय नर नर क वाहक की भार घाय, कान में दकवट हा न । इमरिय का सुनाई पड़ना । उपर्युक्त के विषय क रण राग ।

सल्फर ६,३० शक्ति ।—यद्यप्युक्त मवाद निवृत्ता, विशेष कर बाध जान स [दाहिन जान स-केल्केरिया-बाध] जान क पाठ पु-सी, पुजाने स पुन गिरना ।

औषध प्रयोग ।—यदि नया रोग हाता दिन में तीन बार औषध प्रयोग करनाहो पपेट है किन्तु रोग पुराना पड जाने पर दिन में एक बार अथवा एक दिन अंतर एक ही बार औषध प्रयोग करना चाहिये, इस से अधिक नहीं ।

सहकारी उपाय ।—जान को संप्रदा साफ रखना चाहिये । जान से मवाद निवृत्तकर जान के बाहर न निहस जावे इसकी भार ध्यान रखना चाहिये, क्योंकि इस प्रकार मवाद लगने से बहुत दूर तक घाब फैलत हुए दखा जाता है । जान में साधधानी क साथ विचकारी देनी चाहिये क्योंकि प्राय ठीक तरह स विचकारी न लगन व कारण राग के आराम होने में बाधा पड जाती है । ५ आराम स स्वच्छ जल में एक शाम कार पालिक एसिड और एक शाम ग्लिसूरिन मिखाकर विचकारी दना चाहिये । राग पुराना पड जाने पर शारीरिक स्वस्थ की आर विश्रुय दृष्टि रखना चाहिये । रागाला धातु होने स वाइलीयर आयल घाना मपडा है ।

वहगवन ।

[डेफनेस]

आस जान आदि रट्टिया रतनी कोयल है कि पोडे

ही कारण से उन में रोग उत्पन्न-होनाता है । आत-
काल क रोग में प्रारम्भ ही से यदि चिकित्सा न कानाय-
तो ये पुराने होजाते है और फिर बड़ा कठिनार से उन
की चिकित्सा होती है ।

बहरापन अनेक कारणों स उत्पन्न होसकता है, यथा
सर्दी लगने से, खाट लगन से, अनेक प्रकार की पंडा
के कारण इत्यादि । घृद्धायष्या में इन कारणों में से एक
के भी न हाने पर बहरापन होजाता है । प्राय दूखा गया है
कि बहरापन कुलगत रोग होता है अथात् यदि
हो तो एक कुल के यहुन से आश्रमियों को हाता दूखा
गया है ।

चिकित्सा ।—बुधलता अथवा किसी क्षायविक
रोगके कारण होतो फास्फोरस विशेष पर घृद्धमधुष्यो क लिखे
उपकारा है ।

सर्दी लगन के कारण होतो—एकोनार्डिट, बलेडोना,
माकूरियस, कैलकेरिया वा पल्सेटिला ।

ज्वर के उपराम्त होतो—पलसाटिला [नमरा के बाद],
फास्फोरस [विहारके उपराम्त], साइलशिया [मस्तिष्क पाडा
के उपराम्त] ममक में छोट लगने के कारण होतो
आनिश ।

बेलेडोना ई शक्ति ।—दान के भीतर 'अध-
भवन आयुष्यो [जिन नसों से सुनार पडता] का पक्षा
घान ।

कैलकेरिया कार्व १२, ३०० ग्राकि ।—ज्वर कुनन द्वारा
पद क्रिय जान पर बहरापन गण्डमाळा घानु ।

कैमोमिजा १२ शक्ति ।—जिण घाल्वा का प्राण ही बान हृद करना हो उनको बहरापन दान में, बान पतला पतला मयाद् गिरन पर ।

फोनिपम ६ शक्ति ।—बाग के भीतर मैल पैदा हो बहरापन, मैल निबलने दा सुनाह पदन एगे और मैल पैदा हाजात पर विर सुनाह पदना घन्र हो जाय ।

जैलग्नीमीनम १२ शक्ति ।—घोड़ी ही दरः त्रिये धवातक भयन शक्ति का लोप होनाता ।

प्राप्ताईटिस १२, ३० शक्ति—वेसा मातुन मानों बान में दाना मरा हुआ है जायद हिलान के बानमें भीत घट घट करना काग के पीछ घाव हा जाना ।

हीपर-सल्फर ६, ३० शक्ति ।—ताक द्वारा जाद भाष निबलने समय बान के भातर बहुत आवाज दान काक के भातर लपशन ।

माइयूरियन ६ ३० शक्ति ।—बाग के भीतर टाटा और घण बान के भीतर भनक मकर के टाट्ट हाता ।

साइलेडिया ६ ३० शक्ति ।—बाग दह जमा क बना वही मवाज के माय सुन जाता कम सुनाह विनाय कर मनुष्य ही मवाज, मरतव में अधिद एते मजा ।

सल्फर ६, ३० शक्ति ।—बाग के भीतर सुन टाट्ट हाता कम सुनाह पदना सु न कय हाता ।

ही कारण से उन में रोग उत्पन्न होजाता है । मालव काल व राग में प्रारम्भ ही न यदि विकिरसा न जाजाय तो य पुग्ने हाजाते है और फिर वषा कठिनाई न उन की विकिरसा होनी है ।

बहरापन मनक कारणों से उत्पन्न हासकता है यथा अर्दी लगन मे आट लगन से, मनक प्रकार की पाशा व कारण इत्यादि । मृदापस्था में इन कारणों में मे एक व भी न हान पर बहरापन होजाता है । प्राय दूसा गया है कि बहरापन कुत्तगत राग हाता है अथात् यदि हा ना एक कुल व बहुत से आश्रमियों का हाता दूसा गया है ।

विकिरसा ।—पुपत्ता अथवा किमी स्थायिक शरीरक कारण हाता काष्ठास विनाय कर मृत्तमपुष्पो क शिबे उपकारी है ।

अर्दी लगन व कारण हाता—एकानाई, बलहाता, मातृपुष्प केतिक रसा वा गलमस्ति ।

उत्तर व इगल न हाता—एकानाई [अथवा व पाई] कामर रस विरह रस एवम्भन] माइरगिया [मस्तिष्कपीडा व एवम्भन] मस्तिष्क में आट लगन व कारण हाता आयेहा ।

रेडटे ना ई टाहित ।—दास क अर्नर हाट अथवा अथवा [इति नया व सुन [गडना] का गड वन

केटकदिद कर्व २०,३-गति ।—गल दूसा उ हा अथ [रस वन पर वन वन कर्व-गति न पु ।

कैमोमिला १२ शक्ति ।—जिन बालकों का प्राय ही बाल हृद करना हो उनको बहरापन होने में, बाल से पतला पतला मसक गिरन पर ।

कोनियम ६ शक्ति ।—बाल के भीतर मैल पैदा हो, बहरापन, मैल निकलते ही सुनाई पडन लगे और मैल पैदा होजान पर फिर सुनाई पडना बंद हो जाये ।

जैलमीमीनम १२ शक्ति ।—धाँसी ही देर के लिये ध्यानक धमन शक्ति का लोप होजाता ।

ग्राफ्राईटिस १२, ३० शक्ति—वेसा मातृम हो मानों बाल में पानी भरा हुआ है, जापड हिलान से बालमें भीतर घट घट करना, बाल के पाख घाव हो जाना ।

हीपर-सल्फर ६, ३० शक्ति ।—नाक द्वारा जोर से श्वास निकलते समय बाल के भीतर बहुत आवाज होना, बाल के भीतर लपकन ।

माक्यूरियस ६, ३० शक्ति ।—बाल के भीतर टाटाना और घाव, बाल के भीतर मनक प्रकार के शब्द होना ।

साइलेशिया ६, ३० शक्ति ।—बाल रुक जाना, कर्म कर्मा बड़ा आवाज के साथ गुन जाना कम सुनाई पडना विशय कर अनुभय की आवाज, मस्तक में अधिक पसने आना ।

सल्फर ६, ३० शक्ति ।—बाल के भीतर गुन गुन शब्द होना, कम सुनाई पडना, पुराना चर्म रोग ।

ही कारण से उन में रोग उत्पन्न होता है । जोर
 काल क रोग में प्रारम्भ ही स यदि विक्रिया न कालाव
 तो ये पुनो हाजात है और फिर बडा कठिनाइ से उन
 का विक्रिया होती है ।

बहरापन मनक कारणों स उत्पन्न हासकता है, यथा
 सर्दी लगन स आठ लगन से मनक प्रहार की परिभा
 क कारण इत्यादि । बुरावण्या में इन कारणों में से एक
 क भी न जान पर बहरापन होजाता है । प्राय दूशा गया है
 कि बहरापन पुनगत राग हाता है अथाव यदि
 हा ता एक कुठ क बपुन स आरमियों का हाता दूशा
 गया है ।

बिकिरसातर ।—पुनता अथवा किमी आधुनिक

सागक कारण हाता कासासस विद्यय क वृत्रमनुष्यों क विब
 उपकारी है ।

सर्दी लगन क कारण हाता—एकानाइट, बरहाता,
 मावृगियस केरि स्य वा पलमण्डला ।

ज्वर क उत्पन्न हाता—वृत्रमण्डला [जलसा क वाइ]
 वृत्रमण्डल [विब स क वृत्रमण्डल] साइमणिया [मन्दिनकपीडा
 क वृत्रमण्डल] मन्दिन में बरहा लगन क कारण हाता
 स निहा ।

पेटेटोना ई डाकिन ।—ज्वर क निहा स
 अथवा अणुओं [विब मन्दिन स सुन इ पडना] का गया
 सन ।

केलफेसिदा हावे १०.३-गाने ।—ज्वर वृत्रमण्डला
 क इ । क इ ज्वर पर बरहा लगन सपटवण्डला क पु ।

कैमोमिला १२ शक्ति।—उत्तम बालकों का प्रायः हा काव हृद बरना हो उनका चक्षुरासन दान में, दान स परदा पतन मयाइ गिरन पर।

कानियम ६ शक्ति।—बाल के भीतर नेत्र पैर हो, चक्षुरासन, मंड गिरने हो सुनार पदन लगे और मंड पैर हाशान पर फिर सुनार पदमा पाइ हा जाय।

जैलमीमीनम १२ शक्ति।—येहा हा दर; के टिपे मयावक भयम शक्ति हा लेव हाजाता।

प्राप्ताहुटिस १२, ३० शक्ति।—एसा मातुन हो मातो बान में ९ गो मरा हुआ हो, पावड हाशान स बानमें नागर पर पर हरना बान स ९ ह ९ ब हा जना।

दीपर-सल्फर ६, ३० शक्ति।—नाह श्राव जार स भास रिहाने समय बान क म गर बहुत भाषात्र हाता, कब क म गर लपहन।

माइयूरियम ६, ३० शक्ति।—बाल के म गर हाशाना मर पर बान क मगर मरक मगर ब लप हाता।

साइट्रेशिया ६, ३० शक्ति।—बाल कट लता कमी कमी पर मरक के पाव सुन उल कन सुनार पदमा रिहान पर बहुत हो भाषा मरक में मरक कमी क मया।

रत्नर ६, ३० शक्ति।—बाल के म मर सुन हा ६ क कन सुनार पदमा सुनार कन

हो कारण से उन में रोग उत्पन्न-होजाता है । आस्र काल क रोग में प्रारम्भ ही से यदि चिकित्सा न वाजाय तो वे पुराने होजाते है और फिर बड़ा कठिनार से उन की चिकित्सा होनी है ।

बहरापन अनेक कारणों से उत्पन्न होसकता है, यथा सर्दी लगने से, खाट लगान से, अनेक प्रकार का पंडा के कारण इत्यादि । बुद्धायुष्या में इन कारणों में से एक के भी न होन पर बहरापन होजाता है । प्राय दूधा गया है कि बहरापन बुलगत रोग होता है अर्थात् यदि हो तो एक बुल के बहुत से आश्रमियों को हाता दूधा गया है ।

चिकित्सा ।—उपलता अथवा किसी स्नायविक रोगके कारण होतो फास्फोरस विशेष पर वृद्धमनुष्यों क लिखे उपकारा है ।

सर्दी लगन के कारण होतो—एकोनाइट, वलेडोना, माकूरियस, कैलकेरिया या पल्सेग्रिला ।

ज्वर के उपरांत होतो—पलसाटिला [लमरा के घाद], फास्फोरस [दिवारक उपरांत], साइलिया [मस्तिष्क पाडा के उपरांत], मसक में छोटे लगने के कारण होतो आर्निका ।

वलेडोना की शक्ति ।—जान क भीतर गर, भक्षण आयुओं [जिन नसों से सुनार पडता] का पक्षा घात ।

कैलकेरिया कार्व १२, ३० शक्ति ।—ज्वर बुनन द्वारा पद । श्वेत ज्ञान पर बहरापन गण्डमाला धातु ।

घेलेडोना ३,६ शक्ति ।—गुण गुण अर्धया (गो गो) शब्द ।

चायना ६, ३० शक्ति ।—कमी शब्द बहुत कुछ होम् होम् के समान, (कमी घंटे पजने के समान और कमी समीत के समान ।

कार्बो-वेजाटेविलिस १२, ३० शक्ति ।—जब ज्वर में बुनेन के अप-पषहार के कारण हो [इस अवस्था में कैलकेरिया-वाधे और पलसाटिंग पायदा बरती है] ।

मार्कूरियम ६, ३० शक्ति ।—जब खेचक (वसन्त) के बाद हो और शरीर में अधिक पसिना हो ।

नक्समोमिका ६, ३० शक्ति ।—जब सर्दी लगकर हो और प्रातः काठक समय पढता हो ।

पलसाटिला ६, ३० शक्ति ।—जब कसरा के बाद हो, सग्ध्या के समय बढता ।

रस्टकस ६, ३० शक्ति ।—जब जठ्र में मीगन स, घीनत जठ्र से घान करने स अवस्था बोर मारी घीन पढाने इत्यादि के कारण हो, विधाम लन ही अवस्था में बढता ।

सल्फर ६, ३० शक्ति ।—जब पुराना घाय शून्य आवे अवस्था बोर खरुं रोग दूध आवे और उल्ल कारण स हो ।

श्रौषध प्रयोग ।—यही अवस्था में दिन में एक बार अथवा दो बार श्रौषध प्रयोग करना चाहिये । पुराने रोग में दो एक दिन के अन्तर से एक एक मात्रा श्रौषध खिलानी चाहिये । इस से अधिक नहीं ।

सहकारी उपाय ।—स्नान करने के उपरांत कान के भीतर पानी रह जाना अच्छा नहीं है । सूखे कपड स पोंछ डालना चाहिये । कान को सर्वदा दर कपडा अथवा तुनका से सुरेहना अच्छा नहीं है । यह अस्वास्त बहुत ही बुरा है । बालकोंके कान पर कभी थप्पड़ अथवा घूंसा नहीं मारना चाहिये । घाल्यायणा में काइ भयङ्कर शब्द सुनने से बहुत से बालक यहरे हो जाते हैं ।

कर्णनाद ।

अधिकांश कर्ण रोगों के साथहा कान के भीतर अनेक प्रकार के शब्द सुनाइ दिया करते हैं । यह कर्णनाद इन सब रोगों का एक लक्षण मात्र है । किन्तु प्राय देखा जाता है कि किसी प्रकार का कर्ण रोग न होने पर भा कान के भीतर अनेक प्रकार शब्द सुनाइ दते हैं । ऐसे अवसर पर यह श्रवण एक राग गिना जाता है । ऐसी अवस्था में निम्नलिखित श्रौषधों में से जिस उचित समर्थ व्यवहार करें ।

एकोनाईट ३, ६ शक्ति ।—कान के भीतर गों गों शब्द और मस्तक के स्नान उत्ताप ।

वैलेडोना ३,६ शक्ति ।—गुण गुण अथवा गों गों
राम् ।

चायना ६, ३० शक्ति ।—कमी शब्द बहुत कुछ
दास्य दास्य के समा, (कर्मों घटे यत्ने के समान और
कमी सगान के समान ।

कार्बो वेजीटेविलिस १२, ३० शक्ति ।—ज्वर ज्वर
में बुनेन के अथवा अथवा के कारण हो [इस
अवस्था में कैलकिया-शर्करा और पलसाटिला फायदा
करती हैं] ।

मार्कुरियम ६, ३० शक्ति ।—अथ अथ (यत्न) के
बाद हो और शरीर में अधिक पमाना हो ।

नक्सवोमिका ६, ३० शक्ति ।—अथ अथ लगकर
हो और प्रातः काल समय पढ़ता हो ।

पलसाटिला ६, ३० शक्ति ।—अथ अथ के बाद
हो, अथ के अथ पढ़ता ।

रस्टक्स ६, ३० शक्ति ।—अथ अथ में भीगने से,
शीतल जल से छान करने से, अथवा अथ मारी अथ
उठाने इत्यादि के कारण हो विधान लन ही अथवा
ये पढ़ता ।

सल्फर ६, ३० शक्ति ।—अथ अथ अथ अथ
अथवा अथ अथ अथ अथ और अथ अथ
स हो ।

औषध प्रयोग।—दिन में २।३ बार औषध देना चाहिये ।

कर्णमूल प्रदाह ।

(माम्पूस्)

नीचे वाले जायद के कोन और कान के नीचे के भाग में जो लालानि सारक एक बड़ी गाँठ है उस में प्रदाह होने से उसको कर्णमूल प्रदाह कहते हैं । पहले आलस्य मालूम होना शरीर गिरा पडना, हाथ पैरों में दद, भूख कम होना, सर्दी सी लगना, ज्वर और सिर दद मालूम होकर २।३ दिन के भीतर एक ओर अथवा दोनों ओर की गाँठें फूल जाती हैं, उन में दद होता है और बड़ी पड जाती है । कभी कभी यहातक होता है कि सब गला तक फूल जाता है और दद हाने लगता है । गर्दन हिलान की अथवा कोई वस्तु निगलने की अथवा खाने की शक्ति नहीं रहती ।

इस रोग का एक विशेष लक्षण यह है कि प्रायः स्नान परिवर्तन करने से स्त्रियों के स्तन और पुरुषों के शङ्खकोष पर आक्रमण होता है । यह सब स्नान भी सूख जाते हैं, इन में प्रदाह हान लगता है और दद होता है । कर्णमूल प्रदाह प्रायः शीत और बस का ल में बहुव्यापक रूप से दिखलायी पडता है । इस का सन्नामक रोगों में गिनती है । यह प्रायः बच्चों का होता है ।

चिकित्सा।—बेलेडोना ३ शक्ति ।—सब गाँठें उबल टाट रखनी मिश्रण कर दाहिने ओर का [काला टिपे हुए

हाल रहनी और पाँचे मोर की गाँठ होने पर रस्टकम], अचानक फूलना कम होने पर छपकन, सिर दब और प्रहाप बहना आरम्भ होता है, निद्रालुता किन्तु नींद न आना ।

हायोसापेमस ई शक्ति ।—यदि अज्ञ परिचयन करने से रोग मालिभक में जाय । प्रहाप, एक दृष्टि, हाप पैरों फटकना और पटकना आदि प्रायविक लक्षण ।

मार्कूरियस ।—यही इस रोग की प्रधान औषधि है । यद्यपि यही इसकी एक मात्र औषधि होती है । विशेष कर रोग सामान्य प्रकार का होने से अच्छा होजावे । इस औषधि के लक्षण—सर्दी लगान से रोग, गाँठ अत्यन्त सूखत और पूरी हुए, जायदा हिलान में और निगलने में अधिक कष्ट, पसोना आना किन्तु उस से कुछ आराम न होना, मुँह से बहुत सी खार गिरना और भ्यास लन में तथा निबलने में दुर्गंध आना । सब लक्षणों का रात्रि में और सीठ वषा के दिन में बढ़ना ।

पलसाटिला ।—यद्य अज्ञ परिचयन करने से रोग मत्तकी अक्रमण करे [अण्डकोष आक्रमित होने पर आर्सेनिक अथवा कार्बो-ब्रेजीटोविडिम] अण्डकोष प्रदाह और फूलना उस में खरब मारने कासा दब, ज्वर मैत्र न डकी हुए । प्रात फाल मुँह का खराप म्याद और सिर घूमना ।

रस्टकस ई शक्ति ।—जय विकार क लक्षण दिख लाए रहे ।

श्रौषध प्रयोग ।—सामान्य रोग में दिन में ३।४

भाजाना । यदि इस बपण्या में भाराम न होजाये तो सर्दी गले और छाती तक फैल जाती है और इस से स्वरमद्ध गले का रुद्ध, सामी, श्वास बधु और ज्वर आदि लक्षण प्रकाशित होते हैं ।

कारण । शरीर में जिस किसी कारणसेभी उत्थाप का रूप होता है उसी से सर्दी लग जाती है यथा — [१] गीला बपड़ा पहिने रहना । यह स्मरण रखना चाहिये कि जितनी देर तक गीला बपड़ा पहिनकर परिभ्रम 'किपापायगा' उतनी देर तक परिभ्रम के कारण लगातार उत्थाप उत्पन्न होने का कारण सर्दी नहीं खग सवती, किन्तु परिभ्रम के उपरांत भी गीला बपड़ा पहिने रहने से निश्चय ही सर्दी लगने की सम्भावना है । [२] शीतल वायु लगना, [३] यद्दुत देर तक जल में रहना, [४] अचानक गरमी से सर्दी में भाजाना, [५] सोदने पहिनने के बपड़ों का कमी इत्यादि । यद्ये और कुछ लोगों को पयम रोगी और दुबल मनुष्यों को इन सब कारणों से सावधान रहना चाहिये ।

चिकित्सा ।— कैम्फर अथवा थ्रक कपूर ।—

सर्दी की तुलजात होनेही दोदो धूत अथ कपूर चीना के साथ मिलाकर साथे साथ घबट के अंतर मथदि ५७ या साया जायगा तो तुरत ही सर्दी बन्द होजायेगी । या थारम्भ में हा न दिया जायगा तो कुछ विशेष उपकार दीखेगा ।

एकोनाईट ३ शक्ति ।— सर्दी परम् भास और ठ लगन से और और पीडाभोजी प्रथमाथर्ष्या में, यिदोप उसके सङ्ग ज्वर बपषा ज्वर सा रहे ता यह यद्दुन उ

चाहिये, उपरान्त सूखे कपड़े से पैरों को अच्छी तरह से पोंछ लिया जाये। दिन में ३।४ बार पानी के साथ नमक मिलाकर सूखने से पापदा मान्द्रुम पड़ता है। जुकाम की पहली अवस्था में सब प्रकार के जठ्रीय पदार्थ खाना बन्द रखा से फायदा होता है।

पथ्य। यदि ज्वर हो तो पदले हलका पथ्य और पीके रोटी। दूध और मिलाज्ज दानिकारक होते है। अपनी अपनी धानु प्रकृतियों समझ कर खान किया जाव।

पुराना जुकाम (जुकाम विगडना)।

(क्रानिक कैटर)

नये जुकाम की सुविधितता न करने से अथवा टारखाही करने से कभी कभी जुकाम विगडते हुए देखा जाता है। जिनकी गण्डमाला दूषित धानु होनी है प्रायः वगरी को अधिक बर पाते हुए देखा गया है। पहिले बर पठला रहता है, उपरान्त नाक में घाव होकर गांठे दुग्ध शुद्ध स्तौष्या निकलता है, फिर कभी कभी उस में रुद्ध का छौंटा भी रहता है। नाक से कुछ भी नहीं गूषा जाता, नाक सूखी हुई रहती है और दानो जाखोंके मध्य-करी खान में रुद्ध रहता है। रोग जैसे जैसे पुराना होता जाता है नाक के भीतर बड़ा और सूखी हुई पापटी लगने लगजाती है, उनको बड़ी मुश्किल से बन्दैर निखाटा जाता है एवम उन में बड़ा दुग्ध मातो है। कभी कभी नाक के बर के पित्र की छंद घाव पड़ने लगजा है और वहां से गले के भीतर वद दुग्ध शुद्ध रुद्ध गिरने से हमेशा आ विधलगाया रहता है, गला खकारने की रुद्धा

रहती है, नाक से पेशी दुर्गन्ध बाहर होती है कि रोगी पथ उस के पास वाले को भी घुरा मालूम पड़ता है ।

चिकित्सा ।—कैलकेरिया १२, ३० शक्ति ।—

नाक के छिद्र में घाव, नाकसे सुगन्ध आना, नाक से धक्कदार पीप निकलना, गण्डमाला दूषित घातु ।

काष्ठी वाईक्रमिक ३, ६ शक्ति ।—नाक की जड़

में दयाव माहूम होना दोनों नयनों के बीच के परदे का घाव, गाढा सफेद कफ निकलना यदि कफ निकलना, पन्द होजावे तो मयानक सिर दूद उपस्थित होना, कडा और हरा पदार्थ निकलना, नाक से दुर्गन्ध ।

लैकेसिस १२, ३० शक्ति ।—रक्त और मवाद निक

लना, नाकके भीतर घाव और पापडा पडजाना, नाक से अत्यन्त दुर्गन्ध और घाव करने वाला पतला श्लेष्मा निकलना ।

माक्यूरियस वाईवस ६, १२ शक्ति ।—

हरा हरा दुर्गन्ध युक्त मवाद निकलना नाक की हड्डी सूपी हुए, नाक में पापडा जम जाना और उनको निकालने में खून गिरना । यदि दूद में उपद्रव दाप हो तो यह औषध बहुत उपकार करता है ।

साईक्षेशिया १२, ३० शक्ति ।—नाकसे सूप करने वाला

और जलन करने वाला मवाद निकलना नाकके भीतर श्लेष्मा सूख कर रहजाने से और सूजने की शक्ति विदुग हान से [कैलकेरिया-वाय और काष्ठी-प्राइक्रम] नाक के अग्रभाग में सुजला ।

श्रीपथ प्रयोग ।—दिन में ९ घण्टे के हिसाब एक सप्ताहतक श्रीपथ देने चाहिये । उपरान्त ६।८ दिनतक श्रीपथ न दानाये । पीछे यदि कोई फायदा न देखे तो और कोई दवा तनवीज कर पहिले ही माति देने चाहिये ।

सहकारी उपाय ।—प्रति दिन ठंडे पानी से छान करना चाहिये । मांस, मछली आदि पिठकूट न घाने चाहिये । स्वास्थ्य के नियमों का विधिपूर्वक पालन करना परम आवश्यक है ।

नासाक्षत ।

(ओजिना)

नाक के भीतर घाव होकर दुर्गन्ध युक्त अथवा रक्त युक्त मवाद निकलना रूढ़ता है, नाक की दृष्टी और पास वाली दृष्टी [मालि और उपासि] गल कर कभी कभी गिरती हुए दर्शा जाती है । नाक में ऐसी दुर्गन्ध होजानी है कि रोगी उस से पागल सा हो जाता है । कभी कभी तालू की दृष्टी तब क्षामात होती हुए देखी जाती है । नाकके भीतर पापड़ी पडकर ऐसा सुख जाती है और बटक जाती है कि ये बाहर नहीं निकाली जा सकती । यदि शीघ्रहा रोग नियारिम न होतो नाक की दृष्टी विगड होकर नाक पैठ जाती है और मूरत बहुत ही बुरी होजाती है । ऐसा होत पर रोगी अच्छी तरह नहीं बाल सकता धरन गुन गुना कर थोडता है ।

कारण ।—उपवेश दोषही इस रोग का प्रधान

कारणों में समझा गया है । इस के सिवाय इस रोग के
 और भी किान हए कारण है जैसे पुराना जुकाम, ज्वर,
 बाहरा चोट नाक के भाग पर किसी पदार्थ का रहजाना,
 गण्णमाला दाघ इत्यादि ।

चिकित्सा ।— आरम १२,३० शक्ति ।—

नास के उपर के भाग में दूध नाक का उत्साप और दूध,
 पिन्नास आदि द्रुप दूध रगत का अथवा पीले रंग का
 घाव [मसाले निकलना] आधा पतला और आधा सूखा
 है । दुग्ध युक्त पाव निकलना ।

कालीयाडकम ३,६ शक्ति ।—गाढा घिट विग

रुमा कर्मी रक्त मिला हुआ घाव । यह भीषण बहुत दिन
 तक अग्रहार सेना पडता है ।

आयानियम ६ १२ शक्ति ।—अत्यन्त दुर्गन्ध,

नस के भाग में नस शरीर में घाव ।

माङ्गलियम ३ न आडकम ६ शक्ति ।—रक्तयुक्त

घाव में नस के भाग में घाव ।

नाट्टाटकम ६ शक्ति ।—अपदश के कारण

रक्त नस के भाग में नस के भाग में अधिक मात्रा में पाव
 व्यवहार किया है ।

कैलकगिया क. १२ शक्ति ।— [पाव निकलना, पीव

दुग्ध युक्त गन्ध आदि रक्त का] फासकारस ६ शक्ति—
 [गन्ध रक्त का अथवा रक्त रक्त का दूध मवाद निकलना]
 पत्रमात्रक क — गाढा दुग्ध युक्त घाव] सलकर

१३० शक्ति ।—[गदला खटा खाव], साहलेशिया १२, ३० शक्ति ।—
[घ्राण बटा, गरखा और पीन मिखा डुवा] ।

श्रौषध प्रयोग ।—दिन में २ बार के दिसाव से श्रौषध
सेवन करने चाहिये ।

सहकारी उपाय ।— नाक को अच्छी तरह साफ
रखना चाहिये । हमी कमी नाक में 'पिचकारी' लगाना
आवश्यक होजाता है । एक ग्लास पानी में थोडा नमक
मिलाकर नाक साफ करने से प्राय फायदा दीखता है ।

पष्टय ।—मच्छी मास आदि न खाने चाहिये । यथा
शीति स्वास्थ्य के नियम पाठन करना परम आवश्यक है ।

नाकसे रून गिरना ।

(ऐपिस टैक्सिस)

प्रायः यह एक साधारण रोग होता है, किन्तु साधारण
रोग होने पर भी यह ध्यान देन और विचार करने की
बात है कि किस समय इस रोग को श्रौषध द्वारा बन्द
करना चाहिये और किस समय बन्द नहीं करना चाहिये ।
जिस समय श्रौषध द्वारा रक्त बन्द करना चाहिये उस
समय यदि नहीं किया जाये तो रोगी की दुर्बलता बढ़कर
सङ्कटापन्ना उपस्थित होसकता है । और जिस समय इसे
बन्द करना उचित नहीं है उस समय यदि बन्द कर दिया
जाये तो अज्ञानक रोगी को एक न एक कठिन रोग पैदा
होसकता है ।

सामान्य रक्त घ्राण में कोई भी श्रौषध देना उचित
नहीं है किन्तु यदि रक्त घ्राण बार बार और अधिक,

अधिक देर तक होना रहे और देह दुपल हो तो औषध द्वारा चिकित्सा करने का प्रयोजन होता है ।

कोई पूव लक्षण दिखलाई न पड़ने परभी कमी कमी यह रक्त स्राव अचानक होजाता है । कमी कमी निम्न लिखित पूव लक्षण भी दिखलाई पड़ते हैं, यथा — सिर दद, सिर घुमना, चहरे पर सुर्धी, गले की धमनियों का फड़कना और हाथ पैरों की शीतलता । कमी उज्वल लाल रंग का और कमी कालासा रंग का रक्त स्राव होने हुए देखा जाता है ।

चिकित्सा ।—एकोमाईट ३,६ शक्ति ।—रक्त पूण घातु, चहरे लाल और सब धमनियों का फड़कना, रक्त उज्वल लाल रङ्गका ।

आर्निका ३,६ शक्ति ।—बाहरी आघात क उपरान्त और जब रक्त स्राव के पहले नाक में खुनला हो, अधिक भारी वस्तु उठाने से, अधिक परिभ्रम करने से, अधिक धम से रक्त स्राव होने पर—रस्टकस] ।

वैलेडोना ३,६ शक्ति ।—मस्तिष्क में रक्तान्त्रिय, मांस और चहरे लाल, शरीर अत्यन्त गरम, मांस के नामत चिनगारीनी चलना, शब्द और प्रकाश सब बढ़ना ।

त्रायोनिया ३,६ शक्ति ।—मान शल विछान से उठने क उपरान्त [रात्रि को रक्त स्राव हानो—रस्टकस; अतु के बदलन पर नाक से रक्तस्राव [पल्सेटिला, सीपिया], प्रीम्पचार्डमें और देह अत्यन्त गरम हान पर ।

घ्रापना ६,१२ शक्ति ।—बार बार देर तक रहने
का रक्तघ्राय, कान के भीतर मौं मौं शब्द, चहारा
दृश्य और हाथ पैर आदि टण्डे ।

नक्सवोमिका ६,३० शक्ति ।—अर्ध[पत्रासीर]का
रक्तघ्राय पत्र घाने से, कपाल में बर्से, जो लोग पुराने
घ घाने पाठ है ।

फासफोरस ६,३० शक्ति ।— बहुत रक्तघ्राय,
रक्तघ्राय रक्त घ्राय होना, बिछेप कर मळ त्याग करे
समय ।

जिन को बार बार नाक से रक्त घ्राय होता है उन
को घ्रातुगत दोष दूर करने के लिये कैल्करियाकाय
२ या ३० शक्ति, सप्ताह में २ । १ बार एक घाँच घाँच में
एक एक मात्रा सल्फर ३० देना चाहिये ।

औषध प्रयोग ।—जब अधिक रक्तघ्राय होने लगे
तब [१] २० मिनट के अन्तर से आपघ खिलाइ जासकती
है । अथवा दिन में २,३ बार औषध दना ही योग्य है ।

सहकारी उपाय ।—यदि किसी प्रकारसे रक्त घ्राय न हो
तो मुद्द बन्द कर नाक से श्वास लेना चाहिये । चहारा,
नाक, मस्तक, गरदन आदि स्थानों में टण्डा अथवा परत
का पानी प्रयोग करने से बहुत फायदा दिखलाई
पड़ता है । दोनों हाथोंको तिर के ऊपर रखन से भी बहुत
फायदा होना है । हेमामोलिस और पानी समान भाग में
मिश्रकर नाक के भीतर प्रयोग करने से भी रक्त घ्राय
बन्द जाता है ।

पृथक् ।—जिन के हमेशा नाक से रक्त गिरा करता है उनको मिताहारी [बहुत घाना और शुद्ध पदार्थ आदि हानिकारक मोजन से परहेज रखना] और परिधर्मी होना चाहिये । सब प्रकार के उत्तेजक पदार्थ छोड़ देने चाहिये और प्रति दिन शीतल जल से स्नान करना चाहिये । मद्य आदि सब प्रकार के उत्तेजक आद्य अथवा पानीय व्यवहार न करने चाहिये एवं अत्यन्त परिश्रम से बचना चाहिये ।

नासा रोग ।

यह रोग प्रायः—देखने में आता है । नाक के भीतर प्याज की कडी के समान सूजन होजाती है । बीच बीच में ज्वर होता है । नासा ज्वर के लक्षण और किसी प्रकार के ज्वर से नहीं मिलते इस लिये उनके देखने ही से नासा ज्वर समझा जासकता है । गरदन के स्थान में दर्द, मस्तक, शरीर, हाथ पैरों में दर्द सिर दर्द प्रबल ज्वर, पिपासा, शरीर में जलन आदि इस ज्वर के लक्षण हैं । इन सब कष्टोंको शान्त निवारण करनेके लिये बहुतसे लाग नासा तोड़नेके लिये अभ्यास करते हैं । छुर से नाक के भीतर की प्याज की सी कडी को उड़ देने से उस का रक्त बूद बूद कर निकलजाता है और मस्तक और गरदन का कष्ट एवं ज्वर दूर होजाता है । जिनको नासा तोड़ने का अभ्यास होता है उनको नासा ज्वर होने पर नासा न तोड़ने से बड़ा कष्ट होता है । इस लिये पहलेही से इस का अभ्यास करना उचित नहीं ।

नासा ज्वर जैसे अमानक आता है पैस ही अचानक न जाना है, किन्तु इस का साधारण समझ कर

जी और लापरवाही करने से कमी कमी पद हाता
ज और बटिन होनाता है कि तदन ही हम वा माराम
ता बटिन हाताता है।

चिकित्सा १-वेलेडोना ३,६ शक्ति ।— प्रवट
कन गिर दद, ममक में रजाधिक्य, प्रणाप यका
म और दडवन, टिने घन। म, शम्द और प्रयन
ता म रोग बटना, प्रबल उग्र, हम धौपध व विदार
ण है।

एकोनाईट ३,६ शक्ति ।—प्रवट उग्र भत्य न
नी और तडपहाता, दडवन, गिर दद, प्रवा विपामा
पुभव माडी पूज और मेज।

फासफोरस ६,३० शक्ति ।—नाक से सहजरा
द निबल, नाक व टिद रक हुए मातुम धौ और मरी
ने क पटिन जिस प्रकार माधे वा दात माहम हाता
हमा प्रवार घोत माहम होना । दह छरा धार छमा
मे यह क्वा बहुत चापदा वती है।

सीपिया ६, ३० ।—सूत्रमें दुगन्ध सूत्रमें नाक
पिडक मगाम कपवा लान लाय अदाप जम जमा, नाक
ही हुए और कश्कार हीक घना। टिपौक टिपे हा विसेय
रोगी है।

मार्डिलेशिया १२ ३० शक्ति ।—नाक उग्र
म में दद और माया रिगम मे कान मातुम हाता
नाक के टिपे क दाग मुजता धौर टाडी टाडी दुगिमा
तक मनाक्या के रिम कपवा पूर्वना क निव मका न

पुष्पा अथवा उबक होता । यदि गण्डमाला दोष हो तो भी यह औषध दूरी जादिये ।

कैलशेरिया १२,३० शक्ति ।—एक औषध के द्वारा

जगा रागा के धातुगत वायु दूर होत है । रागी क्यून्कराण और उरु क मन्थना से सर्वा पाण तर जगा से तर्कवीरु हाता पैर क नरुव जगा गन्ध और गील रहता ।

समान १ । १२ ३ इत कलकारिया ३० और धीन धीन म सूर्य मान कल म रागी क धातुगत वायु दूर हातर तासा रा ३ । १२ अछा दासकता है । विवि पा इम उदाह कर्ती जादिय आर वर्ती प्यात रणता जादिये कि रागा । इतकर साधन राजा ।

औषध प्रयोग ।—तासा राग ३ । १२ यन्त्र क सन्तर

के वायु उ मगाव कल मगा ३ । १२ धातुगत वायु दूर करत क विवि मन्थ ३ । १२ १ । १२ १ । १२ पाण सन्धया समय इत ३ । १२ ३ । १२ ३ । १२

५५ ३। गज्याय ।

दुग्धगण समुच्च ।

दुग्धगण (विर्वाटुगण)

दुग्धगण वा उरु हा कल ३ । १२ दुग्धगण सन्धु ह पन्धर कलमध ३ । १२ पाण विमन्धर क हाण्य मीर कृष्ण दुग्धगण की विवि क विमन्धर कल ३ । १२ पाण ३ । १२ पाण ३ । १२ विमन्धर की विमन्धर कल ३ । १२

है, क्योंकि हृत्पिण्डकी गठन की प्रकृति से जो विकार उत्पन्न होता है जब तक यह दूर नहीं हो सके तब तक हृत्कम्प दूर नहीं होता। क्रिया के विगड़ोसे जो हृत्कम्प होता है उसकी सहाय में चिकित्सा की जासकती है। अपरिपक्व (भोजन न पचना) आदि कारणों से जो हृत्कम्प होता है वह क्रियागत रोग का एक अग्रान्त है।

सुस्थ और स्वामाविक अवस्थामें छाता के भीतर हृत्पिण्डकी क्रिया का कुछ अनुभव नहीं किया जासकता इसका-कारण तब तो सुना जा सकता है इसका आघात भी अनुभव नहीं होता अथवा उसकी घड़कन मालूम नहीं पड़ती। किन्तु पीडा के कारण हृत्पिण्ड की घड़कन इतनी बढ़ जाती है कि छाते के भीतर घड़कन होती रहती है, कभी कभी उसकी तेज और जोरसे घड़कन प्रमाणत रूपसे सुनाई देने लगती है धार रानी का कम्पा देती है। आपथिक दुषटना, अत्यन्त मानसिक चिन्ता या आशय, शोथ, अजीर्ण बहुत रक्त-आवर्ष के कारण दुषटना, अत्यन्त शारीरिक परिश्रम, हृत्पिण्डकी पीडा आदि अनेक कारणों से यह पीडा उत्पन्न होजाता है। अधिक व्यायम या लम्बाई पासनी हृत्कम्प होने हुए देखा जाता है। त्रिविधा अनुसन्धीय गठकण्टी रहनेसे हृत्कम्प उपलब्ध होता है।

चिकित्सा ।

१। मानसिक आशयक कारण हृत्कम्प—प्रेमोत्तारुह (उत्तमना के कारण) व-निद्रा (अत्यन्त मानसिक कारण हृत्कम्प का भाव घनिद्रा) कैमोनिना (शाय क कारण), शोथिक या विरहिक (अप क कारण) ।

२। अत्यन्त परिधम क कारण—आर्निफा ।

३। रक्ताधिपय क कारण—एकानाईट, वेलेडोना ।

४। मपाकने कारण—गन्धयोमिका, पलसाटिला, लार्का पोडियम ।

५। कायविक कारण अथवा वायु वृद्धि क कारण—मक्कस, सार्निडिलिया वेलेडोना एकागाईट कैकटस, आर्सेनिक ।

६। वृद्ध रोगीका दुबलता क कारण हृक्म्य—आरम ।

एकानाईट ३, ६ शक्ति ।—युवा वयस्क, रक्तपूर्ण

धातु वाले मनुष्यों का हृक्म्य, बहुतही अधिक दिल धड़कना, सायही एसा माहुरम हाना माना समस्त शरीर का उठना है। भय लगे क उपरान्त अधिक उपकार करता है (इस अवस्था में काफिया और आयुधमभी कायदा करत हैं) मन में अत्यन्त भय जीत चित्त, रागी का एसी रिम्ता हाक माका मृगु हागा भाधा हाकर घेडा जाय, सोस रेत में कष्ट मातुव हा।

आर्सेनिक १५, ३० ।—अत्यन्त प्रबल हृक्म्य,

विद्यय कर ताव का ५० भाग पर। इस लक्षण में डिग्री ट्रेजिम सी कायदा करता है अत्यन्त वयवना (कष्ट) धन्यगत यथेता और मग्नु भय दुःखना अत्यन्त विधाना, कर कर घादा धन्य उठता है।

वेलेडोना ३, ६ शक्ति ।—हृक्म्य भाग ही नहीं

है मक्किसम नन बावु टर टर कर घनना हृक्म्यट म अत्यन्त कष्टक मग्नुम हन विधान क समय हृक्म्य कर्त। इच्छत इच्छत एवच्छत निर ६६

रक्त श्वात धातु पाटा।

डिजिटैलिस ३,६ शक्ति।—घात करनेसे, हिलने चलने से वा शयन करने से हृत्कम्प उपस्थित हो। ऐसा मान्य हो कि हिलने चलनेसही हृत्स्पन्दन बढ़ हो जावेगा, हृत्पिण्ड में तेज छुड़ चुमोने के समान अथवा सिन्धुदनेक समान दर्द (इस लक्षण में रस्टक्स भी दिया जाता है) हृत्पिण्ड के पत्र वा रोग, इस के साथ ही साथ पैरों का फूलना।

रस्टक्स ६,३० शक्ति।—स्विर भाव से घँड रहने पर हृत्कम्प मान्य होना, इसलिये उसका उपशम करने के लिये योग्यर दिला चलना, हृत्पिण्ड में छुड़ चुमान के लिये दद, इसके साथ ही वायु हाथ में तबड़ाफ के साथ ही सघाटा अथवा बबसी मान्य पडना।

फासफोरस ६,३० शक्ति।—एसा मान्य होना आना ह्वाती के चारों ओर जकडा हुआ है, अतएव सास घेत में बढ़ होना और दुबलता मान्य होना। हृत्कम्प के अभाव में भोजन के उपरांत अथवा मानसिक भावेग के उपरांत घबडना।

विगाटूम अलबम ६,१२ शक्ति।—प्रवा सुस्पष्ट उद्वेग के साथ हृत्कम्प [इस लक्षण में डिजिटैलिस भी दिया जाता है], कपाल में डकडा पसीना, अत्यंत दुबल करने वाला चंद्रामय, प्रत्येक बार मलत्याग के उपरांत दुबलता वा घटता बलशक्ति और मृदुभय [आमनिक]

लेकोसिस ३० शक्ति।—एक बार लम्बा सास

लेना, यदि बीच में श्वास रोक होना मानों अद्धर वा
हैं, नाडी दुबल घाट आर सुद सुमोने क समान द
रोगा को अचानक निडाक उपरान्त श्वासकष्ट, ऐसा मालूम
हो मानों दम अटकगया है और जाग पडना ।

श्रौषध प्रयोग । जब हृन्कम्प प्रयत्न वेगके साथ
आरम्भ हो तब २०।३० मिनट के अन्तर से एक एक मात्र
श्रौषध देनी चाहिये, और और समय में दिन में दो एक
मात्राही यथष्ट हैं ।

सहकारी उपाय ।—सर्व प्रकारका मामसिक उत्ते
जना, सर्व प्रकार उत्तेजक खाद्य, चाय या काफी पीना,
न पचने वाल पदार्थ खाना इत्यादि यजनीय हैं । अरुण
दवाका सवन, शीतल जलसे खान, गुली इहं हवा में
यथाचित व्यायाम सहज में पचन घाला तथा पुष्टिकारक पदार्थ
भाजन करना हृदय का अशांति और अिताशुय रहना
इत्यादि यहा इस रोग क प्रमान सहकारी उपाय हैं ।

हृत्पिण्डकी वात ।

लक्षण ।—वात की पीडा का समय हा अथवा
और कई समय हो, रागी को यायी और एक प्रकारका
थोक सा दीप्त पडता है । कभी कभी उस खान में अत्यन्त
तेज दद भी मालूम होता है । यायी धार रोगा करयट
लकर सभी नहा सकना उमास निवाहन में कष्ट होता
है । चहारा देखने स कष्ट और थैपना मालूम होती है ।
हृत्पिण्ड की अनियमित क्रिया अनि प्रयत्न ज्वर, और कभी

धमी बहुतही ज्यादा पसाने आना, नाडी कम घडना क्षीण और सुखडी हुए मादूम पडना, नाडीकी अवस्था ! हृत्पिण्ड के घडवने की क्रिया के साथ समकालिक अर्थात् [एकही समय में दोनों का साथ घडवना] और समभाषापन्न [अर्थात् एकही तरह घडवना] नहो । यह रोग अत्यन्त ही कठिन है । प्राय इस में रोगी के जीवन का सशय दाजाता है । यदि इस से अचानक मृत्यु भी न हो तथापि यह ऐसा पुराना आकार धारण करता है कि जिस से रोगी जीव न्यून सा होनाता है । यह पुराना हृदरोग कष्टसाध्य होता है ।

चिकित्सा ।—एकोनाईट ३, ६ शक्ति ।—

प्रबल ज्वर, उस के साथही प्रबल दिल घडवना, हृत्पिण्ड और नाडी की घडवने के साथ विसा प्रकार का मेल न रहना । छाती में सुर चुमोन के समान दद होना, उसके कारण उसाम लगे में थापा पडना, अत्यन्त उद्वेग और मृत्युभय, पेशाव यद ।

आर्सेनिक १२, ३० शक्ति ।—हृत्पिण्ड का अत्यन्त घडवना, विशय कर रात्रि को नीर रिक्त हाकर सोने पर, अत्यन्त घग्क्षय और दुबलता, अत्यन्त घबेना और मृत्युभय चार बार थोडा थोडा पानी पीना ।

वैलेडोना ३, ६ शक्ति ।—छाती पर भारापन मादूम पडना उस के कारण श्वास यद होना, बहुत छाती घडवना, साथही हृत्पिण्डका अनियमित रूप से सकाचन, यद जितनी जल्द आरंभ हो उतना ही जल्दा घला जाय, उप

धन, सिर दद के साथ घट्टे की छाल रगत, उठनी हो
चकर आना, सब शरीर में ठंडे पसाने आना ।

मिमिसीफुगा ३, ६ शक्ति ।—हानी में
और उद्वेगं मालूम हाना यावे क ३ में दद, इमें दद
बाय हाथ तक फैलना उम के माघही ऐसा मालूम हो
मानो यह हाथ इस ओर बधा रहा है ।

लैकेमिस १२, ३० शक्ति ।—हृत्पिण्ड में बायठके
दद, उसस छाता घडकना, दरवार हिलान से विशेष कर
हाथ हिलान से श्वासकष्ट मालूम हाना श्वास रकनेक भयभे
न सकना गलमें किसी वस्तुका स्पश सहा न होना, निद्राक
हो रोगी की चक्कणा की वृद्धि ।

रस्टमस ३, ६ शक्ति ।—हृत्पिण्ड का दृग्गता
उमका फडकना स्थिर हाकर बैठनस अत्यन्त जनी घडक
हृत्पिण्ड में सुर चुमान के समान दद बाय हाथक
के साथ हाथ सापना और सुन्न पडजाग अश्रमक सा
दद का धटना चन पडन के अलय बार बार जगह बदलन

औषध प्रयाग ।—राग की तीव्रताक अनुसार
प्रत्येक घण्टे या दो घण्टे के अंतर में दवा दनी चाहिये
आराम हान पर ३४ घण्टे के अंतर में दवा द
चाहिये ।

पथ्य ।—पदल वाली साबूदाना आदि दूधका पा
देना चाहिये उपरान्त दूध आदि पुणिकर पशाय दिये
सकत हैं । प्यास बुझान के लिये ठण्डा पाना पान
दना चाहिये ।

चतुर्दश अध्याय ।

श्वासयन्त्र सम्बन्धीय पीडा ।

वक्ष परीक्षा (छाती की परीक्षा) ।

मन्दरीन [देखना], स्पष्टा [गालना] मापन [नापना], श्वा-
सन [सुना] प्रीक्षण [टानना], आदि रीतियों से छाती
के भीतर के घत्र आदि की स्वाभाविक व्यवस्था की परीक्षा
की जाती है ।

मन्दरीन [स्पष्टीकरण]—इस के द्वारा छाती का
आकार धक्का, श्वास प्रश्वास और छाती पूर्ण की
व्यवस्था समझी जाती है । सुस्थ मनुष्य का छाती देखने
से यह अच्छी तरह जाना जाता है कि छाती का घाय और
दाहिने और बाएँ प्रश्वास और श्वास प्रश्वास की गति प्रायः
समानमात्र में चलता है अर्थात् श्वास का समय दोनो और समान
मात्र में उठती है और श्वास निकालने समय समान से
बैठती है । सुस्थ और अर्थात् मनुष्य का श्वास प्रति
मिनिट १६ से २० बार तक होता है । फलतः के प्रदाह
आदि रोग में इन श्वास प्रश्वास की गति भङ्ग होती है
अर्थात् कि ५० अथवा ६० बार तक हो जाता है । देखने
से श्वासच्छेद रोग बचने का (अर्थात् समान छाती)
और रीति इतना जाना चाहिए मान्य होजाती है । यह रोग
आकारों वाले रोग की मुख्यता करने पाती है ।

स्पर्श (स्पष्टीकरण)—हाथ से हाथर रीति की छाती
परिक्षा करने का नाम स्पष्ट है । छाती के मानने और
चौंटे के घाय हाथ रखकर श्वास प्रश्वास की गति
देखनी पड़ती है । जो कुछ परीक्षा करने से का रीति है

से अथवा फेंफड़ा घनीभूत [कड़ा] होने से यह शब्द पाया जाता है ।

[२] डट्टास अथवा पूर्णगमता ।—कठिना यत्र क उपर टोक्ने से यह शब्द उत्पन्न होता है । फेंफड़े में प्रदाह होने वाले रोग में यह शब्द पाया जाता है ।

[३] टिम्पोनिक अथवा ब्राध्मानिक ।—सुष्ठु वरस्था में फेंफड़ के उपर टोक्ने से यह शब्द पाया जाता है । फेंफड़ में वायु विद्यमान रहने पर यह शब्द उत्पन्न होता है ।

[४] क्रैक पाट [Crack pot sound] किसी धातु के घने हुए टूटे घरतन का टोक्ने से जो शब्द आता है यह भी ठाक उसी प्रकार है । फेंफड़े में कैविटी या गन्दर उत्पन्न होनेसे यह शब्द सुनाई पड़ता है ।

आकर्णन वा श्रवण (आस्कल्टेशन्) —रोगी की छाती

में कान लगाकर सुनने से उस परीक्षा को आकर्णन कहते हैं । कभी कभी इस परीक्षा में अनुमाना होता है इस लिये स्टेथोस्कोप (Stethoscope) नामक यंत्र द्वारा परीक्षा की जाती है । इस यंत्र की अच्छी तरह परीक्षा कर किसी अच्छे दुकानदार के महाशय पराशना चाहिये । स्टेथोस्कोप बनेक प्रकार के होते हैं, किंतु उन सबकी अरना लकड़ी अथवा धातु के घन हुए भवन अच्छा होते हैं । रोगी की मर्दी घात स्टेथोस्कोप आरतों की पराम्ना के लिये प्रत्येक महमा रोग के लिये विशेष उपयोगी होते हैं । इस परीक्षाके अनुभव का बड़ा माधश्यकता है । छाती की परीक्षा करत समय घट ध्यानस तद उद्वेक प्रकार के

शब्दों पर दृष्टि देना आवश्यक है । स्टेपस्कोपका अ
 भ्रम छाती के ऊपर धैठाया जाता है उसका दोनो भाग
 की दृष्टियों के बीच में इस प्रकार से रखना चाहिये
 कि किसी भाग उचानाचा न रहे । छाती पर स्टेपस्कोप
 को दायकर रखना उचित नहीं है । श्वास लत समय
 सब छाती की वारम्भार परीक्षा करना चाहिये । साधा
 रणत निम्नलिखित स्थानमें यन्त्रको रखकर भातरके शब्द सुना
 पडता है । कण्ठ की दृष्टी के नाच की ओर, गल की
 दृष्टियों के बीच में, हृत्पिण्ड के ऊपर नीचे और बायीं भाग,
 गज की दृष्टीके बीच के स्थान में, पाणुका दृष्टी के सामने
 और पीछे की ओर इत्यादि ।

स्टेपस्कोप द्वारा छाती की परीक्षा करने समय निम्न लिखित
 शब्द सुनाई पडते हैं —

सनारस् रड्कास वा मन् खन् शब्द ।—ब्राह्मरग्निस
 राग में श्वास प्रश्वास के समय यह सुनाई पडता है ।
 प्रायः बड़ा श्वास गलास यह उत्पन्न होता है ।

सायलण्ट रड्कास वा मनसनाहट [सय श्वास यव]
 के समान अथवा साटा इन के समान शब्द ।—
 प्रौकाइटिस, पास्फाशमा आन गगों में श्वास लत के
 समय यह शब्द सुनाई पडता है । सङ्कुचित छाती श्वास
 नला वा घन श्मभा के भातर हाकर वायु प्रवेश करने से
 यह उत्पन्न होता है ।

भ्यूकास राक्स श्लेष्मिक वा गज विमम्फाग्न के
 शब्द ।—ब्राह्मरग्निस और हिम्पीसिस राग में यथा
 श्वास नली में रक्त रदन से यह शब्द सुनाई पडता है ।
 यद्मा भाग फेफड के प्रदाह का आरोग्यावस्था में यह शब्द

बुछ बुछ सुनाइ पडता है ।

हालो ब्रॉन्कि रड्कास वा विन्वस्फोटनके समान शब्द ।—यक्ष्मा रोग में फेंफड़े में गन्धूर होने पर वा श्वास नली का फैलाव होने पर श्वास लेने और निशालन के समय यह शब्द सुना जाता है ।

क्लिपीटेशन वा केश मदनवद शब्द ।—फेंफड़े के प्रदाह आदि रोगों में श्वास लेने के समय यह सुनाइ पडता है । प्रदाह विषिष्ट वायु कोष व जार से फैलने के कारण इस प्रकार का शब्द उत्पन्न होता है । फेंफड़ के प्रदाह आदि रोग जिस समय आराम होनेको हों उस समय श्वास प्रश्वास उन से जो थोडा थोडा मुशायम सा शब्द होता है उस वा सेक्ण्डरी क्लिपीटेशन रड्कास शब्द कहते हैं ।

स्वरमद्धता ।

(होसनेस्)

स्वरमद्धता प्राय मदीं धाती व साथ उपस्थित होती हुई देखा जाता है । इस के निचाय और और अनेक राग यथा चेचक, बुद्धर खासा (घूघरा खासी) प्राङ्कासटिस, आदि का एक लक्षणस्वरूप यह देखा जाता है । स्वरमद्धता के कारण बात अस्पष्ट निकलती है और समझ नहीं पडता । मरु के भातर खुदकी खुनला वा मुर सुराइट मात्रम पडता है । कमा कमा मळ में दद भा होता है और खासी सी कभी कम आर कभी ज्यादा मात्रम हाती है ।

चिकित्सा ।—

१। सामान्य स्वरमद्धता—फाइटलेका, हायर-सल्फर, फासफोरस, कार्बो-वज ।

२ । सर्दी खासी के साथ स्वरमद्धता—पेकोनाइट, कास्टिकम, माकूरियस, ग्रायोनिवा, स्पज़िया, फासफ़ोरस, डल्नामारा ।

३ । अधिक चिल्लाना स यदि रोग हो—गायक और घम प्रचारक आदि का स्वरमद्धता—फार्स्टलैका, कास्टिकम, यैराटाकाय ।

कार्प-वेज १२,३० शक्ति ।—दीर्घस्थायी स्वरमद्धता, प्रातःकाल और सांध्य समय, घात कहनस यन्ना, चेचक उपरांत खासी और स्वरमद्धता (कैमोमिला, पलमाटिवा) ।

कास्टिकम १२,३० शक्ति ।—स्वरमद्धता, गलक भातर ककश मातुम पडना, विशेष पर प्रातःकाल क समय, कठिन स आराम्य हाने का हासन में, जब गल और छाता क भीतर दद हा ।

कैमोमिला १२ शक्ति ।—सर्दी के कारण स्वर मद्धता, गलक भीतर श्पेन्ना, विशेष कर घषों क, रागी अत्यंत बिडाघडा ।

माकूरियस ६,३० शक्ति ।—स्वरमद्ध पयम् ककश और गल क भीतर जउन और मुडमुडाहट मातुम होना, पसीन माना किन्तु कुछ धाराम न पडना ।

नदमवोमिका ६ शक्ति ।—सर्दी क कारण स्वर मद्धता, काशवद ।

पलमाटिवा ६,३० शक्ति ।—स्वरमद्धता, रमा

कारण से चित्तावर धान न वह क्षणा [फामफोरम सर्दी, सापही गीबी खासी, कफ पीठ रङ्ग वा, हरा, दुग्न्ध, प्रकृति मृदु (मुलायम), मल्लजौर महन हा में आंजा में जल भर जाने की प्रकृति ।

फामफोरम ६,६० शक्ति ।—स्वमद्रता व स्व विद्रुत, पुराना स्वमद्रता [वायुिकम], छाती के चारों ओर उकड़ जाने के समान मालुम होत और सूखी खासी ।

सलफर ३० शक्ति ।—मांस छुटने क साथ हा आवाज घट होना, स्वाधे और खिड़की मोल देने की इच्छा, गलेके नीतर सुरसुराहट मात्रम पडना, मस्तक के ऊपर गरमी माडुम पडना, क्षीण देह के लोग जो मस्तक गीचा कर चलेते हैं ।

श्रौपथ प्रयोग ।—तदन अवस्था में प्रति शुध घण्टे के अन्तर से औपथ देना चाहिय । राग पुराना होने पर मात काल धार सख्या समय एक एक मात्रा औपथ देनी चाहिय ।

हृषिद्ध खासी ।

हृषिद्ध कफ ।

पूग्ग खासी के समान यह भी प्राय यान्यायस्या वा हा रोग है । भावने समय 'हृष' शब्द क समान एक प्रकार वा शब्द दाना है इसी से इस वा यह नाम पडा है । टहर टहर कर खासी वा आक्रमण गुरु दाना है । जब खासी उन्ता है तब उपरहा ऊपर आधिगिक खासा आती है । अत में या ता वैप के समान कफ निकलता है और

या एक प्रकार के गांठे घुसकने पदार्थ-का उत्पन्न होती है ।

यसके के समान यह कभी कभी बहुव्यापक रूप में फैलती हुई देखी जाती है । तब तब उन्मत्त बन्दी होता है । इस रोग का उन्मत्त क उपरान्त प्रायः नहीं होता । यह रोग बड़ा ही कष्टकर होता है क्योंकि म्रामन म्रामने रोग अटक जाने के समान होना है और मुँह छाट रगका हो उठता है । यह रोग २।३ सप्ताह मत्कर रोग की प्रकृति क अनुसार का महान तक रह सकता है । एक बार हो जाने के उपरान्त फिर यह रोग प्रायः नहीं होता ।

लक्षणा ।—पहले साधारण सर्दी के लक्षण यथा खासी बुझार सा रहना आदि के साथ उपस्थित होता है । एक सप्ताह के उपरान्त रोग के विशेष आक्षेपिक खासी के लक्षण मातुम पडने लगते हैं । गले क भीतर मुँह मुँहा हट के साथ म्रामना उठता है म्रामना आन क पहल हा रघों का मातुम जातना है और यह कुछ मन्त्रु जाता है पाम का काह खास का दाव उता है म्रामने समय आस भीर मुँह गले अथवा नासक रण क हावने है आसों एसा मातुम पडता है म्रामों बाहर निकल पड़ेगा और आसों में पाना निकलता है । इस समय रोग की घुरत द्धने म वास्तव में मय हाता है, एसा मातुम हाता है म्रामों रोग अटक क प्रायः निकल जायेंग । खासी बन्द होने पर एसा मातुम हाता है म्रामों रोग को निर्मा प्रचार का रोग ही नहीं है । कभी कभी उल्टा होती है । बार बार उत्पन्न हाता म और खासी क कष्ट म वास्तव बहुत हा दुखल और रोग आर हाताता है । धुरी खासी

।। सांघानिक होने है यह पैसी नदी दाता, किन्तु
 लुप्त बन उमर और वम नार वषों का मर्दी के
 तों में यह भासी दाते स पास्य में भाग्यदा वा
 वय है ।

चिकित्सा ।—

- १। प्रथम श्वर भादि में—पेवानाइट, बेलहाजा, बाली
 ह्योड, इत्यादि सदी की सय भीषण हीनामी है ।
- २। शमी की बड़ी दुरि हालत में—डोमेरा प्रापोमिया,
 रोमिला, इपीबा, नकसचामिद्या, पेंटिमटाट ।
- ३। पेट में यदि दाव रहे तो—इपाका पल्साडिला,
 टिमटाट ।
- ४। यदि दापट भाते ही तो—कृम, बेन्डेना, मिना,
 शियम ।

एकोनाईट ३, ६ शक्ति ।—रोग के शासन में
 व श्वर, लुप्ता भासी गले का दर भादि हो, बल्ल
 लक्ष भासी व समय ही गल को दाप से दधाना हो,
 तों बर्त रर होना है बल्ल्य पबराइट, बदेनी और
 बल्लक ।

आसैनिक ६, ३० शक्ति ।—मालम दुदना
 तीर ददा और लक्ष्म्य बल्ल्य लल्ल दर दर दादा
 नैदा दना दना हो परम बल्ल्य में बल्ल्य लल्ल है
 तकि को शिष्य दर भाषीगत के दर बल्ल्य ।

बेलेडोना ३, ६ शक्ति ।—दर दर भासी श्वर,
 (१६)

रात को उठना, प्रत्यक्ष चार घासों के समय बालक का चहरे लाल रंग का हो उठना हो [नीले रंग का होना इषीका के लक्षण हैं], दोनों आँखें सूजी हुए और ठाढ़, नाक से रून निकलना ।

त्रायोनिया ३, ६ शक्ति ।—बायी का माक्रमण

प्रधानतः सञ्जा के समय या रात्रि में अथवा खाने पान के उपरान्त दल्टा होने के साथ ही आरम्भ हो, कफ उठना हो, खासने से खानी में दर्द मालूम हो, मल कडा अथवा कृम, अत्यन्त चिडचिडापन, होट सूजे और फटे हुए ।

कैमोमिला १२ शक्ति ।—सूखी खासी, बच्चे का

बहुत ही रुग्ण आना हो सजदा गोदा में खेकर फिंता पड़ना हा हरा और पतला मल सडी हुए बद्दू कपड में गरम पमाना ।

सिना ६, ३० शक्ति ।—खासते खासते अचानक

बालक कडा हावाय सामन क उपरान्त ही गन्धे से लहर पेट तक गडगडाहट का शब्द दौडान से पान करने से और हंसन न खासी का उठना चहरे की रंग बदला हुए और मनों क घाँगे और काली रेगठ, छमि के लक्षण यथा नाक सुपेना दान किडकिडाना इत्यादि ।

इषीका ३, ६ शक्ति ।—जमा नामी निमसे दम

अबट जाता हा बालक कडा और चहरे नीले रंगका

ने उठे, ऐसा मालूम हो मानो छाती में कफ जम रहा है किन्तु
 कफने से नहीं निकलता, (पैटिम टाट) । घासनसे सूखी
 उलटी हो, डबधार आये और श्लेष्मा की उलटी हो ।

मार्कुरियस ६ शक्ति ।—घासी केवल रात्रि में
 प्रथया । दिन में हो, दोषार आक्रमण हो, एक बार आक्रमण
 होने के उपरान्त शीघ्रही फिर आक्रमण हो किन्तु दोनों
 के बीच में कुछ समय अवसर रहता हो, उलटी होने के
 समय नाक और मुहसे रक्त याद्वर हो, रात्र को बहुत
 पसोने जाना ।

नमसत्रोमिका ६, ३० शक्ति ।—सूखी घासी,
 प्रातःकाल के समय में थडना, घासनने समय बहरा नीली
 रक्तवत्ता होना, नाक और मुहस रून निकलना, सूखी उलटी,
 उलटी होना और कफ, घासी उठने समय नाभिसे
 स्थान में दर्द होना मानो पट्टपर टुकड़े टुकड़े होजायेंगे ।
 पैलापैथिस भौग्य सेवन करन क घासी यह औषध
 विरुध उपकार दिखलाती है ।

पल्लसाटिला ६ शक्ति ।—प्रारम्भ से ही
 घासी के साथ अधिक कफ निकलना बार बार श्लेष्मा
 अथवा खाये हुए पदार्थ की उलटी हाथ उदरामय, विनेय
 कर रात्रि में, गरम मखान के भीतर सर्सी सी लगना,
 प्रकृति मृदु और शक्ति ।

ऐन्टिम टार्ट ३, ६ शक्ति ।—जाना से पहिल ही
 बालक रा उठे, अथवा स्नान पाने के बाद ही घासी प्रपामित

हो, गले में और छाती में एक घड़घड़ाना, ऐसा मातुम हा माना सब में इल्मा मरा है किन्तु सासने से नहीं निकलना (इपीका), जी मिचलाना और उल्टी, उस के साथही कपाल में ठण्डा पसीनों, निद्रालुता ।

श्रौषध प्रयोग ।—भारम्भ में दिन में ३।४ बार श्रौषध देनाही यथेष्ट है । यदि आग्नेयिक छाती दिखलाई पड़े और बढने लग तो २।३ घण्टे अंतर से भी श्रौषध श जासका है । भारोग्य होने के समय दिन में २।३ बार श्रौषध दी जासकी है ।

सहकारी उपाय ।—बालक को क्रोधित न करना अथवा धमकाना नहीं चाहिये । क्योंकि अनेक समय प्रयत्नमायेय यथा दुःख क्रोध आदि के कारण सासा बार बार उठती है । बालक का सदा मावभारी के साथ यत्न रचना चाहिये क्योंकि राभी उठते क साथ हा गादा में लेकर सावधानी के साथ बैठाना चाहिये । यदि जर नहो तो मकानके अंदर दरवाज मिडका सब बन्दकर बालकों की छाती और पीठमें गरम सरसो क तलकी मालिश करनी चाहिये । सदीं खगना निषिद्ध है । यदि बालक बहुत कमचार न हो गया हो और सासा पुराना पडगयी होतो धाड गरम पानी से स्नान कराना सुरा नहीं है । गरम पानी में फ्लानेट भिगोकर छाती और पाठका सक करना अच्छा है ।

पथ्य ।—बार बार थोडा खिगना अच्छा है किन्तु एक साथ अधिक खिडा देना अन्याय है । सहज में पचने

थाले पदार्थों के सिवाय और कुछ भी नहीं देना चाहिये । यदि बालक दूध पीता होतो माता को भी यही सावधानी से रहना चाहिये ।

सर्दी खासी ।

(पालभोनारी कैटर)

सर्दी ज्वर और सर्दी खासी ये इतने साधारण रोग हैं कि इनका विवरण लिखना निम्नप्रायः मालूम पड़ता है । छींक आना, नाकसे पानीके समान निकलना आंखसे जल गिरना, घांटा घोंडा सिरदर्द, सर्दी सी लगना और ज्वर इत्यादि इसके प्राथमिक लक्षण हैं । जैसे जैसे रोग बढ़ता जाता है वैसे ही गलेक नीचे जलन और सुरसुराहट मालूम होता है । पहल खासी मूत्री रहता है फिर कफ निकलने लगता है । पहले कफ सफेद रहता है पीछे गाढ़ा और पीले रंगका हो जाता है । सब शरीर में दर्द और थालस्य मालूम होता है । जो खासी साधारण रहती है वह प्रमशः बढ़ती जाती है, छाती में दर्द मालूम होता है, खासते समय दर्द आना मालूम होता है, सांस लेते समय कष्ट मालूम होता है, कफ और भी अधिक निकलने लगता है और रङ्ग कुछ हरा अथवा कुछ पीला होता है । कभी कभी यह दुग्ध युक्त भी होता है, जीम मैला, मुहका घुरा स्वाद, भूष की कमी आदि सब लक्षण दिखलाई देते हैं ।

कभी कभी सर्दी खासी भी बहुधापक अथवा एपी डेमिक रूप में होते हुए दिखलाई पड़ती है । उस समय

उपर्यन्त सब लक्षण और भी प्रबल होताते हैं। इसी रोगी डेमिक सर्दी ज्वर को इफ्लूएन्जा कहते हैं।

चिकित्सा।—ऐकोनाइट ३-६ शक्ति।—

सर्दी की प्रथमायुष्या में कायदा करना है। विशेष कर यदि नुफ़ और टंडी हवा लगने के कारण सर्दी हो। सूखा और गरम शरार, बेचबुआ कम्प और उसाप, इस के साथ ही अत्यन्त ध्यास, गले के भीतर सुड सुड और बरू बरू शब्द व समान खासी, छाती में सुर शुभान के समान दद, उस से सांस लेने में कष्ट होना [प्रायो निया], मय, घबराहट और अत्यन्त बचैनी।

बेलेहोना ३, ६ शक्ति।—लपकन के साथ सिर दद, छाब चहरा, गले में दद, गल के भीतर सुधी और सुजन सूधी और बायडे पाली खासी साथ ही गड और छाती के भीतर सुड सुड मायूम होना [प्रायोनिया], खासत में दद मायूम होना इसी से रोगी खासी को दाबने की काछिष्ट कर, खानने क उपरान्त पालक रोगी हो सन्ध्या समय बचना।

प्रायोनिया ३, ६ शक्ति।—सूधी मयवा ठर खासी और छातीमें सुर शुभानेके समान दद, सांस छन और खांसने समय छाती में सुर शुभाने व समान दद [देहो नाए बेहना], माध में इनन छात्र से दद होना हो कि माधो मयक वग जना है, दिन्त से बचना (बर होना), क ठबद्धता, रोगी बहुत ही विह्विष्ट होना (वैमानिष्टा, कसबोमिष्टा), जगजग के समय बचना।

डल्कामारा ३ शक्ति ।—भीगने से अथवा गीले

स्थान में रहने से यदि रोग हो, अस्मद्धता और गीला खाती, ठंडी हवा लगनेही से अथवा धरसाती हवा से बढना, सर्दी लगने से उदरामय ।

हीपर सलफर ६, १२ शक्ति ।—येसा मानुस हो

कि गठ में वाटा छिद गया है, अस्मद्ध के साथ खाती, बर पतला और बहुत, मानो श्वास रोघ करता है, देखा बोई अथ उठ होने से ही खाती होना (स्वप्न) ।

इपीका ३, ६ शक्ति ।—नाक बन्द होना, घुपने

की शक्ति मिथुन (पल्लवित्ता), सांस रोबने वाली खाती, सास लेने और निकालने से गल के भीतर घट घट करना बालों को घांसने के समय मानो दम बटव जाता है और मुद की लाल रगत होशारी है। खाती पर येसा मानुस हो मानो बर जम रहा है किन्तु घांसने से नहीं निकलना (पेटिम टाट) जो निकलना और रोध्या की उल्टी होना ।

मार्कुरियस वाइघन ६ शक्ति ।—येपांडीमिक सर्दी

उदर, नाक से ज्ञान पैदा करने वाली सर्दी के समान निकलना मछे में दद, निगलने में बटव सुखी खाती, येसा मानुस हो मानो खाती के भीतर शुद्धी होकर है, साथ ही छात्रो और कमर में दद, खाती का रात्रि में और बर काबद में मोन में बढना सर्दी और सर्दी दिहो हुई मानुस होना, अधिक पतला माना किन्तु उघ

से कुछ आराम मानुम न होना, सहज ही सर्दी लग जाना [हीपरसल्फर] ।

नक्सवोमिका ई, ३० शक्ति ।—ज्वर आता और सर्दी सी खाना कपाल में दूद, दिन में नाक बहना कि तु रात्रि का बन्द हाजाना सूखी खासी और सिर दर्द, ऐसा मानुम हाता मानो माया फट जायेगा, गिरन से, बात कहन से मयया चिन्ता करने में खार्सी बढना, कर्म, मल कठिन और कष्ट से निकलना मत्यन्त विडम्बित और मजल रहन का इच्छा, मान काल क समय सर्दी लक्षणों का बढना ।

पल्लसाटिला ई, ३० शक्ति ।—माथे की सर्दी, किसी घात्र का छार न आना और किसी की मय न आना, साथ हा इन क सर्दी एमी गुरकी मानुम हो माना गल क भीतर म खाल डयल गई, साथ ही इस क स्वरमहता (नक्सवोमिका), पतली खासा बरु निकलना खान क उपरान्त रात्रि में सूना खासी, उच्छर घैट जाने से आगम मानुम बढना, छाती जकड़ी सी मानुम होना, गरम मजान में मा सर्दी सी लगना, सम्भवा समय इन सब लक्षणों का बढना । छात्र प्रकृति क मनुष्य जो सामान्य कारण से ही रोवे मयया कुछ प्रकाशित करे इच्छा लिये बंद औषध विशेष उपकारी है ।

सल्फर ई, ३० शक्ति —मदी और नादम मानुम निकलना हा खार और मयनेहा शक्ति बिल्कुल ही न हा , बरु रमीतर बरु मयनेहा घड्यहागाहा, खाली

मान बाल के समय अधिक हो, सहज ही में सर्दी लग जाये ॥ दुषण पतले शरीर क मनुष्य जा माया नीचा कर चलते हैं उनक लिये यह औषध अत्यन्त उपकारी है ।

गौप्य प्रयोग ।—जब तक आराम न हो ३४ घण्टे के अन्तर से औषध देना चाहिये ।

सहकारी उपाय ।—यदि छाता में कफ जम जाने के कारण कष्ट हो तो छाती में सरसों का तेल गरम कर उससे मालिश करनेसे और उपरांत गरम पाना से भेकने से कफ कुछ मुलायम हो जाता है और उस कष्ट का कमा एयम् आराम मातुम पड़ता है । यदि ज्वर और छाताका कर्ष रोग न होतो स्नान करने से आराम ही होता है कुछ नुस्खान नहीं दिला ।

पष्टम ।—यदि ज्वरसा मालुम हो तो सायूदाना और माली उपरांत मूजा का रोटी । सर्दी खासी में दूध और मीठा कितना कम पाया जायेगा उतना ही अच्छा है ।

खासी वा उरकाश ।

(कफ)

केंफडे से आया क साध और जार स वायु निज लन का नामही आमा है । खासीको एक ही रोग नहीं कह सकते यह बिसा रागका एक लक्षण मात्र है । खासी दो प्रकार होता है ।
(१) तख्क अथवा सरस खासी जिस में कफ निजलता हो ।
(२) सूखी खासा अथवा जिसमें कफ न निजलता हो ।

बिसी पीडा क कारण केंफडे और आस नली में रुग्णा

१२। यत्राप के साथ खासी—नक्षत्रपोषिका, हीपर सलपर ।

१३। उल्डी के साथ खासा—रूपीका, पेंटिम टार्ड, डोमरा, धरुलटिंग ।

१४। लून गोरे के साथ खासी—रूपीका, आर्निका, फेरन, सलपर ।

१५। सरमद्र के साथ खासा—उल्सीमीनम, रगडिया, रामपारम, बाब-बेज, वास्टिबम, हीपर-सलपर ।

एकोनार्डिट ३, ६ शक्ति ।—बड़ी तेज सुधी खासी बरुट वा मला में सुडसुडाइट दानेज कारण उठती हो, धार वह खासी जो पानोपानि स तमारू पीन र बौर दानि में बडती हो वेमे मनुष्य वा खासा जिसका धानु रक्त प्रधात हो, पधिम की टर्डी हवा लगवमे खासा ।

जामेनिक ६, ३० शक्ति ।—सुधी खासी, गन्धक के धूरेके कारण उल्लस हुं हो, उससे हमभा सुत्ता हो खासी हो किन्तु कन बहुत कम धौर कष्टक साथ निष्कलता हो बधा कला उममे सुत्ता होता रहताहो, स्वाम बरु मातृन दानेज विचेपेहर मीडा बरुनमे, घबराहट धरना ।

वेलेजोता ३, ६ शक्ति ।—सुधी खासी खासी कासी में बरु दिने सुन्न र लन उना में लडरुन र बरु स लने में होत हो खासा मातृन हुं हो कन में सुव कलता हो कन रर है कन में बरुपे सुडसुडा बरुन हो - र हरकट क मर की रकटा हो, बरुन हाक गन्धक धार मर दर ।

वायोनिषा ३, ६ शक्ति ।—गुनी शोभा और उलटी, रात्रि के समय विछोने में लटने से कांसा, बाधा के कारण रोगी का उठ कर बैठना पड़ श्वासन में मरण गहरा श्वास लन में अथवा निश्वासन में छाती में सुनुमाने कासा इव श्वासन से ऐसा मालूम हो माने मरण और छाती पड़ जायगी सूखा कठिन मल, अत्यन्त विडचिडावन और पाडा सी बाध में कश्चिन हा उडता ।

कैशरेणिया १२, ३० शक्ति ।—गुनी शोभा विछन कर मध्या के समय और साधारण के बाद प्रातः का में शोभा उम समय पाल रोग का कक निश्चयता सौंठ से ऊपर चटन में हाव उडता एभी कारण से थट जाना पर पैर टह और गाए ।

काय-वेज १२ ३० शक्ति ।—गुषा शोभा, कक वाए शक्ति मयथा उवत र मय / शोभा उम से ईडे रग का मयत (नकलता) मल काए क मययहा पुगरी गुषा शोभा ।

काण्टिकम १२ ३० शक्ति ।—मयरा मल में एणगुशाट्ट हाकर मूत्र कास मध्या के समय मणी मल मल कडन टहा मल पन से कम हावा मयत श्वासन इम मूत्र मल मूत्र निश्चय जाना मयमपुना विचन कर मल काण्ट के मयय ।

कैमोमिसा ६, १३ शक्ति ।—गुनी मल गुणगुनी क मय मय रति में कडन मय मल हि २६ ६

हालत में भी, बिठे पर चढ़ो को, एक कापटी खाल, दूसरी कनपटी एकदूस, रागी मत्स्यत बिडबिडा हो, शिगावार के साथ लोगों की बात का जवाब न देसकता हो बच्चों को बहुत ही क्लार्, सघेदा गोदी में घट पर घुसना चाहे ।

सोना ६,३० शक्ति ।—जिन बच्चोंके पेटमें काडे हों उनको सूखी आक्षेपिक खासी, बालक चम उठनाहो, ऐसा हो मानों हम अटक जानाहो, खासती हो और उधकाइ लेता हो मानों गलेके भीतर कुछ अटक रहाहो, नाक खुलना और खुलाना, पेशाब को घाडा हेर रख दनस दुधके समान सफ़द होना ।

हीपर-सलफर १२,३० शक्ति ।—खुर घुराहट के समान खासी भीर बापु नलेके भीतर थडथड शब्द होना, थडथड शब्द के साथ भास बन्द करने वाली खासा, रात्रि को आधीरात के उतराठ बढ़ना, सूखा, स्वग्मह के साथ खासी घात काल के समय बढ़ना, शरीर उघादनेकी इच्छा न करना, शरीर में सामान्य सर्दी लगन हाम खासी बढ़ना ।

हायोसापेस ३,६ शक्ति ।—दुम आक्षेपिक खासी बिशय पर रात्रिमें और सोकर उठ बैठने में आराम माहून जाना चढ़का रडत नाहा नाली, सघ पट्टी का फडफडा आर अकहना, हिस्टारिया रागमसुन स्त्री और बालकोंके बिषे थड मत्स्यत उपकारी है ।

हो माथा पट्ट जायेगा किन्ना ' पाशादाय में दई, बौद्धपद्म, मउ शूद्रत, बटिम और कष्ट के साथ निकले ।

फासफोरस ६, ३० शक्ति ।—उद्यस्वर से पढ़ने से, बोलने में हसन से, अथवा जल आदि पीने से गले और छाती के भीतर सुडसुडाहट के साथ सूखी खासी वा उद्भ्रम होना, छाती अकड़ी । दुई और सम्झा के समय सूखी, सुडसुडाहट के साथ खासी (फ्लूसाटिला और सल्फर), मल लम्बा, पतला, बटिम और कष्ट के साथ निकलता है । यह औषध लम्बे पतले और परमा दूषित मनुष्यों के लिये अधिक उपयोग है ।

फ्लूसाटिला ६ शक्ति ।—रात्रि के समय सूखी खासी, विज्ञाने पर उठ कर बैठ ज्ञान से आराम मान्दुम हो (दायासायमम), सख्त खासी, पीला दूध अथवा कष्टया कष्ट मदुर्दी में निकलता हो, प्राण वायु के समय खासी, उस समय पीला, नमकीन, कष्टया और विचित्र उपद्रव करने वाला कष्ट निकलता हो, फासी बसा बहरी मर होजाती हो, सम्झा अथवा तागरे परस्परमनव लक्षण पड़त हों ।

सलफर ६, ३० शक्ति ।—सूखी खासी और गले के भीतर सुर्दी और स्वर्त्मन मरल खासी, दूध दूध और मीठ मीठे खाद वा देला उला कफ निकलताहो, छाती के भीतर अनिश्चय रूपमा घट घट करवादी प्राण वायु के समय खासी का बहना उत्तर पर न टिकने के लक्षण मर । दुई खाउ उद्यन्ती हो और मनेक प्रकार के बम रोग । दुबल पतले आदिनिषों के शिव या मरुफ

नीचा कर के चलत हैं ।

एंटिम टार्ट ३,६ शक्ति ।—सरल कामा किन्तु
सोमनभ कक न निकलताहा घड घड शब्द के साथ मन्ना
गदरा सोमी, रात्रिका बन्ना आर इसक साथ दम भरइत
क समान मादूम हाता एसा मातुम होकि गलक मानर
कक भरइहा दे किन्तु निकलता नहा [एगीना क समान],
उपकार माना आर बाधक परिणाममें मृग्मा की उल्लो
हाता रात १२म व्यास ।

पेसड नाईट्रिक ६ शक्ति ।—पुरानी बांसी, मारए
भीर दूगलता उम्माद भीर उद्यमहीन, बाणवद रागी
दुबडा हाजाय भून न रह आहार क उपरान्त पूना
मादूम हा वाकाशयमें २१ दिन में आसी अधिक् ।

गल्लुमिना २२ शक्ति ।—जाग लटक मान म
बांसा गज्ज २६ भाग २६ का छग हाजाता ।

कायियम ६ शक्ति ।—कमा कमा गुखा बांसे
कामा क वाण्ट गज्ज मानर मृग्मही कामग बालनप
भीर हासन स आ ११ बन्ना बन वादक बांसा ।

टूप्रम ६,२२ शक्ति ।—स मन क उपरान्त रती
कान्तिना क हाजा गज्ज वेत दे बांसा कम उर्न ६
आन्दो-क कामी तथा दमक साथ बांसा हाजा ।

टोमेगा ३,२२ शक्ति ।—उपहार मगवा उर्न
क साथ म्मपदेक म्मपदक बांसे वायका वृद्धि करे
करी म्मपका दम मी रम्पदे, कक कक बन् बांसी का

पिट [दौडा] मधवा आक्रमण आये, सोनेसे और रात्रिमें अत्यन्त घृष्टि हो बेचक के उपगत आक्षेपिक खासी में यह औषध उत्तम है। उलटीके साथ सूखी खासी में यह औषध अत्यन्त उपकारी है।

स्टानम १२,३० शक्ति ।—पुरानी सरल खासी अधिक और दूरा, मीठ स्वादपाला मवाद व समान मृग्मा निकलता हो, रात्रि के समय पमीना आये।

लाइकोपोडियम १२,३० शक्ति ।—पुरानी खासी, प्रातःकाल सूखी खासा, दिन में कफ निकल रात्रि में कष्ट हो, कफ नमकीन हो, गाढ़ा, पाला और मवाद व समान मफल, ठंडी चीन खाने से खासी हो, सामान्य आहार नै ही पेट भर मालूम हो, पेट में वायु, तीसरे पहर ४ घंटे से ८ घंटे तक खासी अधिक।

कालीवाइक्रामिक ६ शक्ति ।—साई साई शब्द, चयकाद, ऐसा दृष्टशर कफ निकले कि निसर्गो आचने से रस्ती के समान पैर तक लम्बा होजाये। घासनेसे छाती से पीट तक दरद मातुम हो।

त्रौपध प्रयोग ।—यदि खासी प्रचल होतो २ । ३ घट के अंतर हर पहर एक मात्रा औषध दनी चाहिये। यदि रोग पहले की मृग्मा कम प्रचल हो मधवा आक्रमण हो साथ तो दिन व नीचर २ । ३ मात्रा औषध घयेष्ट है। पुरानी खासी में दिन में दो बार औषध दनी चाहिये।

से रक्त गिरता है तब राली के साथ रून का छँटा दिखलाई पड़ता है। यह रून कभी उज्जल लाल रंग का होता है और कभी काँडा सा कभी पतला और कभी जमा हुआ होता है। इस प्रकार सामान्य रून गिरने को रक्त निष्ठीवन कहते हैं यह सहजही औषध देन से धाराम होजाता है। किन्तु जब कहीं धमनी टूट जाती है तब नाक और मुँह से रून निकलने लगता है और बहुत ही थोड़ा समय में यकृत फाटने व समान बहुत सा रक्त निश्चलता है जिससे देह पर मयभीत और चमकित होना पड़ता है। इसीको फेंफडा से रक्तघ्राव कहते हैं। इस प्रकार रक्तघ्राव अति साधातिक्र होता है।

यन्माकाश बहुतही साधातिक्र रोग होता है, निष्ठीवन और फेंफडे का रक्तघ्राव अधिकतर इसी प्राणनाशक रोग के साथ हुआ करताहै। फेंफडस रून निश्चलता देख कर पहलही यक्ष्मा छात्री की बात मनमें उद्भू होती है।

कारणा ।—यन्मा छासा व भिषाय धौरमी अनेक कारणोंसे फेंफडस रक्त घ्राव हा सकता है यथा अत्यन्त शरीरिक परिश्रम बहुत भारा चीजका उठाना यत्रामीर वा खापाक शत्रु यान्त्रिक य इ हानसे शर के साथ फूँक दकर यामरा यत्राने म और रूँद जाक साय] घात करन स इत्यादि ।

चिकित्सा ।—एकोनाईट ३, ६ शक्ति ।—
रामाकमण क पहल छात्री में पूण और जलन व माघ इद

मालूम होना, दिन घटकना, घबराहट और घबेरी, अत्यन्त भय और मानसिक यत्रणा ।

आर्निका ६,३० शक्ति ।—गिर पडनम अथवा और किमी कारणस हाता और पीठ में चोट लगनक कारण, कालेसे रदुका और जमा हुआ गटे दार सूत गिरना, छाया क भातर बाच में सुडसुडाहट आर दद, कुचल जान से जैसा होताहै खानत समय टीक इसी प्रकारका कष्ट हाना, रोगा जिस विस्तरपर सात्रार इसका बहुत हा बडा मालूम पडता ।

बेलेडोना ३,६ शक्ति ।—छाती और माथेमें गूर आना, छाती में सुरे घुमोत क समान दद मालूम हाना हिलारसे बडना माथा हिलानेस अथवा हिलानेक उपरात उटनेस सिर घुमना चलक भातर अत्यन्त सुडसुडाहटक साथ साथी आर गूर मिगहुआ नेडधमा निकलना ।

चायना ६,३० शक्ति ।—मस्यत रक्तस्राव हान से बान के भीतर मों मों गन्द हाना और घडर से आना टाक पकडा समय पर रक्तस्राव हा हर नामर दिन यन्ता, कमजोर बरन वाला रानका पमाना । अधिक रक्त स्राव होनेके उपरात नाश दुराग आशा क आग अथकार पडना, शरीर ठण्डा रहना भादि लक्षण यदि उपस्थित हों तो यह औषध फायदा करता है ।

फेरम ६,३० शक्ति ।—रक्त स्राव और छाती के अनेक स्थानों में घाहा दर टहनवाला दद घारे भीर पैदल चलनम आशम [मनि सामान्य हिंडन सुग्ने से बडना इपाका]

दोनों बन्धों के बीच में दृढ़ और रक्त प्राय, सख्त उजले लाल रंग का गुँगा गिरना, दिल घबहना आर ध्यास बन्ध, अति सामान्य परिधन या मासिक धावन सहो घटका उख हा उठना ।

हायोसायमस ३,६६ शक्ति ।—एक प्रायक पहिल

गुँगा घासी, बिनापकर साधिके समय, उसले रोगी को उठकर बैठजाना पड, सोत सोते पार बाह अचानक निद्रा मड्ड हागा, चहुरा लाल, दोना घासी स टवटवी बाधकर द्यता गण हरिहा पवहा स्थान पर जमजागा, सब रोगी बहुत पडा दाधना, धारदार मयन हाथ की ओर द्यता बसो बि हाथ बहुत पडा दिखलाइ हता है ।

फामफोरस ३०,२०० शक्ति ।—जानी जवना हु

माजुम हा और गुँगा घासा, अतु बगद होजाय धीर पमव बरत में गुदन गुन निचलना [इस अथना में कामेनेक प्राये निपा, और पलमाटिला मा उपचार है] परमादापमन धातु ।

गुलमाटिला ।—बहमाध्य धारी प्राय धाग

धीर लहरा (उख ग्राह रड्डा—दधानाट, दलजमा रकषण) सहा घासी गरम मयन में बरी माजु हाग आ निचलना आर पादाय म नर में धा माजुम पडना बवत्त टवरी हवा हा रड्डा बरना गर मयन क अंतर द्यम बरना रड्डायाय बगद हाग बरना बर होना ।

रस्टम ६,३० शक्ति ।—गुँगी घासी, माजुम

मानों सामनेसे छाती के भीतर कुछ टुट जायेगा, उबले छाल रक्त रक्त स्राव (पल्माटिला), छाती के भीतर कुछकुड़ाइट दानेस खाली उठना, जोरसे कोह मारा चात्र उठान में, कार बहुत ऊंची यस्तु लनेके लिये दानो हाथ पूर ऊंचे करने के कारण रक्तस्राव हो तो यह औषध देनी चाहिये ।

औषध प्रयोग ।—यदि रोग प्रयत्न हो तो जब तक रक्तस्राव यत्र न हो अथवा कम न हो तब तक १५।२० मिनित के अन्तर से एक एक मात्रा औषधि देनी चाहिये । राग कम होने पर २।३ घंटे के अन्तर से ।

सहकारी उपाय ।—रोगा क लिय सम्पूर्ण शाण्डिक और मानसिक विश्राम परम आवश्यक है । इस बात पर विशेष दृष्टि रखना चाहिये कि रागा का किसी प्रकार से मानसिक विकार काय अथवा दुःख न हो । यदि प्यास दाना ठंडा जल पान क लिय देना चाहिये । खाने पाने का सब यस्तु ठंडा करके देना चाहिये ।

पथ्य ।—दुग्धा और पुण्डिक माजून देना चाहिये । माकुडाना, बाली थोडा दूध सब भ घण्टा पथ्य है । मच्छा नाम और नर में पके हुए गरम पदार्थ निषिद्ध हैं । सब साग मानी घा में सब हुए देना बन्धु है ।

दग्मा ।

(एजमा ।

यह राग दखने में निरुता मयानक और रागा का

षट् देन घाला है उतना रोगी के प्राणों के विषे सशय
 जाय राग नहीं है । भ्यास षट्—भ्यास निवर्तन की अपेक्षा
 लेने में अधिक षट्—घाली, गले में सांर सांर शब्द
 हाना, छाती दबा डुर सी मालुम होना, मुह की रगत
 विगडी हुई, सब शरीर पत्तीों से तर, रोगी भ्यास लेने
 के लिये बंधे। इस रोग का चारों विशेष समय नहीं है
 किन्तु प्रायः पिछली रात में ही होता है। उस समय
 रोगी बिठौने पर से उठ बैठना है—दोनों बंध और गदन
 ऊंची होजाती है, माथे निवली हुई, नाथ पूली हुई, भ्यास
 लेने के लिये रोगी हापता रहे, इस प्रकार की षट्पर अवस्था
 घाडी दर रहे किन्वा षट्ग बर, फिर धार धीरे षट्
 निवर्तने लग जाये। श्रम्भा निवर्त जान के उपरांत रोगी का
 षट्ग कुछ मायम मादुन हाता है और साधाता है ।
 इस के साथ ज्वर नहीं रहना । इस रोग का भिन्न प्रकार
 समय की कुछ निश्चय नहीं है उसी प्रकार स्थान की भी
 निश्चय नहीं है । आ मनुष्य त्रिस स्थान में मच्छा
 रहता हा उस का उसी स्थान—में देख कर रहना
 चाहिये ।

कारण ।—प्रायः षट् रोग कुल्मस हात हुए दसा
 गया है मयत् यदि माता पिता का इमेवा रोग हातो
 पुत्र कन्या काभी हाजाता है । इसी कारण जिमा
 सिता परिषद्में षट् राग अधिक दसा जाता है ।
 त्रिमदा षट् रोग पैमूच दोष के कारण होता है
 इसी का कटिग से मायम होता है । मार जिमा
 कारण में यदि इमेवा राग उपर हाता निश्चिचित भव

धोमे आरोग्य होते हुए मयया पट्टन कुछ कायदा होने हुए दया जाता है । दमेका रोग मत्स्यग्न दुर्ध्वित्म्य रोग है । अथात इसकी चिकित्सा यही हो कठिनता स होती है ।

कार कोइ यह कहने हैं कि देहके मीनर कोइ पुराना विप रहने से दमेका रोग हाता है । कर्मी कमा चम राग यथा स्राज दाह, आम्नात इत्यादि का घातिक आपत्ति द्वारा पैठा देनसे दमा हाते हुए हमन दखा है । इस घात को यही रोग जान सके हैं जिहान धार चित्त से पराक्षा कीहै कि चमराग की चिकित्सा करने में ऊपरी लेप लगाकर बीमारी को दया देनसे मनुष्यक स्यास्य के लिये कितनी साघातिक कुरारया पैदा स जाती हैं ।

दमेक उत्तेजक कारणों में स तेज गन्धक, धूल, उत्तजक दूषित माप गन्धक का धूमा वायु परिवर्तन, अज्ञान मयया पट का दोष आदि प्रधान है ।

चिकित्सा ।—

१। पेट कूलन के कारण दमा—काय यन, चायना, सखर, नकसयामिका ।

२। मनुष्या प्रधान दमा—मार्मोनिक, कृत्रम, पलसाटिळा, स्टानन, पेटिन टाग इपीका, नकसयामिका ।

३। वायु प्रधान दमा—कैकटस, कृत्रम, इपीका, लेहामिस, लोयेक्षिया, नकसयामिका, इटा-मारिय टखिस, माम्यूकस, सलपर ।

४। श्नु दाहके साथ दमा—पलसाटिळा, कृत्रम सिपिया ।

५। दमेक आक्रमण क समय—मककूर सुधाना, इपीका,

नक्षत्रसोमिका, आर्सेनिक, मायागिवा, एन्टा, साम्बूकम ।

६। दमे वा दाप दूर करने के लिये—सैल्वेस्टिया, सल्फर, नक्षत्रसोमिका, आर्सेनिक टैबसिम, टाश्वा पोडियम ।

७। मर्दान् एगन से दमा—वेकानाइट, मायागिवा इन्डोमाग, इपीवा, आर्सेनिक ।

८। मर्दान् सैठ जान से दमा—आर्सेनिक, इपीवा, नक्षत्रसोमिका पञ्जाटिका पेटिम टाट ।

९। शर्म राम घषवा उद्भूत धैर जाने से दमा—इपाका, पञ्जाटिका, आर्सेनिक, सल्फर, वाप-धेन ।

ऐकोनाईट ३,६ शक्ति ।—श्वाम लुय वाता और वाता हो विशय कर मात समय, श्वामवष्ट गहरा श्वाम नहीं लिया जासक, आर्सेनिक रासी अत्यन्त भय और जावा घषराहाङ् मृयु भय (आर्सेनिक), रोगी यह कहता हा कि अमुक दिन मरा मृयु होगी ।

आर्सेनिक ६,३० शक्ति ।—श्वाम का बहुत आता जाता उम में श्वाम वृद्धता दद और तन्त्राङ्, १५शय कर उच्चा पर चढा में, दम अटक जाते थे समान आक्रमण हो, विनाय कर रात्रि के समय, सन्ध्या के समय और सोन पर। आर्सी बहुत घषेना और घषराहट और तन्त्रलीप इम के साथ ही मृयु भय अत्यन्त व्याप्त, बार बार थोडा थोडा पानी पीना, दम अटक जाते के भय से सो न सकना, ऐसा मनुष्य जिस के शरीर में रक्त कम हा [अर्सेनिक मन् घाल मनुष्य का चेलेडोना] ।

वेल्लेडोना ३,६ शक्ति ।—रोग वा मासमा

प्रायः शीघ्र गद्गद अथवा मग्ग्या के समर्थ हो, एसा मासुम
होति पेंफड के पदर घूट मर रही है मस्तक पीठ को
हिलान म अथवा भ्राम उद वरन म आराम, मूर्ति
और मूत्र तान्न रग म और माया मरुत सूत्री आतृणिक
मूर्ति विषय वर मात्र म विद्यावता मासुम हो किन्तु
रोगी मा म मर मरुण मर वारा मरुण्य ।

माया नया ६,१३ शक्ति ।—माया स्थिर और

रु। मा। पना रना खान कमाति पाडा मारी दिष्टने
चरन म वर मासुम हा वारम्यार मूला मारी मथरा
माया व माय डर क डर क निरुतता मायने से
अथवा मति रन म डना म मुर मा डयता मूला कर्मि
मर ।

चायना १० ३० शक्ति । तथा मासुम शक्ति रोगी

मर मायना पान उतम मर मायक ममय वदता, शीघ्र
दिन म मयन मर मर

इतिहा ३ ६ शक्ति । मयातक रूमा और उमर

सातरी रना मर म मर की मिकुडन मासुम वदता
उमर मया डरती हा म मर वदुन मरुण्य मरु
ममय मया मया डरते म मरुन म डना से मरु वरु
मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु
मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु
मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु
मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु

मूत्रम ६,१२ शक्ति ।—मूत्र प्रथम मरु मरु रूमा

अत्यन्त श्वास कष्ट और दम बन्द होनेकी भाण्डा, रात्रि को घटना, अचानक सास घटना, १ से तीन घण्टा तक रहना, फिर अचानक चला जाना, साँसोंके घड़घड़ भाँड़ि अनेक प्रकारके शब्द के साथ कष्टकर सास आना जाना । ऋतु के समय रुद्धि । बालक, हिस्टीरिया रोगी को एक भय और सर्दी के उपरांत और ऋतु के पहले उपकारी है ।

लोबेलिया इन्फ्लेटा मदर, ३शक्ति ।—सास चढ़ने के पहले समस्त शरीर, यहाँ तक कि हाथ की अंगुली से लेकर पैर का अंगुली तक कुट कुट हो, श्वास प्रश्याम उद्वेगयुक्त, लम्बा सास लेने की इच्छा, सर्दी लगाने से और गरम भोजन खाने से घटना, दम के आक्रमण के समय यह चौथे बार बार सेवन करने से घटा फायदा होता है ।

नक्सगोमिका ६, ३० शक्ति ।—परिपाक शक्ति की दुर्बलता, पाषाणपथी पृथ्वीमातृमहोगा, डकार खाने से दम माहूम होना, शत पाठ बार भोजन के उपरांत श्वास कष्ट माहूम होना, रात्रि के समय श्वास कुच्छता का आक्रमण विशेष कर आधी रात्रि के उपरांत, खासी का अधिकता और अति कष्ट के साथ दम निवृत्तना ।

साम्बूकस १x, ३x, शक्ति ।—रात्रि के समय दमे का आक्रमण उदात्त हो और रोगी अत्यन्त तटफटाप, श्वास रापक घासा, प्रायः आधी रात्रि के समय विद्येन पर सोने अथवा माया नाश करने का स रुद्धि ।

सल्फर ६, ३० शक्ति ।—पुराना दमा, निश्चिन्

इसमें अथवा मर्छा के समय दमे का आक्रमण उस स्थिति हो जाती है चारों ओर जकड़ा हुआ सा मालूम होता तथा ऐसा मालूम होता मानो श्वास के रस्ते में घूट भर रहा है, स्वरमद्धता के साथ सूखी सांसी, अथवा छाती में दद और दबाव मालूम होना के साथ साथ सांसी, रोगी बार बार दुबल होकर अस्वस्थ हाथों के ऊपर सदा गरमा मालूम हो ।

एंटिम टार्ट्रे ३, ६ शक्ति ।—इसके के साथ श्वास के और बहुत श्वास आना जाना इस स्थिति सीधा हाथ पेट रहने की इच्छा है रोगी यह श्वासता है तब मालूम हो कि छाती के भीतर रुग्णता भरती है किन्तु सामान से बिगड़ने नहीं निकलता [रक्षा का तरह] ।

विशट्टम एल्युम ६, १२ शक्ति ।—चायना सामने निक और रक्षा के उपायों में प्रायः यह दिया जाता है । बहुत ही अथवा आक्रमण उपस्थित होने मात्र मात्र और दोषों के टट्ट कपाट में रक्षा समानता । गरम समानता (कैमोमिडा) और अन्यत्र परमेश्वर सुख करने वाले उद्धारण ।

औषध प्रयोग ।—गर्भ के प्रथम दोष के लक्षण जब तक कम तथा तब तक मरे घट्ट के अन्तर्गत मरे दवा करना चाहिये कम होने पर फिर टट्ट टट्ट कर साथ ही दवा चाहिये ।

सहस्रगी उपाय ।—इसमें प्रायः का प्रचार का

होना है, एव इलेक्त्रा प्रधान और एव वायु प्रधान । इलेक्त्रा प्रधान दम में सर्दी, छान, ओस आदि भयदात है, वायु प्रधान दमेमें एक्ससमव छान, यदा तक बि दम कभी दोनो समय भी छान करना सद्य दाता है ।

निवारण का उपाय ।—रोगी का प्रति दिन टड

तल स छान करना एवम शक्ति ही एव जाय इस प्रकार का भोजन करना चाहिये । ओस, दवा और टड दवा से शरार की रक्षा करनी चाहिये । क्रिट (शीत) क समय धतूर का स्नानानियम के एव का घुन्ट बना कर पाना चाहिये, गरम पानों की भाष गर में लनी चाहिये । शार में ग्लार्डिंग पेपर मिगा कर उस को सूखा लन क उपरांत पला कर उम का धूमा लना भा अच्छा है । यदि दाता में दद होतो छाती और पीठ में फ्लानल स गरम पानों का सब दना अच्छा है । भाक्रमण के समय छाता और मरुदब्द में भमगे मरुसों क तेल में कपूर मिला कर मालिस करन में फायदा होता है । भाक्रमण के समय इपीका याधे याधे घट में दना चाहिये, यदि इस में विशेष फायदा न दाख ले भासैनिह देना चाहिये ।

दमा साघानिक रोग न हाने पर भी यह कभी कभी प्रन्धाचार और अनियम क कारण यश्मा अथवा और किमी साघानिक रोग में परिणत होजाता है । प्राङ्गुहाष्टम आदि पेंन्ट का दाव रहन पर छान, भास और टड लगना युता है ।

पद्य ।—भाजन का ओर बडी साग्धानों रक्षण

चाहिये इस विषय में गड़ बड़ी करना बहुत ही सुबर् का बात है। पट में दोष रहने के कारण प्राय रोग का धारम्भार आक्रमण हात हुए देखा गया है। पच्य हृष्या और पुष्टिकारक होना चाहिये। जिनको दूध पच आता हा व खूर दूध पीनकता है। दूध कमी ठडा नहीं पाना चाहिये । दमक रागी का शरार दुधल होने पर खीसइयास पिलकुल नहीं करना चाहिये ।

वायुनली प्रदाह ।

(ब्रोङ्काइटिस) ।

वायु गलियों की श्लैष्मिक फिलिलियों के प्रदाह का नाम ब्रोङ्काइटिस है। ब्रोङ्काइटिस दो प्रकार का होता है, एक नया और एक पुराना ।

(१) नय ब्रोङ्काइटिस के लक्षण ।—पहले सर्दी मालूम होना ज्वर स्वरभङ्गता, भ्यास नली के भीतर गुडगुनाहट, भ्यास लन और निकालने में कष्ट मालुम होना, धारम्भार कष्ट कर घासी पहल सूसी घासी हा मधवा थाडा थोडा हागदार पतला कफ निकल किन्तु पीछे बहुतसा कफ निकलता रह कमा कमी उस में खून का छीटा भी रहते हुए दसा गया है। राग जैसे जैसे बढ़ता जाता है घस हा कष्टकर लक्षण दिखलाई पड़ते जाते है । भ्यास लने और निकालने का कष्ट धीर पत्रणा घटती है, छाता एक प्रकार जकडा हुए के समान मालुम पड़ती है अथवा उस में सुकडन माडुम पड़ता है और घासते समय छाती क ऊपर का आर दद मालुम होता है। छाती के ऊपर कान लगा कर सुनने स सार्ई सार्ई और घड घड शब्द सुनाई

पड़ता है मानो सग्न वायुपथ दलेष्वा से भर रहा है
 मध्या घिर रहा है । यदि इसी अवस्था से रोग बढ़
 नहा तो श्वासवृष्ट और भी बढ़ जाता है, चहरी सूना
 हुआ और रक्तपूज, देह टपटा पसीने से भीगा हुआ और
 रोगी चाहे कमजारी के कारण हाँ चाहे अवसन्नता या
 श्वास बन्द होने के कारण मृत्यु का प्राप्त बन जाता है ।

यह रोग बचोवोही अधिक होने हुए देखा जाता है । पहले
 सामान्य सर्दीक समान मादूम होकर यहराग आरम्भ होता है
 यथा ज्वरसा हाना, दयासका ज्वरी ज्वरी चलना, सूखी सर
 मट्टक साप चाभी, भाइ गाँइ चन्द्र, पयैनी इत्यादि । श्वास
 गळीमें दर्द होनेक कारण जिनना हा मका हो पाउव चांभी
 का राह रखनेकी चेष्टा करता है और प्रत्येकवार सासनक उप
 राग्न रोता है । दूध पीन घाला पका पडे कष्टम माया दूध
 पीता है पहले राग्न मुह में देता है किन्तु उनी समय ज्वरीमें
 ओह देता है, माया हटा लेता है और इस प्रकार चिह्ना वर रोता है
 मानो उसको पहा कष्ट या यात्रणा हाता है । राग्न
 बढ़ने पर श्वास क रने सब श्वासा मे अज्जो तरह मे
 नर जाने है यहाँ में रानी शक्ति नहीं हाता कि ज्ञान मे
 इन श्वासा का निहाल वर श्वास क रन हा माप वरने
 श्वासा में श्वास बन्द हाकर बालक का प्राण नाश होजाता
 है । महा शत्रुादित्य शत्रुओं क लिये एक बहुतही साया
 निक रोग हाता है । शत्रुओं का हात पर यह रोग विहाल
 ही अवस्था धारण करता है । रोगी का शत्रुादी हाशनी
 है भार बहन लयना है जॉय सूख जाता है और मेल
 से एक जर्नी है, माया हाँव और लड हद में रूप पमीने,
 यज्ञ के भातर घट घट उग्न श्वासा निहाल टाउन हो

शक्ति न रहना, आदि लक्षणों के उपरान्त मृत्यु सब का दूर करदेती है ।

(२) पुराना ग्रौकाइटिस—यह रोग प्राय देखा जाता है । यह रोग या तो नये रोग की भांति अथवा प्रमश धरे धीरे वेमात्रुम उत्पन्न होकर मौजूद होजाता है । जब नव ग्रौकाइटिस के परवर्ती उपसर्गों की श्रुत में यह उपसर्ग होता है तो पहल रोग के बहुत से लक्षण रह जात हैं यथा सामा खरभङ्ग हसदार चुपकना कफ निकलना, घाड पारधम में श्वास कष्ट सामान्य कारण से सर्दी लग जाना, साधारण दुबलता आदि । जब यह पुरानी ग्रौकाइटिस बहुत दिन तक ठहर जाती है तब खरभग और सूना खासी, गहरी और कष्टकर खासी चिरस्वाया होजाती है ।

कारण ।—बहुत देर तक सर्दी अथवा आस लगन से अचानक गरमी से सर्दी में आने से, घूल अथवा किसा तीव्र पदार्थ की गंध लनसे शरीर का कपड आदि से ठीक तरह पर न टक रहने से, बहुत घोलन से, बकतना देने अथवा गान क उपरान्त गले और गदन में ठंड लगन से इत्यादि ।

चिकित्सा ।—१। तदन ग्रौकाइटिस—एकानाइट, बेल्लेनना, प्रायानिया फासफोरस मकयूरियस नक्सबोमिका, पलसाटिला ऐंटीम टाट ।

२। पुराना ग्रौकाइटिस ।—काय चेष आसैतिक, कैल कैरिया, लैकेसिस लाइकापाटियम स्टानम सल्फर ।

३। बालकों को रोग—एकानाइट, बलडोना, इपीका, कैमोमिषा ।

४। वृद्ध मनुष्यों को राग—पाय-चेन, हायोसायेमस, लैकसिस फासफारस, रस्टफस, सटपर ।

एकोनाईट ३, ६ शक्ति ।—रोग की प्रथमावस्था में यह औषधि अधिक व्यवहार की जाती है । शीत, ज्वर शरीर गरम और अत्यन्त बचैनी, बहुत ज्यादा सूखा खासा और पायु नला में सुडसुडाहट अत्यन्त भय और मानसिक उद्भग, सूखा किन्तु ठडी हवा के लगने से रोग होने पर ।

आसेनिक ६, ३० शक्ति ।—सूखी खासा और रस के साथ ही छाना में एसी खाचा खाची हो मानो घाव हो रहे हैं । सरल खासी किन्तु कफ निकालते में कष्ट । श्यामकण्ठ, उन के कारण उठ कर बैठे रहना पड । अत्यन्त प्रबल व्यास किन्तु घाडा घाडा पानी पीना बचैनी कमजोरी और मृत्युभय ।

वेलेडोना ३, ६ शक्ति ।—बहुरा और दोनों भाई छाल, मस्तक के भीतर अत्यन्त पूणता मात्रुम दाग, अपघा दद हाना माना फग जाता है शरीर गरम किन्तु पकीना आन वाला सा मात्रुम दा, वासुपिह रात्रा उस से खास लेने का उपाय न रहे, प्रत्यय खासा क नाक्रमण के उपरांत ही बालक चिछा कर रा उठे, नौद सी आती हो किन्तु रोगा सा न सक, भाते समय चमक उठ और उटल उठ ।

त्रायोनिया ६, १२ शक्ति ।—पटुन मास और श्याम कष्ट उमक कारण साधा होकर घेठ रहना पड सुधी खासी और छातीमें सुइ चुभोन खासा दद, प्रात काटके समय प्रबल खासी,

सामने समय मातुम होवि मानो माथा और छाती फटकर उड जावगी रोगी सम्पूर्ण खिर भावसे रहने की इच्छा न करता हो ।

कार्बो वैज १२,३० शक्ति ।—स्वरमद्र विशेषकर

संध्या के समय [प्रातः काल के समय स्वरमद्र-कास्टिकम, फास फोरस] छातामें ऐसा जलन मानो आग जलता है, अत्यंत प्रबल खासा पाला राधक समान बहुत कफ निकले । दोना बन्धों र वाचमें सुइ चुभाने क समान दद, रोगी हवा चाहता हो हरयक्त पखा करने को कहता हो ।

कास्टिकम ६,१२ शक्ति ।—स्वरमद्र और गलेक

भातर परपराहट मातुम होना विशेषकर प्रातःकाल के समय बहुत ही गुमराही खासी और गलेक भीतर घाघ स मातुम हाना सामन समय छाता क ऊपर दद और घेमातुम पशाव निकड जाना स्वरमद्र विशेषकर प्रातःकाल के समय ।

कैमोमिला ६ २१ शक्ति ।—वायुनक्ष में घडघडा

दृष्टे साथ खासा और स्वरमद्र तिस खानम केरुमा उरगा हो यदा खासा खासा मातुम होना गन्ध भातर सु सुडाहट के साथ मूखा खासा रात्रिक समय पडना, यदा तक कि निद्रितायन्मामे भा मूर्छा खासी एक कनपटा छाल और एक कनपटी रकडूष रागा बहुत हो घबेन और चिड चिडा हो और कार बात पूछनेसे थिज उठे ।

हीपरसलफर ६,१२ शक्ति ।—स्वरमद्र के साथ

सामी गलेमें घडघडाहट के साथ खासा घाड करनेवाली

छासी, भाषीरातके उपरांत घटना, श्वास प्रश्वास कष्ट दायक और साह साहसाह के साथ, सोनेसे श्वास बंद होन कासा मालूम हो ।

डुपीका ३,६ शक्ति ।—वायु नला में रुग्णा घड घड शब्द करता हो, श्वास राफन धागे खासी, श्वास प्रश्वास कष्ट साथ, छाती के भातर एसा मालूम हो कि कफ भर रहाहै किन्तु श्वासनेसे नहीं निकलता (पेटिम-श्राट क लक्षणों की तरह), बहुत जो भिचलाना आर कफ का उखटी होना ।

काली वाईक्रम ३,६ शक्ति ।—वायु नला के भीतर जलन के साथ दर्द, छासी, लमदार चुपकना कफ निकलता हो और खाँसने से रस्सीके समान पैर तक लम्बा हानाव ।

लैकेसिस १२,३० शक्ति ।—स्वरमद्ग, धर खीण और गले में सुकडन मातुम पडे, सूखी गुधराली छासी कष्ट के साथ पाला कफ निकले, गले को छूने से दर्द मालूम हो, दायने से छासी उठन लगे, नाँद के उपरांत और संध्या के समय बीमारी का धटना ।

मार्कुरियम ६,३० शक्ति ।—स्वरमद्ग और गले में दर्द, समस्त रुग्णिक विच्छिन्नो का सर्दी प्रयत्न अथ गली खासा विनायक रात्र के समय, शामने समय मानो छाता और भाषा कष्ट जात्रगा [मायातिया का तरह], रादिना और माल मे खासी का घटना (घाँस आर मान से फासफारस) पसान बाये किन्तु उन से कुछ भाराम मातुम न पड ।

नकुमजोमिका ६, १२, ३० शक्ति ।—ब्राधा रति

से मान का १२ मूला ग्रामी ग्रामी और सर दद, माग
माथा पट नागना वायातया मर्कुरियम), नाक बंद किनु
जग दिना चान भ ग मदी लगना रात्रि का ५ उत्र ६
उपरा त गेग यटा स्व भाविन कोष्ठवद् धानु ।

फामफामस ६ १२, ३० शक्ति ।—समूण मरुद

[काटेकम का तरु] गरु क मानर इनना दद कि वन
१ कदा नामर उता क सारों जार उकडा हुना सा
मात्रम १६ ग्रामा जा कफ निरुत वद भागदार हो
अथवा कुछ सुर्मी सा लिये हुए हो, बहुत जार की और
थका देनेवाला ग्रामी रागी ग्रामा का भय करता है
और जहा तक दासक खासी का दाव कर रोग का बंध
करता है ।

पलगाटिला ६ शक्ति ।—रात्रि व समय सुर्मी

ग्रामा ग्रीहीत पर उठ कर बैठने से खासा न उठ । हागे
साथेमस का तरु), सरु या तरु ग्रामी बहुत सा
पोला और हरा कफ निकरना, गरम घर में भी मरी
माहुम हना गरम और सूया शरीर किनु ग्राम
सामान्य अथवा बिलकुल हा न हो, गरम प्रकृति क
मनुष्य ।

रस्टकम ६ शक्ति ।—हमने त था गिरगत स

ग्रामी उटना शरीर में घात दाव की तरह दद, उटन क
समय अधिक गन्ध हो, [उटने क समय उपग्रम माहुम
दाता दाता प्रायानिया] रात्रि में बिदाय कर खासी रात्र क
बाद शब्द ।

स्पजिया ।—श्वामाली में अत्यन्त सुदर्शी, साथ ही स्वरभंग, गहरी साह साह शब्द के साथ धामी, सञ्घ्या व समय घृद्धि, थारी म, खकड़ी चीरने के समान श्वास व थाने जाने का शब्द, घात कहते कहते मध्या जार स पड़ते पड़ते स्वर एक एक धार विभुत हो जावे ।

सल्फर ३० शक्ति ।—धरमद्र और श्वरविट्ठ, श्वास नहीं के भीतर ऐसा सुरसुराहट मालुम हाकि कोई चीज रंगनी है सरल खाधी, गाढा कप निकलना और छाती के भीतर दद मातुम हागा, छाती में सुर घुमोने व समान दद, यह दद पाठ तक फैला हुआ, रोगी धार धार अत्र सत्र होना, छाती के भीतर सवदा घड घड शब्द पुबला पनखा मनुष्य जा मस्तक नात्रा करक चलता हा, पुरानी यामारा में अधिक फायदा करता है

ऐटिम टार्ट ६ शक्ति ।—छाती व भीतर अत्यन्त इन्फ्लामा सचय और श्वास प्रश्वास कष्टदायक, जिस समय रोगी पास ऐसा मातुम होकि न मालुम कितना कफ निकलेगा किन्तु बिल्कुल ही न निकले [इपीका का तरद] उबकाह और इन्फ्लामा का छलटी, छाती व भीतर दद मातुम होना और अत्यन्त श्वासकष्ट ।

औषध प्रयोग ।—नये रोगमें ३ घटके अन्तर स एव एक मात्रा औषध देनी चाहिये । पुराने रोग में प्रात काल और सञ्घ्या करल दोही धार दनी चाहिये ।

• **सहकारी उपाय ।** छाती में सरसों व तब की मालिस करना चाहिये, पुल्टिस या इनेल से सँक करना ।

त्रयोनिषा ६, १२ शक्ति।—सामी, कर्ण विधिषा और सुर्षी लिये हुए, अत्यन्त श्वासकष्ट, हाता माथगल में चक्कर मारने अथवा सुर शुभाने क समान रा श्वास लने निकालने और सामान्य दिलने से दूर बन्द, विरक्तु शिर माथ से भी रहना चाह कोष्ठबद्ध, गुण और कठिन मल, प्रलाप, अत्यन्त प्यास, स्वभाव में अविद्यापन।

कारि रेज १२, ३० शक्ति।—राग का दोष अरुणा में नय नाडी अत्यन्त क्षीण, जीवनी शक्ति का हास, अत्यन्त यत्न और दुबलता दिखलाई पड़ हाथ पैर आदि ठां टडा हथा चाह और बराबर पसा करने को बंद, शरार के मद्य स्त्रियों (मूत्र मूत्र कर्ण, आदि) में दुग्ध।

मूर्च्छियम ६, १२ शक्ति।—चित्त का दास मनुष्य फेफड़ का प्रदाह पाकाशय और तिल्ली क स्थान पर दहन से अत्यन्त दूर अथवा दान पर भा पमाना माथ विरक्तु उन से कुछ आराम न हा।

फामफोगम ६, १२ शक्ति।—इस राग की वर एक प्रजन शोधक ह। कवच कामफारम और प्रायश्चित्त य दा म नव हा प्रयाग करने से हमन बहुत ध शक्ति को मागम दिया है। छाती क चारों आर उच्छ्र उर क समान माटुम हाता, सुर्षी सामी कर्ण में रक्त के कवच कवच जब फेफड़ क प्रविर्तन अरु मज्जाग र और अत्यन्त श्वासकष्टना ह श्वास और दुबल मनुष्य का मद्य स्त्रियों और मुत्रा में कम निकल।

रस्टक्स ई शक्ति ।—जब सब विचार दीप दिख लाइ पड़े । रोगी कभी नौद सामें चुप होनाये और कमी एकने लगे, अत्यन्त घासी, घासते समय एना मालूम हो मानों छात्रा के भातर बुद्ध दूट जायगा, पिधाम करने में बढना, इस लिये रोगी बराबर तडपता रहे ।

एंटिम-टार्ट ई शक्ति ।—सरब घासी, ऐसा मानुग होकि बहुत सा श्पमा निकलेगा और छाती क भीतर एसा हा घड घड छद् हो विन्तु बिल्कुल बफ न निकला, अयग्न श्वासकण, यहा तक कि दम धटक जाने के समान मालूम हो, फेफड के पश्चात्त की आच्छा जी मिचलाना आर उरकार । अब सूखा खासी चली जाय और तरल साही हा दयदी यह औषध देनी चाहिये ।

विराट्टम विरिड १ शक्ति ।—प्रथमावस्थामें हा जय जाडे क माथ ज्वर हो, गाडा बडिन, पुण और तेज, छाती में बट्ट मालूम हो और रोगी बवतारह तय एकानाईटया अपेक्षा यह औषध अधिक उपकारी है ।

श्रौषध प्रयोग ।—कठिन रोगमें जब अत्यन्त तेज दद हो तय २३ घटके अन्तर से यह औषध देनी चाहिये ।

सहजारी उपाय ।—रोगी जिस मकान में हो उसमें खुब भन्ना उरह मे दना आना जाता रहनी चाहिये । अधिक श्पन्द वायु परम आवश्यकीय है । छातीपर चारों आर पुल्टिम लगानसे दद सहजहा कम होता ह और खासा सरल हो ।

है । रोगी के कमरेमें बहुत से मनुष्योंका एकत्रित होकर गडबड करना अनुचित है क्योंकि उससे रोगीकी कमरे की वायु दूषित होजाती है । रोगी के पास २।३ मनुष्य ही रहें तो ठीक है ।

फेंफड का प्रदाह आराम हो जानेपर एक वर्ष तक रोगी का आम सर्दी, आर जलस सावधान रहना चाहिए क्योंकि थोड़ा अनियम होनेपर सम्भव है कि यह रोग फिर होजाय अथवा रोग पुराना आकार धारण कर रोगी को बहुत दिन तक द । अनियम करनेसे इस रोगस पुराना बीबी और बक्का आदि अनेक कष्टदायक रोग उत्पन्न होतेहुए बच गये हैं । फेंफड के प्रदाह के उपरान्त इसका कारण मही आम सावधान रहना चाहिये । उल्ल वायु परिवर्तन, आ युक्त व्यायाम द्वारा शरीर को शुष्क और सखल रखना, प्रतिदिन स्वच्छ वायु सेवन करना, आम सर्दी और जलस शरार को यथाचित रूपसे बचना परम आवश्यक चीज है ।

पटप — सावू दाना, चाई आदि इलका पल्प ठीक है । आरोग्य होने वाला दानो थोड़ा दूध दूधिया आदि पुष्टिकारक मात्रा क्रमशः दिया जा सकताहै ।

प्लुरिसी ।

आस छेने और निच्छाछेनेका प्रथम चरण फेंफडा । छाना के भीतर एक गरमाइमें रहना है । फेंफडा एक सम्भव चर्च्ये छाल सिन्हा ने छटा रहताहै । समाधिउा के मत्र पूरा है छ । हमें छाना के प्रगत के मत्र छेने ।

पहले शीत और शून्य के साथ ज्वर आता है। अति शीघ्र ही छाती में सुर चुमाने के समान दृढ़ मालूम होता रहता है। यह दृढ़ सासनपे, श्वास देने निश्चलनम हिलने चलने में अधिक मालूम होता है। वहीं वहा अत्यंत कष्ट श्वास आती रहती है, और दर्भों कमी यामा गिल कूल नहीं रहती है। प्लूरिसी का दृढ़ गाय ही सन क निश्चल छाती के एक ओर बंधकर हाते हुए दखा जाता है।

सामान्य प्लूरिसी में भय वा कोर कारण नहीं रहता किंतु शोभी की दुर्बलता, रोग के कारण छाती के दोनों ओर आक्रमण, क्रमशः प्रबल ज्वर, प्लूरस के भीतर अधिक जड़ मन्त्र्य आदि अगुम लक्षण हैं।

चिकित्सा।—एकोनाईट ३, ६ शक्ति।—

शीत होकर ज्वर, पून और तेज नाड़ी, सूना और गरम शरीर, तबलीप से तडफुडाना, अत्यंत व्यास, चहरा लाल, तेज श्वास आना जाना, छाती में सुर चुमाने के समान दृढ़, साथही सूना धासी, दाहिना करवट लेकर सो न सकना।

मायोनिया ६, १२ शक्ति।—

सुर चुमाने के समान दृढ़, श्वास देने और अति सामान्य हिलने चलने से बटना, निर दृढ़ व्यास, घट्टन देर याद घट्टतता जल पीना कठिन और सूखा मूत्र, इधमाय में ऐसा चिड चिडापन कि घोड़ासी बात में क्रोधित हो उठे।

मर्कुरियस ६ शक्ति।—

छाती में दृढ़ और ज्वाला

आयोडियम ६'शक्ति ।—गडमाला दूषित घातु
 र अधिक समय तक टहरने वाला रोग, जब प्लूरा के
 तर अठ सन्नय हो तब स्फुफूला दूषित घातु वाले
 गों के लिये आयोडियम, एकोनाइट या ग्रायोनिया के
 साथ पर्यायक्रम से व्यवहार किये जाते हैं ।

एंटिम-टार्ट ६ शक्ति ।—खासी, गल का घंडे घंड
 रता, श्वास कष्ट, बहुत कफ निकलना और दम अटकने
 समान मालूम होना ।

फास्फोरस ६ शक्ति ।—प्लूरिसी और पॅफडे का
 दाह साथ हो, मत्पन्त दुर्बलता, मुर्छा लिये हुए कफ छाती
 कडी सी मालूम हो, दुबला मनुष्य, रोधन करने वाला दाह
 साथ साथ और हो ।

औषध प्रयोग ।—नया अवस्था में घंटे घंटे में
 औषध दीनासक्ती है, फिर फायदा दीखने पर और भी दर
 से देना चाहिये ।

सहकारी उपाय ।—रोगी के लिये सम्पूर्ण विधाम
 आवश्यक है । गूथ लेम्बी चौड़ा पुलटिस बार बार गरम
 गरम लगाना चाहिये । गरम सेक देन से फायदा होता है ।
 फ्लालेन अथवा नमक का चडी पोटाखा से सजने से फायदा
 होता है । हत्ती के धारों और फ्लालेन बाधने से आराम
 मालूम होता है ।

पश्य ।—स्वर और पॅफडे के प्रदाह का मनु
 मार ।

के हिल्ल से दद घटना, जिस ओर दर्द हो उस करघट न सो सकना, जो लोग अमिताचारी हैं और पिन की घातु अशरोग से दूषित है उन के लिये यह विशय उपकारी है।

पलमाटिला ६ शक्ति । सोते समय शरीर के एक ओर (कमर और षगल के बीच में) दद, विशेषकर रात्रिवा, दर्द एक स्थान से दूसरे स्थान में चलता फिरता रहे, सञ्जा होन के समय और बाह करघट सोने से घटना । यह औषधि स्त्री और मुलायम प्रकृति के मनुष्यों के लिये उपयोगी है।

सलफर ६, ३० शक्ति ।—सुर चुमोने के समान दर्द छाती में लेकर पीठ तक होता हो, सोने से और हाथ उठाने से घटना।

सिमिसीफ्यूगा ३ शक्ति ।—आयुश्चल पार्थ वेदना (अथात् नसों का दद और उसी से शरीर के एक धार दद) ।

रैनानकूलस ३ शक्ति ।—जरायु दोष क साथ दही पसलियेमें भीतर भीतर कमर और षगलक बीचमें दद हाना । जो रोगी दुबला पतला हो उस के लिय अधिक उपकारी है।

श्रौषध प्रयोग ।—पहले दो दो घंटे के अंतर से दवा खानी चाहिये । उपरांत दिन में ३।४ धार ।

सहकारी उपाय ।—दद के स्थान में सेक्ने से

एद कम होता है। असली सरसों के तेल की मासिष्ठ कल
के भी फायदा होता है।

पद्महवा अध्याय ।

मुह के भीतर के रोग ।

मुह का बुरा स्वाद ।

मुह का बुरा स्वाद रहना यह केवल एक लक्षण मात्र है। बहुत से रोगों में यह लक्षण स्पष्ट दिखलाई पड़ता है और इस लक्षण को देख कर प्रायः असली रोग का निर्णय किया जासकता है जैसे कड़वा स्वाद रहे तो निगर की सराबी समझना चाहिये मुह का बुरा साद, गले आदि के भीतर के स्थानाय रोग, तमसान और सग हुआ सा स्वाद हातो यदमा दाघ खट्टा स्वाद होता फल शय का दोष समझा जाता है। और यदि किसी प्रकार का स्वाद न होतो यात्रिक स्यायविक रोग समझा जाता है।

चिकित्सा ।—

१। प्रात काल के समय कड़वा स्वाद ।—प्रायोनिषा, केळ केरिया काय, मशूरियस ।

२। मीठा स्वाद ।—धलडोना, प्रायोनिषा, चायना, माकपूरियस, परसाट्टिडा ।

३। खट्टा स्वाद ।—केळकेरिया-काय, चायना, नकसयोमिका एसिड-फास्फरिक सेरपर ।

४। नमकीन स्याद् — मासेनिक, पाव-वेग, नक्सयोमिवा ।

५। मडा हुआ स्याद् ।—कैमोमिला, मरुरियर, पलसा टिला ।

६। फाका स्याद् ।—प्रायोनिया, चायना, पलसाटिला, स्ट्रफिलेमिया सल्फर ।

७। बिलकुल स्याद् । रहना ।—येलेडोना, हीपर लाइ कोपोडियम, फास्फोरस, थिराटूम ।

८। मय कडो चाँने कडयो मालूम वेनो हों ।—प्रायोनिया, बाडोसिघ, हीपर, सल्फर ।

९। घाने और पीने की सय चींने कडवा लगती हों ।—प्रायोनिया, चायना, पलसाटिला ।

१०। सय खाद्य पदार्थों में छट्टा स्याद् जाता हो ।—लाइकापोडियम - नक्सवामिवा ।

११। सय खाद्य पदार्थों में नमकीन स्याद् जाता हो ।—मासेनिक, बेलडगा, चायना, सल्फर ।

मुह में दुर्गन्ध ।

मुह में दुर्गन्ध जाता बहुत हा बुरा मान्य होना है । कमा कमी अथवा अपन को और पास बैठने वाल मनुष्य को भी अमर्य हो उठता है । अनेक कारणों से मुह में दुर्गन्ध आने लगती है उन में से दान-मष्ट हाभाना, मसूँ का रोग, दातों में मील सथय होजाना, पाकाण्य का दोष, तम्बाकू और शराय पीना, और यद्येचित रूप से दातुग पुष्ट न करना भादि प्रघात कारण २ ।

— चिकित्सा ।—उपर जा सय कारण लिख गय है

एक कम होता है। मसली चरसों के तेल की मासिष्ठ कले
के भी फायदा होता है।

पद्महा अध्याय ।

मुह के भीतर के रोग ।

मुह का बुरा स्वाद ।

मुह का बुरा स्वाद रहना यह कबल एक लक्षण मात्र
है। बहुत से रोगों में यह लक्षण स्पष्ट दिखता है परन्तु
धीरे धीरे लक्षण को देख कर प्रायः मसली रोगों का
निश्चय किया जा सकता है जैसा कबुवा स्वाद रहे तो
जिगर की मर्यादी मरभक्ती आदि मुह का बुरा स्वाद
का कारण है। अतः मुह के भीतर के रोगों, मसली और
बुरा स्वाद हानो यत्रमा दाव कदा स्वाद हाना कम
दाव का दाव समझा जाता है। अतः यदि किसी रोग
का स्वाद न हानो वाग्निक आयुषिक रोग समझा
जाता है।

चिकित्सा ।—

१। प्रातःकाल के समय कटवा स्वाद ।—प्रातः केवल
कटवा स्वाद मसली रोग ।

२। मसली स्वाद ।—वेदना, कर्षण, कर्षण, कर्षण
रोग मसली रोग ।

३। कदा स्वाद ।—दंत कर्षण-कदा कर्षण, कर्षण-
कदा कर्षण-कदा कर्षण ।

७। नमकीन स्वाद — मार्सेनिक, फाब-वेन, नक्सत्रामिका ।

८। मडा हुआ स्वाद।—कैमामिला, मूरियस, पलसा टिला ।

९। फफा स्वाद ।—प्रायेनिया, चायना, पलसाटिला, स्टफितेप्रिया सल्फर ।

१०। गिल्लु स्वाद । रहना ।—पेलेडोना, हीपर लाइ पोपोडियम, फासफोरस, गिराटम ।

११। मय कडी चाँने कडवी मालूम देना हों ।—प्रायेनिया, वाट्रोसिघ, हीपर, सल्फर ।

१२। घात और पीने की मय चाँने कडवी लगती हों ।—प्रायेनिया, चायना, पलसाटिला ।

१३। सब खाद्य पदार्थों में मट्टा स्वाद आता हो ।—टास्कापोडियम नक्सत्रामिका ।

१४। सब खाद्य पदार्थों में नमकीन स्वाद आता हो ।—मार्सेनिक, बेठडारा, चायना सल्फर ।

मुह में दुर्गन्ध ।

मुह में दुर्गन्ध आना बहुत ही बुरा माना जाता है । कभी कभी क्यथम अपने को और पान बैठने वाल मनुष्य को भी असह्य हो उठता है । अनेक कारणों से मुह में दुर्गन्ध आने लगती है उन में से दान, नष्ट हाथाना, मर्त्यों का रोग, दातों में मैत्र संचय होजाना, पाशाण्य का रोग, तम्बाकू और शराब पीना, और यद्योचित रूप से दातुन गुल्ल न करना आदि प्रधान कारण हैं ।

— चिकित्सा ।—उपर आ सब कारण लिख गये हैं

इस रोग की भिन्नता में उन्हीं सब कारणों को ध्यान देने का भिन्न भिन्न उपाय नहीं है। यदि दाँतों में छेद होगा तो भयदा और किमा प्रकार से दाँत नष्ट होगा तो और इसी कारण से मुँह में दुर्गन्ध आती हो तो किसी दाँत का डाक्टर से उस की चिकित्सा करनी चाहिये। यदि मगूढ में फाड़ा भयदा दाँत के ऊपर से मगूढ पड़ जाने आदि कारणों से मुँह में दुर्गन्ध आती हो तो उस की उपयुक्त भोजन सेवन करनी चाहिये। दाँतों पर मैल जमने का कारण यदि मुँह में दुर्गन्ध होना साधारणतया तो उस मैल का छुटा देना चाहिये। दाँतों को स्वच्छ रखे जानें उनका ही भक्षण है, इस विधि प्रति दिन दाँतों को भक्षण करना चाहिये। भोजन का उपयुक्त प्रयोग यदि दाँतों का भक्षण न करे तो दाँतों का भक्षण ही उपाय है जो दाँतों को नष्ट करे। उनका मुँह की गन्ध किसी प्रकार की दाँतों की नष्ट नहीं है। यदि दाँतों का दाँत से मुँह में दुर्गन्ध आता उपयुक्त भोजन सेवन करनी चाहिये।

कवल प्रातःकाल के समय मुँह में दुर्गन्ध आती—नवमने मित्रा, साधुश्रिया ।

केवल प्रातःकाल और रात्रि के समय—वृद्धमात्रिका ।

भोजन का उपयुक्त—वैद्यमित्रा साधुश्रिया ।

दाँतों के भक्षण के कारण से—बाधवेद, ईश वैद्यमित्रा साधुश्रिया ।

मुँह का ।

(म्योमेट्रिटिस—मुँह में घाव या छाले)

मुँह में घाव का लक्षण होता है—

अथवा शिष्ट है। भ्रूज वम लगाना, बर्फील, ज्वर यदि से
 मुद में पाद या छाते होजाते हैं। मगूने अथवा नरु गरम
 और शाल हाजत है उनमें हृद हन लगाना है और नूत
 बटने हैं, मगूने हैं, दाँतों के भीतर भी भाद, गात्र में, गालु
 में, जाम में छोटे छोटे होजाते हैं। मुद से बरसू निरन्तर
 है और बरसुदाद बहुतती एत निरन्तर रहती है। धार
 के साथ बन्दा २ पुन भी गिरता है। दान दिखते हैं
 और बना बनी गिरती जान है। गले का सब गठि पूछ
 उठती है और गताती है। रोगी बहुत पुर्व होजाता है
 और अथवा ज्वर रहता है अथवा थोड़ा ज्वर भीतर
 बनाही रहता है।

चिकित्सा १—आसोनिक ६, ३० शक्ति।—

मुद में धार और माल एग बी, मशालिन, टवालापुष्ट, बहुतती
 चिकित्सी बरसुदाद पुन गिरी हुई मार निरन्तर है, सब जाके
 बी अथवा रहता है और मगूने बन्धेसा एग के होजाते हैं।

फायो घेज १२, ३० शक्ति।—

अथवा धार से अथवा अथवा मन्त्र मिडे हुए मोजन
 करने से दान हाथ हो मगूने दाँतों ए दाँत से मुद पडता
 हो २ ए मगूने ही पुन गिरता हो।

हल्दामास ३, ६ शक्ति।—

दरि लरी धार से
 से है और दल बी एग गठि मूत्र जाके और बटी है
 जाके एत गिरता, मगूने गरम ए ज्वर और मगूने ही में
 पुन गिरता मगूने मगूने एत से ए ए रहता।

महुरिदस ६ शक्ति।—मगूने में पुन गिरी बट,

पथ्य ।—रोग के बढ़ने के, समय दूध साबूदाना और
गर्मी अच्छा पथ्य है। इस के उपरांत और और घाने के
परार्थ दिये जासकते हैं। मास, मच्छी और छटाई विषयुल
परिचित है।

मुखौप ।

अवरिपक, ग्रीवा यवत रोग (तिहा और निगर के
रोग) पुराना ज्वर, मैलेरिया दूषित ज्वर आदि इस रोग
के प्रधान कारण हैं। यह घाव प्राय ही पहले होट के
मातर की ओर, गाल में और कभी कभी जाम के ऊपर
दिखलाई पड़ते हैं। घावों में अत्यन्त जलन होता है और
बढ़ होता है विशेषकर रेशी करने से घाव प्रतिदिन
शीघ्र ही बहुत बढ़ जाता है, अत्यन्त दुर्गन्ध निश्चलन बगती
है, और गढ़ने वाले घाव के कारण शीघ्र ही गाल में
वेद होजाता है। कुछ भाग टपक, पड़ता है, मुद्द विगड
जाता है और लगातार बहबूदार छार टपकता रहती है।
यदि शीघ्र ही इस को आराम न होतो रोगी दुर्बलता
और कष्ट से मृत्यु के मुद्द में चडा जाता है।

चिकित्सा ।—आर्सेनिक ६, ३० शक्ति ।—

इस रोग की एक प्रधान औषध है। रोगी शय्या में पडा
रहता है, पुराना बुझार, तिहा और निगर का बढना,
दाघ रों में सूजन, घावों में दुर्गन्ध और जलन।

कार्बो वेज १२, ३० शक्ति ।—निा में जीवी
शक्ति नहीं है, अत्यन्त दुर्गन्ध, अत्यन्त कमजोरा।

लैकेनिस १२,३० शक्ति ।—अत्यन्त जहने, कण
तार उर, अत्यन्त व्याप, मुद् और शरीर सूजा हुए
घाव का स्थान धरण के समान ठंडा, घाव नील से ल
का अथवा काला सा ।

मर्कुरियम ६ शक्ति ।—होट, गाढ़, और मसूरी में
गले हुए घाव गले की सब गाँठें सूजी हुई, इनमें ज्वर,
गरम अथवा ठंडी चीज लगाने से दर्द बढ़ना ।

सल्फर ३० शक्ति ।—गहने वाले घावों में कमी
कमी यह भौवध लगाने से उपकार दीजना है ।

चायना ६,३० शक्ति ।—बारम्बार अत्यन्त ल
निरुद्धता हाथ पैर अथवा सब शरीर ठंडा, बाप
एकगुण्य ।

सुदकारी उपाय । घावों के ऊपर विनमय ल
नाइडन अउरक इन से कायदा दासना है । घावों के स्थान
का जडा लक शोमक साक लगना चाहिये । बरहू दूर बाप
क द्विव पाटाच झारट का हासन मण्डा है ।

पृथक् । महम में वचन वाला और हलका मोटा
बनना चाहिये । मान मच्छी ह्यादि किल्लुन बर्तित है ।
दूध दिये जामकता है ।

मसूरी से गून गिरना ।

मसूरी से गून निरुद्धता में क दिनी रान का ल
उर का उदुग है बसा मुद के घाव निरुद्धता

पुराना बुखार, तिही और जिगर के कारण पुराना ज्वर
इत्यादि १ दांत उखाड़ने के उपरांत बहुत रक्त छाव
होता है।

चिकित्सा । — इस रोग की प्रधान औषध—बैलबै

रिया-कार्ब, कार्ब-वेन, 'थैकोसिन, मर्कुरियस, मेट्रम-मिथू
रियाटिक, फासफोरस, फासफोरिक ऐसिड, सार्डोशिया,
और सलफर ।

जिस कारण से रक्त गिरता हो इसको ठीक समझ पर
औषधि लगानी चाहिए। यदि पुराने जिगर या तिही
के विचार ज्वर आदि होने से रक्त छाव होतो वायुयत्र
मार्कुरियस, मेट्रम-मिथुरेटिक, चायना, परम, और सलफर
उपचार करता है।

सदिरामज्वर चिकित्सा में देखो।

दांत उखाड़ने के कारण यदि रक्त-छाव हो तो एवानार्ट,
आर्निवा या फास्फोरस प्रधान औषध हैं। प्रत्येक घण्टा
अथवा आधे घण्टे के उपरांत औषध प्रयोग करना चाहिए।
यदि खान की औषधों से रक्त बन्द न हो तो सलफर
आफ़ फास्फोरस टैब्लेट, सुगर भाव लेट या क्रिपोज़ाट ऊपर
लगाये जा सकते हैं। इनमें से किसी एक औषध का थोड़ा
से दाबी में निताहर एक ड्रुड्डा लिग्द अथवा सफ़र में
तर कर के दांतका मसूदे के मीनर रथ बेन पर रून
दिलना बन्द हो जाता है।

मसूदेमें फोड़ा ।

मसूदे में फोड़ा होने से बड़ाही बहराणक होता है। यह
काहा मसूदे का फोड़वर अथवा कमी कमी बहराणी

को फाड़कर भी बाहर निकलना है । पक्षि मनुष्य
बद हाताई, उपरान्त पक्षि पर मयाद् पड़ना है। जो
पक्ष फाड़ा शायद ही गच्छा नहीं हो जावे ता फिर उपर
एत पड़जाती है और हीन मय होन का मय रहता है।

चिरिन्मा ।—बलडोरा ३, ६ शक्ति —गोमहा

रुद्र का कण आ उममें रह होता है, कभी ज्ञान क माय ही
होता है कभी लपता है और कभी उममें बसत
हानी है ।

हीपर ६, १२ शक्ति ।—यद्यपि निरुपय मनुष्य
है ज्ञान कि हम में मयाद् पञ्जायता । गण्डमात्त हीन
धानु भीन गान क मयजयकार के उपरान्त ।

मातृभियम ६, १२ शक्ति ।—बाह्य ही की
प्रयोग कर लया ज्ञान ना मात काना पक्ष नहीं मय
रह पक्ष ना क मय न

मातृभियम १२, ३ शक्ति ।—मनुष्य में रहे और
ज्ञान प्रव मय न ना हायता है और प्रव मयाद् बाह्य
बाह्य पक्ष ना क मय न मय न ही मय पक्ष प्रव मय
हिमी मय न मय न हाता है।

मातृभियम प्रयोग ।—तीन तीन घण में पक्ष मया ।
मय मय न मय पक्ष मय मया मय पक्ष मय मय ही
दिन में ६ घण ।

महृद्धागी उपरान्त ।—यद्यपि मया मय ६ घण
में मयाद् पक्ष मया न मय मय न ही मय मय न
मय मय न मय मय न मय मय न मय मय न मय मय न
मय न मय न

दन्त शूल ।

(दुधएक) ।

दन्त शूल अथवा दात व ददं क समान कष्टदायक कोर और ददं हे कि नहीं इस में सदेह है । नसुदों की अनेक प्रकार का पीडा, दात घुप, पाकाशय वा दोष, अघानक नसुं लग जाने आदि कारणों से दातों में दद होने लगता है । दन्त शय । जिसको साधारणत दातों में कीडा लग जाना कहने है । क कारण दात पाछे होनात है और उन के भीतर की सय पामल स्रायु और मज्जा बाहर निकल पडता है । इस व उपरान्त स्राया हुआ पदार्थ उस गू में भर कर स्रायु और मज्जा वा उत्तेजित कर देता है । इसा से अत्यन्त कष्टदायक दन्त शूल उपस्थित हाजाता है ।

इस लिये यह परमावश्यक है कि दातों की यत्न पूरक रक्षा करना चाहिय और स्वच्छ रखने चाहिये । यत्न पूरक दातों का स्वच्छ न रखने से केवल यही दात नहीं है कि पत्रणा दायक दर उपस्थित होजाता है किन्तु दन्ती कभी दात भा गिर जाते हैं और मनुष्य के स्वास्थ्य और सुख स्वच्छदता में भारी विघ्न पड जात है । सय स्राये हुए पदार्थों के परिणाम का प्रमान उपाय दात है । यदि उपयुक्त रीति से स्राये हुए पदार्थ न सबाये जायें ता उन वा मलो भाति पारपाक नहीं हो सकता ।

चिकित्सा ।—एकोनाईट ३, ६ शक्ति ।—

दद के कष्ट से रोगी पागत की तरह हाजाता है । उप

कैलकरिया काँवे १२, ३० शक्ति ।—हवा लगने से गरम वा ठंडा पाना पात से दूद घटना । दात नष्ट होना पर दूद उपकारी है ।

काँवे बेज १२, ३० शक्ति ।—मसूदा दांतम गिर जाव रक्त गिरता हो और घाय, दात हिलता हा और छुमा न जाता हा, नमकीन पदार्थ खाने से दर्द लौट आवे और घट जावे ।

कैमौमिला ६, १२ शक्ति ।—असह्य दर्द, विशय कर रात्रि के समय, दूद से चिल्ला चिल्ला कर रोता हो, बनपटी गरम और सूजी हुए मसूदा लाल और सूना हुआ, गुली हुए हवा में और रात्रि के समय दूद घटना, अत्यंत बेचैनी, सामान्य कारण से ही चिट उठना ।

घायना ६, ३० शक्ति ।—किसी निर्दिष्ट समय पर दूद उपस्थित होता हो घोडासा भी छूने से अथवा तम्बाकू पाने से शर्दि, दात से दात को दाय रखने से चाराम ।

डल्कामारा ३, ६ शक्ति ।—पाना में भागने से अथवा सही लगन से दन्तगू और उस के साथ ही उदरामय हो । ठंडा हवा लगन से घटना ।

मकूरियस ६, १२ शक्ति ।—एक साथ कई दातों में दूद, एक भार के दातों में एक साथ दूद, दूद जान

सक फैला हुआ, दूध का रात्रि के समय घटना, दंत के टाटनी, जात दितात पाने से कुछ उपकार न हवा सुंदर न बहना न गिरना।

नमनयोमका टी १० शक्ति।—दूध बाल मल्ल और टडा नीला नक फल हुआ, जायदे के नावे नक मल्ल नक हुआ। दूध नक मल्ले मानसिक परिधम से और मल्ल नक नक रदन न पटना, सुनी दूर हा में रदने न आराम जा लग केवल बैठे हा रत है और किमा प्रकर वा शारारक परिधम नहीं करते नराव पीला है और ममाते दार घी में पके दूर अधिक पदाय खाते है उन के लिये पद अधिक उपयोगी है।

गलमाटिळा टी शक्ति।—मुलायम तदियत क लोग टडा चाच स आराम गरम चाच से बटना गरम मकात में भा सरदा मा लगना शतु चाडा हो मपवा बिलकुल दा थद हागया हा।

रस्टकस टी शक्ति।—दांत हिलता हा और नका मादून होता हा, मगुदा मुना हुआ और जैसा सुजली घाघ में चलती है वैसी हा सुजला चलता और भाग जटना, कटन सी दोनी हा घयक मारत हों और भन भनाहट के समान हरे हा, विधाम के समय और गाली हवा में घटना बाह्य गरमी क प्रयाग से आराम। रस्टकस और कैमागिना के प्रयाग से घटन से घग्गना दापक हात ननों को भागम बिया है

सीपिया १२, ३० शक्ति ।—गमायसा में दन्त घुल, दद पहले कान, पीछ समस्त हाथ में, ऊपर से भगुली तप फैले, विगटे हुए रङ्ग का मुख मण्डल और चहरे पर स्याहा केसे दाग, बदबूदार घटुतसा भवेत प्रदर ।

स्टॉफिसैप्रिया ६ शक्ति ।— दन्तघय, दात काळे होकर सहज ही टूट जायें, मसूदा दद करता हो, घाय होगये हों और सूजन आगयी हो, बिनष्ट दातों में और मच्छ दातों व मसूदों में दद, बहुत सुषह और कोई ठडी चाज पीने से घटना, चहरे पर टडा पभीना, दातों हाथ टडे ।

सुलफर ६, ३० शक्ति ।—बिना उत्तम तजर्धीन की हुई औषधिसे भी यदि फायदा न दायें तो सखकर दने के उपरान्त उस औषधि क दो स फायदा दीखता है सग्या के समय अथवा रात्रि में विछौन पर सोने से अथवा टड जलसे घटना, मलक के ऊपर जलन और गरभी मालूम पडना, हाथ पैर ठड, घोडा और काला रजसाव ।

औषधि प्रयोग —दद के समय १, २, ३, घट क अन्तर से । आराम होने पर टडर टडर कर देना चाहिये ।

सहकारी उपाय ।—दातों की रक्षा करने का प्रधान उपाय यह है कि उनका मच्छ रखना चाहिये, अत एव शान्त करन का अश्यास बहुत ही अच्छा है । धरप को घाना और बहुत गरम चाय अथवा बहुत कटाह नहीं खानी चाहिये क्योंकि इससे दात मष्ट होनाते हैं । भोजन करने क उपरान्त प्रत्येक बार दात अच्छा तरह साफ करन

कैमोमिला ६, १२ शक्ति ।—यह यहाँ क खिये

ही बहुत उपकारी है। यदि बालक बहुत रोगी हो और चिह्नचिह्न रुग्णता का होतो यह दवा दनी चाहिये ।

लैकोसिस १२, ३० शक्ति ।—गले का दद, छाटे

से किसी स्थान में दद मालूम हो, एसा मातुम हो कि गले के भीतर कोई पाटला भयवा पिंडसा अटक रहा है, गले के भीतर जलन और खरमद्ग, गले में किसी चीज का सस्पश स्पष्ट न होना हो, साने के उपरांत ही घटना ।

मर्कूरियस ६, १२ शक्ति ।—सर्दी के कारण, गले

का दद, निगलन में कुछ सुभाने के समान दर्द होना, दद कान और गर्दन का गाठ तक फैला हुआ (कैमोमिला की तरह) हाथ पैरों में भटकन हो और रोगी का सर्दी मालुम जाती है, आराम न होना और पनीने आना, समस्त रात्रि और सद हवा में घटना ।

वैराईटा कार्व ६, १२ शक्ति ।—यदि यखेदोना

और मर्कूरियस से कुछ फायदा न हो और प्रधानत दासिल गाठों में प्रदाह हो ।

फाइटोलैफा ३ शक्ति ।—पान, से और बाहरी

व्यवहार से (कुछ करने से) उपकार करता है ।

औषध प्रयोग ।—जब तक फायदा न हो ३ घंटे

के अंतर से दना चाहिये, उपरान्त कुछ विलम्ब से ।

काली-नाईकामिकम ३,६ शक्ति ।—वाग, जीमक ऊपर की आर अंसिल की गाठ और मुद् के ऊपर की ओर घाय, तालू में छोटे छोटे टाल रंग के दाग, ऐसा मालुम हाकि इन के भी घाय हो जायेंग, नाह से पदवू धार घाय निकलगा ।

लैकेसिस ६, १२ शक्ति ।—गले के भीतर और टासिल गाठ में प्रदाह करने वाले घाय, एक दूक पर के वष निकालना, विशेषकर संध्या के समय ऐसा मालुम होना कि एक घायवा, खान विदीप्य होगया है गले के भीतर मस्यत खुदकी ।

मकूरियस ६, १२ शक्ति ।—गले के भीतर और टासिल गाठ में घाय, निगलने में तेज, काटा शुभने व समान दद, गले के भीतर दद, अलग मुद्क माटुम होना, निगलने में गले के पाछे मुद्क शुभोन के समान दद ।

नाईट्रिक ऐसिड ३,६ शक्ति । गले के भीतर घाय, विशेषकर पाटे के अपच्यवहार क उपरान्त मुद् से सडी हुई गध निकलना (मकूरियस का तरह) ।

औषध प्रयोग । प्रतिदिन—प्रातःकाल और संध्या के समय दो घार ।

सहकारी उपाय । मुद् की पदवू दूर करने क लिये एक भाउस पानी में १० घूद फास्टालजा मिला कर
[४७]

हीपर सल्फर १२,३० शक्ति ।—भक्षण सावधानी रखने पर भी कदज ही पेट का दाय उत्पन्न हो, महा हुआ स्वाद और लथ खाने की चीजों से घृणा। पारा और कुनेन के सन्ध्यवहार के उपरान्त मधुधा उत्पन्न होने पर विशेष उपकार करता है।

मकूरियस ६,१२ शक्ति ।—महा हुआ स्वाद विशेषकर प्रातः काठ के समय (पल्लसटिला भी फायदा करता है), बिखरुल भूख न आता, बैठ रहा से ऐसा मानुम होना कि पेट के भीतर सार दूर यस्तु परधर के समाप्त बैठ रही है।

नक्षत्रोमिका ६,३०,२०० शक्ति ।—कटवा स्वाद कटवी उदार, कटवा उज्ज (पल्लसटिला भी फायदा करता है), लथ प्रकारके खाद्य से स्वाद मानुम होना, खाद्य पदार्थसे अनिच्छा, विशेषकर रोटी और तम्बाकू से अनिच्छा, प्रांडी शराय और अदिया मिट्टी खानकी रखा, कोष्ट यज्ञता यज्ञ कष्ट से निश्चिन्ता। जो लाग बिखरुल बैठे रहते हैं और कुछ परिधन नहीं करने और जो अमिताहारी मयात् आशय्य से अधिक खाने वाले हैं उनको इस औषध से अधिक उपकार होता है।

पल्लसटिला ६,३० शक्ति । सडा हुआ, कटवा स्वाद विशेष कर खाने पान के यस्तुओं को निगलने के उपरान्त, चर्वी मधवा सेवकी चीजों से, मांस रोटा और दूध से अनिच्छा, मानस के समय उदार जो चीज अमृत में खाई है उसका स्वाद और गंध आता [इस अवस्था में

गर्भापेक्षा में दिस्टीरिया रोग में, और बर्सा किमी कठिन रोग से अच्छे होने के समय अस्थामाषिक क्षुधा होने हुए देखी जाती है। रोगी की भूख बिनी प्रकार नहीं सुझनी—सपदा हा कुछ न कुछ खाने वा इच्छा हाता है।

१ चिकित्सा ।—चायना ६, ३० शक्ति ।—

न सुझने वाली भूख, विशयकर रात्रि में, ग्रह पल खाने और शराब पीनेकी इच्छा, माठ और उत्तम वदाथ खाने की इच्छा, अत्यन्त प्यास किन्तु थोडा थोडा पानी पीना (आसैनिक) ।

सीना ६, ३०, २०० शक्ति ।—हर्मि दोष रहने पर, अस्थामाषिक प्रबल क्षुधा पेट भर कर खाने पर भी फिर भूख [इस लक्षण में, मकृत्पित्त और स्टाफिसेमिया भी फायदा करत हैं], पेशाब सुला रखन से थोडा दर में ही दूध के समान सफेद हो जाये ।

साइलेशिया १२, ३० शक्ति ।—अत्यन्त क्षुधा किन्तु अरुचि, कौष्ठधर, मल थोडा, मल बाहर निकल कर फिर बाहर खला जाये ।

स्टाफिसेमिया ३, ६ शक्ति ।—पेट भरा रहने पर भी राक्षसी क्षुधा, शराब और तम्बाकू के प्रति इच्छा [मक्खपोमिवा के समान]

औषध प्रयोग ।—दिन में २-३ बार ।

सहकारी उपाय ।—बिनी कठिन रोग से अच्छे होने पर अथवा बहुत दिव तक किसी रोग को मुगन कर अच्छे

घापना, और नक्सरोमिका भी कायदा करती है]-अच्छे पीने के कारण अशुधा । जो लोग नरम प्रकृति कहें और उनको गदगदही में माधु निफल आते हैं उनको लिय यह अधिक उपकारी है ।

अजीर्ण रोग, यकृत के रोग आदि देखो ।

औषध प्रयोग ।— लगातार तीन दिन तक भोजन करने से एक घंटा पहले औषधि एक बार सेवन करना चाहिये, उपरान्त २४ दिन औषधि बन्द रखनी चाहिये । इसमें बार कायदा नहो तो और कोई औषधि उक्त नियमों से स्वन करन को दी जाये ।

सहकारी उपाय ।—प्रतिदिन, प्रातःकाल स्नान और खुली हवा में घूमना और व्यायाम करना विशेष उपकारी है । पीन की छाजों में अच्छे पानी और शुष्क सिंघाय और कुछ नहीं पीना चाहिये । हवादार मकान में सोना चाहिये और प्रातःकाल उठना चाहिये । सप प्रहार की नशीला वस्तुओं का निषेध है ।

पथ्य ।—अशुधा में पथ्य के प्रति दृष्टि रखना ही प्रधान है । एवही पथ्य सब लोगों को एकसा सह नहीं जाना इस लिय पथ्यक विषयमें कोई एक नियम नहीं दिया जासका । जिसको जो पथ्य सह हो और सहज में पथ्य जाय उसके लिये वही अच्छा है ।

अस्वाभाविक भुधा ।

(मारविड टेपीटाईट) ।

यहमी, अजीर्ण का एक लक्षण है । काइ रहन पर

गर्भापक्षा मे, हिस्टीरिया रोग में, और कभी किसी
 कठिन रोग से। अच्छे होने के समय अस्वामाविक शुषा
 होत हुए देखी जाता है। रोगी को भूख किसी प्रकार
 नहीं पुरती—सबदा हा कुछ न कुछ खान को इच्छा होता है।

चिकित्सा ।—चापना ६, ३० शक्ति ।—

न कुछने वाली भूख, बिनापकर रात्रि में, यद्द फल खाने
 और शराब पानेकी इच्छा, मांड और उत्तम पदाथ खाने
 की इच्छा, अत्यन्त प्यास किन्तु थोडा थोडा पानी पाना
 (भासैनिक) ।

सीना ६, ३०, ००० शक्ति ।—हमि दोष रहने पर,

अस्याभाविक प्रबल शुषा पेट भर कर खाने पर भी फिर
 भूख [इस अक्षय में महीरियम और स्टाफिसाप्रया गी
 फापदा करत हैं], पेशाब खुला रखने से थोडा दर में ही
 दूध के समान सफेद हो जाये ।

साईलेशिया १२, ३० शक्ति ।—अत्यन्त शुषा किन्तु

अदधि, कोष्ठमद, मल थोडा, मल पादर निचल कर फिर
 पादर बला जाये ।

स्टाफिसेग्रिया ३, ६ शक्ति ।—पेट भर रहने

पर भी राक्षसी शुषा, शराब और तम्बाकू के प्रति इच्छा
 [अन्मयोमिका के समान] ।

औषध प्रयोग ।—दिन में २३ बार ।

सहकारी उपाय ।—चित्ता कठिन रोग से अच्छे

होने पर अथवा यद्दुत दिव तक किसी रोग को मुगत कर अच्छे

दूद और भारापन मादूम होना, भोजन करने के उपरान्त पेट में कठिनता होना और भारापन, मुँह में पाणी भर जाना दिग्गन्ध द्वारा गिर्योके मल अत्यन्त कठिन—दन्त जानपा हमशा हाजत हो, किन्तु कोष्ठ साफ नहो। जा लोग इराय पीते हैं, अपरिमित भोजन करते हैं और बहुत बैठ बैठ काम करते हैं उनके लिये विशेष उपयोगी है।

पलमाटिला ६, ३०, शक्ति ।—बर्षी नीर तेल में पके हुए पदार्थों के साथ से अथवा, जीम पर सफाई और पील रफ़ा मैल, प्रातः काल के समय मुँहवा क्वाद विगडा हुआ, भोजन करनेके उपरान्त उरार, मुँह में जल भर जाना पेटमें कठिन, पतला दन्त, विशेषकर रात्रिधा । तन्म प्रकृति का स्त्रियों के लिये यह औषध अच्छा है।

नायोनिया ६, १२ शक्ति ।—यह न गरमी लगनेके उपरान्त टण्डा पाना पीनेसे यदि रोग हो, भोजनका अनिच्छा यदातक कि उसकी गंध भी अस्वहा मातुम हा, भोजन करनेके उपरान्त पाकम्बलीमें दूद और भारापन, सब चीजोंका ही कडवा स्वाद मातुम हो, अत्यन्त सिरदर्द, कोष्ठवद्धता, मल सूखा और कठिन ।

कार्बोपोडियम १२, ३० शक्ति ।—दुपेल रागियों को अजीर्ण, डेर से भोजन पचना, भोजन के उपरान्त निद्रानुता, पेट अफरना, दन्त साफ न होना । पेट फुलने और वायुवद्धता में कार्बोपोडियम और पेट फुलने और उदरामय में कार्बोयजाटविलिस उपकारी है।

आर्सेनिक ६, ३० शक्ति ।—ए और घटा

बुद्ध आराम न हो, सब ही प्रकार के बाध पदार्थों से बलिष्ठा, शरीर मध्या खट्टी खोज की रूजा, कम जोरी, प्रत्येक पार भोजन करने के उपरांत सोई रूजा आता ।

शीपिना १२ शक्ति ।—परिष्कार शक्ति का अर्थ है

कमजायी, नदी या घाटी उखा, धरम पाह राग का, माह पर फाल दा, मल कटिन और गटे ।

औषध प्रयोग ।—प्रतिदिन दो बार ।

सहकारी उपाय और पथ ।—इस रोग की चिकित्सा करने समय निम्नलिखित नियमों का प्रति हृष्टि रख कर औषध व्यवहार करनी चाहिये ।

१—भोजन तरह चयन कर धीरे धीरे भोजन करना चाहिये, खाई हुए पन्तु जय तर दानों का मन्दी पाति विम नहीं जाती बार छत्र का माध मिल नहीं आती, पवती नहीं है । निम्न प्रकार जल्दी करने से कोई कार्य भज्जा तरह समग्र नहीं होता उसी तरह जल्दी जल्दी भाजन करना परेषाक क्रिया का प्रयात विप्रकारा है ।

२—भोजन करते समय इस बात पर ध्यान रखना चाहिये कि हम किमता खाते हैं । प्रति दिन नियमित समय पर भिना रूप हा उत्ती के अनुसार उचित भोजन करना चाहिये ।

३—पट भर कर खाना अनुचित है । इस से पाशापर के रख का निगमन और चाये हुए पदाथ का माध

और व्यायाम [कमरत करना], प्रकृतता और आमाशु में शरीर को स्वस्थ रखने के प्रधान उपकरण हैं।

छातीपर जलन होना ।

(पांडुरोगिण)

छातीपर जलन होना अनाज का एक प्रधान लक्षण है । रूमस पैटेमे लेकर छाती तक जलन मालुम होता है और काली चाली उल्टा होता है । सड़ा अथवा जलन पैदा करने वाली इबार मानी है अथवा अचानक मुहमें एक एक छुलक पानी भर आता है ।

चिकित्सा ।— कार्वि वेज १२, ३० शक्ति ।—

मुह में पानी भर आना विशेष कर रात्रि के समय, पाका क्षय में जलन के साथ सड़ी इबार शराय पान आदि और रात्रि जागरण के उपरांत ।

चापना ६, १२ शक्ति ।— प्रत्येक बार भोजन करने के उपरांत छाती पर जलन, मुहमें पानी भरआना, खाला इबार उटना और पाकाक्षय में दवाय मालुम पडना प्रत्येक भाजनके उपरांत ही एना मालुम होना मानो पेट अत्यन्त भर रहा है ।

नक्तमवोमिका ६, ३० शक्ति ।— रात्रिके समय कडवा अथवा सड़ा घोडासा पानी मुहमें भरआये, प्रत्येक बार भोजन करनेके उपरांत उल्टा, पाकाक्षय के स्थानको दवाने से छद्म न होना, शरापियों के मुहमें पानी भरआना, होएबद ।

श्रौत्र प्रयोग ।—दिन २१ मात्रा ।

सहकारी उपाय श्रौर पद्य ।—अपीण वा विषय
रेषो ।

वमन ।

[वीमिति]

उलटी होना बहुत स रोगों का लक्षण है । पाका
शय, पचन, [जिगर] वृद्ध, तिष्ठा, जठर, आत
और अस्तिष्क रोगों से प्राय ही उपस्थित रहते
हुए दवा जता है । इसके सिवाय अधिक भोजन,
कीड़ोंका उपद्रव, गम सञ्चार, गाड़ी अथवा नौका में घैटना,
विराक्त वा घृणा पैदा करने वाली वस्तु देखना आदि कारणों
से उलटी होती है ।

चिकित्सा ।—ऐंठिम कूड ६, १२ शक्ति ।—

अधिक भोजन करने के कारण जो मिचलाना और उलटी ।
इन अवस्था में इयाक, गन्ध-वेमिका, अथवा पल्लसेटिला
भी दिये जा सकते हैं । अन्य त अथवा उलटी, किसी प्रकार
बद न जाती है [ऐंठिम टाट भा फायदा करता है] ।
आम में दृक्क समाप्त सफाई मैत्र ।

त्राणैरु ६, ३० शक्ति ।—उलटा होना विशेष
कर घने पीन के उपरान्त, अथवा घने पीन के उपरान्त,
हवासा अथवा पाणसा रूपमा और पित्त, अथवा वायुस
रग का पदार्थ उभरी निकलना, अथवा अथवा कमजोरी ।

त्राणैरु ३, ६ शक्ति ।—घने अथवा घने ३

पाद उलटा कडवा पित्तका उलटी, उलटी होना के समय या
आर सुर सुभोने व समान दद ।

कैमोमिला ६, १२ शक्ति ।— आर हुए घात्र की उगी
होना यह भी खटा या कडवा कडवी पित्त की उलगी, घात्रों के
लिय ही विशय फायदा करन वाला है।

काकूतम ३, ६ शक्ति ।— गाड़ी में भयया नौका में
पैठने व किम्बा किमा प्रकार झूचन से जी मिचलाना और
उलगी समुद्र यात्राके समय उलटा।

कोनियम ३, ६ शक्ति ।— काफी के फोकर समय
पदाय का उलटा में निकलना, गभयता लियों की उलगी
इपाका और नकमयभिका भी फायदा करता है।

इपीका ३, ६ शक्ति ।— जी मिचलाना और उलगी
जाने पर यह उत्तम औषधि है। भयदा और लगातार जी
मिचलाना याद हुए चीज किम्बा कडवा पित्त किम्बा इत
थिटथिग पदाय उलटी में निकलना, पाकाशय में मयदूर
दद, नक्याकू पात और लंबकी आदि में पने हुए मात्र
करने व पद का दोष।

नकमथोमिका ६, १२ शक्ति ।— मोत्रक व
उत्तरग्न जी मिचलाना शराभियों का शरीर उलटा व लटी वर
और लट्ट ह्याइ मिग हुए नैध्या की उलगी और मिर द
उल्ल बाल वा बाले रग व रज की उलगी, पाकाश
दिव्य ।

पञ्जाटिला ६ शक्ति ।— पाकाशय की उलगा

हो और रोगी बहुत ही छोटा भोजन कर सक्ता हो प्रत्येक बार भोजन करनेके उपरान्त उलटी, घीमें पचे हुए आदि पदार्थ भोजन करनेसे उलटी, स्त्रियों के लिय विशेष उपकारी है।

त्रिराटूम ऐल्वम द, १२ शक्ति ।—प्रबल चमत् और लगातार जी बिचलाना, बहुत ऐसी कमजोरी कि बिछौने पर पड़े रहने की इच्छा रहती हो [आर्सेनिक की तरह], चाय हुए पदार्थ की उलटा, कड़वा, खटा, हायदार, सफर का पीछे हरे से रंग का शर्मा, बाली कड़वी और रस की उलटी, दिलमें भ्रमन स वा पाने सेहा उलटी हाजना चाय पाने न ठटा पमाना, भवानक कमजोरी और नाहीं पुबल [आर्सेनिक] ।

औषध प्रयोग ।—इतिन भयस्या में प्रत्येक भाष भयवा एक घंटे के अन्तर से अब तक आयना न हो। इतनी कुछ बोटिन न हाता ३४ घंटे के अन्तर से एक एक भाषा ।

महूकारी उपाय ।—अधिक भोजन भयवा पुष्पाच्य (बटिकार न पचने वाले) पदार्थ खाने से यदि उलटी होता होता नच में अगुनी हात कर भयवा रंग उन वा कर उलटा कर हाजना ही कपटा है । एक बार उलटा होना भयवा जी बिचलाना आदि हाता रंग मुद में पचने न पायना दिखाना पड़ता है । इस मनस तादू हाता आदि इउका पच्य उचित है । कनी कना उलटी बाद करन के लिये सेहावाटर भर आहार के लिये

दूध में सौजमाटर मिला कर दो-से उपकार दीप्तता है।

रक्तवमन (लोहू की उलटी) ।

(हिमैटीमिसिस) ।

उलटी होने से पहले पाकाशय के स्थान पर एक प्रकार का चाफ़ पृणना बढ़ और कष्ट मालूम होता है, मुह का नमकान स्वाद, जी मिचलाना, चहर धाना और कमजारी रहती है तथा सिर घुमा करता है। उलटी में जो रक्त निष्कलता है उस का परिमाण थोड़ा स चहुन अधिक भी हो सकता है। कभी यह रक्त उपल लाल रंग का और कभी और कभी काल रंग का और जमा हुआ।

पाकाशय में का शिरा (रस) टूट जाने से इस प्रकार रून का उलटा ढाना है। अत्यन्त शराय पाना, अति तीव्र शोध सधा करना बाहरी चाट लगना, अथ (रसासीर) का रक्तमार अचाक य द हाना और अचानक रस का प्रवृत्त य द हाना आदि रून की उलटी होने के उत्तम कारणों में प्रधान गिने गये हैं।

चिकित्सा ।—एफ़ोनाइंट ३, ६, शक्ति ।—

जब रक्तपृण और युवा मनुष्यों को रक्त का उलटा हो, रक्त उजड़े लाल रंग का हो अत्यन्त मृ युभय और मन का उद्वेग ।

आर्निफ़ा ३, ६ शक्ति ।—यदि बाहरी चाट लगना

वे गुा का उल्टी हो गुन काला भार जग हुआ पाया
एय में दद मादुन होना ।

आर्सेनिक ६, १२, ३० शक्ति ।—पादा-
नय में गरमा और दद, फाल म रग क पित्त और
रन का उल्टा, अमानद अत्यन्त कमजारी, अत्यन्त
पेचैगी ।

चायना ६, ३० शक्ति ।—दुबला पतल और कम
जान दद गले मनुष्य क लिय, रक्तपाय क कारण अत्यन्त
दुयलना ।

इपीका ६ शक्ति ।—अचानक उल्टी रक्त वाग्ना
थार गटा, चहारा बिभक्त पाल रग का और चकर ज ता
मयेदा और लगानार जी मिघदाना, पासाएय में बहुत हा
उपादा द ।

फासफोरम ६ शक्ति ।—उबल रग का
उल्टा चहारा हा मयद और जीम रक्तपाय को फुट
पिया जाय व पट में पहुच कर गरम होत म हा उल्टा
हाजारे अत्यन्त पिडाउता, विनेरन भोजन के
उपगत ।

मिनेरती ३, ६ शक्ति ।—दुबला पतली दद पाया
मनुष्य रगा आदमा का रक्त का उल्टा पाया म
मद दुर रग का उल्टा, सोमी निार हाजर सो रद दद
रद न हा, बिनु प्रमाण दुबला रगर पर मुगार रक्तपाय
और दद उर मम । न उदाया हुआ ।

अथवा गरम पिला इन में बन्द होजाती है ।
स बन्द न होता २ । १ मात्रा नक्षत्रोमिका ६,
बध है ।

कटकर और प्रवृत्त दिवसी—हावासायमम,
बिरे स्ट्रामोनियम ।

ठंडा जल पाना के बाद—नक्षत्रोमिका । गरम
के बाद—विटाटम-एल्बम । बच्चों का—इन्डिया या
नियम ।

सप्तदश अध्याय ।

पेट के रोग ।

शूल वेदना [कास्तिक] ।

एतद्दशा अत्यन्त भयानक और कष्टदायक रोग है
पर वह कभी कभी बिलकुल ही नहीं रहता । फिर भयानक
नरु अत्यन्त हाशाना है । वह नाभि धरणा बड़ा भारी
के पास होता है । वह कभी कभी इतना अधिक होता है
कि राग नरुनीय के मार अमान में लग्न लग जाता
है बिन्डना है और वह क कारण बनें हाशाना है ।
दिमा दिमा का का बिन्डना है लग्ना हाश और
काटा इतना मात्रा है । पेट पर ठंडा पाने का भाग है
और सुतेन रुकन में बाहुन हाश है कि राग बड़ा पेट
पाया है । जमा पेट बूझ जाते हैं और गुमा भी नहीं

औषध प्रयोग ।—यदि प्रबल रक्तसाय होतो एव घटे या माघ घटे के अन्तर से औषध स्वीकार्ये । उपरोक्त जैसी आयुर्व्यवस्था हो ३ । ४ घट के अन्तर से ।

सहकारी उपाय । ठंड पानी में कपडा भिगो कर घट के ऊपर रखने से विशेष उपकार दीक्षता है ।

पथ्य । उलटी होने क कर एव घट के उपरान्त आहार देना चाहिये । दूध, बाली, साबूदाना, भादि इत्यादि पथ्य दा दीव है । जो पुच्छ खाने को दिया जाय ठंडा कर क देना चाहिये । गरम गरम पुच्छ भी नहीं रना चाहिये ।

द्विचकी ।

[ठिक्कफ]

द्विचकी मुख्यतः शरीर में एव बहुत से रोगों का रोग चरणा में भी दिखलाह रहना है । देजे के रोग में द्विचकी किरा एव कष्टदायक बभूत है । पुराने रोग की अन्तिम रोग में द्विचका आने से रोग बहुत ही कष्टदायक कर पु धाम्य हाजना है ।

चिकित्सा । जब जिस रोग क साथ द्विचका अनाश्रित हो तब उन्ही रोग क अन्तर्गत क अनुसार चिकित्सा करना उचित है । सामान्य कारण से साधारण रोग में अथवा बच्चों का द्विचका आने से ठंडा पाना

मज्जय क कारण सुखा नद एषा म मूम हाकि से
कम न उग हक न अत कि तु अर म न पडता ।

मर्कुरियम ही शक्ति ।— एतम हक हक समय सी

उगत अर कय न न बर उर र इमका हाजत उड्डा (पाँच) का
हाता पर न उग न एर कय एम ना

नक्षत्रोामक २२० ३० शक्ति ।— वाक्काशवेर्वा

नर क र दा क र उर न र उ उर क समान रक
वा उम न न ह । न न ययय अनुचित मय
कालम उ कूनक म । अक हक वाक वाक इमक
हाजत क नु उल र । नतका क उ कान कर्
प्रक न र । उ । उ । क ह । र । व न्माय प्रप
वि । य । न । क । । क । उय । य । य । उर
य

पतमात्रा शक्ति । मर ह न कडवा सी

विशयकर कुल अत न न म । उर उ क न
राह म कयन आ ह न न क हक उर । य । य ।
पतला मउ अनेक प्रक र का मल र कय म उ । उर
हस्त हाता रागा शरीर लहता न उर न र । उर
वायु की हड्डा करता हा नर उ म उ न क

शक्ति आनम राग अरुत ही म न न

श्रीधर प्रयोग । मयल बहना वरु

हर) क समय उर न क आराम न मालूम पड
मगतर स श्रीधर सेवन करनी चाहिय । वरु क म न
पट्ट मगतर स श्रीधर सेवन करना बधए है ।

सहकारी उपाय ।— गरम पत्राखन वा धूम धीरे गरम पाना वा विषवादा देनसे उमाखन भाराम मान्यम पदना है । तागा व पण्यर्षी भार विरुध दृष्टि रथी वाहिय ।

यकृत प्रदाह ।

[द्विपाटाईटिन्]

यकृत प्रदाह प्राय हानदुष्ट गर्दी देखाजाता । गरम में यकृत (शिगर) एक प्रधान यकृत है मिश्रकर परिपाक विषय में इसका रस अथवा पिलर्षी क्रिया प्रधान है । यकृत प्रदाहक प्रधान लक्षण — प्रकाश उषा दाहिना भार दह बर्षी बन्ना यह दह ३ ना तब पैना हुआ, दाग रगर्षी ही दह पौ व र्ष्यमें भी दह मान्यम हा, यह दह कासनमें कांसि लन मिश्रालन में भार दाहिनी बरघट सोनस अधिक मान्यम हा । यकृत व अधक पर हाथ न लगाया इ प दह स्थान यकृत गरम कीर बर्षी बर्षी गुजा हुआ क्वास प्रधान में यह रथी बरघटक कासा परमें दह भार बरघटकन लक्षण धाद क्वास रथी प्रीम भादा भार प रस के नलम दह दुर ।

यकृत प्रदाहका यदि कारण बता ना दह ७ । ८ दिवस कायक रही रहता । यदि प्रदाह प्राय कारण न दना बर्षी बन्ना यह रहता है अथवा बन्ना दुग्ता कारण प रस वा यकृत दिवसक रहता ।

होम ।— उक्त दुग्ता वाय काद नान्दिन कारण बरघट दुग्ता यकृतक दहना दह का ।

प्रिमेना ।— एकोनाईट ३ ० गानि ।—

प्रयत्न प्रद = यह बहुतमें सब सुमानक भवति असह्य श
रुके पाए प्रणोका जगा । अत्र अत्यन्त वरना पवाए
शर म सुाय । अत्र अत्र कथा । प्रलोका इत्या पद्य
व ।

त्रेनेटोना ३ ई शक्ति ।—

जगा अत्र अत्र कथा । अत्र अत्यन्त वरना पवाए
शर म सुाय । अत्र अत्र कथा । प्रलोका इत्या पद्य
व ।

त्रायानिषा २ शक्ति ।—

सुख सुमानक समत इत्या । अत्र अत्र कथा । प्रलोका इत्या पद्य
व ।

मर्कुरागम ६ शक्ति ।—

अत्र अत्र कथा । अत्र अत्यन्त वरना पवाए
शर म सुाय । अत्र अत्र कथा । प्रलोका इत्या पद्य
व ।

नक्षत्रगोमिका ६ शक्ति ।—

अत्र अत्र कथा । अत्र अत्यन्त वरना पवाए
शर म सुाय । अत्र अत्र कथा । प्रलोका इत्या पद्य
व ।

हाथन न दद सिर दद, स्यामायिष वज्र की घात
रातमें ३ घन के उपरांत नैद न आना (रातमें ३ घज
क पहले नैद न आना—मकुरियम । जो राग रागे
धाने में बहिसाधन करत हैं और जा केवल घैटे घैटे काम
करते हैं ।

पीडोफाईलम ३ शक्ति ।—घटत के ध्यान में दद,
जो मिचलाना और गिचका उलटी, घटत के ध्यानका सघडा
दिलाउ और रगडे, मुहका कडवा स्याद, धिना दईका प्रात
कालका उदरामय ।

औषध प्रयोग ।—कटिा अवस्था में २ । ३ घटक
मंतर न । आराम माहूम पहनेपर दहर ठहरकर अवस्था
३ । ४ घटक अंतरसे ।

पथ्य ।—तेउ घामें पकहुप छाद्य मास मच्छी,
शराब और दूध विलकुठ वर्जित हैं । साबूदाना धाली आदि
हल्का भाजन करना चाहिय । दद और ज्वर दूर होनात
पर अग्नका पच्य और सज्जा तरकारी तथा अच्छे पके हुए
फल दिये जासकते ह ।

पुराना यकृतप्रदाह ।

(यकृतका दोष)

माजकल यकृतका दाप एक साधारण रोग होगयाहै ।
इस दाप का प्रधान कारण खाने पीनरा अविषम और
अत्याचारही है । पहले समयमें हिन्दु लोग खान पीन क
विषयमें बहुत सतक रहतथ और विषम पूरक सब काम
करतेथ इसा कारणस पुगने जमानमें यकृत दोष बहुतही

कैल्केरिया काव १२,३० शक्ति ।—भूय यद्, वमरमें धोती वसवर न पाथ सयना, कडा, पिना पयाहुमा मल, रंग मिट्टा के समान, गण्डमाखा दोष ।

चायना ६,१२ शक्ति ।—परिपाक शक्ति की कम जोरा धीर भूय न उगना, कडवा डबा उठाना, यहन यदा इतल दद विशपकर कुनन के अपव्यवहारके उपरांत, पिना ददव, पिना पयाहुमा मल ।

मकूरियस ६ शक्ति ।—मुहमें घाय और दुग्ध आमपर पाठ रडवा मैल कडवा खटा, मडाहुमा मयया माटा क्याद यहनक क्यानपर दद, पगाव लाल रगवा, गाटा हट रगवा, भागदार मल और पटमें दद ।

नकमयोमिका ६,१२ शक्ति ।—मिर गूमना, मातः बाण मुहवा मडाहुमा मयया कडवा क्याद रदना जिगरके क्यान में उपवन भाजन करनक उपरांत पाद्यालयमें मययत पूषता मादूम दाना वमरमें धाना मल न दाती हो, कडाभाविह कडकी भाहत मल कडा धीर कडा । जा गेम मयदा घोंमें पकेहुय पदाथ मादि क्यान हैं और मगानी घाडे व्यवहार करतहें उनदा के त्रिप यद धीयध विशप गुणकारी है ।

पाहोपाईलम ३ शक्ति ।—जान कान क ममर मिर दन जीव मयय यहन क क्यान में पूषता धीर दद मादूम दाना, मयेद खादवाक समान बाणदार मल धीर मयय दुग्ध ।

सत्तफर ६,३० शक्ति।—उत्तम शक्ति, कुडम

मरुटा न लगता हा। रोमकी इच्छा हा, कपाल में मरु
पत माहूम हाता, माथक ऊपर मरु गरभी, जीम सक्त
धमभाग लास।

सीपिया ६,१२ शक्ति।—पुराने वस्तु रागकी वर

एक प्रधान धीय उते।

लेकेमिम १० ३० शक्ति।—वस्तुमें लेय वर वा

वद पाकाशय तक मरुहमा। गालाम शराकी है वह धीय
उतरक वस्तु क राग म मरिज कायदाकरना है।

चत्तीडानियम ३ शक्ति।—वस्तु वा पुस्त

मरुविकर [त्रिगर्भी पुगना मृतकी उवाइती) बाहित कर
का दृश क नीच मरुदा वर, जीम पीकी वर
वस्तु।

ओषध प्रयोग।—आपश्यकतासुमाए एक एरु [१

दिने ३। ४ पाए।

पुस्तक।—अस्तम मरुकी माग धीय वर वर

वस्तुवा बादि विस्तृत वस्तुन है। मरुकी मरुविक मरु
मरुवा। मरुव वर वर वर वर मरुदि सुगम है। मरु
५ मरुव वर मरुव धीय मरुवकी मरु विस्तृत मरुव मरुव

१। [उक्त—मरुव वर है मरु व वर है
मरुव मरु। मरुव—मरुव मरु व वर वरि मरुदि
मरुवकी मरुव मरु मरुवकी मरुव। मरुव—मरुदि
मरुव मरुव वर मरुव वर मरुव (३)।

सहकारी उपाय ।—यह रोग में घृण खगना अच्छा नहीं है । अच्छा तरह व्यायाम (कसरत) करने की पूरी आवश्यकता है । औषध से उतना उपकार नहीं होता जितना कि प्रतिदिन नियमित रूपसे व्यायाम करनेसे होता है । प्रतिदिन प्रातःकाल के समय उठकर और स्नान करने के उपरान्त चिरायता आदि कड़वा चीन खाना पित्ताधिक्य के लिये उपकारी है । यह रोग के ऊपर प्रतिदिन ३ । ४ घार सेकने से विशेष उपकार होता है ।

पीलिया ।

(जानडिम ।)

पीलिया स्वयम् कोई प्रधान रोग नहीं है । यह यह रोग विकार का एक लक्षण मात्र है । इस रोग में शरीर और आँख पीले रंग के हो जाने हैं । मल मिट्टा के समान काले से रंग का होता है, पेशाब भी काले से रंगका होता है । शरीर का पालापन कभी कभी इतना गहरा होता है कि काले से रंगका दीखने लगता है । शरीर में खुजली चढ़ती है जीभ पर सफेद मैल जमा रहता है, भूख कम मुहका कड़वा स्वाद, उल्टा होने की इच्छा अथवा कड़वी उल्टो हो बहुत में दर्द रहना । घोडा बहुत ज्वर भी रहते हुये देखा जाता है ।

क्रोध आदि अति प्रबल मानसिक आवेग, ज्वर में जुना इन आमोनिक इत्यादि औषधों का अपव्यवहार, मद्यपान और यह रोग की पीडा इत्यादि इन रोग के कारण हैं ।

चिकित्सा ।— एंजोनाईट ३, ६ शक्ति ।—

प्रयत्न ज्वर, शरीर पीला, थोड़ा लाल रङ्गका पेशाब, मग
सिक् उद्वेग । घबराहट । और शून्युमय ।

ब्रायोनिया ३,६ शक्ति ।—दाया स परतमें सु
शुभोन्मत्त समान दद हाना जाम पाल मैलमे डकी सु,
कडयी पित्त मिलाहु उलटा, काएबद्धता, मल कठिन और
गुना हुआ ।

कैमोमिला ६,१२ शक्ति ।—भय वा काय क
काएण व रकी क त्रिय विशय उपकारी है । मल हान
और पतला, पत्रमें दद, वाएकता बहुत दलाई आता है
कयत गादा में पैठकर धूतका कहता है ।

वायना ३,६ शक्ति ।—शरीर पाए रङ्गका, सिर पर
बहुतका बद्धमाना काएण हाजाना और दायाल दद हान
गए मानका कयवा बाद पाहुणु वाया नाय यही कता
माएय हा ए माना भराहा और पत्रा नाता है
पाल हगका पतला मल एव दद क सगए स एव
बदता ।

मर्कुरियस ६ शक्ति ।—मत्र शरीर पी - रंगका
बहुतमें दद मल सगए दल जाम समय और उगाए
बहुत हाजान सुख कगय्य भाजतकी मनिच्छा उगाएय
वा समगय्य जो मिशकता और इलगा पीम गाए मैत्रय
दर्या दुर ।

नकमयोमिहा ६,१२ शक्ति ।—पत्रा बदा और मल
पट्टा वा मल हुआ कयए म प्रतय मनिच्छा बहुत म
दद क उद्वेग कए बए हाजान हा विरु मत्र म

होना हो, रात्रिमें ई बचनेके उपरांत फिर नींद न आना, प्रातःकाल के समय बढना । जो लोग, परिश्रमः नहीं करत और जो लोग अमिताहारी हैं अर्थात् खाने पीनेके नियम पालन नहीं करते ।

पाडोफाईलम ३, ६ शक्ति ।—पित्त निफलना बन्द होनेसे पालियावा रोग, अत्यन्त जीमिचबाने के साथ विसाधार [त्रिसर्भ पित्त रहताहै] के पाम दर्द होना, यहत में टनटनाहट, यहत बड़ी हुश, मल मिट्टी के समान काला ।

चेलीडोनियम ३ शक्ति ।—शरीर और आस्र पाँले रगर्गी यहत और दाहने कन्धेमें दद, कडवा स्वाद, मल सफेद यहत बड़ी और उसमें दद ।

आयोडियम ६ शक्ति ।—पुराना रोग, विषयकर पाया अपत्यवहार के उपरांत ।

क्रोटेबस् ६ शक्ति ।—यदि रोग जित्ना प्रकार बचता न होताहो और सांघातिह आकार धारण करे ।

सल्फर ६, ३० शक्ति ।—यहत में दर्द, मुहवा खट्टा वा कडवा स्वाद, पेट फूल जावे, माघे के ऊपर गरमी रात्रि के समय शरीर में खुजली, दिनमें, निद्रा, रात्रिहो नींद न आना, श्लेष्मद् अथवा प्रातःकालक समय उदरामय ।

औषध प्रयोग ।—प्रति दिन चार पाँच बार औषध का सेवन करना चाहिये । यदि पुराना रोग हाती

और और अनेक रोगोंका लक्षणस्वरूप उदरामय उपस्थित होता है, जैसे पक्षा, ज्वरातिसार, आति सारिक विकार ज्वर आदि रोगोंमें उदरामय होता है।

चिकित्सा ।—कठिन से पचने वाले खाद्य, खानेसे उदरामय—पलसाटिला, पेंटिमरूड, इपीका किम्बा नक्स-योमिका।

श्राद्धकालका उदरामय—घायना [सामाय], विरादम पल्लवम [धायठे भात हॉतो], आइरिस [विश्व यमन और सिर ददं], आसैनिक (अत्यन्त कमजोरी) ।

नया उदरामय और अचानक अत्यन्त कमजोरी—आसैनिक, काथ पेज, सिकेरी, विर्यटम ।

पुराना उदरामय—आसैनिक बैलकेरिया, घायना, केरम हीपर, हाइपोपोटियम, फासफोरस, फासफोरिक एसिड, पाहोफाइलम, सलपर ।

उदरामय के साथ पयायत्रमस कोट्यद—पेंटिमरूड, प्रायामिया, नक्सयोमिका ।

ठंडा उठ खानेसे—आसैनिक, काथ पेज, पलसाटिला, सदी खानेसे—कैमोमिला, घायना, डडकामारा, मकूरियस, पलसाटिला ।

तल, घी आदिमें पकी हुई धात्रे खानेसे—पलसाटिला, काथ पेज ।

उदर आमस—एकोनाईन, ओपियम ।

फल खानेसे—आसैनिक, घायना, पलसाटिला ।

शोष पानस—कालासिन्ध उलसामीनम ।

अचानक आमस के कारण—कालिया, ओपियम ।

सूतिनायिका [सोयड] में—वेस्टिमटार्ड, इन्फामाटा एत
सायेमस ।

दूध पीने से—कैलकरिया, सलफर ।

गर्मी लगनसे—एकानाइट, पाडोकार्लेम ।

विना दर्दक उदगमय—एपिस आसेनिक, चायना, कैम,
फामफोटिक-एमिड पाडोकार्लेम ।

गमावस्थाम—एकानाइट इन्फामाटा लाएनोपोशिय
फासफोरम ।

पामाम भीगाम—एकानाइट रंजकस ।

एकानाइट १,३ शक्ति ।—अथवाज पेग्मे कवड
दर्द के भाय उदगमय अथवाज दर्द, तपडकता, उग्र, धान
और मृग्युमय उदगम येडजान से मिर घूमता हो कवड
अथवाज आत ही अथवाज अतीत बन्द दानन अथवा डी
दवा एगलेभ राज कानय ।

आमानक डी १२ ३० शक्ति ।—मल कल है

अथवाज नाम अथवाज काल अथवाज ममल अथवाज ममल
कमभावा उदगम एत वाज उदग अथवाज कवड
अथवाज अथवाज से उदग उदगमाडा माडा जल पाता उदग
वा अथवाज उदग काड अथवाज एत अथवाज म उदग
(काड अथवाज उदग अथवाज ममल—आमानक रम) ।

येडेडोपा ३ शक्ति ।—अथवाज महाइया एत एत

अथवाज अथवाज काड उदग अथवाज अथवाज अथवाज अथवाज
अथवाज अथवाज अथवाज अथवाज अथवाज अथवाज अथवाज
अथवाज उदग उदग अथवाज उदग अथवाज अथवाज अथवाज
अथवाज ।

कैलकेरिया काँच १२, ३० शक्ति ।—गटमाखा के रोगी को उदरामय, पेट सर्वदा फूल रहे पतला शरीर किण्वुमुक्त बच्ची, मल सफ़दा लिये हुए अथवा पानी के समान, पुराना उदरामय, मल विहीन के समान, सोते समय कपाल में पसीना, दोनो पैर ठण्डे और गले ।

काँच वेज १२, ३० शक्ति ।—येमादूम हल निकल जाना, अत्यन्त दुग्ध, अग्निम अणुस्थामें जब जीवनी शक्ति कम होता है और प्राय नाहीं नहीं पाइ जाती, अत्यन्त चायुनिसरण, पेट फूलनेके साथ उदरामय ।

कैमोमिला ६, १२ शक्ति ।—मल हरा, पानीसा, पेटमें अत्यन्त द्रव, गरम पतला मल, सड़े हुए अण्डके समान मल में दुग्ध अत्यन्त असहिष्णु [सहन न करने वाला], कुछ बात पूछनेपर मलमनसात और मुठामीयतसे उत्तर न देसका हो, बाबक बहुत ही रीने वाले हों और करछ गोदी में फिरनेकी बड़े, रात्रि में बढना ।

चायना ६, १२ शक्ति ।—मल गालासा, पानी के समान, सफ़ेद या बालासा, द्रव नहा, अजीर्ण, यक्षुद्दार मल, पेट बहुतही फूला हुआ, बहुत कमजोर और पसीने भाते हों बहुत यक्षुद्दार प्रायु निकलता हो रात्रिमें भाजनेके उपरांत और एक दिनके मन्तर से बढना ।

सीना ६, ३० शक्ति ।—सफ़ेद थोला मल नाक सुरचना सफ़ेद, सुन्दा हुआ अण्ड असाते समय येचैती,

उदरामय, प्रातःकाल के समय बढना, मल विनापचा हुआ, पानीसा और कममें सानूहागध से दुबल, कमना रगत दुबल हो (यदि दुबल न होतो—ऐसिड पासफारिक), छोड़ चाज पानसे पेटमें जाकर गरम होठेही निचल जाये, दिन में विद्यवाहर अहार व उपरान्त निद्रानुता ।

फासफोरिक ऐसिड ६, १२ शक्ति ।—विना दद के उदरामय, मल मपदमा, पानी के समान या पीलासा, अत्यन्त दुग्ध, पेटमें बहुत गडगडाहट होताहो, अत्यन्त तापिल्लना भाव (लापरवाहीसी तथा शरीरका गिरा पटना), किसी घस्तुका इच्छा नहा, बिभीक अनुरोधस कुछ नहा, पाठ्यार पानीसा विना रगता बहुतसा पचाव करने से बहुतमा पसीना, दुबलता नही ।

पाडोफाईलम ६ शक्ति ।—विना ददक उदरामय, बहुत सा पानाके समान मल, और पीले रगका भाग मिला हुआ मल, दस्त जाने से पहले ऐसा छद् होना माँगे पानी पेटमें गडगडाता है, दस्त जाते समय काँच निचल आना, सूखी उलटी, पैर, पाइरी और जाघ के पास थापठ, प्रातःकाल के समय और गरमी में घटना ।

पलसाटिला ६ शक्ति ।—मल दरासा, पालासा और पित्त के समान, मन सयदा परिषतनशील [बल न पाडा मघात कभी मनमें कुछ हो और कभी कुछ], रात्रिके समय उदरामय घटना, पत्र अथवा बरफकी कुछपी पानसे उदरामय, ठंडी स्वच्छ दया चाहना, गरम मकान व भातर घटना [गरम घरक भीतर आराम—

आलेनिक] गरम मकान में रहने परभी सररीसा छपर, जोम सफेद मैलस टकी हुए, मुहका घुरा स्वाद, प्वाभ नहीं ।

नेकेतवोमिका ६, १२, ३० शक्ति ।—

बार बार घोडा मल, कभी कभी दस्त जाना किन्तु दस्त न हाना, दस्त जानेसे पहले हाजत, दस्त जानेके उपरान्त पूरा आराम, शराब पान और रात जागने आदि कार्यों से रोग, शगर गरम किन्तु शरीर उघाबने की इच्छा न होना । पचावक्रमसे कब्ज और उदरामय अघाद पर बार कब्ज मानुम हो और दूसरी बार उदरामय ।

सल्फर ३० शक्ति ।—

प्रात काल उदरामय दस्त जानेसे पहले बहुत हाजत और पेटमें दर्द, मस्तक में सवदा गरमी मानुम पडना अट्टी वा कट्टी टट्टी, बारम्बार दुयलता के कारण एक प्रकारकी शिथिलता, शरीरमें शान आदि धैर्यज्ञान के कारण रागकी उत्पत्ति ।

विराट्टम-प्लयाम ६, १२ शक्ति ।—

मल बहुत और पानाक समान, जालसा इरेसे रगका, दस्त जो समय और दस्त जानस पहले बहुत हाजत और दर्द, दस्त जानेके उपरान्त बहुत कमचारा, गलमें और कपाक पर टडा पमाना निकलता, बहुत उघादा उलटी, टड पारीधी बहुत प्वाभ, अत्यन्त कमजारी ।

रुत्रिनिस सिपट कैफर ।—

अधानक इरेक समान दर्द और बजटी नहीं वा कम्प, पाकाशय और देग्में मति

• दर्द, हाथ पैर टेंडे : इस अवस्थामें ६ बूद चर्चिते

साथ मिलाकर १५।२० मिनटके अंतरसे देना चाहिये ।

श्रौषध प्रयोग ।—रोग की प्रकृति के अनुसार औषध देनी होती है । जब दस्त १।२ वा ३ घंटेके अंतर से हो तब प्रत्येक उसके उपरान्त एक एक मात्रा औषध देना शुरु नहीं है । इस प्रकार औषध देनेके उपरान्त यदि भाराम मालुम होतो ठहर ठहरकर औषध दीजाय या बिलकुलही बन्द कर्दी जाय । पुराने उदरामय में प्रति दिन दोबार औषध देनाही यथष्ट है ।

सहकारी उपाय और पथ्य ।—उदरामय में पथ्य की ठीक व्यवस्था ही प्रधान औषध है । नई हात्तमें साबूदाना, भांगरोट वा घाली पथ्य है । क्रमशः घुनेक पानी के साथ दूध दिया जासकता है । पुरानी अवस्थामें पुराना चावल अच्छा हाता है । अनेक समय जल वायु परिवहन करना आवश्यकिय - होजाता है । नये उदरामय में दूध कुपथ्य है ।

रक्तमाशय ।

(डिसेट्री)

लक्षण ।—भामरक्त वा आमामय भयावह रोग होता है । इस रोगका प्रधान लक्षण आँनों में प्रदाह और घाय घार घार दस्त जाना और आम और रक्त मिश्रितरुमा, दस्त जाँके समय बाधना और जोर देना तथा अवस्थामें ज्वरभी रहता है । साधारण रोगमें कबल आम निर्याता रहता है किन्तु यदि रोग कठिन होता आम व साथ रक्त भी निर्याता है कबल रक्त, मरुता धाय हुए जत्र क समान, और कमा मडा हुआ पुगधमय दस्त हाता है ।

रोग घटने का हालतमें बहुत जल्दी जल्दी दस्त हाता है रोगी भी उठनेकी शक्ति से वञ्चित होजाता है । शरीर बचना, हिचका, ठंडा पसाना, गिर दिलाना आदि मुख्य लक्षण दिखलाई पड़ते हैं ।

नई हालत से रोग पुनः आकार धारण करता है । पुराना रोग होनेपर उमकी उतना तेनी तो मर्ही रहते किन्तु रोग दुःसाध्य और कण्ठर होजाता है ।

चिकित्सा ।—नियमित समय पर रोग का औषधाना अध्यात नव पन्ना रोग हुआ हो उमी समय रोग का लौटकर हाता—चायना ।

अत्यन्त प्रबल और कष्टदायक पटका रूढ़—कालोमिन्य सदी लगने वा पाना में भीगनस रोग—उल्फानास । रोगकी नाशना उत्साण होनेपर—सल्लर ।

भीतर भीतर उबर रात्रि व समय समालूम मल निष्कासन ।

गाद व समान कषण हला भग्न सफ़ेद आम—कालोमिन्य ।

प्रत्येक दस्त क साथ बाध बाहिर निकल मना—वायोका लम ।

एरोमार्डिट ३, ६ शक्ति ।—रागदा प्रथमाल में विशेषकर यदि उमक साथ उबर हाता रूढ़ पर रूढ़ी वैकष दती बाह्ये, इमस अराम होता है । यदि रूढ़ी नाशत स कायदा न हाता कैमोमिन्य मजम, महुलाद वा पञ्चमाटंग दना बाह्य ।

कालोमिन्य ३, ६ शक्ति ।—यह प्रथम मजम मजम मजम साथ व्यवहार किया जाता है । रूढ़ है

साथ रक्त मिला हुआ आम, नाभिसे चारों ओर बघैर करत घाला हद और बटन, पेट वृद्धा हुआ और पेटमें दद—दाघ न लगाने देना, अतस्त दद के कारण रोगी यह पडा रह और पेटमें तक्रिया लगाकर उससे दाघकर रक्त । यह मर्कुरियसके साथ पयायक्रम से भी दिया जाता है ।

मर्कुरियस कर ३,६ शक्ति ।—रक्त मिला हुआ आमाशय हानो सबसे अच्छा दवा है । दन्त के उपरान्त अत्यन्त घेग और पेदाय बन्द होना ।

नक्सयोमिका ६,३० शक्ति ।—चार बार थोडा दन्त, पतंग रक्त मिला हुआ दस्त व उपरान्त आराम माहूम होना ।

इरीका ६,३० शक्ति ।—वी विचगना, वा उब्टी, अत्यन्त खाबना पेटमें दर्द, मल पहल आम पीछे रक्त मिला हुआ आम ।

सलफर ३० शक्ति ।—अत्यन्त साघातिव अवस्था में वा और औषधों न कुछ फायदा न होख पडे ता यह औषध दी जाती है । पेटमें अत्यन्त दद पहानक कि हाथ भी न रखा जावे । राग पुराना हाजाय ना चीन बीच में सलफर और नक्सयोमिका दनसे फायदा माहूम हाना है । दस्त जान क उपरान्त भी बहुत देरतक दस्त की छाजन होना ।

ररटक्स ६ शक्ति ।—मल ठोब घोर हुए मछ लियोके पाना के समान, रात्रिको बढगा ।

फासफोरस ६,३० शक्ति ।—जिना दद के आम और

रक्तघातं वनाया उगतं वा मुक्ता रहता ।

शक्तिः २२, ३० शक्ति ।—दुर्गाता माया

... काशना देमा मायुं ...

शक्तिः २२, ३० शक्ति ।—यत्तु गन्तव्यता रक्त विद्युत्

... ज्योत्स्ना, द्रुत जातके उगा ...

शक्तिः २२, ३० शक्ति ।—आम भौर रक्त मिष्टान्

... काश्च हा मयी है ...

शक्तिः २२, ३० शक्ति ।—सत काया, ...

... जगत् में एक क ममान ...

शक्तिः २२, ३० शक्ति ।—सत काया, ...

... से नग दरी कश्चि । ...

शक्तिः २२, ३० शक्ति ।—सत काया, ...

विशेष इष्टि रक्तनी उचित है । सहज में - पचनाय - इस प्रकार का इलाज और पुष्टिकारक पथ्य देना चाहिये । प्रयत्न अवस्था में मरारोट ही अच्छा पथ्य है । महन हानेपर दृभ कच्चा थल सिनावर उसका पानी देनस आहार और औषधि दानों हाने हैं । पेटका दद निवारण बरनक श्लिय पुल्टिस, या फन्डालन का सक गन्म पानी से करना अच्छा ह । रागी का ठडा जल और खाने पान का घाँज ठडा करके दना चाहिये । पुरान आमाशय में कच्चा थल भूनकर दना अच्छा पथ्य है ।

कीड़ोंका उपद्रव ।

काँड़ोंका उपद्रव हमारे देशमें सबदादा दखन में जाता है, विशेषकर बालकनो कदाचित् कार हा एसा होगा जिसको याव्यायस्था में कीड़ोंका उपद्रव न हुआ हो । काँड़ोंके विषय में अनक प्रकार के सन्द्ह और व्यथ का रचना प्रचलित हैं । कीड़ोंका चिकित्सा अत्यन्त दुःसाध्य हापरन्ती होमियापैथिक आरप इमिधानु नष्ट करन के लिये प्रधान सहाय हैं । आतों का बैग्निक इतिहासिक विकारके कारण कीड़ पैदा हाजात हैं । किसी मात्र औषध द्वारा काँड़ोंका निशाल डालनसहा रागबी चिकित्सा नहीं हाता; किन्तु इमि-चिकित्सा का यही उद्देश्य होना चाहिये जिस स फिर कीड़ उत्पन्न न हों और आतों का श्लेष्मिक मिर्दाका काँड़ उपद्रव करन याना विकार दूर हा । यह राग काँड़ों का नहीं है किन्तु आतों की वृषित भयस्पाही राग है जिस स काँड़ उत्पन्न होत हैं ।

कीड़े ३ प्रकारके हातर्ह, एक बहुत पतले सुतक समान क ने

चिकित्सा ।—जब कीड़ोंका उत्पात शीघ्रही निया
रन करना आवश्यक होजाय तब मोल कीड़ोंके लिये
स्फायोनारन २५चूण दो दो मन के हिसाब से तीन तीन
घंटे के अंतरसे देना चाहिये । बालकों के लिये सीनाही
उपकारी है । बनारस उड़की छाल सिंचाकर, त्रिखानेमें
कीड़ निकल जाने हैं । छोट बाइकी उत्पात में नमक और
पानी का विचकारो लगाना अच्छा है । प्रतिदिन असली
सरसों का तेल गुच्छद्वारमें उगलीसे लगाने से छोट कीड़े नष्ट हो
जाते हैं ।

एकोनाईस ३,६ शक्ति ।—ज्वर, नाभि के घातों
और कड़ापन और समस्त पेट फूलाहुआ, बार बार दस्त
की द्वाजन किन्तु दस्त न होना अथवा सामान्य आम
पचना गुच्छद्वार में खुपली रात्रि क समय अधिक खुलता,
अत्यन्त मय, बालक विद्याने पर साने में डरता हो ।

द्वेलहोना ३,६ शक्ति ।—चहारा और नाभ छाल
निद्राके समय अवाञ्छ रूपमें घमक और उछल पटे
बेमाटूम दस्त और पक्षाघ निकल जाग सोने समय दाग
किटाकिडाना, कराहना या गुनगुन करना और एसा
मात्सुम होना मानो कष्ट दाता है ।

केलकैरिपा-काव १२,३० शक्ति ।—हमि घातु
दूर करनेकी यह श्वाभा वैश्य है । मिर रदं, माघों क
घातों भार वाले रङ्क दाग पेट फूटा रहना, चहारामें
पूषा हुआ और रक्तस्य मानि क घातों भार रदं,

मुठ्ठार में सुतशी, विशेषकर मय्या के समय, मय्या
द्विजित धातु ।

चायना ६ शक्ति ।—उदरामय प्रायः सबदाही धा
निचलना, नाक सुत्तना और पेट फूला रहना, विनाश
के धर्मीय मर ।

सीना ६,३०,२०० शक्ति ।—लगातार मर सु
घना, पयन निडा, मूची धामा, विश्वकर रात्रिडा व
कडा और फूला हुआ, नामि के पास प्रायः सबदाही १६
पचास घाटी दर रघदनेस हा दूध के समान १
जाय ।

सादफोपोडियम १२,३० शक्ति ।—पटमें वायु
कर फूला रह माटूम हो माना पटक भीतर कुछ पटक
दे और लपटा दे, मृत व कमान बाड, मल्लार में
मय्य न मरती कपत्र ।

माहृगियम ६ शक्ति ।—गात्र वा मृत व मय्य
वाक मल्लार में बहुत मरती, बीड बाहर निचलकर म
घलता रह कपाव मूक और जान की इच्छा विन्तु व
पर मः दुबला और कमजोर मुहमें दुगम्य, मल्लमें मार रहता ।

मल्लर १२,३०,२०० शक्ति ।—वह तान प्रका
क बाहो व लय रचारी है । मुठ्ठार बाहो कपावों में
मुठ्ठारगत मर कपत्र दिक्ता ११ कपत्रक समय मय्यन मुठ्ठ
निचल समय कपत्रार दुबलता व साथ मय्यनता, उर
व व मया

आनोंकी एक प्रकारकी दूधित भयस्याके कारण वहाँ बहुतसा आमके समान लसदार पदार्थ पैदा होजाता है । सब कीड़े उसीको खाकर जीवित रहते हैं । होमियोपैथिक औषध सेवन करनेसे आनोंकी यह दुधितायस्या दूर होतीहै, कीड़ोंकी सुराक्ष आम पैदा होना बन्द होजाताहै, अतएव सब कीड़े मरकर बाहर निकल पततहैं और फिर वहाँ पैदा नहीं होते ।

औषध प्रयोग ।—माघारणन दिनमें दोबार चिन्तु वभा वभा जय जवर आदि उपद्रव हों तो तान चार घटेक अन्तरमें एक एक मात्रा देनी चाहिये । गोट कीड़ोंका उपचार होना नमक के पानीका पिचकारा उत्तम है ।

पृथक् ।—कीड़ोंके उपद्रव में पथ्यन उपर विशय दृष्टि रखनी चाहिये । भात राटा, दाल, राखी तरपारा, दूध या शक्कर परदुप पत्र, गाड़ि धारोंमें छुड़ हुआ नहीं है । सब प्रकारका भाटा या मिठाई, कच्चा या बहुर पका हुआ पत्र फूल, मड़ा हुआ या घासी किमा प्रकारका साथ बिज्जुल निषिद्ध है ।

कोष्ठवह ।

(कार्टीपेशन)

स्वामाधिक रानमें कोष्ठ व्यच्छ न होने तथा दम्न जाने समय दद और बह दानेका नामका काष्ठवह है । कोष्ठवह प्राय एक लक्षण विशेष होना है मान इससे मातुम जानाहै कि शरारका बाइ न कोई यत्र विगड गया है । अतएव केवल काष्ठवहका एक रोग समझना मूय है ।

में घटने का कारण बन जाय और
हानि मात्रों से बचाने के लिए
जाता है मन दाक और दुख में
अन्त में मन न घटना हो।

लॉडिकोपाटियम ६, १२ शक्ति।—

हो कि तु दहन गता विनायक मन्त्रों का
मन्त्र कटित बहुत घाटा और बड़ा मुश्किल
हो दहन जायक उपमान एता हातुम हो बहुत
बहुतवा है मन्त्र और एता में भाग उटना ए
मन्त्रदाता।

नक्कनामिका १२, ३०, २०० शक्ति।—

कायन भार बरक भाग विद्यता हो वायव्य दस्तनी
एता मातुग हो भाग मन्त्र एता एता एता
बहुत बरक हो। एता वा कथा उता उता, वा
में वायव्यभासा दयाय मातुग हाता मन्त्रवा एता
गण बुद्ध परिधान मन्त्र कन्त्र और कन्त्र घट एता
बन मन्त्र ए मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र
मन्त्र मन्त्र मन्त्र हैं मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र
मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र

ओपियम ३, ६ शक्ति।—

बहुतता दलायत दवा मास मन्त्र मन्त्र मन्त्र
है कि मातोंका यम मन्त्र वाय विन्तु मन्त्र मन्त्र
एक एक मन्त्र मन्त्र दहन मन्त्र मन्त्र मन्त्र
बड़ा भार दाला काला मुन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र
मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र

में बैठनेसे पाण्ड्यद्धता, दस्त जानेके बाद पमा मात्रुम हाना मानो मल द्वारसे सरल आत की थोर छुरा लगाए जाता है, मन शांत और दुःख से पूण, पमा पराधार जिसमें रक्त न पड़ता हो।

लाइकोपोडियम ६,१२ शक्ति।—दस्तकी हापत हा कि तु दस्त नहा विनापकर सन्ध्या के समय, मल अत्यन्त कठिन, बहुत थोडा और बही मुश्किलसे निकलता हा, दस्त जावक उपरान्त पमा मात्रुम हा बहुतसा मल रहगया है अन्त और छाता में आग जग्ना, पेट बहुत गडगडाता।

नक्षत्रामिका १२,३०,२०० शक्ति।—मल बडा कान्त और पत्रक साथ चिन्लता हा, पारधार दस्तकी हाजत, पमा मात्रुम हो माना मल छार पर हागया ह अथवा बहुत बकडा है। घटा वा कंधा उफार उठता, पाकाशय में परधरबाभा द्यार मात्रुम हाता गभयना लाया, जा गग कुछ परिधम नगी करन और क्वल घैठ रहतह, जो क ग भयना हा गिन्ध गानि मिले हुए कृत्तनामे पचने पाठ पदाये गते हैं और पा पारधार जुहार की दना घान ह उर लिय यह उरगारी है।

त्रोपियम ३,६ शक्ति।—पुरान उररामयसे वा बहुतसा दन्नापर दवा मास अन्त में पेसा नयसा हाती है कि हातोका पग अथवा काय विरकृत ती रहना, एक एक सताह तक दस्त नहीं हाता, मन जोटा उ ग कडा और वाला बाग गुन दस्त, भयक पाण काष्ट पद अर्थात् पमाघान।

में घंटनन बाधवत्ता, दहन नामक बाध यथा मातृम
 हाता माता मत्त द्वायध वरत्त धीन ही भार दुरी म्पार
 जाना है मन दाध और दुष ध वृत्, यथा बयापार
 अज्ञसं दन न पटना दा ।

लाङ्क्रेपाडियम ६, १२ शक्ति ।—दहनही राजन
 दा बि मु दहन मत्त विदायध नाम्ना व ममय मत्त
 धयध वटिन, यदुन घोडा और बही गुादवत्त निवत्ता
 दा दहन नामक उपरान्त यथा मातृम दा यदुनता मत्त
 दहनवा है मत्त भार हाता में भाग उत्तना पट यदुन
 मत्तगहाता ।

नकुनगामिवा १२, २०, २०० शक्ति ।—मत्त यदा
 कात्म और बरध म्पार विवत्ता दा बाधवार दहनही राजन
 यथा मातृम दा माता मत्त हात यत्त हागया है मधवा
 यदुन मत्तदा । यदा वा व धा उदात्त उटना बाधागत
 में पाधरवासा दवाय मातृम हाता मधवता तयथा न
 त्ताम वृत्त परिधम मर्गि दहन भाग वरत्त पट रत्तर्द ओ
 व्वाग मधवा दा म्पार भागि म्पेत्त दुर धटिननाम यत्त
 भाग यदा म नै ह भाग म्पार पाधवार वृत्तार ही दधर
 वाग है, तत्त म्पार यत्त उपकारी है ।

श्रोपियम ३, ६ शक्ति ।—युगत उदरामयधे वा
 यदुनर्गि दलायध दवा मात्त म, त में यथा यवत्ता हाता
 है कि भातौवा यत्त मधवा बाध विवत्त मर्गि रहता,
 एक एक मत्तदा मत्त दहन तत्त हाता, मत्त दाटा उता
 पदा भार धाता बाग मुट्टा दा मधक कारण बाध
 मत्त भातौवा यत्तपात्त ।

मोचनका अतिवम आणख्य भौर तिनैत वम
 वार पुत्राय गेना यजन का त्रिषोम कमी और इति
 वमतागी के कारण यह राग होता है । अतिव से
 भागो क मय पडुका मतरा और वलिपुत्र सुख का
 सही राग दूर न ताते ।

चिदि म । — छोटमकुड द्व शक्ति । —

मय पदम वम वार । तजलता हा पूरी उमर हा
 मतरा । एक बार काटलता मोर एक बार उमर
 पना मादम हा भागो पदमका कस हाण वि
 हाण मोचनका वागु तिनैत जाय मतरा हा
 मय । तजल ।

त्रादेनिया द्व शक्ति । —

कथा तिनैत मय वम वम कथा । तजलता हा
 हाण न मय मय भागो भागो वम उमर हा
 वम हाण कथा मय मय मय पदम विचार ।

वैदेनिया द्व शक्ति । —

कथा मय मय । तजलता क हाण मय मय मय
 वम हाण मय मय । तजलता मय हा वम
 वम हाण मय मय मय । तजलता मय हा

मय कुटिम ३२, ३० शक्ति । —

कथा मय मय । तजलता क हाण मय मय मय
 मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय
 मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय

मय कुटिम ३ शक्ति । —

में बैठनेसे पाएयद्धता, दस्त जानेके बाद एसा मातुम हाना मानो मल द्वारमे सरल आत की ओर छुरा लगाई जाना है, मा शाक और दुध से पूण, एसा प्यासीर जिसमें रक्त पडना हो।

लाडिकोपोडियम ६, १२ शक्ति।—दस्तकी हापत

हा कि तु दस्त नहा बिनापकर सञ्चा के समय, मल अत्यन्त कठिन, बहुत थोडा और बड़ी मुश्किलसे निकलता हा दस्त जाक उपरान्त एसा मातुम हा बहुतसा मल रहगया है, अम्ल और छाता में आग उठना, पेट बहुत गडगडाना।

नकमनामिका १२, ३०, २०० शक्ति।—मल बडा,

कठिन और कपक साय निकलता हा धार्यार दस्तकी हाजत एसा मातुम हो माना मल हार पद हागया है अथवा बहुत बकहा है। छट्टा वा कच्ची उफार उठना, पाकाशय में परधरकासा द्यार मातुम हाना समयना लिपा जा गग बुद्ध परिश्रम नगी करन और काल बैठ रहनह, जो आग भरदा हा गिरच गानि मिल हुए कठिनताम पचने गाले पदाय माने है और ग धार्यार जुवार की दस्त खात ह उनक लिय यह उपरागी है।

ओपियम ३, ६ शक्ति।—पुरान उदरामयसे वा

बहुतसा दस्ताधर दबा खानस अन्त में पेसा गचप्या होती है कि आतोंका वग अथवा काय बिगडुन नहीं रहना, एक एक सताह तक दस्त नहीं हाना मल छाटा उग कडा और साला साला गुठल दार भयक धारण काए मरु, आतोंका प साधान।

अत्यन्त दृढ़—एकोनाईट । ज्वर और पुजला—कैपसीकम, आर्सेनिक । रक्त गिरना, रक्त न पड़ना—मर्कुरियस, स्क्विलस, पल्साटिला । घवासीर पचानेपर—मर्कुरियस ।

एकोनाईट ३,६ शक्ति ।—यदि अत्यन्त दृढ़ और जलन हो और लाल रङ्गवा रक्तस्राव होतो यह शौष्य ही जाता है । मस्सॉमें यदि खँचन या टन टनाहट होतो यह दवा फायदा करती है ।

आर्सेनिक ६,३० शक्ति ।—अत्यन्त दृढ़, असाह्य ज्वर और दुबलता । शराय पीनवालोंका घवासीर ।

कालिन्मोटिया ।—पुराना घवासार, साथही अत्यन्त कोष्टकता । अधिक रात्रिके समय घडना, प्रातःकाल के समय घमी ।

हैमोमेलिस ३ शक्ति ।—दृढ़ और रक्तस्राव में यह उपकारी है । घाटा रक्तस्राव और दुबलता अधिक ।

हाईड्रामटिम ३ शक्ति ।—जर कोष्टक ही प्रधान उपसर्ग हो उठ ।

नक्सवॉमिका ३० शक्ति ।—या लाग केवल बैठे रहनेहैं और अति पुष्टिकारक पदार्थ खाते हैं यह उपकारी है शराय पीत
 जान का इच्छा काय

सल्फर ३०

अत्यन्त गुणकारक है ।
 होता है ।

काँच बाहर निकलना ।

(प्रोलेप्सु येनी)

उदरामय वा रजामांसय बहुत दिन तक रहनेपर जोर करत करत काँच बाहर बानी पड़ती है। इसका यदि किन्हीं कोष्ठमय, मूत्रादि रोगोंमें भी काँच बाहर निकल आता है।

चिन्तिता। — क्षैत्रक्षेरिया क्षयि १२, ३० शक्ति ।— मयश्मन्त दूषित धातु चिन्तियाश्रयों का माया बड़ा होता है और धातु (मन्त) में ३ अक्ष हर्षा वैशा र्णी दाता शरीर दुबधा किन्तु पट बड़ा मार माटा तथा उत्तम धुधा उदरामय काष्ठक समाप्त मय मलद्वारों मयगत सुरपुराहट और गुजला।

माक्यूरियम ई दाक्ति ।— उदरामय भयया रजा मांसय रोगव भयत यमक साथ काच निकल आता।

नक्षत्रयोमिका ई, १२, ३० शक्ति ।—स्वामाधिक काष्ठक धातु मय स्वयं, बड़ा भार गहन हा बाहर न निकलता हो, या गाय परिधम नहीं करते और जाने पीने के सम्बन्ध में मत्यामार करत ह दक्ष साथ बयासीर, सब स्थानों का मात काच क समय बढता।

पाडोफाडतम ३, ६ शक्ति ।—विना दक्ष मजीण मय मय स्वात क समय और उपरगत काँच बाहर निकलता।

[५]

नक्षत्रोमिका श्रौर सत्वफर ।—यह मन्त्र
की शपथ महीषघ्न हैं । एक बृन्द सत्वफर प्रातःकाल और एक
बृन्द नक्षत्रोमिका रात्रिको सोते समय एक सप्ताह तक व्यवहार
करनी चाहिये ।

सहकारी उपाय ।—भास और सब प्रकारक गरम
मसाल मिच लाल घ काला आदि गरम चीजें खाना निषिद्ध
है । प्रतिदिन ठंड पाना का व्यवहार, यथानियम परिश्रम,
नहीं बचनेवाल पदार्थों का परित्याग आवश्यक है ।
एसे भाजन करना उचित है जिससे काष्ठ नरम रहे, इसलिये
यथाशीघ्र के रोगा को भोजनके समय फल मूल अधिक खाना
चाहिये । यथासार क रोगा का प्रतिदिन सोने से पहल गृह
ज्ञानका नियम रक्खना बहुत अच्छा है । एस रोगा का स्नान
और भाजन पर विशेष दृष्ट रक्खना चाहिये ।

जिस अशमें रक्तघ्राय न हा, उस में यदि जखन और
अत्यंत दह हाता गरम पानी का स्नान करन से माराम
मात्रुम हाताहै । गरम पानी में एकानारट या आर्नि
मिलाकर [एक गाउ म पानामें दस बृन्द शौषध] उसमें
एपडा भिगाकर रमनशभा फायदा हाताहै । यदि गरम
अशमें दोम पडे ता उनमें पुलटिस लगाना अच्छा है ।
यदि मम्भोंमें अत्यन्त रुज्जबी मात्रुम हातो हाता धारासिक
रमिडमें घमाला मिलाकर मलग स्याकर लगानस उमी
तमय रुज्जबी मिट जाता है । इसुधस मिर नशघ
लेये बहुतहा उपकारहै ।

शब्द-संग्रहः ।

(१) शब्द-संग्रहः ।

अथ शब्द-संग्रहः । अथ शब्द-संग्रहः । अथ शब्द-संग्रहः । अथ शब्द-संग्रहः । अथ शब्द-संग्रहः ।

अथ शब्द-संग्रहः । अथ शब्द-संग्रहः । अथ शब्द-संग्रहः । अथ शब्द-संग्रहः । अथ शब्द-संग्रहः ।

अथ शब्द-संग्रहः । अथ शब्द-संग्रहः । अथ शब्द-संग्रहः । अथ शब्द-संग्रहः । अथ शब्द-संग्रहः ।

अथ शब्द-संग्रहः । अथ शब्द-संग्रहः । अथ शब्द-संग्रहः । अथ शब्द-संग्रहः । अथ शब्द-संग्रहः ।



नीतिज्ञान, स्पष्ट दृष्टि पहचान और सदाचार से
 वेद और मनु दोनों ही अन्वयित रहने हैं। मात्र
 आहार विहार के अनेक प्रकारके दुष्टाचार लोगोंमें प्रविष्ट
 हो गये हैं, इनसे बचीभूत होकर मनुष्य केवल मनु
 को ही नहीं, परम अपन मनको भी अनुचित कर सदाचार
 के लिये तनमनसे चुनो रहकर बहुत ही पुरीतरह मनी
 मानुष्य पूरी करत है तथा मनुष्य समाज का पापक मर
 क्ष बाधा बन है। उपर्युक्त विषय पुरन परम्परास निम्ने
 पुनो परेच। न हाता है। विद्यादिन पुरन्या यह मनी
 मने क्षरण रचना आदिपत्र क वहाका नाति और सदा
 चार के उपर उताक यथा नाति सदाचार सास्त्र
 के अनुसर है। मानकल कम और नाति की विना
 क दनायगे यह कन्येद्वारा निम्ना सिद्धि हातागत है
 उतरी ही य कय जयस्य भीदों केडनी जारी है। एव
 पानिथ वेद मनुष्यों की सबया बहुत हा कम है और
 साधारण ममह और उपर्युक्त का विषय विस्तृत ही है।
 यह यहा कारण है कि मानकल समाजका सास्त्र और
 मुख इनका कम हागया है।

मनुष्यका पापका दंड हागे प्राय निम्ना है। उर्युक्त
 रोगकी यथा और कष्ट बहुत ही मुग है। एव यथा
 है कनस एक कर होगा है उतने उपर्युक्त यथा
 रणो ही मति मुग है उनमें जगत हाता है मर की
 है क मय यह हाता है। ये यथा है उनमें मनु
 पैदा हाता है और मनु में मनुष्यधरणा क हाता है
 यथादिन यथा न मनुष्य का सास्त्र मनुष्यों मर कनस
 कर उपर्युक्त हाता है। यथादिन के कष्ट का हाता

द्वितीय और तृतीयायत्ना में :—

मार्कुरियस ६, ३० शक्ति ।—ज्वरमात्तुम हाना
गले क घाव, घात का दह, विधाम और शय्या का गरमा
का घटना, शरारमें अनेक प्रकार के उद्भेद, गलेमें कम गहर
घाव, आँसोंमें जलन, टांसिल गाठ आदिवा सूचना उत्पन्न
करना और उनमें घाव पैदा होना, भीतरी ज्वर और
देह का क्षामता [दुबलापन] ।

कालीहाईट्रो ३, ६ शक्ति ।—दूसरी और तीसरी थयसोंमें
विष दूर करने का त्रय विशेषकर कनक रिय पिनन अधिक पारा
व्यवहार किया हा यह एक उत्तम औषध है । श्याम स्थानमें
फूल उठना, खमराग टांसिल गाँठों में घाव, दृष्टियों का
दहन वाली छिद्रियों में प्रदाह नाक मुद्दे भीतर का गठे
के भीतर घाव, उनमेंस घाव पैदा करने पाञ्चा और जञ्चन
करन वाला स्याउ, सर्दी ।

जरम १२, ३० शक्ति ।—नाकस बदबूदार स्याव
नाक तालू आदि स्थानों की दृष्टी सड जाना नाक तालू
आदि स्थानों में घाव, उनमें दुग धयुक्त स्याव मस्तक की दृष्टी
का फूलना, उपद्रव के दोष स घात घातमहत्या करके की
दृष्ट्या, उपद्रव बार बार के विषम जय शरीर जञ्जरित
हाना है तय यह औषध उपचार करती है ।

गार्ड्रिक ऐमिड ६, ३० शक्ति ।—मुहमें घाव और
हाँसे केने फट हुए । पहल अधिक पारे का व्यवहार
कियागया हा ता यह अधिकतर उपचार है ।

काली-वाइक्रम ३, ६ शक्ति ।—टांसिल गाठ का घाव

घट्ट ।

(व्यूषो)

सूक्ष्मणु ।—प्रसह वा उपसह (गम्भी वा राग) व दाह
 व चारण दाह की सब गाँठों में प्रसह दाहने लगता है
 इसी का घट्ट बढ़त है । सब गाँठों का घूँसलाना दाह दाहा
 लाह दाह, तथा गरम धीरे बड़ा हाजाना दाह इतक
 लक्षण । कामदा उनमें मयाद पड़जाता धीरे व पकजाती है ।
 इस समय मंगिरिन टह लगकर उपर होजाता है । घट्ट प्राय
 पकजाता है ।

शिकरणा ।—वेलेठोना ३, ६ शक्ति ।—प्रथमावस्था
 में मथाश्रु जब मथत बर धीरे टनटनाहट माल दाह,
 प्रसाह आदि हा ।

मकुंरिषस आपोठ ३, ६ शक्ति (विदूष्य) ।—
 जब घट्ट मथम्य बडा हा जब ।

धुंवर-मलफर ६, १२ शक्ति ।—दाह पथ उन पद
 धीरे गर वा दाह मथिन बदन पथ ।

प्रागेविक अयाोट ३, ६ शक्ति (अचूर्ण) ।—
 दाह दाह व मथम मे मथम मथम पदाहम वा दाह ।
 दाह मथम मथ वर वा रीट उन दाह हा ।

व वे-पेनेमेजिस १२ ३० शक्ति ।—दाह दाह
 दाह व । दाह धीरे मथिन दाह दाह दाह दाह ।

दिये जाते हैं । सर पट्टा कल दम दिग्गता पडता मी
अतिशय १२ शक्ति विद्यन उपकारी है ।

सङ्कामी उपाय ।—बद हागेही पूरी तरहम विपन्न

करना परत भाय-यकीय है, दग दुखमें पाडा वपुर्क
पुमना किना वदुन उकतात करत पाडा ह । बरे ल
कमशा यलन लग ता लगानार गरम पुनरिम लगनी
बाहि । बद माय एक उडनाडे, घडनी मरी । पडना
बदना अगाका भागवतता हातीडे । जयनक भाव मरक
तरहम न गूय भाय तयनक विचारक अभी मरी मरक
बादिय । भायका भाडा भाग्य भाराम हातडा वनक
किना मारम करदिया जाये ता सर पडनातीडे । क
पडतगर रोग वदुन पु भाग्य भोट कष्टदायक हाताता है ।



मोह ।

[गनेरिया] ।

दम भाग्य प्रसन्न उद्वेग य है — एता ता पुनरुडा
दिग्गता प्रसन्न भेक उमनेम मयन विवल्ता । बद
मरक [पुनम अगत वला] राग क तरे भेक प्रसन्न भाग्य
म्या भाग्य वलन कलक १ नाह । वन / मयन कलेडे वदुन
वीक उडन मूडम अर म भाग्य उरन हा भातरे । मरक
पडतगर रोग वदुन पु भाग्य भोट कष्टदायक हाताता है ।

अनर का पदपति ३ [१० द १ मया] दीकद क
१ मयन कलक १ नाह १ मयन कलेडे वदुन

प्रमेहके सत्र परवर्तीउपमर्ग ।

प्रथम, पुराना प्रमेह ।

प्रमेह प्रायः पुराना थाकार धारण करताहै विशेषकर याद उसका थच्छा चिकित्सा गहा, पुराना प्रमेह प्रायः अमाप्य हाजाताहै । नाच कुछ एक आपधे लक्षतर्ते ।

चिकित्सा ।—

सं गिया ३०, तदुम मुलात्कम ३०, बलपर ३० नाह्निय ऐमिड ३० सूना ३० पदालयम ३०, अति उत्तमहै ।

द्वितीय पुरुषेन्द्रियका कडापन और टडापन ।

प्रमेह क उपरान्त पुरुषेन्द्रिय नाचकी धार अधया यगात्का धार भुक् जाताह । इस समय पुरुषाद्रय कतिन सूना हुए धार उसमें दद मालूम हाता है ।

चिकित्सा ।—पुरुषेन्द्रियक ऊपर टिचर धायाडान घाहस पानामें मिश्राकर लगास प्राय फायदा माद्रूम पडता है ।

गाड, पीलरगक मवाद्रक साथ यदि टडापन हातो कैपसी कम ३, उक्त खच्चणके साथ पेशाधमें जलाहो अधया रक्त प्रसार हातो कयेरिस ३, अचाक यद् होमानेपर पलसाटिला ३०, उपकारी ।

तृतीय, रक्तप्रघाथ ।

चिकित्सा ।— एकोनाईट ३ शक्ति ।—

अत्यन्त प्रदाह ज्वर, प्यास, पुरुषेन्द्रियका कडापन और अत्यन्त गरमी माद्रूम होना ।

अजेटम-नाइट्रिकम द्व शक्ति ।—उत्तम औषध है । पशाय करनेमें कष्ट और मध्याह्न निकलना और रक्तमग्न मध्याह्न रक्त मिला हुआ पशाय हाता केम्यरिस द्व शक्ति का कारी है । यदि अण्डकाय प्रदाह हाता पल्लमात्रिका द्व शक्ति ।

अतुष मुस ।

लक्षण ।—पुत्रवस्त्रिक अन्नभागकी खाण वृत्त मूत्राहुर भार प्रदाहन हा तथा बन्ध हाजाय इसम मर्दि पूर्णतरह न निकल सकताहा और पुद्वान्द्रवकी काउ खाली न जाय ।

चिकित्सा ।—अन्नभागकी ल्यथा (काक) का अन्न पृटना, मापदा जलन कटन डाल रोग भार, वरहा तथा पट जानकर मसूरवस द्व शक्ति । ल्यथा भार अन्नभाग न अन्नगत मूत्रन हाता रक्तमग्न द्व वा पेपिस द्व मसूरगी । प रागका मान उत्तम भाववद् ।

पल्ल औषध प्रयोग कर दलना चाहिये । यदि मापध कुछ उपकार न दाल पड़ना नकरन लगाकर उमरा मूत्रवदना उत्तम है ।

पचम, मसूरका पृटना ।

चिकित्सा ।—पल्लमात्रिका द्व वा ३०, मसूरवस । मापध ३० क्रिमेटिस द्व यदि उत्तम औषधियी है । प प्रेक्षाका अन्नभागे लगा ट मर्दि औषधका मापध क्रिम अन्नभागे मूलन न पावे ।

अमरुत कापध का वन उत्तम है ^१ उमरी प्रप

मौख्य—श्लोकान्त ६, पलसाटिका, ३०, सारसा ६ युजा २०, सद्यपर ३० ।

स्वप्नदोष ।

स्वप्नमें भवया और जसा समय अनिच्छाम वायवान्कार उक्त साध पुरपादपदा नृपन्ताका ह्य साधारण गाम स्वप्नदापहा कहेंतो दावह । स्वप्नदापक समान युयवमनाट्य हह मार मनका कलुग्न और दूषित करने पाया सांसारक सुख स्वच्छान्ताका शत्रु नायद और बाद राग नदोंह । यह वडादा कहनाप्य रागह ।

हम रागका मूलकारण यौवनका माया हल मयुन दापदे । जजन हल मयुनक भावया प्रभावका ध्यान पूषक जायकाहे समाजमें मधयुयवोंमें, क्यूवक दावकोंमें हमके फगाय धार हमका सन्धानाश करनयाग मूलका अनु सन्धान बिपाह वद खाँहत, स्नाम्भन और भयमान ह्यपिना रहनहों सजना । हमक सातारक आ दाव मधयुयवों स्वाक्य और सुखका मद्दमें मिंग दतादे उमक मने माता पिता और अधिनापक शिक्षकोंका येना लापरवाही देखका औरों ममाहन, छाथन और हेन दाता पहनादे । यह बाव मयका जानना चाहय धार बावक दावकोंको समानता चाहय । हम ह्यपमयुम युडे कृनि दाव दाताह स्वरण गले युयव दाताह मान मक प्रहोत मय दाता है सायुविधान रागमल दाता है नयवोंगाह सय दाता हयक रहमन भाव माया कलुषन दातादे । महीं कदसकन कि हलत कदहर दाव रखनारा और बाद

मा है मघया नहीं ।

यद् दाय यौवनक प्रारम्भमें अगनम बहा उमर बागम
 रीमें प्रथलिन हाताहै । हागा नदोपका इस वग
 में प्रथलिन करता है । बालक नहीं जानता । न इस पापका
 ल क्या हागा । पिता माता भार लरचुकीका कना
 क बालकीपर सयदा नाम हाते रने उनका कुममरी
 यही उमर बागम क माग एकात्ममें नहा बडने एना
 य । यान किधामें कउय पहमा जाय तो उपरग
 गायुा भममय क द्वारा तथा मुत्तामयग क माय
 कर उनका नगुन कना न्यालय

इह बाग मघया हा जान लना न्याहव । न एक बा
 पापकम में पहनक उपराम्म उम म । नर कुम्भग
 बहुरना कात्म है । इस अयय पादक ही म यो ई
 म न पहन पाय मा मरुहा ह इस अयय में इम
 म हाग हाता है ।

म कुमठयाम का मुगाएक बहुर दिन तक मुगा मी
 नना । शरार कुबला लाननयरीन माली क बा
 कारिमा मिरदद हातेका कमतरा निरगुमना बा
 उमरुय महान धरग भूलना कमी मागना मुने
 प्रना मरुणाःक मार कटिका हाग इनामान
 मुनक रहना ममार मल यही तक । न चयक नयल
 म म ए इ लकम गायना प्रकणयन हावने ।

विहिता । — इय मयुन क कात्म मरुके
 म म य पाप हाउ न ह । यय न विहाया यद हा
 मयमुनय न हल मयय मुन ह उमका मुनक

विलकुल छोड़ना चाहिये । सय बाम उनेचना करन वाली चिन्ता, किमाय पढना, चित्राङ्किका देरना और निमने पुनर्हनि उसेनित होनीहै, एमी सय घाते विलकुल छोड़देना चाहिये । प्रनिरिन स्नान नियमित स्नास्त्रकर गान्न, यधोचित व्यायाम, सरकाय और सदा स्नान, कठिन शय्या यथा चटार पर सोना प्रात काल उठना भादि नियमोंपर विनिय हष्टि रचना चाहिये । सय उचनइ पद्मथ यथा गम मसारा, मान व्याप आदि विट कृत् छ ड दना चाहिये ।

कतकेरिया-दार्ब १२, ३० शक्ति ।—रोगा माँ दुसा और उनाम रहना हो रोन की इच्छा कैसा भी दुधटना स भय सात सगाय यग दुम गारवार याय निकल जाना, दानों पैर ठण्ड गार गाल ।

सागगा ६, ३० शक्ति ।—रिमी प्रकारक गी वरि धन में ची न ग्यना, हस्तमैथुन व काण्य शल्य व दुवल करन वाला स्वप्रदाय परिशाद गाल दुवल गार मूत्र ग लगना, राप्रक समय बहुतमा दुवल कर, गाला पम ना ।

नङ्गवोमिका ६, १२, ३० शक्ति ।—रोगा का बाध बहुत आना हा, मारा का प्रस्तुत हज ध, श्रोत्र खनाय और एका त में रटा का इच्छा करना हा, स्वाभा न्क काष्टयह, मळ बहुत पडा गार कठिन, जा घाते पी । में बहुत यमिन्नविल रहत है थार ।ज होने अनाद्यों की बहुत भावपे वार हैं उनक लिय यह औषध गुणकारा है ।

फासफोमिक—ऐमिड ६, १२ शक्ति ।—

विलुप्त लावण्यादी, बात करने का यहाँ तक कि इस का उत्तरदाता का भी जी न चाहना हो, बारबार विना इच्छा के शुक्रपान और यहाँ बहुत दुबल करने वगैरे विशेषकर स्नायुविधान (तन्त्र) आज्ञागत प्राणकाल के समय पहुँचना पभीता ।

स्टाफिरोप्रिया ६ शक्ति ।—बहुत ही उदासीनता मिश्रित दौक नहीं कबल राग की चिन्ता करना और राग ही इच्छा पलकों + विचार प्रदाह ताकत की चली चली हावक अग्रक भाग व्यग्रहीत ।

जेठमीमीम ३, ६ शक्ति ।—सिध्दता के कारण अग्रदाय पुनर्जात का उभाऊत न हाकर समस्तुम वीर्यन अग्रदाय में प्रकृतार्थ अग्रदाय भार कामाग्रपक अउ उदासा नकरा रणनूय अग्रे मानक की मात्र पुन पुन ।

टिनीटेन्डिस ६, १२ शक्ति ।—विना इच्छा ही बात के मात्र एक अग्र भार पुनर्द्रिय में रहे के मत अग्रदाय पुनर्द्रिय की दुबलता सामान्य स्थित अउरेक हता अइच्छा अविध्यन के लिए निराशा भार प्रवा ।

टायोस्कोप्रिया ६ शक्ति ।—बहु अग्रदाय के इच्छा अंगन है ।

नेत्रम-स्युगेडिक १२, ३०

अग्रदाय अग्रदाय इ अग्रदाय अग्र

अग्रदाय अग्रदाय १००

विद्येदा ६

६

न हाना और भाडाया रम निकलजाता ।

कोनियम ३,६ शक्ति ।—एकभद्र मण्डकोर
 मूखर कृत् हाताये भाडा उमरमेंही बुलाया, मन्वन्त रति
 बियाका बुला । •

लाडियायोडियम १२,३० शक्ति ।—एकमंग पु
 पांद्रिय हाता और सिपिय, पुद्रिय उतजित नदा धयया
 पदुनही कमदा क्मरण नाति और पतिवाक शक्ति दुषन्,
 मन्वन्त मोदक मन्वदाय ।

मेलनियम १२,३० शक्ति ।—पदुनही न प्र रीय
 क्मरण और पदुन भाडा पुद्रिया प्रयची उलजना पुत्र बहुरदा
 पनला मन्में काम बिम्बा बिन्नु एवजभाग पटन भात
 पान्त या हकन जाने मन्वय भाडासा रसनिबधना ।

मन्वन्त बाजाहीन्त—हायासापमम मकृतिपम नकमयो
 मिका नागनामन क्माम गिवम ।

मन्वन्त हकनैभुन म्पुलि—कैलकीया नकम म्पुद्रर ।
 एवजमद्र—एवजम वैराणाबाय कैलकीया कानियम
 हायोसापम ।

औषध प्रयोग ।—दिने २ । ३ पात ।

महदारी उपाय ।—महन एवज रोगहा कान्य
 पूर करना क्मदिष । किकित कानिमें म न मन्वय इम्पेका
 मन्व करना क्मदिष । कान्य एवज मन्वन्तमन्वय और
 मन्वना मन्वन्त कानि क्मदिष उमके कन्वन्त एवज
 करना क्मदिष ।

न होना और थोड़ासा रस निकलजाना ।

कोनियम ३,६ शक्ति ।—ध्वजमद्ग मण्डकोप

मूत्रपर छाटे टोपायें, थोड़ा उमरमेंही पुटाया, अत्यन्त रक्ति
शियाला बुझ् । ●

लार्डिकापोडियम १२,३० शक्ति ।—ध्वजमग, पुक

पाँद्रिय छाटा और शिथिल, पुकपाँद्रिय उल्लेखित नहा अथवा
बहुनही कमहो, स्मरण शक्ति और परिपाक शक्ति दुबल,
अत्यन्त मोक्ष सप्रदाय ।

मेलनियम १२,३० शक्ति ।—बहुतही शीघ्र वाय

स्वल्पन और बहुत थोड़ी पुत्रपाँद्रियों उभेजना, पुक बहुतही
पतला मनमें काम चिन्ता किन्तु ध्वजमग पठत सात
चलन या नस्त जाते समय थोड़ासा रसनिष्कृता ।

अत्यन्त कामाहापन—हायासापेयस मकुरियस, नकमपो
मिजा फामफोरस, म्यामागियम ।

अत्यन्त हस्तमैथुन प्रवृत्ति—कैल्कुरिया नकम, मधुपर ।
ध्वजमद्ग—ध्वजस वैराटाथाय, कैल्कुरिया, कानियम
दायोसापेयस ।

औषध प्रयोग ।—दिनों २ । ३ बार ।

महकारी उपाय ।—सबस पहले रोगका कारण
दूर करना चाहिये । प्रतिदिन रात्रिमें साते समय इधरका
नाम करनेा चाहिये । सातस पहले भगवत्स्मरण और
प्रार्थना अथवा करनी चाहिये, उमके उपरान्त शयन
करना चाहिये ।

पृथक् ।—आहार पुष्टिकर और हल्का दाना उचित है । घाने पीनेकी चीजोंमें किमा प्रसारण उत्तम बननी होनी चाहिये । मांस गिर्यकुशी नापसन्द है । रात्रि समय भाजन बहुत हल्का दाना चाहिये ॥

अष्टादश अध्याय ।

मूत्रपन्त्र सम्बन्धीय रोग ।

शृङ्गक प्रदाह । (नेफ्रॉइटिस)

कमरके पान में रुद्ध होने दाना और दो मूत्रपन्त्र [गाँठ] हैं उनको शृङ्गक कहते हैं । इस शृङ्गक गाँठोंमें रक्तमे मूत्र उत्पन्न होता है । पहले सदा लगकर जरा हान्यकारण अथवा रोगों शृङ्गकोंमें तप्त रक्त होता है और मान गलूम होता है यथापर पेशाब करनेका हाजन हाजाई किन्तु बड़े कष्टों और तकलीफमें बहुत घाडा पेशाब होता है । यदि शृङ्गकोंमें दाता निरस और रुद्धता उस कारण श्लेष्मा नही जाता, साथ रक्त होनेसे अत्यन्त रक्त होता है । यदि कभी मूत्रपन्त्रोंमें हाकर मूत्राधार और पुष्पान्त्रिय निरस कभी रुकनेसे स अस्वच्छतामें मातृम होता है । रोगका लक्षण ८ । ९ दिनोंमें शक्ति नही रहती किन्तु उच्च रोग पुराना गहजता है जो शक्ति तथा रक्त कि उपेक्षित कष्ट देता रहता है । अन्तमें शक्ति घा उठ उठकर पेशाब पेशाब उत्पन्न करने चाहते तब श्लेष्मा सेवन

करना गिरा, या चोखलमना अधिक भाग धस्तु उठाया
इत्यादि इन रागक कारण है ।

त्रिकतना १— एफानाइट ३,६ शक्ति ।—

प्रधानस्थानों में— जग ताश तेज कार बहुत व्यास पशाय
६३ मृदुय १६३ घूमना इत्यादि ।

बेलडाना ३,६ शक्ति ।—

मूत्रावर पथ पर चयक मारकर उठवाहा अचानक जैसे
दद उठवाहा उसा प्रसार चला जाय पनाय गाडा उजल
गाय या पौर रगना, सफ़द गाडा पदार्थ नाचे जम जाय
एसा मातुम हा माना पाठ दृष्ट पनेगी इसलिये
हितचल न सकता ।

केन्थेरिम ३,६ शक्ति ।—

गगर गरम, व्यास और
घयगाष्ट पृष्कक आदि स्थानों में चयक मारना, काटनेक
समान दद सधना पनाय करनेकी इच्छा दाघार दूद
पशाय दनी रत मिला हुआ मूत्राधार में अखन
काटनेके स्थान दद पेनाय कराया दापन हा । यस्तु
विशुद्धी पशाय नही उठता उधकाह कार पटमें
बहुत दद ।

हार्डिकोपोडपम ३,१२,३० शक्ति ।—

मूत्राधीन लकर मूत्राधारतक दद, विशेषकर दगीहना कार
माहमहा, पनायमें लाल रग, घातुके समान पशाय नाचे
जम जाय, प्रत्यक्षकार पेशाय करनेसे पहले पाठमें भयानक
दद, जैसे पशाय कारम्भ हा वैतही ददमें आराम
मालुन पद्य ।

हीपर-रालफर ६,१२ शक्ति ।—जहा मरुद पद गर्हदा मधया मयाद पदनकी आशङ्का मातुम पड । शुभ श्देशमें लपकन, एकवार शीत और एक बार कम्प और गरमी मालुमहो उपरांत बहुत पसीना ।

मर्कुरियम ६ शक्ति ।—यह हीपरके समान मरु लक्षणहो कि नु हीपरस कुछ फायदा मातुम न पड । पण थोडा, लाठरङ्ग और बहुत मध खाताहा एसात शुरु आवे किन्तु उससे कुछ आराम मातुम न पड ।

नक्सोमिका ६,१२ ३० शक्ति ।—यह राग विम प्रफारका परिश्रम नहीं करत ममिताहारी है मध्या खात पीनामें ठाक नियमोका प्रतिपाठन नहीं करत आर उर अशक्त रक्तस्राव बन्द होकर राग उत्पन्न हा कमसे अत्यन्त दू पेशाब करनेका हाजत किन्तु एक एक शूर बरके सामान्य पशाब हो अत्यन्त कष्ट और चर कोष्टक ।

पलमाटिला ३,६ शक्ति ।—स्त्रावा वितका शुरु कमहो मधया नहो, बार बार पेशाब कराकी हाजत किन्तु पेशाब नहोकर कयल कष्ट सफेद पानीक समान पशाब उसमें गाढा पशाब नीच जम जाय, गरम घरमें सर्वांग जगना, घात बाल मुहका सुरा स्वाद, पैटकर उन्मत्त सिर घूमना ।

मोपिया ६,१२ शक्ति ।—बहन्का पाहा ए पाकाउप खाली मातुम टागा, पटाबक समय बहुत ठंड

जल और दूध, बहुत बदनूदार पनाब, उसमें कीचड़स समा ।
 पदा । जमजाना और किन्ना यनामें रखनस उसमें लिहस जाग,
 मलहार में बहुत भार माटुम होना, दस्त हाजाने परभा बस में
 बुद्ध माराम माटुम न हाना ।

टरीविन्ध ३,६ शक्ति ।—घुला हुआ, धाडा, रक्त
 मिलाहुआ पशाष अधिक रक्तप्रस्राव, मर्दी लगनेम शृङ्खलें
 प्रदाह शोधक रक्षण ।

आर्सेनिक ३० शक्ति ।—पुराना राग उदरा शोध
 इत्यादि छल्लण रदन पर ।

सल्फर १२,३० शक्ति ।—पुराने रागमें जव
 आर मारघोंस पूरा माराम न शक्ति अधिक बदनूदार
 पशाष, कमरके स्थानमें जलन और खेंचनस समाग दद ।

पुराने रोगमें कालराकण, घब्राडानियम, गुग्गुलुम वादि
 उपकारी ह ।

औषध प्रयोग ।—नर अथव्यामें २ । ३ घटक अंतरस
 जव तक पायदा नहो दवा देनी चाहिये । पायदा दीखनपर
 ३ । ४ घटक अंतरस ।

महकारी उपाय ।—तृणाम्यामें पमान दोहर
 शरीरका मैत्र दूर हो यह दम्बता उचितहै । स्वाधायन
 किन्नी प्रवारका ठंडा हुआ शरीरमें न जगनी चाहिये इन
 त्रिये सवदा फलाखन वादि गरम कपड पहने रहना उचित है ।
 पहनी अवस्थामें शृङ्खल क स्थानपर सक्नेम माराम माटुम
 होताहै । पुरानी अवस्थामें बहुतसा कमरस और मच्छ

मूर्ति दूर, एक जाय और मांस बढ़जाय उसमें टनटनाहट और दद ।

इनके सिवाय प्राफाइटिस मफूरियस एन्टिमकूड उपकारी हैं ।

सहकारी उपाय ।—उगुली में अत्यन्त जलन और टनटनाहट होतो गरम पानसे सक्ने से सहजहा में दद मिट जानाहै । निहवास नासूनका कोना बहुत साथधागिस काट डालना चाहिये । फराहोरार्डिका लोशन या चूण यादरी प्रयोग करनसे यह कष्टदायक राग बहुतही शीघ्र भाराम्य हाजाना है ।



विमर्गि ।

(विहडूले)

लक्षणा ।—यह अत्यन्त कष्टदायक राग है । उगुलीके आगके भागमें प्रदाह हाकर मवाद उत्पन्न होनाताहै । उच्चाप असह्य घेदना लपकन लाल रंग इत्यादि इसके लक्षण हैं । उगुली से लकर समग्र हाथ दद करने लगता है ।

चिकित्सा ।—चाट लगनसे—लीडम । मवाद उत्पन्न हानसे पहल—हीपर एकमिल पाऊ—साइबेरिया सेल्फर ।

साइलेसिया १२,३० शक्ति ।—विमर्गकी यह एक उत्तम औषध है । रागका सुप्तपान हानही यह औषध

अटमूलम नष्ट होनाही है । केवलरिया-सायक सेवन से उसका पुनः जाना संभव है ।

महजारी उपाय ।— रोग आरम्भ होता ही अगुनी का धार धार गरमपानसे उग्ररमना आर हाथ नीचे न रखकर ऊंचा रचना बहुत फायदा मन्द है । दूध दूर करने में श्लेष्म गरम पुत्रसि बाधनी चाहिये । आघदपकता हाता चारा श्रुगाण्डिया जाता है किन्तु चौरा लगाने समय साथ धाना रचना चाहिये जिससे अगुलाकी ह्याग नस नष्ट जायें । घाव हा जान पर कैठ-ट्टला लगाने से भीता चाहिये ।



मस्मे ।

वार्दिम् ।

मस्मे कष्टदायक नडा जान है किन्तु कभी कभी बचने में दुरे मारुत जान है । चन्द पर लगाने चन्द की खुशबूना को शिगाडने हैं । यदि चन्दम मस्मे लगे हों तो औषध द्वारा उनका निराकरण करना उचित है ।

चिकित्सा ।—धूना मस्मों का एक बहुत उन्नत औषधि है । मस्मके उपर धूना का मूत्र अथ (बिना किसी प्रकार के मस्म) दिन में २।३ बार लगाना अत्यन्त ही लाभदायक है शक्ति मानी चाहिये । इसी प्रकार एक मस्म तक बायदा १० दिन तक जान से लागवाने से मस्म है । यदि फलदा जान से हम औषधि और मा कर दिन तक

ज्यादा करना चाहिये । पायदा न हो तो रस्त्रबन्ध का (५) प्रकार खाना और लगाना चाहिये ।

एन्टिम-कूड क्षैशक्ति ।— जब मरमा कहा ए और सहज ही दूखड़ाप ।

केल्केरिया ६, १२ शक्ति ।—जब मगुगीचे प म ह ।

यदि बहुत से मरस होने लगे तो मन्तर ३० छानक पर दिनक मन्तर से एक बार क दिमाय स १ या २ सप्ताह तक मयन करन स विशेष फल कीश्रमता है । मरमे का मरस यदि दान स दावाजाय अथवा गिलाया जाय तो रस बजाता है । मरस गाड़ हाउम न बहुत रस गिगता है ।

—०—

ठेक ।

(कर्मा)

दान स धवन स धमना मात्रा कहा जाकर दूध जल के रसका पाय तक कहन है । टक पाय पर से भार के का मगुला से निम्न चगल मही या पून क मय मरस खगता है यही ठना है । टक क पाय से एक जगह रसी ठ जग मय दूध परविन ता जगता है ।

चिकित्सा ।— आराम करने क त्रिप नियन्त्रि धन चिकित्सा चकारा है । १) कुछ मिनट तक टकहा लय धन से निगा रखना चाहिये और पलु नय पर दली रस स बहुत मर स मरस काट हाउम न (५) उर मर स निहा मरस (टक से मर स मरस ३० दूध मरस)

इससे अथवा शिशु बालिकाओं को प्रथम शत्रु हुआ है ।
परिधमी और इरिद्र बालिकाओंका अपेक्षा विलासपरामर्श
और अल्प प्रवृत्ति की बालिकाओंको प्रथम रजोदशा
पहिन्न होता है । कार रोग न हो ता प्रति २८ दिन के
अंतर में रक्तस्राव होता है ।

श्रुतकाल साधारणतः नान दिन तक रहता है । अनेक-
कारणों से यह २ दिनसे लेकर ७ दिनतक रहते हुए देखा
जाता है । प्रत्येक बार ४ भोंस से लेकर ६ भोंस तक रक्त
स्राव होता है । यह रक्त शिवाक रक्त से समान कालासा
और पतला होता है ।

अथवा अनेक पर यह रक्तस्राव विलकुल बंद होजाता
है । परन्तु इस अवस्थाका कुछ नियम नहीं है । ५० वर्षके
कुछ पहिले या पाले श्रुत पर होने लगे प्राय देखा जाना
है । श्रुत विलकुल बंद होनेके समय मासिक धर्मके मध्यमधर्म
अनक प्रकार के अनियम दिखलाई पड़ते हैं ।

यद्यपि और स्वाभाविक स्रावों की भांति त्रिपोंका
रक्त स्रावभी एक स्वाभाविक स्राव है । इस स्वाभाविक स्रावों
किसी प्रकारकी गड़बड़ केन से अनक प्रकारके रोग उपस्थित हो
जाते हैं । अनपेक्ष स्राव और पुत्रों का स्रावधाना से इस
रक्त स्राव पर दृष्टि रखना चाहिये ।



प्रथम रजोदशन में विलम्ब ।

प्रथम रजोदशन में विलम्ब होने पर भा यदि स्वास्थ्य
में किसी प्रकार की हानि अथवा त्रिभ्र न हो ता चिन्ता
करने की कुछ बात नहीं है । यदि यौवनावस्था में हानि पाए

सागर के सब प्रकार के तिकार देखे जाने पर भी त
दशन में दृश्ये, प्रतिमान कमरमें दृष्ट जाय और लक्षण
स्थानों में दृष्ट भावि और और लक्षण दिखलार देता उस म
मुचिकि-साधारण प्रकृति की सहायता करना हा उठता है

चिकित्सा १- एफेनाईट ३,६ शक्ति ।-

रक्त प्रधान धानुषा घालिका, जो कुछ परिधम नहीं का
ह, केवल बैठा रहती है मस्तकमें रक्त गाना, सफा
के बाद फिर घूमना ।

आसेनिक ६, ३० शक्ति ।-प्रातःकाल सा

उठने के समय चहुरा फीका और सूना हुआ तथा ई
पेटों में सूना शरार में गरमा मालूम होना भार कमजो
हुषलता ।

वेलडोना ३,६ शक्ति ।-नाक से बार

रक्तस्राव (इस लक्षण में प्रायोनिषा कायदा करता है)
होनों भावों लाउ उचाला और शब्द समस्त जनत दमों
प्रमथ वेदना के समान बृद्ध [इस लक्षण में सापिषा
कायदा करता है] दार्दिन डिम्बाशयमें प्रदाह ।

प्रायोनिषा ३,६ शक्ति ।-कृतुत समय

म होकर नाक से बार बार रक्तस्राव का प्रवृद्ध कत्रि मु
हुआ मल, चिडाचिडा और कर्षा मम क सुगवा
बैठ रक्त की दृष्टा ।

काजूलम ३,६ शक्ति ।-यस सब व्यापारिक लक्षण

बलमान हो, तन्ने में दर्द साथही रवासकए और बगलना,
गाही में पैठनभ मिरमें हृद हा और बलडा हो ।

फास्फोरस ६, १२, ३० शक्ति ।—दशाका सुदरी
और प्रमलविषा गहन वाली पालिका, छाती की गठन मच्छी
न हो यमार्गी म शकू, ककक म्माथ पाडा पाडा रून
निकलताहो ।

पल्सेटिला ६, ३० शक्ति ।—घदरा पाया,
गठन मकन में रहने पर भी मर्दी मी लगता पन और
पाठ में दर्द, दिस्टोरिया व लगन एकवार हमना और
एकवार राना उदासागता और नैराग्य मधमपन थपान
दाँद रान पाया और गरम मच्छी व धानु परिभम व
नव और चुका हृद दवा में रहन म भलडा रहना । मध्या
होन व समय साधारणत बदन ।

सीगिया १२, ३० शक्ति ।—दुपन धानु, माव
भार मल व ऊपर मुदीन व समान पीला रगवा
हाग, हाथ पैर टड भार मकन पर बरवार मर्गी
मानूम हाता, मन्मन बहाभोगता और बारवार राना
(इन लक्ष्यों में पलमाटगमा वापदा करता है ।

सल्फर ३०, १०० शक्ति ।—मकन व ऊपर
रगवा गरमी मानूम हाता भूक म लगना भोजन व उप
वाग्न जा मिकलता, शराका खम वसा मानुम हा माना
क्याक्य राहन हागवा है सामान्य बाट लगन म मध्या
कदजाग म वतमें मपाद् पैदा हाहर पकलता मकदमाटा
दुपिन धानु ।

बागज आदि घानका रसि, काएवद्यमल अजार्ज, शरीर रक्तगुण्य, होट और आधे रक्तसूय और फीकी, आँखों व चारों ओर नीलासा मण्डलाकार दाग, सिरदर्द, सिर घूमना, दिल धडकना, कानों में शब्द सुनाई पडना, अत्यन्त दुबलता आदि इस रोगके प्रधान लक्षण हैं । यदि श्रुत विलकुलही पन्ध्र म द्वा जाय तो प्राय बहुत थोडा होना है, और फीके रक्तवा पानीव समान होता है ।

चिकित्सा ।—एन्टिमकूड ६, १२ शक्ति ।—

जीमपर मैला दूधके समान सफेद मोटा लप, पावशय वा क्षाय सागदा भूत्र न लगना और मुह में इवार के साथ पाना गर माना ।

ऑसैनिक ६, १० शक्ति ।—घहरे वा फाका रस

और आँखों के पलक धुजे हुए अत्यन्त प्यास, शारदार थोडा घाडा पानी पाना, बम्पन, शारदार चककर माना, बहुत कम जोरी, गरम मकान में रहने की इच्छा ।

केलकेरिया कार्वे १२, ३० शक्ति ।—इदास चिल,

रस की इच्छा चहर वा फीका रस, आँखों व चारों ओर काला मण्डलाकार दाग, सिर घूमना विशेषकर सीढापर बढन स, मान घान स धूणा, अर्धा चीज और कठिनता से पचने वाले पदार्थ पथा चाय घटिया मिठी आदि खाने की इच्छा, भोजन व उपरांत पेट फुल उठना और दिल धडकना, सघदा हीरना, ठण्डे हवामें रोग बढना, गण्डमाला दूषित भानु ।

चायना ६, ३० शक्ति ।—बिस्ती प्रकार के परि

स्वल्परज ।

(एमेनेरिया)

मासिक ऋतु विलंबित हो या बहुत ही कम हो अथवा कुछ समय के लिये बंद हो तो उसको रज रोध या स्वल्परज कहते हैं । रोग होने से अनेक प्रकार के कष्टदायक लक्षण उपस्थित होते हैं यथा—पेट और पाकाशय में घबराहटों के साथ दर्द, जी मिचलाना या उबकाहटें, सिरदर्द, चहुरा लाल, बायटें बढना, हिस्टेरिया, दिग्भ्रम, धड़कना और श्वासकष्ट इत्यादि । कभी रज रोध होने से अचानक यह सब कष्टदायक लक्षण उपस्थित न होकर प्रमत्त रागा दुःख, अलसता और फीफ रोगका हाता है, इसके साथही उत्साह नहीं रहना और भ्रमबन्ध हा जाना है, देखने में चहुरे पर रोगीय और उदासीनता मानुस होती है स्नायविक लक्षण अथवा दिल घटकना, श्वासकष्टता आदि उपस्थित हाते हैं अरु जिनका राजयश्माकी आशङ्का होता है उनपर यह रोग हाउ प्रकाशित हाजाता है । अचानक सर्दी लगना, शोक दुःख आदि अचानक प्रबन्ध मानसिक आवेग, लाना, घटन या और किसी यन्त्र आदि के रोग के कारण यह रोग प्राय उपस्थित होता है ।

चिकित्सा— एकेनार्डिट ३, ६ शक्ति ।—

यदि सर्दी लगने के कारण ऋतु बन्दहा, मस्तकमें या पेट में रज आना मस्तक में घबराहट मारना और घबराहट, निरधुमता यौवनके आरम्भमें रज प्रधान याथा । १८३० ।

गार्मेनिक ६, ३० शक्ति ।—यह रोग का कारण

समाप्त पाले रक्त व दाग, स्नायविक सुषुप्तता और मज्जा
ही में पसीन आता ।

कलकोरिषा कार्म १२, ३० शक्ति ।—गण्डमाला
दूषित धातु, पुराता अजीर्ण और उदरामय, दूधके समाप्त
सफ़ेद प्रदर स्नाय, गल वीं सय गिल्टिषा सूजा दूर, सिर
धूमना, पुराता अमर दद णाय पैर मादि ठण्डे, खांसी आदि
लक्षणों में यह दिया जाता है ।

सिमोसिफ्युगा ३, ६ शक्ति ।—दिस्यारिया, सिर
ददे, पाँच स्नाय नीच और साधारणत यह पसरामें दद,
पातका दद अत्यंत धातु प्रधान धातु ।

फेरम ६, ३० शक्ति ।—कमजारी, उदासागता दिल
घट्टना अज्ञान कमा कमा प्रदरस्नाय चदरा दग, पीषा
और सुनामा, रक्ताल्पता वे और भार सय लक्षण ।

नयसोमिका ६, ३० शक्ति ।—प्रात काळ सिरमें
दद काष्ठक धारवार अज्ञान और उदरामय, पाँचटे आदि
लक्षण ।

सेनेसिओ ३, ६ शक्ति ।—श्रुतु व बीच वे समय
में यह औषध दन से अत्यंत धमवार फल हील
पडता है ।

सल्फर ३०, २०० शक्ति ।—सिर में कटन
मस्तर में रक्तागम और माधे क भीतर मों मों शब्द, माध
क ऊपर सयदा उच्चाप मान्दुम होता, चदरा दग और सीका,

मस्तकमें रक्षागम और दृष्टिमें गडबड, भयाङ्क दृश्य दृष्टिना
और थिल्लाना, काटा और फाड़ने को चाहना, बहरेका
एजासा रहना और लुप्री, प्रसवके दर्दके समान अत्यन्त
दुःख मानो गुमझारले सपही निबल पडगा । इद जितनी
अदरी २ हा उतनीही अदरी कम दोआप, साथ उजले साल
रगवा, कमी जमा हुआ और पदबुद्धार ।

क्रेतकेरिया कारी १२, ३० शक्ति।—अनुते पहिले सन
पूजना और तरागा, गिर दद पटमें दद, कम्प और प्रदर प्रसाध,
अनुब समथ पेटने भंतर काटने व समान दद, दन्त डाल, पेगमें
प्रसव व दद के समान दद और गत्तो वा पूजना होनी
पैर टडे, गण्डमाला धानु ।

कैमामिता ६, १२ शक्ति ।—प्रसवके दर्दके समान
जरायुमें दाब माहुम पडना, छाथ काटना जमा हुआ और
होनी जरायुमें काव समान दद, बार बार पलाय
करना इच्छा मस्तकपर गरम पक्षीना दद बिलकुल सहा
म हाता बिर्सा धानवा मलमजसात के साथ जबाय
न देसचना ।

सिमीरीफयुगा ३, ६ शक्ति ।—घोडा वा बहुत
जमा हुआ रक्षाध घोटमें बहुत तेज दर रस दर्दका
आध और कयर लव भुव जाम प्रसवक दर्दके
समान दद (कैमामिता व नामम) द्विष्टिरिया के
बाँध और मल पेटमें टनटनादट मानून होना,
बिल उदास ।

कोनियम ६ शक्ति ।—छाथ घोडा और घूरे गड का

श्रुतु से पहिले दौनो स्तन फूल उठना, कटे होजाना और रक्त होना (केलकेरियाक समान) हृत्पिंड में कर्मके समान दद और साने में अघरा करवट बदलते में सिर घुमना ।

नक्षत्रोमिका ६, ३० शक्ति ।—श्रुतु जल्दा रक्त होना, स्राव गाढा और जमा हुआ पेटमें मराने के समान असह्य दद आमिचलाना अथवा पाठ कमर में हड्डी हट जानक समान दद बार बार पेशाब करतधा हाजरा कोणवद बार बार दस्त जानका दानत किंतु दस्त न दाना, मल कठिन और कष्टम निकलताहा ।

पक्षसाटिला ६ शक्ति ।—श्रुतु दरस हा, रक्त गांवा और काला ठहर ठहर कर रक्त स्राव तलपट में मानों पापस्राव दय रहाहै दद इतना तेज कि रागा तडफना हा, चिटलानाहो और राताहो (मिमीसाफ्यूगाक समान), उठनम सिर घुमना, मुलायम, सहजही ग उठे पसी स्रा गरम मकान में बढना ।

सोपिया १२, ३० शक्ति ।—श्रुतु बहुत पहल हा और पशुत थोडा हो, पेटमें दद और कराहनक समान इतनी तकल क कि बालनी पाबनी मारकर बैठनाहो श्रुतुमे पहल प्रर स्राव इस स्रावसे सब स्थान में कफाले पडजाय, पाशाण्य में कष्टदायक खालीपन प्रात कालके समय उठनी का जा मिचलाना, कठिन, गुठलेदार मल और मलशर में बाध मालुम दाना ।

सलफर ३०, २०० शक्ति ।—स्राव गाढा, काला और

दर, पेटमें दद, कण, पेशाब के समय पेटमें काटनेके समान दर्द, दांतोंमें दर्द आर कराहना, भुवनस मिर घुमना; उठनेसे वा साटा घटनेसे बढ़ना, दोनों पैर रतने ठंडे और गल्ले गानों पैरमें भीगा हुआ भावा पहिना है, सामान्य ठंडी हवाभी सह न जाना ।

कैमोमिला ६, १२ शक्ति ।—बहुतसा बाला और जमा हुआ रक्तश्राव, उदर २ बर पेंसाही रक्तश्राव होना अरारुमें प्रसव बढ़ना क समान अत्यन्त दद और पैरों की ननों में दृष्ट जाने क समान दद अत्यन्त असह्य और सहन नहा पाइ यान वृद्धनम मलमत्रमान क भाव उत्तर न दे सकना धार धार बहुतसा बिना रक्तश्राव ।

सिमीसीफ्यूगा ३, ६ शक्ति ।—शुतु बहुत पहिले हा और ज्यादा हा श्राव बाला और जमा हुआ [इस लक्षण में कैमोमिला आर प्राक्म पायदा करता है] पाठ में आर जाघ म लकर पिरक नाच तफ दद, नितम्बों में कटन के समान दद, और अरारु में दाघ मातुम हागा अत्यन्त वायु प्रधान धानु और सय लक्षण निम्नारिया क बायठ, मस्नक आर नास क गर्तों में अत्यन्त दद अति घाम व हिलन स बढ़ना ।

क्रोकस ६ शक्ति ।—ठाक समय पर शुतु होना किन्तु बहुत ज्यादा और दर तफ उदर बाला भाव बाला और जमा हुआ रक्तना क समान बढ़ा बढ़त सामान्य दिक्कनस घाय बढ़ना घदर पर पीलापन और मिट्टी के समान [सापिपाका तरह] रक्ता मातुम हा मानो पेट के

मीनर कुञ्ज दिग्गता है [मेघार्जना की तरह], अथवा पुनः
और मीनों चट्टन में दिल् घडकना ।

नक्षत्रगोमिका ६, १२, ३० शक्ति ।—अनु बहुत
और बहुत ज्यादा हो, छाव कागसा रहना गून का
पहले रहकर बाद हाजाय और फिर हान लग (सगरी
समान) कमर, पाछ और नितम्बोंमें हद, बिना कागरी
त्रोत्रित हो उठना, [कर्मामिलाकी तरह], क्यामाविह कर्म
यह धातु बार बार इत्त आनकी हागत ।

फामफोरम १२, ३० शक्ति ।—अनु बहुत टंग
बहुत ज्यादा और अधिक दिन टहरन वाला, उमर मय
पट और कममें हद बहुत कमजारा, दानों पैर ठंड पर
कमजारी और आगसा मातुम हाता मागत क उगम
वायुका बहुत उकार माना मागतक बाद मादमी बन,
मल कटा और बहुत कर्म हाता लेयी और हवाही ।

सेवाइनेना ३, ६ शक्ति ।—बहुतही जादा और दुबक हात
वाला रज-छाय आध फीक गम रग और कुञ्ज गमा हुआ गून
प्रसव बदना क समान हद रान तक पग्याहा, गायम लकर ही
उत्तर्नाट्रय तक मानाहा मत्थन वायु प्रघान धातु और
दिग्गताया क मय धदय [हगर्नाग्या क समान], मत्थन
की भागका ।

मिफेन्ती ६ शक्ति ।—बहुत ज्यादा और दून
दिन मय लरने वाला अनु आध कागसा पनला रद
दिग्गत बलन म पनता [हाकमक समान] अनुद रीति

सबही रागोंका घटना, दुबला पतली त्विपोंक लिय यह पाषदा करता है ।

सांपिया १२, ३० शक्ति ।—बहुत पहिले और बहुत

ज्यादा श्रुत, श्रुतके पहिले पेटमें अन्यत दह, पावायपके भीतर बहुत कष्ट देते थाला खालापन मात्रुम दना, बड़बूदार पेशाय, खदर पर विशेषकर नाकरर मुहासे क समान पाले रङ्ग के दाग, चणु, हट जाना एसा मात्रुम होना मागों सगदी जननद्विय छाग बाहर निकल पडगा [यदडाता क समान] ।

सलफा ३० शक्ति ।—श्रुत बहुत जिन टहर एसा

मात्रुम हा कि मथ अक्षुता दोगया ह किन्तु थारजार लीन बाना, जलन पैदा करनेवाला छाया, दागों जाधोंमें दह उपपन्न कर और उनमें यद्दा बड़बू (बड़बू—बलडाता) पलिठ अञ्चानक गरमा मात्रुम हाना और उन क उपरान्त हा कमजारा और अथसभ्रता, मस्तक क ऊपर सघदा गरमा मात्रुम हाना, हाथ परों में जलन गूना बजासाँ ।

औषध प्रयोग ।—जब बहुत उभादा रक्तप्राय होता

रहे तब धाराम न होन तक २० । ३० मिनट क अ तरम औषध देना चाहिय । राग यदि सामान्य हाना २ । ३ घण्टक अतरम औषध प्रयोग करनाहा यथष्ट है ।

सहकारी उपाय ।—सग प्रकारकी मानामक चि ता

और उद्धेा, परिधम और सलमा फिरना बिलकुल निषेध है । रक्तप्राय निवारण करनके लिय पाठक नाच

तक्रिया लगा कर पैर ऊंच और मस्तक नीचा कर
 को चित्त सुला दना चाहिये और दिलना मुठना न च
 मत्पत रक्छात्र होतो ठण्डा चल पिलाना, सब शरीर
 रमना पैरों में पीठ में, और तलपेट में ठण्डा जत्र
 करना विशेष उपकार दिखलाना है । किमा प्रकार
 गरम वस्तु व्यग्रहार करना निषिद्ध है । जिनको बहुत म
 रज क्षात्र होता है उनको कुछ समय तक खामा सह
 यद् रमना आवश्यक है । ऋतु के समय खामा सह
 करनेक दाप स प्राय यद् राग हाता है ।

रजोलोप ।

(ब्लाईमैक टेरिक) ।

शुद्धाश्रमां रज क्षात्र क्रमश कम हाकर अन्तमें वि
 कुल यद् हाजाता है । साधारणत ४२ से २० क मात्र
 रजालोप हाताहै कि तु किसाका कुछ पहल किसाका
 पाछमा हा सकता है । जितनाहा रजोलोप हाताका सम्
 निषट धने समता है उतनाही ऋतुक समय और र्ण
 माण में मन्क प्रकारकी गड्यड दिखलाह पडती ह
 यान कमा बहुत घाहा या कमा बहुत ज्यादा हाता ह
 कर्मा क्षात्र समय में मन्क दिखलाह पडताहै कन्क या
 समय रहता है भार फिर मन्क यद् हाजाता है
 क । ऋतु इन धारे २ और क्रमश उत हाता है ।
 किमा प्रकारक उपसर्ग हात हुय गहा दाख पन्त वि

प्राय रजोलापके कुछ पहिछ स सिर घुमना, सिर दर्द, ठहर २ कर अचानक गरमी मात्रुम पडना स्नायविक सब क्षण, कमजारी बन्ना, जननाद्रियमें खुजली और बहुत से कष्टदायक उपसर्ग दिखनार देकर बडा कष्ट दत है ।

चिकित्सा । त्रायोनिषा ६ शक्ति । मस्तक

में रक्त आनक कारण निरदद एसा मात्रुम हा मानो कपाल पत्रकर विद्याण हाजायगा और नाकस खून गिरना, हिलने चलने स सब लक्षणोंका घटना, कोष्ठयत्न, कठिन सुखा मल भव्यत चिडचिडा स्वभाव ।

काकूलस ६ शक्ति ।—पशाव के पदस्य प्रदरझाव

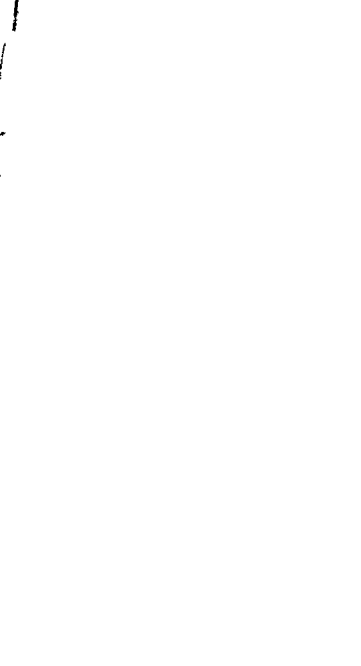
विछाने पर सठकर घैठनस घटना इतनी दुबलता कि यान न बहा जाय, सिर घुमना [त्रायोनिषा क समान], स्नायुविधान [नसोंक समूहका दग] की उत्तजनशालता ।

इग्नेशिया ६ शक्ति ।—हृदय में गुप्त दुःख भरा

हुवा, एसा मात्रुम हो मानो मस्तक के घगलमें कील फूटी निकलता है, । रज खरग, बाला, जमा हुवा और पशुदार ।

लैकेसिस ३०, २०० शक्ति ।—रजोलाप क समय

स्त्रियोंके द्विय विषय उपकारी है [पल्साटिलाभा] बार बार जरायुमें रक्तझार मस्तक में भार मात्रुम होना और मस्तक के ऊपर जलन और खरकन मात्रुम होना, जरायुमें सत्यन्त सामान्य दाव या स्पशभा सद्य न होना, यावो



घाय और जला देहा करने वाला स्याय, सब खानोंका तराना, छाया गाढा, पीछे रगका, सट्टहोस किन्ना घायु नि सरन होनेसे दूर पडना, रात्रिने समय मत्स्यन्त घरराहट, पत्रणा और यधैनी दुबली पतली खिरोके खिये ।

कैलकेरिया १२,३०,२०० शक्ति ।—दूधके समान सफेद

घाय, पश्चात् करते समय मयवा ठहर ठहर कर हो, श्रुतु बहुत पदके और बहुत ज्यादा, साधारणत बहुत दुबल, पदल चलने से मत्स्यन्त परिधम और यधना, टडा हया पदल सद्य न होना दोने पर टड और गाल गण्डमाला दुषित घायु ।

चायना १२,३०,२०० शक्ति ।—दुबले शरीरकी

खा जिसकी अधिक रतप्राय दोगयादे श्रुतुके पहल प्रदर, साधही रान और गुहाशरमे ददकसाय बाश मादूम पडना, रक्तक साथ प्रदर, धीच २ में काला जमा हुआ मयवा बहुत यदबुदार पीसके समान घाय होना जननेन्द्रियके भीतर बहुत यददायक गुजली और सुबन्न ।

काकूलम ६,३० शक्ति ।—घाडा अनियमित श्रुतु,

श्रुतु के बीच के समय प्रदर साथ वा हागा [श्रुतुक उपरान्त-पलनामिला] पानीक समान घाय साधही पाय क सरान पतला पदाथ मिडा हुआ श्रुतुने से वा पटनेसे छाया छडकर बाहर निबड न ना यष्ट वायक रक्त उसके उपरान्त ययामा पेट सू ता हुआ ।

कोनेयम ६,३० शक्ति ।—कमरमें कमजारी और

उठने से सिर घूमना और सही सी लगना, मुलायम प्रकृति, शाय सेने चाड़ी खी ।

सीपिया १२,३०,२०० शक्ति ।—इसायाम में रजो लोप होनेक समय, गमायप्यामें वा यीवनादप्यामें रोग (लेकमिस), प्रदरप्राय, माघ ही जरायु प्रीमा में सुई चुभोने के समान दद और जननेद्रिय में गुजली पीलासा, जल के समान, दूध के समान, वा स्तेष्मा के समान स्थाय, चहरे पर, विशेष कर नाकके ऊपर मुदासे क समान पीले रंग के दाग पेशाब में अत्यन्त दुर्गन्ध, उस में कीच के समान पदार्थ नीचे जमनाना ।

मार्कुरियस ६,३० शक्ति ।—छाब पालन रगका उसमें मयाद हो, तराये और गुडला हा; बहुत रज छाब, पनना और देखनेमें हजामाविष क समान गहीं बुधना, शीतलना, चहरे पीक रहना इत्यादि ।

सलफर ३०,२०० शक्ति ।—प्रदरप्राय, पलन और उसमें दद, जननेद्रिय तराना, छाब पतला पीलेसे रहना छाबने पहले जननेद्रियमें खंचा के समान दद, जननेद्रिय में जलन, दिनमें बार बार कमपौरी और अपसन्नता मातुम होगा, महनरके ऊपर सयदा गरमी, हाथ पैरोंके तदुष्में जलन, हाथ पैर दिछोने के अइर न रल सके ।

वाह्य प्रयोग ।—हाइड्रान्टित वा कैल्डूब मूख पिना मिखा हुआ अरक १० वूद १ औंस पाना में मिलाकर पिचकारी लगान से बहुत फायदा होना है ।

श्रौपथ प्रयोग ।——प्रात काल और साध्याक समय

माता को पूरा शक्ति हो तो पाठक मोटा ताजा होता है। माता का मानसिक भाव प्रसन्न, पवित्र और वायपरायण हो तो भविष्यतः सन्तान के हृदय में भा इन सब सद्गुणों का बीज आरोपित होजाता है। अतएव यात यह है कि माता का शारीरिक मानसिक और नैतिक भाव में बिल्कुल गड़बड़ न होना पाय यह ध्यान देने का बात है।

यदि माता पिता अपनी सन्तान को निरोगी पवित्र चरित्र और उन्नत हृदय देसना चाहें तो उनके सबसे पहल मन्त्र इनगुणों का अधिपारी होना चाहिये। गर्भावस्था के समय माताको इन मन्त्र विषयों पर सावधानी में चलना चाहिये। पहल आहार सहजमें पचने वाला और पुष्टिकर अच्छीतरह पेट भरके खाना चाहिये। लाभ के यशीभूत होकर भस्माद्य भोजन बिल्कुल वर्जित है। गभसंचार के पहल कुत्र महीन जा मदचि हो उस पर विशेष ध्यान रमना चाहिये। बहुत सदा लालीमरच, मही और और स्वास्थ्य का विगाहने वाली बातोंसे गभवनी स्त्रीका दूर रहना परम आवश्यक है।

दुमरे, विदार। गभसंचार हुआ है यह जानतेही स्वामी सह यास बिल्कुल बन्द करदेना चाहिये। घरक लागको उचित है कि इस समय न लेकर प्रसन्न कालनक स्त्राके रहन सहन पर दृष्टि रखे और ऐसा प्रबन्ध करे जिसस उसके हृदय में चिंता बिल्कुल न रहे मन धम्म विषयमें लगा रहे, मांमें भुटे विचार न लगसहों और सन्ताप के साथ किमों काममें लगी रह। इस समय में मनमें निम्ना प्रकार की पुग चिन्ता, शोक भय और दुःख, बिल्कुल न होना चाहिये। निम्न निषमिन क्षात आहार और निद्रा मत्स्य त आवश्यकताय ह। गमावस्थामें सवादी

चिकित्सा ।— त्रायोनिषा ३, ६ शक्ति ।—

मात्तो की क्रिया महोने के कारण कोष्ठवद विशय कर गरमीके दिनोंमें सायदी मलकर्म रक्त सञ्चार, कोष्ठ स्रभाव इत्यादि ।

कौसिनसोनिषा ३ शक्ति ।—बपासीर और कोष्ठ-वद, विशयकर भाय ही जरायु रोग हो ।

होईडूस्टिस १× शक्ति ।—साधारण कोष्ठवद ।

नकमवामिका ६, १२, ३० शक्ति ।—बपाक, बार बार दम का हाजत किन्तु दम भाक न होना, पत्र फूलना, बपासीर । पुराना कोष्ठवद धातु होने पर इसके भाय सलफर पर्यायक्रम से ब्ययहार किया जाता है । मात काल सलफर और रात्रि के समय नकम दना चाहिये ।

सलफर ३० शक्ति ।— पुगना राग ।

और २ सय लक्षण बाष्टवद का चिकित्सा में दस्तो ।

सहकारी उपाय ।—इस रोग का 'धक' प्रधान कारण उचित परिभ्रम न करना और अत्यन्त भाय से बैठे रहना है । इसलिये उचित परिभ्रम करना अत्यन्त आवश्यक है । मात काल उठते ही ठण्डा जल पीना उपकार करता है । प्रतिदिन ठण्डे पानी से स्नान करना अच्छा है । किसी प्रकार का जुगथ लेना या दस्तावर इया खाना बिल्कुल निषिद्ध है । यदि कैर दिन तक लगातार दम न होने से बच हो ता धाक गरम पाना में साबुन घालकर उसकी पिचकारी खगाई जासकता है । पिचकारी दम समय नहीं लिख

पाडोफाईलम ६ शक्ति ।—यिना वरु क मके मय, यहूनसा पानी के समान दूध अथवा पीले रंग का आम मिष्टान्न हुआ मल, दूध जाने के पहले पानी के ऊपर के समान गडगाडाहट के उपरान्त दूध हो, प्रातः काल दूध हो दूध के सिवाय रात्रि में और गरमी के दिनों में बढना ।

ओषध प्रयोग ।—आयुर्वेदकतार मनुष्यार १।३।४ घण्टे के अन्तर से ओषध देनी चाहिये । आहार पर विशेष ध्यान रखनी चाहिये । ध्यान रखना चाहिये कि रोग अती हो आराम होना ।



मिर्दरु और सिर घूमना ।

चिकित्सा ।—टेकोनार्डिट ३,६ शक्ति ।—यह रोग एक ममान धातु पाठे मनुष्य के सिर, आधा अन्तर्गत मगवा गुरुता समय मिर्दरु घूमना, कबाल में आती है रोग घूमना मनुष्य जाना ।

वैलेडाना ३, ६ शक्ति ।—सिर घूमना और कर्ण के अन्तर्गत मगवा दिखलाई बढना मनुष्य के साथ विरुद्ध में साथ हा मनुष्य में एक आधा अन्तर्गत मगवा ।

रुक्मनामिक ६, ३० शक्ति ।—यह रोग अती हो अन्तर्गत मगवा और मिर्दरु घूमना बड़ी इच्छा आन विरुद्ध मनुष्य में बढना ।

एथेरेटिडा ६ शक्ति ।—सिर पर दिखना

एक जोर, पाशाशय वा दोष विनाशकर लेउ वा घमें पके हुवे
पदार्थे जाने से, सन्ध्या के समय यदना ।

सीपिया १२, ३० शक्ति ।—कवल घुली हुई दवा
में घमण करने से तिर घूमना, सन्ध्याके समय माथे
की रगों में अत्यन्त दह, पाशाशय वाली भादुग दोगा,
बोछयद ।

इसके सिवाय घाययानिया, सिमीसीक्यूणा जैलसी
मौनम, रगनेशिया, भाररिश, कृच्छस आदि भावद्वय हो
सकते हैं ।

श्रांथ प्रयोग ।—साधारणतः प्रातःकाल और
सन्ध्या के समय । राग यदि अधिक गहरा हानों २ । ३
घंटे के अन्तरसे एक एक मात्रा ।

गर्भानस्थामें दन्तशूल ।

गर्भावस्थामें किसी २ स्वार्थ दानोंसे दह जाताहै । यह जायुं
घुं के समान कभी कुछ दह रहता है, पाठ यन्द् हाकर गिर
जाता लगता है ।

चिकित्सा ।—इस रागकी प्रधान औषध एषानाश्ट,
धलेहोना, कैलपरिया, कैमागिडा, मधु रियस, नक्षत्रपामिजा,
पलसेदिला, सीपिया, और स्टोफसेत्रिया हैं ।

पेटाशकी हाजत न रोक सकना ।

गर्भावस्थामें साध २ दिनी २ स्वारा यद रोग

उत्पन्न होता है । कभी पेशाब बतबर एक २ घूट हानाई कभी वेमात्रुम पेशाब निकल जाता है । मूत्राधार के ऊपर गर्भ के घाटन का बोझ पड़नेसे यह रोग उत्पन्न होता है ।

चिकित्सा ।— एकोनाईट ३ शक्ति ।—कण्ड साय पेशाब, पेशाबकी दाजत किन्तु मत्पन्त यन्त्रणा मर और घयतदद ।

वेलेडोना ३, ६ शक्ति ।—सपदा एक २ घूट पेशाब हो पेशाबकी दाजत न रोक सकता ।

फास्टिकम १२, ३० शक्ति ।—रात्रिके समय वेमात्रुम पेशाब निकल जाना ।

पलमाटिला ६ शक्ति ।—बैठ रहाक समय अथवा चुमनेके समय वेमात्रुम पेशाब निकल जाना, बार बार पेशाब करने की दाजत ।

सलफर ३० शक्ति ।—बार बार पेशाब करना, बिछौने पर पेशाब करना गभायस्था में पेशाब हाने में बट ।

श्रौपध प्रयोग ।—एक सप्ताह तक प्रातःकाल और सन्ध्या के समय एक एक मात्रा ।

पैर फूटना ।

गर्भ का पूरा अवस्था में स्त्रियोंके पैर जांघ और यहाँ तक कि जननद्रिय तक फूल जाता है । जरायु में थालक

के शोथ के नीचे के अंगों में यथोचित रक्त सञ्चालन में बाधा पड़ता ही इस का प्रधान कारण है ।

चिकित्सा ।—आर्सेनिक ६,३० शक्ति ।—

पैर ठंढे, पूरने के साथ धूल्युक्त कमजोरी, नाडी दुबल ।

एपिस ६ शक्ति ।—जल्दी २ बहुत ज्यादा सूना,

वेश्याप का बट्ट ।

चायना ६ शक्ति ।—उदरामय, सामाशय आदि

कारण से दुबलता होने पर ।

सलफर ६,३० शक्ति ।—पहलेके घमं रोग गर्मा

रक्षा के समय हाथ हो जाने पर यह अधिक उपकारी है ।

सह्वारी उपाय ।—बैठ रहने के समय पैर उंचे

रखन चाहिये । घूमना ही बग़रना बन्द रहने में दोष है । रात्रि के समय सोने के उपरान्त सूजने बहुत कम होनावे ।

गर्भस्त्राज

(पुररक्षण)

गर्भ रक्षा के रोगों में यही रोग सब से अधिक सांघानिक रोग है । इस में केवल बालक ही का जीवन नष्ट नहीं जाना किन्तु रोगी २ ही का जीवन भी संशय में पड़ जाता है । एक बार गर्भघात होने पर फिर टीका उखा समय इस विषय की सावधान रहना है । शायद तीमार महीने में कपड़ा चमी इस से पहटे का पीठे गन्धर्व होने हुये देखा जाता है ।



और जब ओसेपिक [यांठे] या मरोहके समान दर्द हो तब इस औषध से गर्भघाय बन्द होता है ।

औषध प्रयोग ।—गर्भघायकी आशुद्धा को अवस्था के अनुसार २० । ३० मिनट या एक घन्टे के अंतर से औषध देनी चाहिये । आशुद्धा कम होनेपर २ । ३ घन्टे के अंतरसे ।

सहकारी उद्धार ।—गर्भघायकी आशुद्धा उपस्थित होतेहा रोगीको स्थिर होकर सो रहना चाहिये और जब तक आशुद्धा दूर न हो तब तक इसी अवस्थामें रहना चाहिये । केशल पैरोको स्थिर रखनका उद्देश्य नहीं है, सब छोकरका पूर्ण विधाम आवश्यक है । गर्भायस्था में श्यामी सहवास, मानसिक चिन्ता, उद्वेग या भय, अधिक कठिन परिश्रम, श्यास्य विदग्ध भाजन वर्जित हैं ।

निवारणका उपाय ।—जितना एक बार गर्भघाय हुआ है उतना फिर गम सघार दानपर विशयकर ठीक उस समय जबकि पहिल गर्भघाय हुआथा अधिक सावधान रहना चाहिये । जितना बार बार गर्भघाय हुआ है उतना गर्भसघार होलेही माघ लिखा हुआ दवाइयो मेस लक्षण अनुसार दवा तजवीज कर २।३ सदान तक दिनमें एक या दो बार बराबर सवन करानी चाहिये - काबोशालम, सिमीसाफ्यूगा, दलानीपल पलमाटिला, भवाइना या सिबला । जब साधारण श्यास्य या घातुमें शय हो तब माघ लिखा दुर दवाइयोमेस का एक घण्टु परिवर्तन दवा देनी चाहिये ।

फैलकेरिया १२, ३० शक्ति । - गदनाटा दूधिनघातु ।

घरमें एक अच्छा मकान सोरडक लिये होता मन
 आवश्यकीय है । घर रुच्छ और दर्यान बिछार
 होना चाहिये । घरमें यथोचित वायु संचार दानभीण
 जरूरी बात है । जहा नयी सोरड बनाने की माररक
 हो बहा यह सबसे पहल देखना चाहिय कि घर रु
 और साफ है वा नहीं । प्रसवसे बहुत दिन पहिल मर
 का निश्चय करलेना चाहिये जिससे मकान मरी म
 सूख जाये । जमीन यदि गाली होतो पूष वा र
 निछाकर तब चटाइ निछानी चाहिये । बाइकरी गु
 हवा न लगे इस बातपर अच्छी तरह ध्यान देकर दू
 दो सामने सामने के जगल कभीकभा घोल देने चाहिय । स
 रचनाही बालकका जीवन है । हमारे देशमें वा
 बड़ी गुरी प्रथा है कि सोरडमें आग जलाकर सब पर
 धूपसे भर डाबत हैं । सहजहा समझनेकी बात है ।
 उस धूपसे भरे हुए घरमें जब हम पलभर भी नहीं ठा
 सकत १० । १२ दिनमें बालकका का दशा होता हा
 यदि सायड में आग रखनेकीही आवश्यकता ह
 कोयलक सियाय और किमी प्रकारकी आग न र
 चाहिये । सारडमें मिथड और कुडा न रहना चा
 जिससे बर्षे पैदा हो ।

प्रमर वेदना ।

जिनका रहन मरम निदना सीधी सारी होभादे उरवा
 गारारिक त्रियामा उतनीनी मरुत भर क्यामायिक हानी
 है । बनेमें रहन बाग भर समभ्यज्ञानिया प्रसवका द

इस धातुवा नगै समझनी,--उन्के मैदान में रत्नमें अथवा
बामेंही समस्तान उत्पन्न होजाती है । धनी और पिलासी
सागोंके लिये प्रत्यय एक यथा दृष्टा धान होनी है, यदा
नह कि बमो बमो उन्के प्राणों तक पर आधातता है ।
यदि विनाय कष्टदायक लक्षण उपारेधन नहीं ता कारे
आयस देनेका आवश्यकता नहीं है ।

चिकित्सा १— कौमोमिता ६, १२ शक्ति १—

पाडा रई हो समस्त मानुष हा, कष्टके साथ इद और
निराशा, लडयना, दद बायडों क साथ और कष्टदायक, रोगी
बहुत हो घबैन, बिर्छी प्रस का उत्तर इत समय चिद उटे ।

काफिया ३ शक्ति १— दर बहुत हो ज्यादा हो,

मयंकर चिल्लाता भार राता, प्रसव कार आदि स्थानों का
तपना हाथ म लगाने दना रात्रि क समय मनिद्रा ।

इमेरिया ६ शक्ति १— दिर्घीरिया राग वाली

रना, छाकादुर मी, पाकादुष में गुण्यता और कमजोरी,
आहार बल पर भी भाराम मानुष म हाता, किमी भग में
बोवट बना, रागी छाकादुष सधदा लम्बी सांस बना ।

नकुमोमिका ६, ३० शक्ति १— अनियमित रई,

दद होन परभी प्रसव बिधा ऊर्ध्वी न हा यमा मानुष हा कि
पीठ और आय बिछी जानी है प्रत्येक कार दद होने क
साथ दन का पान्ध की हागत । स्वामादिक कारवट
बहु विदोषहा प्रमाय ।

पक्ष्माटिला ६, ३० शक्ति १— दर बहुत कम

और बहुत द्रव्य है जो प्रमत्त कम होता है, उपाय का। प्रयास हाता के कारण दूध दिल धडकना वा दम घुंस, यद्यपि तब के समान अवस्था उत्पन्न करता है, तथा खूबसे दूध का इच्छा करना है, गरम प्रकाश में बड़े मात्रामें दूध का काल प्रगति की शक्ति राहें पाए जाते हैं।

जलगीर्मानम् द्वै शक्तिः — उपाय का मूह

कड़ा हागया हाता इमम नरम हाता है दूध ऊपर पाउ का छेना का भार जाय ।

सिकेली ३, ६ शक्तिः — दुबल छा बहुत दम

दूध राहें उदर २ कर हाता के समान मात्रामें हाता ।

व्रतडाना ३, ६ शक्तिः — दूध अधिक और

को। तापक हा। कतु उपाय का मूह कड़ा हा किन्ना तब न पावना का चहरा लाल, सिर दूध हाथों में सँभल

जाय। ताप भवानक जाय, उजाला शब्द आर दूध छेना

आयुर्वे प्रयोगः — आयुर्वेदक अनुसार १५।२०

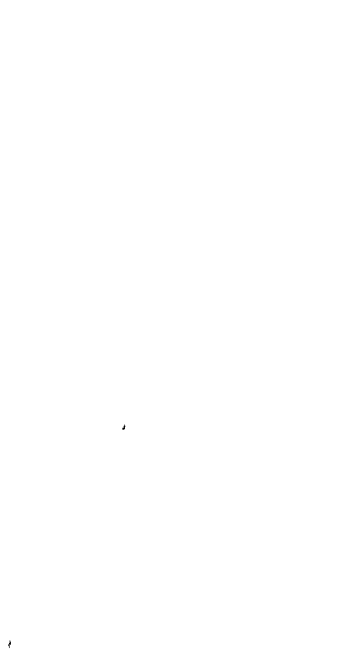
वा। मन्त्र के मन्त्रम् ।

सहकारी उपायः — कम समय दार के हाथ

प्रयत्न के उपाय नडा कराना चाहिये । प्रायः मूह हाथ के उपाय मन्त्र नडा । क बहुत कष्ट हातादे । साव

न मन्त्र के उपाय साफ और सुखा हाता आयुर्वेदक कर हा गडबड और शार शुद्ध दूध रखने

4



या २ घण्टेक अनंतरसे एक २ माथा ।

सहकारी उपाय ।—गरम पानीमें फुलाखेन भिगो कर बार बार सेकनेसे बहुत फायदा होताहै । रोगीको स्थिर रखना चाहिये और मकानमें स्वच्छ धातु आती रहनी चाहिये । साधूदाना या चारलीके समान पतला लघु पदार्थ खानेको दिया जाय ।

२२ नां अध्याय ।

शिशु चिकित्सा ।

शिशु शुश्रूषा ।

निगुराग चिकित्साका वर्णन करनेसे पहिल हालक पैदा हुए बालकका किस प्रकार चिकित्सा करना चाहिये यहा विषय है । यह विषय बहुतही सामान्य होने परभी हमारे देशमें सबदा लागरवाही क साथ एक ओर पड़ रहने और इससे अनक प्रकार क शग उपन्न होने हुए विषयों दत्त है ।

माघोजात शिशु ।

(हालका पैदाहुआ बालक) ।

समयक उपरांत शिशु-शुश्रूषा एक प्रभाव काय है । महत्त बचनक समय सयका ध्यान बचल छीकी बार

या २ घटके अन्तरसे एक २ मात्रा ।

सहकारी उपाय ।—गरम पानीमें फुलाखेन भिगो कर बार बार सेबनेसे बहुत फायदा हींमताहै । रोगियों के लिए रचना खादिस और मक्कानमें स्वच्छ वायु धानी रहनी चाहिये । साबुदाना या चारलीके समान पतला लथु पदार्थ रानेका दिया जाय ।

२२ नां अध्याय ।

शिशु चिकित्सा ।

शिशु शुश्रूषा ।

शिशुभग चिकित्साका वर्णन करनेसे पहिले हालके पैदा हुए बालकका किस प्रकार चिकित्सा करनी चाहिये यही लिखत है । यह विषय बहुतही सामान्य ज्ञान परभी हमारे देशमें सबदा लापरवाही के साथ एक ओर पढ़ रहते हैं और हमारे अनक प्रकार के गान उग्रज ज्ञान हुए निवृत्त देते हैं ।

साद्योजात शिशु ।

(हालका पैदाहुआ बालक) ।

प्रसवक उपरान्त शिशु-शुश्रूषा एक प्रधान कार्य है । प्रसव करनेके समय सबका ध्यान ब्रह्म लीकी

मरा हुआ निश्चय करके समय नष्ट नहीं करना चाहिये। इस समय शीघ्र यत्नधान होनेसे बुद्धि और कौशलके प्रभाव द्वारा बालक बनायासही चत जाता है।



नाभि छेदन ।

बालकका भ्रूण भच्छी तरह माने जाने लग और नाभि रज्जुवा पड्डकना पिलवुल पन्द हाजाय उस समय नाभि की मलावा काटना चाहिये । २३ मगुल खम्बा छाडकर माटे और कटे पुत स या कपडेकी चीरसे नाभिरज्जूके दीना सार दो बर्षे पाठ देकर दीधमें सायधानास काटना चाहिये । इसको वादिनक उपरान्त जय तक बालक को स्नान न कराया जाय तब उसक शरार मरम कपड स टका रखना चाहिये ।



प्राप्तिकको स्नान कराना ।

नाल काट दनक उपरान्त बालकके मय शरीरमें विनाय कर बगल, रान आदि जाडके स्थानोंमें मारीपलका मेल मच्छी तरह सायधाना स मलकर घाट मरम वास्तव स्नान कराना चाहिये । मल मज्जमस बालकक नरीरका मील बहुतही महत्त्वमें उठ जाता है । स्नान करार मूय कपड स सब शरार मच्छी तरह पोंठ देना चाहिय और मय शरीर टक्कर होमल और कपड दीधान सुग देना चाहिये । बालकका स्नान करान समय बिन्धु हर शीतकालमें अथवा रात्रिक समय घण्टा मरम

प्रतिदिन कमसे कम एक बार नाभिसे कपड़ेको बदलना चाहिये। दोपहरके ऊपर उगली गरम कर नाभि सकने का हमार दशमें एक बहुतहा घुसा रियाज है। उसका सब ताजा हाता ह "साहा हाता है परन्तु कापल लगकर नाभि मैला खूब हाजाता है। एसा करनेसे शाग्रही नाभि एक उठना है और बालकका बहुत बृष्ट बेताहै। पहलेता यह जाननेकी आज एपकता है कि नाभिक सकनका कोई आवश्यकता नहींहै। तलका कपडा लगात लगात नाभि सूखकर अपन आपही ठाक होजाता है। नाभि उचख जानेपर गरम नाखिलक तलके नियाय और किमी प्रकारक सेकको आवश्यकता नहीं है। दूसरे, यदि सेबनेकीही आवश्यकता हो इस प्रकार सजना चाहिये जिनसे काजल भादिसे नाभि मैली न हो सक।

पहला दस्त।

बालक पैदा होनेपर घोड़ी देर बाद छयम्ही दस्त जाताहै। दस्तका रंग गाढा हरा वा काला, लहसदारसा होताहै। यह केवल पित्त मिला हुआ आंतोंका श्लेष्मा होताहै। पैदा होनेके उपरान्त दस्त होनेमें कभी कभी कुछ देरमी होजाती है और इससे पेटमें दर्द अनिद्रा भादि बृष्ट होता है। माताके स्तनका पहला दूध घालकके लिये दस्तावर होना है, इसलिय जितनी जल्दी होसके यादकी माताका दूध पिलाना चाहिये। इस प्रकार दूध पिलाने परमी यदि घालकको दस्त न दोतो गणसयोमिका ६

चाहिये । आहारकी अपेक्षा मालुम होताहै बालकके बिये निम्ना अधिक आवश्यकता है । जागनेके उपरान्त जयतक माता के स्नान में कुछ उत्पन्न नहो गायका दूध गरम कर पिछाना चाहिये ।

बालकके लिये माताका दूध विशेषकर पहल कुछ महीनों तक प्रधान माहार है । आवश्यकता होनापर गौका दूध दिया जासकता है । यदि गौका दूध दिया जाय ता बहुत हा सामान्य बालोंपर ध्याय देना हाना है । पहले, एकही गौका दूध देना चाहिये । दो तीस गायोंका दूध मिखाकर भयथा एक दिन एक गौका और दुसर दिन दुसरी गौका दूध पिलाना बचित नहीं है । दुसर, चौथेही दिनकी ध्याया दुर गौका दूध भण्डा हाता है क्योंकि उन समय दूध पनला रहता है । यदि दूध गाढा हाता उनमें बाधा पानी मिलाकर पिछाना चाहिये । बसछः जब बालक बहा हात लगे तो दूधमें पानी मिलानकी आवश्यकता नहीं । तासरे प्रत्येक बार तात्री दूध यदि पिलाया जासकता भण्डा है ।

बालक के माहार का समय और परिमाण एकसा रहना चाहिये । ध्यान रहे कि बालक सर्वेसा मुखमें नहीं रोगा इन्स्टिय बालकको पानेही दूध वा स्नान हात कराना सम्भाव है । उपर का दूध हो चाहे माताका दूध हा हीन समय पनहो पिछाना चाहिये । आहारके शेषके बालकको उदरामय हो जाना है और दूध उलट पडना है । अर्जलकी सौख्य केबल पिछाने का रवान रहना चाहिये ।

दुसरी बाधा ।

दुसर रउमें सोचइये बाधकता "दरदा काला"

यह राग यदि पूरी तरह हो और प्रबल हो उठे तो इसका आराम हाता अपममय है, किन्तु यदि रोगसे आरम्भमेंही मातुम होजाये और उपयुक्त औषध का आवे ना बनी बनी अच्छाभी हाजाताहै । बलेडोना, सिफूटा, मधुसूतोदिवा मोपियम, हायोमायमम यादि औषधें रक्षणीके अनुसार पराक्षा कर देखनी चाहिये ।

चक्षुमदाह ।

(आंख दुग्ना) ।

एन्ड्रॉका प्राय बंजे दुग्ने लगती है । मोयडमेंनी प्राय एह रोग होने हुए देख पड़ता है । सायडमें भ्रमा करना इस रोगका प्रधान कारण है । एहए आसरे पलकमें रोग आरम्भ होताहै और पीठे आंखपर आताहै । एहउ देखा जाता है कि मान कान व ममव आसव पलक शुद्ध जातहै आस बाहरम एउ होजाती है और पूव पडती है । एन्ड्रॉका खोलकर एषम ने भीतर सुर्खी मातुम हातीहै और मषाह पडता दुग्नामें नीव पडता है । एन्ड्रॉका उजागरी और दन्तदो सधता, उजाटा बासगही जात्य गाये बन्ध करलेगा है । और ऐसे रोग एन्ड्रॉका है जैसे जैसे आसव और उपद्रव होने लगते हैं वधा—भूख न लगना और न घाना घान एहका बंधनी और दुग्नाग्न । यदि एह एन्ड्रॉका टाक सिद्धिभा न होतो काये नए र सहनी हैं ।

विफिना ।— तयोनाइंट ३,६ शक्ति ।—

तय उठेगा मधुसूतो हरी । एषा एन्ड्रॉका यदि एग उन्ध

भौका धर्म रोग हो उनके लिये यह औषध उपकारी है ।

यूफ्रेशिया ६ शक्ति ।—यह नसा और जलन पैदा करने वाले मास निकलना, गाढ़ा पील रंग का मवाद निकलना, उससे पलक आदि स्थानोंमें घाव होगा ।

पलसाटिला ६ शक्ति ।—घाव बहुतसा किंतु चिसा प्रकारके घाव न होगा ।

औषध प्रयोग ।—दिनमें ३।४ मात्रा । यदि एक मासधर २।३ दिनतक फायदा न होता बड़ल दनी चाहिये ।

वाह्य प्रयोग ।—गरम दूधमें पाना मिलाकर जालों का दिनमें कर बार धा रना चाहिये । सर्जियोंमें और काह औषध न लगाया चाहिये । सवदा मासों साफ रखना चाहिये ।

नाक रुकजाना ।

बालकोंको एक प्रकारकी सर्जि हो जाती है उससे नाक बन्द होकर माताका दूध पीनेमें कष्ट होता है और हांपनी भोजनाना है । सात मसपमी बालकका बहुत कष्ट होता है क्योंकि नाकस भ्राम न निकलना एक प्रकारका उष्ण होता है, और बालकका बार बार हमसा पुनः पुनः जग पडता है । चिसा किसीकी सर्जि और और लक्ष्मी दिखलाइ पडतहैं और नाकस श्मामी गिरता है ।

चिकित्सा ।— कैमोमिला ६ शक्ति ।— जब नाकसे जल श्मया श्मया गिरताहो, सर्जि लपनसर्जि

साधना से औषध लेकर चिकित्सा करनी चाहिये ।

चिकित्सा ।— एकोनाईट ३, ६ शक्ति ।—

बलरुका शरार गरम, घेबैनी, अनिद्रा, बृष्ट इत्यादि ।

केमोमिला ६ शक्ति ।—सर्दी लगनेसे रोग हो,

बहरा और आँखें पीली, सफेद और बद्बूहार मल,
दात घटा बालक ।

घायना ६, १२ शक्ति ।—सब शरीर पीला, पेट

पूज्रजाना, पहनने आनोंमें दधानसे दब, मल सफेद, अत्रोण
धार दब न हो ।

मकूरियत ६ शक्ति ।—पूरा पीलिया, मल अत्यन्त

पीला, सफेदसा मल, अत्यन्त वेग और बरसना, बहुत
और नज बद्बू घाला पेशाब ।

नकमवोमिका ६, १० शक्ति ।—बहुतका आन

ऊँचा और बडा, जोषषय, बार बार दस्त जानेकी हाजत,
बालक अत्यन्त रोने वाला हो और पेटमें दब हो ।

औषध प्रयोग ।—३ । ४ घण्टेके अन्तरसे एक एक

मात्रा ।

सुरक्षित ।

(छाले) ।

पहले लाल लाल कुम्भियां विशेषकर होट, गाल मसूड
और मुहक और और आनोंमें दिखकाइ पडतीहै । घीघड़ी पे
सफेद सफेद होजाताहै ठाक दूध अमनेके समान दिखलाइ

पान करने वाले बालकों को पुष्टयत्ना हो जानी है । बालकों को सुखाय कमी न देना चाहिये ।

चिकित्सा ।— ब्रायोनिया ६ शक्ति ।—

बालक के होट सुखे हुए, हुए पीते ही उल्ट होना, सूना, कड़ा, काला मूत्र ।

कैलकेरिया-कार्व १२, ३० शक्ति ।— कड़ा, बिना

पचा हुआ, सफ़रसा मूत्र, दोनों पैर सर्वदा ठंडे और गीले रहें, शरीर में रक्त कम और ढील शरीर । माटे बालकों को विशेष कायदा करना है ।

लार्डकोपोडियम १२, ३० शक्ति ।— मल मत्स्यगत

कठिन, छोड़ा और मत्स्यगत कृष्टसे निकलता हो, पटक भीतर तारसे गड़ गड़ गों-गों शब्द ।

नक्सनेमिका ६, ३० शक्ति ।— मल पड़ा, कड़ा

और कृष्टसे निकलता हो, बार बार दस्त जानेकी हासन पटमें दूरे बैनी, माताके घों मसाला मिश्रित हुए चाय पाने आदिस यदि बालकको कोष्ठवृद्ध का रोग हानो पद विशेष उपयोग है ।

ओपियम ६ शक्ति ।— उपरामयक उपरामग

पथका जुलाय इनक उपरामग कोष्ठवृद्ध, मल बाला टांग पड़ा गुच्छेदार ।

मैगनेशियम फ्युमेटिक ३, ६ शक्ति ।— मल गुच्छेदार,

उपरक पान भालगी दूर पड़ बारम्बार दस्तकी हासन ।

सुफ़म १२, ३० शक्ति ।— दस्तकी मैगना न

क्यों उसका शरीर में चोंटी जादि तो नहीं काठती मधरा
बाइ चोंड उस के शरीर में चुभती तो नहीं है ।

चिक्रिमा ।—तेकोनाईट ३,६ शक्ति ।—

गार, मूत्रा और गरम बालक अत्यन्त लडपना हो, सो
न मजना हो और बहुत डिनवना हो ।

घेतेडोना ३,६ शक्ति ।—बालक बहुत देर तक

रोना रह, एसा मातुम हा जि नींद भारी है किन्तु सा
म मरे, मबानक नींद न चमक उठ और मथडूर चित्ता
हर कर ।

कैमोमिला ६,१२ शक्ति ।—बालक दाता हा और

भाष न बर्ता हा, ज्ञान कर्म पाल्य परावर गारी में
एकर दृग्गता यह उरसा मातुम हा नान विक्रम व
कमव यह नीव ३ बहुत पायदा करता है ।

पापिया ३,६ शक्ति ।—बालक एव पाए हमे

भर एव बाहराव विन्तुव ही न थोसा हा जिहा व कुछ
लक्ष्य न जिगाह है ।

नङ्गमोमिहा ६,३० शक्ति ।—ब एवय और

एव कृन्ने क नाथ ए में नद, नीन न मना भाए वेउमी
बालक घनि दूर नान का ३५ बज्र व भमव नग भाए
हा कमव गारा में बैदना पाए, जिम बालकों की माना ही
समाना जादि क उबलाए ल पा है ।

जीवध मनीग ।—जिन १ पा ११ मजद के भ पर

न एव भाबा ।

दानक षट्क अधिक होना है ।

“शिशोदण्डु” चिकित्सादेखो ।

कान के पीछे पकना ।

माट मात्र धातुओंक शरीरमें कमा कमी कानक पीछे एक प्रकारसे फट जाता है अथवा घाय होजाते हैं । कानके पीछे दानसे उसका कान लगना कहते हैं यदि शरीरके किन्ना और स्थान में दाना 'छानन' करत है । इन सब धातुओंका जलसे न धोकर सूखा रखनाही अच्छा है । पतु साफ रखनके लिये कमी कमी गरम पानीसे धो जानना चाहिये । धोकर सूख करकेस पीछे डालना चाहिये । एम धातुमें साधन लगाया भूटा नहीं ।

चिकित्सा ।—कैलकरिया १२ ३० प्राणाग्नि १० या ३० वा मलकर २० इनमेंसे कोई भीपथ लक्षण अनुसार सुरह और गानकी दान उरदा धारण करनी है ।

छाननकी चिकि सा द्यो ।

इष्टना ।

(कन्नालदीन)

वायुवायुमें सब स्थायुविधान इष्टना उत्तेजनशील रहता है कि सामान्य कारणसही वातकको बांध [कम्ब

प्रबल ज्वर, सूखा भरम शरीर चञ्चली और यंत्रणा, दान निरक्षरने अथवा क्लिष्टाद्यैक उपद्रव क कारण इट जाना, दात किडकिडाना, मार शिथिलता ला ।

आनिका ६,३० शक्ति ।—चाट लगनक कारण यथा मस्तकमें चाट, गिरन वा धजा लगनस राग ।

धेलेडाना ३,६ शक्ति ।—मस्तक अधिक गरम, चहुरा धाल, नौनों आँखे लाल भावोंका पुतली फटा हुआ, सात समय चमक उठना और उल्टा पडना, तन्द्रा हाना किन्तु मा न भङ्गना, चहुरा भावि विगडा हुआ, दात पानमा और मुहमे हानि निकलना वायठोंक उपरा त तन्द्रा । जा शालक धाहा अथवा मही अधिक बुद्धिमान मालुम होते हैं और अधिक चतुर आत्राक दीख पडते हैं उनक इट जान पर धनदाना अधिक उपयोग है ।

कैमोमिला ६,१२ शक्ति ।— हाथ पैरोंका चिचता जीम और भावोंका भाक्षण सात समय उठलना और पडलना, चहुरा लाल, अथवा एक बनपटी लाल और दूसरी पाकी, बाहकक शमाय में अत्यन्त विशिष्टापरत और दलाई, शान करनक लिय मयना गादगै लकर टइलाना पद, कपाल और मस्तक पर गरम पसीना, सयदा कराइट और पानी पीम का इच्छा ।

सीना ६,३०,२०० शक्ति ।—दात का चायट, उपरान्त दा हाथ पैर आदि सब शरीर का कटा पडजाना,

अदि उद्भूत बैठ जान पर मयदा निकलन में थिलम्य हागे स राग ।

हात निबलना कारण हाता—थलजाग, एकानाइट कैमाभिला ।

मानसिक उद्भग कारण हा तो एकानाइट [मयसे], कैमाभिला [काधर], भोपियम [मयस] ।

मज्जीन कारण हा तो इपाका (उल्टिया हों ता) नकमया मिदा (काधर्य हा ता), पलसाटिला [माहारका दाप हा ता] ।

मोमिक राग यदि कारण हा ता एकानाइट थलड ना पलसीमिनम ।

यदि मयरा बैठ जान के कारण राग हा ता मायानिया थलडाग । काटा कारण हा तो माना इगोनिघा ।

श्रौच प्रयोग ।—बायठोंके समय ३ । ४ छाटा गर्ती १० । २० मिनटक अंतरस जय तक साराम न हो जाभ पर रखनी चाहिये । उपरान्त रोगक लौट मानका भागका जपतक रहे २ । ३ घंटेके अंतरसे एक एक मात्रा शौच दना चाहिये ।

सहकारी उपाय ।—राग उत्पन्न होनेही शरीर और कपडोंका सल हालना चाहिये मस्तक उघाकर मस्तकपर, मुखपर, घहरपर, माथोंपर छातीपर ठंड पानाक छोट लगान चाहिये । बहुतसे मानमी इकट्ट हाकर हवाका बह न करे । भाजक दापस हागे उल्टी करना चाहिये और काष्ठवज हागे गरम पाने और साबनकी विचाराग रगाना भच्छा दे ।

सथ मिलाकर १६। १६ पे दिमागमे कुल ३२ होतेहैं ।

यदि दान निकलने में विघ्न हो भयवा यालक दुर्बल गारार वा हो तो दान निकलने के समय अनक प्रकार के राग उत्पन्न होतेहैं । मसूडा लाल, सूजा हुआ और बदे, यालक को जो घाजामठ उभीका पात हा काटने लगे और अपना मुहाका मुंह क मानर बकर काटता रह, मुंह म गार गिरती रहे, ज्वर हो, यालक रोय और टनक अच्छी तरह मोद न आये खासी हो, विशेषकर रात्र में निद्राक समय उदरामय दिखलार पड । बसा बसा थायठ हाने हुए भी देख जातेहैं ।

चिकित्सा ।— एकोनार्डिट ३,६ शक्ति ।—

सबदा यक्षेती किमी भयस्यामि रहनपरमा शान गहा बाधक भयना राता रह, डिनकता रहे और किसी प्रकार शांति नहो, दारोर सूजा और गरम निद्रामें ह्याघान मथा गरम प्रयत्न प्यास हरा पानीमा उदरामय, भयवा काहपद ।

एपिम ६ ३० शक्ति ।—नींदस चित्ताकर और

नेकर जग उठ पशाथ छोडा हरा पीलासा उदरामयका मर प्रात बाल अधिक अधिक जटार ल और भद्रुम्य मादुम हा ।

वेलेटोना ३,६ शक्ति ।—वाग्ज बगरता हा मय

पाकर नींदते जाग हडे, टक्की लगाकर हलता रहे याग समय घमक उठे और बल्ल पड चहरा और दानों भांज घाल, मन्ज गरम थायठ हपगम हरा मोद मनुडे गुड हुए और जन्म ।

हायोमायिमस दी शक्ति ।—बालक मुद्गं

एणो दे, मसूँसे दायता रहे मानो कुछ खवाता दे, दायठ, चहरके पढोका विशेषकर भाखोंक बायठ, गहरी निद्रा असाष्ट खना भोग बिछाने खेचना, बेमाद्रुम पीले रूका पानीक समान मख ।

इग्नेशिया दी शक्ति ।—बिजाकर रोता हुआ

नौइ स उठे और सय शरार कायता रहे, किसी एक स्थान अथवा जगहा भाखपिक फडवता, बालकका मखत कइदा, इर्सास राये धीरे लम्बो साम ले मलम रक्त प्रीर मामहा जाच बाहर निकल भाय ।

इपीका दी शक्ति ।—लगानार जा मिचलाना और

उलगे, उदरामय मठ घामक समान दर या मालस रगका उबता या भागदार खोसी, मानो दम अन्का जातादे, छातीक नीठर रूपमा घटघट करता हा ।

मैगनेशिया फाय दी शक्ति ।—हरा और खट्टी

मय बाला उदरामय—दीर्घस्थाया अघाम् बहुत दिन टहरने बाला हो बारम्बार खट्टी बरसूटी डलटा हाता ।

मार्कुरियस दी शक्ति ।—बहुत हार गिल्ला मयद

माल, जमा कर्ता होठ हार मुद्गं छाल उदरामय, भयिक धेगुके साथ हरा साम गिला हुआ अथवा रज गिला हुआ मल पीला और नीला मखका पछाय, रात्रिक समय यदना ।

नकुरोमिका ६, १२, ३० शक्ति ।—पालक

दान निकलने के समय बालकों को साधारणतः जो रोग
 हात हैं उनका विवरण नीचे देते हैं—

१-वायुवद ।

चिकित्सा ।—त्रापोनिया ६ शक्ति ।—

मूत्र सूखा हुआ पेशा और बड़ा, दस्त आने में कष्ट,
 आहार करते ही बल्लों ।

नक्सत्रोमिका ६, १० शक्ति ।—बार बार दस्त
 किये जाता हा किन्तु दस्त न होता हो, आँसु का क्रिया
 का ह्रास, उन्मत्त हाजन न होना, भ्रूय न लगना बालक दिन
 दिन करता हो ।

ओपियम ३ शक्ति ।—अचानक अत्यन्त काष्ठ
 बदन आँसु का क्रिया बन्द और पिल्लूट वगैरह ।

२-बायठे और मूच्छा ।

बालकों क इठ आने का प्रकरण देखा ।

३-उदरामय ।

किकित्सा ।—कैमोमिषा १२ शक्ति ।—

उत्तम औषध है । पतला हरे रंगका बदनदार मूत्र बालक
 अत्यन्त रोता हो सूखी आँसु आने समय अमक उटना,
 जगन से सयदा गोरी में लहर टटलना यह अट्टे दूधकी
 उन्टी, मलिद्रा ।

इपीका ६ शक्ति ।—अत्यन्त पेट भरगया हो
 और उलटिया होता होंगे मूत्र क्षामदार, अनेक ल-



चिकिगा १— केन्थेरिस ३, ६ शक्ति ।—

सबदा पनाथकी हानन, बूद बूद रक्त गिरना, सूत्राशयमें भयङ्कर दद, पाना पानस दद घटना ।

डपीका ६ शक्ति ।—रक्तमूत्र नेत्र शीत मूत्र

पयमें बाटनेक समान दद, बहुताया रक्तलाय चरु अ ।
आमोपर बिलकुल सुदांपन रक्तकी उच्छता ।

मर्कुरियस ६ शक्ति ।—मूत्र रक्त मग्न हुआ

दाघ पद, उनमें मफद २ दुबड धपया मयादक सम न म क्रम हो, मूत्रपयस रक्तप्रदाव ।

नार्डेट्रिक पेसिड ६ शक्ति ।—अथ त रक्त रगत

पनाय में अमहा दुग्ध किंवा यादक पशाव क समान राधे पाया व्यवहार हालक उपरा त विशेष उपकारादे

नक्सवोमिका ६, १२, ३० शक्ति ।—शपाथ पा-

से रक्तधाय किंवा बयानारका रक्त घद हानन पैला येमिक नौपथ खानेक कारण रोग उत्पन्न होतस ।

फास्फोरस ६, १२ शक्ति ।—जिन मनुष्योंका

घोडस प्रावस अधिव रक्तधाव हो उनक खिय उपकारीदे ।

औषध प्रयोग ।—यदि राग फठिन न होना

दिनमें २ । ३ वर भयण है ।

पथ्य ।—पथ्य पना होना चाहिय ना सामानास

पथनाथ, किंवा प्रकारका उत्तमक या गरम पस्तु व्यवहार न

चिकित्सा ।— बेल्लेडोना ३, ६ शक्ति ।—

मूत्राधारके मुहपर जो सुकड़न पैदा करने वाले पहेई वन में पक्षाघात होनेके कारण लगातार बूद बूद पेशाब होता है ।

सीना ६, १२, ३०, २०० शक्ति ।—बेमालूम पेशाब होता विशेषकर रात्रिमें । यदि कीड़ों के कारण रोग वापक हागो यह औषध उपकार करती है ।

कोनियम ३, ६ शक्ति ।—रात्रि में बार बार पेशाब होगा, पेशाब बिडबुल ही रोजनेकी शक्ति न रहना रात्रिमें बिछोने के ऊपर पेशाब करना । वृद्ध मनुष्योंके लियेही यह औषध विशेष उपयोगी है ।

नक्सवोमिका ६, १२, ३० शक्ति ।—जान पीनकी गडबड वा शराय पीनेसे रोग होने पर ।

फास्फोरिक-एसिड ६, १२, शक्ति ।—यदि हस्त मैथुन हम रोगवा कारण हो जो शिशु बचवा बालक बहुत जल्दी बड होजाने हैं ।

पलमाटीला ३, ६ शक्ति ।—बैठ रहेके समय वा घूमनेके समय बूद बूद बरक पेशाब गिरताहो, फांसने समय और मान समय बेमालूम पेशाब हागा । वातावरण प्रकृतिके मनुष्यों के लिये और उनके लिये लिनका लि राना जल्दी भाजानाहै यह औषध उपकारी है ।

रस्टक्स ६ शक्ति ।—रात्रिके समय बचवा बैठ रहनेपर वा पिन्नाम के समय बेमालूम पेशाब हागा, वाग

मलधारमें—एसिड-आराइड, बाई एनामिडिन भायेंनिक, सल्फर ।

मण्डकोपमें—पेट्रोलियम, सल्फर, आटम टिंग, मारको-पोडियम ।

महकारी उपाय ।—रोग स्वानको पाबुनम धाकर गरम तल लगाना चाहिये । जितना ब्यस्त रखा जायगा उतनाही रोग जल्दी भट्टा होजायगा । इस कामपर निगाह रखनी चाहिये कि घावका रस बिम्बा दूधर स्वात में न छगे । जहां रस लगगा थड़ी घाय हातायगा ।

—o—

स्फोटक (फोडा) ।

(वाइल)

लक्षण ।—बड़ा दानपर फाटा और छोटा रहनपर पु सी बहलाता है । पदल जघन छाल रस दू—पीठ मराह होकर मुद्द हाजाता है । कभी कभी अपने साथ फूटजाता है और कभी मदनरम उसका काटना पडता है । रक्त दूधित हाकर प्राय बालकोंके माथे और मूहपर फाट और पुम्सी हाते बूधे जातेहैं ।

चिकित्सा ।— एकोनाईट ३, ६ शक्ति ।—

फोडा भस्मत् प्रदादिन ज्वर और बचैनी पाहेके स्वातपर मसिके समान जलनहो ।

बेलेडोना ३, ६ शक्ति ।—जब पहले लालहो लपकन

श्रौत प्रयोग 1-2। ३ घटक म न ए ए म माता ।

यदि सल्फर हीजाय ता प्रति 12न सध्याव समय एव माथा ।

सहकारी उपाय ।—अत्यन्त दूद हानो अन्साजा

पुनरिप्त बाधता चाहिये । यदि मयने आय न पुग्नायना मन्त्रसे घाटा चीरा लगा देना चाहिये । बाग्वा ए डा हाना रोहन के त्रिप स्वास्थ्य मन्त्रधय । नयना ए द्राष्टि रता चाहिये ।

—o—

विद्रधि ।

(त्र्यंगन)

लक्षण 1—कण्टु वा यन्त्रे मयाद उत्पन्न हानातका

विद्रधि बहुत है । इसका साथ साथ दूद भीट मयाद रहतादि एषम भग्न में मयाद त्रिपत्र आतादि । यह पाद नय भीट पुताय दा तरद्व होत है । पदोंमें, दृष्टक ऊपर, यहन इनन मादि कथनोंमें यह हाना हुए दध जाने है ।

१ म तदन विद्रधि ।

लक्षण 1—पादित कथान गुणाह्वाना प्रदर भीर

वेदना मुक्त । कुछ त्रिप बाह उभने मयाद होता है, दूद मन्त्र, अगुताम हाहनन उसक म नर मयाद मन्त्रुम हाता, त्रिप बाह उस में मुद हाकर चट जाना है भीर उभने से

रक्त मिला हुआ पाना व समान और बन्दूदार ।

हीपर और सार्डोलिया ३० उक्ति ।—पञ्च

पञ्चानन क शब्द । घायल पर पट्टनकामा आकार धारण करने पर और मयाद् पतला और पालीक समान और बन्दूदार होने पर सार्डोलिया दिया जाता है । अल्प व मयाद् निकलता है ता सार्डोलिया महापथ है, इस व मयन करने भ मयाद् कमदा आता है । मयाद् निकलने परमा यह महापथ है, क्योंकि यह घायल व बहुत ही जल्दी सुखा देता है और घम उत्पन्न कर देता है ।

२ व पुरातन विद्रधि ।

लक्षणा ।—बहुत और २ उत्पन्न हो । पहल रक्षा का

तबलाक मुपन या लाल रगत नहीं रहता ।

चिकित्सा ।—आयानिया ४ मकुरियस माल ४ भार सार्डोलिया

२९ दिया जाता है । पहल आयानिया दिनमें २ बार द्वाक पाठ मकुरियस और सार्डोलिया । बीच बीचमें घण २ दिन औषध बाध रचना चाहिए । बीच बीचमें सत पर सयन करनेमें विशेष पर्यादा दिखलाइ पड़ता है ।

सहकारी उपाय ।—तद्वत् रागमें पहल गरम पानी का

सक और पाठ अहसाहा पुल्टिस कमस लगाना चाहिए । पुल्टिस ठंडा हात पर बंदूक देना चाहिए । मयाद् निकलने पर कल्लुग लोणक [१ भाग पानामे १ भाग औषध] का पाकर और उर्मी लोणकमें कपडा निगाकर बीच देना चाहिए । कल्लुग सय प्रकारक घायल दिखते महापथ

हाईट्रास्टिस २ शक्ति ।—मुह गला नाक और नाभ आदि स्थानों में घाय होन पर यह फायदा करता है । इस का लोशन और बुझी आदि भावश्यकता क अनुसार व्यवहार किये जाते हैं ।

घ्रासैनिक ३० शक्ति ।—अथ त मदाह मुन और जलन क साथ घाय महजही रक्त या पतला लडा हुआ मयाद निकलना घाय अच्छा न जाना हा ।

हीपर-सलफर ३०, कैलकेरियाकार्म ३०, सलफर ३० शक्ति ।—धातु परिपतन काल क व्यवहार किया जाता है ।

अत्यन्त मयाद निकलने रहने पर—घायना मरु मस फासाटिखा हीपर सलफर वा सलफर दिया जाता ।

महा जमा घाय होने पर—घामेनिक खजमिन वाबा-बर्क टव खेन हापर मिश्रण का उपयोग ।

रुधु वे घाय होने पर—घामेनिक एमिड इला इला कनिया, भासगशिया एसागटाडा मासलिन मिश्रणियम ।

घाय हावर इला मिश्रण पर—घामेनिक घायना पोकरोरस बाबोबन सासबासिदिम साईनिक एमिड सदर ।

उपहन क काल पर—महुनिक साईनिक एमिड पूजा ।

घाय मयादवहार होने के काल—घामेनिक वाद-वेज इला मसकर सासदुह एगड ।

हाईड्रास्टिस २ शक्ति ।—मुह गला ताल
 और मांस आदि स्थानों में घाय होने पर यह कायदा करनी है ।
 इस का लोशन और हुस्ती आदि आयुर्वेदता क अनुसार
 व्यवहार किये जाने हैं ।

आसेनिक ३० शक्ति ।—अल्प त प्रदान युक्त
 और जलन क साथ घाय, सहज ही रक्त वा पतला गड्डा
 हुआ मवाद निवृत्तना घाय झण्डा न होता है ।

**हीपरसल्फर ३०, कैलकेरियावान ३०,
 सल्फर ३० शक्ति ।**—धातु परिवर्तन करने क लिये
 व्यवहार किया जाता है ।

घायन मवाद निवृत्त रहने पर—चायना मङ्गलियम
 एम्मास्टिडा हीपरसल्फर वा सल्फर दिया जाता है ।

गड्डा हुआ घाय होने पर—आसेनिक छैरमिम वाया-
 वनात्रेवधिर हीपर मिश्रण यादलसीसा ।

हृदय में घाय होने पर—नामफाटिक एसिड डग क
 करिया मास्फिशावा एनाफाटिडा, मास्फियस मिश्रण ।

ताप दाहर रक्त मिश्रण पर—आसेनिक चायना
 फोस्फोरस वायो-वज एम्मास्टिडा नाईट्रिक एसिड
 मङ्गल ।

उपरोक्त क वाक्य घाय—मङ्गलियम मास्फियस एसिड
 मृदा ।

दाहर मध्यमदाहर दाह के कारण—आसेनिक वायो-वज
 दाहर मध्यम मास्फियस एसिड ।

बाध दना चाहिये । (इन लकड़ाके टुकड़ोंको सिंगू ट कहते हैं) ।
 लकड़ाके टुकड़ोंसे बाधनेके उपरान्त इस बातका ध्यान
 करना चाहिये कि टूटा हुआ स्थान हिलने न पाय । यदि हाथ
 टूट गया हाता ऊपर लिफट हुए तराफसे बाध देनेके उपरान्त गल
 में एक कबडा बांधकर हाथ लकड़ा दना पड़ता है । यदि पैर टूट
 गया हाता छाटी छडा मधया टाठसे यदि अच्छा लकड़ा न
 मिले तो) टूट हुए स्थानका अच्छा तरह ठोस बँडाकर तान चार
 जगह तिनचार रमालोंमें पैरका पारसे बांध दना चाहिये ।
 बाधन समय बाधधानामें धारना उचित है क्योंकि यदि
 बहुत पारसे बाधा जायगा तो तन स्थानके रक्त संचार
 में बाधा पड़ेगी । अधिक जोरसे बाधनकर तन न लूट
 सकनेके कारण फूल उठनाहै और अत्यन्त बल गादुग
 हाताहै । अतएव दानों टूट हिंसल मण्डी तरहसे न लुप्त
 जाये तबतक हाथ पैर बांधि चराना मधया लकड़ा
 धारना न चाहिये ।

भयन करनकी औषधोंमें पिसाग्राहक मूल उत्तम
 औषध है । दिनमें ३ । ४ बार भेषज दाना चाहिये । यदि
 प्रदाह दना एकमात्र वा बहुधाता । टूटाके पारसे तन
 दद हाता मज्जितिम या मज्जिह वासपानिक । दसा सुदमे
 में ३४ हाता बलकिया और वाधनिया उत्तम
 औषध है ।

बीहेशा काठना और टुक चुगना ।

चिकित्सा ।—इस पुस्तकके नाम ३८ अक्षरों

नर उगरीमें लगाकर कानमें तुला रखना चाहिये कि महन
 हाथा है अथवा नहीं । यदि थोर पाह तीन त्रैमे किसी
 फलका पात्र, कौड़ी, रगटा पन्थिअ अदि काममें गिरजाये
 ना बड़ी सावधानीस उसका घोंसट म पकहकर निहाल
 हाथनी चाहिय ।

चोटम शीर नीला पडना ।

निहित्सा ।—२।४ मात्रा आनिका मयन करनके
 गिये दना चाहिय । चाट लगनेही यदि आनिका लासम
 प्रयाग किया लाय ना मनो दूद हास पाता है न माल
 पडनाहै । यदि ना पडमा जाय ना हेमामलिष अचरा
 सायध है ।

निय भक्षण ।

अहर अथवा काह अट्टीगि पात्र मार है यह आरमना
 सुख्य भुविचिन्माका मयथ करना चाहिय । एक पन्ने
 बतानर सामपरी मरु अरना अन्वाय है क्योकि कर
 करनस मगाका जीवन मरामे पडनाया है ।

यदि ना प्रक्षाक विपाक पदाय सावे होतो हो तुदे
 तुद उगरीका घवलम्बन करना पडना है । अट्टीगि पात्र
 जाया है यह आरमही बहुत मनुष्य रमटी कराने वाली
 चाडे विपाकर उला करान है । किसी किसी अहरके
 छत्रे उन्टी बताना उचित है भीर किसी किसी



त्रिषोसा ।—वेलेडोना ६ शक्ति ।—यदि केवल
 रात्रि समय राग दाती यह भीषण मूत्रधारण करने
 वा शक्ति घटाना है । सोने समय विद्वाना, गों गों करना
 वा समथ उठना ।

मीना ६, ३० शक्ति ।—बादों के कारण दातसे ।

काम्पिक्रम ६ शक्ति ।—पहलो नौद्वे व समय
 समान्य पगाव दाताना ।

फासफारिक एसिड ३, ६ शक्ति ।—यद्युत दा
 शयादा लाना व समान बिना रगका पशाव ।

फेरम फास ६ शक्ति ।—रात्रि में राधे बाव
 बिछ न पर पगाव करना ।

जेलमीमीनम १२ शक्ति ।—बाह रात्रि में दा
 बाहे दिन में पशाव न राव सकता ।

मूत्रेन आयुक्त ।—यह नदी निदावा हूँ भीषण
 बावकी क बिछ न पर पगाव करके व राग की सर्वोत्तम
 भीषण है । यदि धार और भीषणोंसे बावदा व दा ना समय
 मनुष्य दा राग धारण वा पगाव करता बाविक है ।

महेशी उपाय ।—यह बिछ न पर सुहाना
 बाविक । दातके बाविक बाव न है । दातके दा सुहाने
 बाविक बिछ न व व न बिछा बाविक और बिछा बाविक
 बाविक व उपायकर सुहाने बाविक व न समय बाविक

कैमोमिला ६,१२ शक्ति ।—शगरवाधत्यन्तरमी

और लाख धन धागुवार पानी पीनका इच्छा, शत्यन
बेचैनी, विशपवर रात्रिफ समय तडफाग, कगाहना, चिह्नाना,
मस्तक में यदानक कि बालोंक अन्दरमी गरम पसागा,
भ्यास अल्दा जल्दी, खासी, शुष्माके पारण धड
धड चम्द ।

काफिया ३ शक्ति ।—उर एमा कुछ भाधक

महो किनु अनिद्राहा प्रख उपमग हा नौद न जाय
अथवा सोन समय तडपनाहा और धारभ्यार चमककर नग
पढताहो, टिनकना एकरार हस्तग और घाडा हा उर याद
फिर राता ।

जेलसीमीनम ६,१२ शक्ति ।—रात्रिका नकटाफ

पटना, चहरा मानो पाठन रगका लाउ हारहा ह अत्य त
खापविध यचना मिर घूमना याउरवा मघदा गिरजा
वा भय रहना थोटना दिनमें अत्रिक बुखड, भाषा मीधा
कर उठ वा घंट न सकना उमाला वा शब्द सख न
कर सयता ।

डग्नेशिया ६ शक्ति ।—चिह्नाकर रोकर नौद स

जागना भार मघ शरीर का कात रहना, पाउरों क पापठ हात
पैरों का इटना ।

मार्कुरियम ६ शक्ति ।—पाकाशय और पट भादि

स्थानोंको दयानन दद हग काम मिंग दुआ मख और
दलका हापन, चदग कुछ गालासा पठाय लाउ रगका
नौर अ-धुहार, मुम्में छान उर रदा परभा पसीन धाना,

औषध प्रयोग ।—आग्नेयकता के अनुसार ३।४ घटके अंतरसे एक एक मात्रा ।

सहकारी उपाय ।—अत्यन्त ग्याम हातो घाटा थोडा पानी देना उचित है, क्योंकि प्याससे बालक माना का दूध अधिक न पी ले पहली प्यास देनसी बात है। ज्वर में दूध रुक कर चार्गी भयवा साबूदानका पानी पच्य है।

यकृत पीडा ।

आजकल बालकाक विशेषकर शहरों में यकृत का एक प्रधान रोग हो उठा है। यदि इस रोगका आरम्भमें ही चिकित्सा न काजाये तो प्रायः प्राणोंका सशय हो जाता है। गर्भोंकी अपेक्षा शहरोंमें धीरे दरिद्र लोगोंका अपेक्षा घना मनुष्योंक घरमें ही इस रोगका प्रधानता पायी जाती है। उसका यथेष्ट कारणही है। पित्त वायुओं का यकृत पाडा इनकी अधिक गर्मी वाड जाती भा किन्तु आजकल ज्वर हाते हा यकृत पर बहुत खान दना पडता है कि काह रोग तो महा है। बहुतस विना मानार्थी निदान एक बार यकृत पाडाक कारण अपनी सन्ता छोडा है इन रोगका नाम सुमनर्हा शयरा उठते हैं। बालक में घातमा यदद कि यदि वायुकों यकृत पीडा हो जाय तो विशेष यत्न शुभ्रुवा धार चिकित्सा ये बिना भाराम नहीं होना। यह प्रमत्त यकृत लगना है भीतर भीतर ज्वर घाडा थोडा रहना है, वायुक यकृत रोग

है । ग्रामों में और दृष्टि मनुष्यों के शरीरों में ये मय कुतूहलम गरीब होने वाले, इस कारण गृहा य राग बहुत ही कम पाए जाते हैं । (४) दस्तानूर आदि का प्रयोग । याल्पों का यरम्भार जुलाब दना पिल्लुल प्रयोग है ।

चिकित्सा ।—इस राग की प्रधान आयुष्य गारे लिंगे मनुष्य हैं । प्रायःपिया, कडूरिया कैमामिला, चडी डानियम, चायना चामामीम अयाडायम काला-काय कैवसिम, मावुपियम नदसयामिका पाडाकारम साडीनम भीषया, मलरर ।

त्रायोनिया ३,६ शक्ति ।—कोष्ठवद गल कटिा धार मृगा, छाती चहटा पाटा, जीभ मफद सी प्यास ।

कैरुकेरिया कावे १२,३० शक्ति ।—माने समय चवान क मगत मुद बनाना, गण्डमाका दूषित धातु ।

केमामिला ६,१२ शक्ति ।—यहन में थोडा थोडा दद अगण्ड शरार पाटा, जीभ का रग पासा कट्टया स्वाद यत्रणा ।

चेलीडोनियम ६ शक्ति ।—शरीर में दद, जीमिच लाना कोष्ठवद अथवा दुधल करने पाटा उदरामय, यहन का दद, रगत क उपरान्त मारगम ।

चायना ६ शक्ति ।—यहन में दद वाचने स अधिक यहन दनी दुर धार कडी पट फूला रदन, शरार पीला रानि में मार भाजो क उपरान्त यन्ता ।

भाग, बालक्य भूय न लगना यथा चातेही कृति, पेट पुन जाय।

श्रीपथ प्रयोग।—रस रोगके लिय औषध तज-
बीज करना कठिन है। फार औषध तजगीज कर कुछ अधिक
दिन तक ब्रह्मका इकर दखना चाहिये। दिनों २।३ बार
भाष्य दना यथष्ट है।

महकारी उपाय।—यहन के खान फो दिन में २।३

बार सेवन मे फायदा दात पढता ह। शरार का दक्कर
छुट्ट हवा में व्यापाम करना अत्यापश्यक है। बालक का
भयदा गोदी में न रखकर मजान के भीतर बलन दना
चाहिये। दूध सुपर्य नहीं है, अतएव कम करदना चाहिये।
थाली या साकूहना खानको दियाजाय। मीठा जितना कम
दिवा जाय उतना ही अच्छा है। साधारण मिठाई की
अपक्षा दूध और शकर अच्छा है। माताको अधिक मल
अथवा घामिख दूध पदाय लागे उचित नहीं। मेल्सिस दूध
सुंएचारक और बलकारी है।

पुष्पराठी जाती।

यह बालको ही का रोग है क्योंकि ७ वर्ष की अवस्था से
ऊपर फिर यह रोग प्राय नहीं जाता। भासपय ही
कैम्पिक बिन्दा का मरुद ही पुष्पराठी जाती है। यह दो
प्रकार की होती है, एक अस्थाय और दूसरी स्थायिक।

आमाम्य प्रकारका रोग अस्थायिक अस्थाय होता है। बालक
रादि से मरुद भला सोना हा २४ घण्टे उपरान्त अस्थायिक

कमल घाट पकड़ लेता है और अचानक होनाता है अतः मँकलात अथवा दम बन्द हाकर प्राण त्याग देता है ।

चिकित्सा ।— ऐहोनाईट ३,६ शक्ति ।—

राग की प्रथमावस्था में दना चाहिये—प्रचल उरर मूला गरम शरार अत्यन्त बर्धना ठडो पश्चिमा दना लगन स् रोग निगलन मे पालक रो उट माना गज में दद है भाव तिकाग्न में जाग का शब्द तितु श्वास लन में नहीं प्रत्येकवार श्वास तिकाग्न क उपरांत हा स्वरभद्र क साथ रूधा घासी ।

वेतेडाना ३,६ शक्ति ।—मसक में उचाप, चदरा

और श्वास लज गल में मयाक दल गले पर हाथ रखन स धना घाटूम हा माना दम बन्द हाता है मूला घघ्राट क साथ छात्तुगिष घासी, कराहता, तनत्रातु तितु राग क मजना हो मान लाग्य घमक कर उछा पडता ।

कैतकौरिया १२,३० शक्ति ।—मोटा घल्धग

शरार, माध पर अधिक पमान हाता श्वास गज में शब्द और बह उत म पालक तजगाव स रो उडे मोदके उपरांत बटना (छिन्नसिक्क समान), गण्डगाखा हापन धातु ।

कैमोमिला ६ १२ शक्ति ।—सदी य पैदा हु

सुधतानी नामा धरिष मरभद्रता गज में माद साद और मर गद उल मूधा बाधा रात्र में रक्षक कि

श्याम रावो घाबरी खांसी होना, गले में बुल भी कमकर
धाधना सदन न होना, सोते समय तड़पना और फराहना, सोने
के उपरांत कष्ट और दुःख का पदना ।

फ्लासफोरस ६, १२ शक्ति ।—अत्यन्त स्वरमद्ग,
लरिक्त में बूढ़ रम से पात बड़ो में कष्ट होना अथवा
घान न बंद सकना, खाते समय सब शरीर कापना, घुब
राली आमा व उपरांत स्वरमद्ग रह जाने पर यह औषध
दा जाता है ।

स्पजिया ३, ६ शक्ति ।— सामान्य घुबराली
आमा और परखरी शब्दयुक्त खांसी सा मां शब्दके साथ आसी
जैसे ककड़ी काटने समय फरात का शब्द होता है अथवा
श्यामराधक आक्रमणत, अथवा गल्लक पीछे की थोर न विवा
जाय श्वास न लिवाजानक आसीसुयी ।

ऐन्टिमार्ट ३, ६ शक्ति ।—रोग की शेष और
सापानिक व्यथा में, प्रत्येकवार खाते समय माथूम
हो कि थोडा बूढ़ निकाल द किन्तु घालय में पिच्छुब न
निबूब [१पीब व समान) कष्टक साथ स्वासत्रिया,
तज छाटा स्वरमद्ग व भाध या सार सार शब्द व साथ,
बहुत हा कष्ट स छाती फैझार आसक बहुत ही उबलीक
और खमी बुदग्ना कि रोगी खाट पकडक बपाल और वमी
वमा सब शरार ठड पसीन भ तर शाना ।

औषध प्रयोग ।—यदि रोग बटिन साकार
पारल हरे ता खाताम होत तब १५२० मिगट व अन्तर से

और एक घण्टा का अवस्था जाने ही माता का दूध सुड़ा देना उचित है । बालक का दूध सुजाना समय यह यह होगा चाहिये कि बालक मुँह दागा है अथवा नहीं और मात निश्चला व उपद्रव जाने ह या नहीं । यदि माता का दाँत पाडिन और दुबल हा अथवा स्तनदुग्ध सूयित ना ता जितना ज़रूरी दूध सुड़ा दिया जाय उतना हा अच्छा है । यदि बालक दुबल हो अथवा किसी प्रकार का रोग उस क शरीर में हा ना जय तक सुस्थ भार मयल न हा जाय माता का दूध सुडाना उचित नहीं । इस विषय में ना कुछ लिख गया ह उनम स्पष्ट मात्राम हासिलना है कि दूध सुडाना भ पहल माता और बालका दोनों की शरीर व और स्वस्थ सम्बन्धाय दोग पर ध्यान रख कर दूध सुडाना चाहिये । बालक का दूध सुडाना एक सामान्य विषय नहीं है ।

बालक का दूध सुजाना निश्चय होने पर क्रमशः दूध सुडाना और दूसरी उपयुक्त खातका चीज का अभ्यास कराना उचित है । अतः दूध सुजाने न स म ना और शरीर शान्ति क दिव्य हासकारक हो सकता है । बालका दूध छोड़नेका अभ्यास कराना कुछ मद्दत काम नहीं है । यदि बालकका मातामे जुदा न रना जायक विशयकर रात्रि क समय ना क्योनि दूर नहीं छाटा जा सकता । बालकका लक्ष एक पिछार पर राना नहीं हाता । किन्ता दूसरा हाथ्यार शक ऊपर बालकक हात, हात और भाहार बादिका भार दना पडता है । यदि हात में अधिक दूध हाता रना जल्दी ना त्याग कराय गिताभी चल सकताह किन्तु यदि कराना हा शानो बहा

यदि स्त्री फिर गभयती हो और स्तनोंमें दूध होता यह दूध मन्ताका बना नहीं बना पादिय । यह दूध मन्ताका त्रिय नियुक्त । यह दूध बहुतहा बढितास पचता है । गमायस्था का दूध मात्रा भी इस शास का एक दूसरा कारण होता है । गभ मन्तार व पदम ही बालक स दूध छुट्टया बना पादिय । इन्तु यह मन्तार बहुत शास हा ना गभमन्तार हुआ है यह जान हा पाठक का माना व जान का दूध कमी न पाव बना पादिय ।



दूध विलाने वाली धाय तज्जीज करना ।

यदि विन्ना कारण बिनासे बालक का माना का दूध न पिलाया जायक यथा दुमायक कारण बालक माना हीन होजाय ना धाय का मन्तारपना होता है । एसा मन्ता में ऊपर का दूध विलान की अपवा धायका दूध पिलाना कठिन है । दूध विलान वाली धायकी तज्जीज करना और धायकी धयका मन्तना परा कठिन है । धायका विलान आगम्य हाता कठिन है । धाय और धसकी मन्तारकी कठिन माना और धसकी मन्तारकी कठिनसे बहुत दुष्ट मिलनी भुजनी हाती पादिय । धायका मन्तार कठिन धाय और धानुमन हासत हास हाता कठिन है । इस हास काय धाय मन्तारका मन्तारका कठिन हास हाता कठिन । धायक हास व दूधकी पलीका कठिन व कठिन है । धाय हासकिल धायकी मन्तार कठिन हास कठिन कठिन हाती कठिन हास । हा धाय कठिन धाय कठिन हास । हा कठिन कठिन है ।



है । छाट छाट बालों का पायठ बाहर मृम्यु हागी है ।
यह मनुष्यों के जल जाने से उनका साधातिश नहीं हाता
किन्तु अपना अधमा सर पडने ही मय का कारण हो
जाना है । मस्तक अधमा पेट जल जाग विपदजनक
हाना है ।

चिकित्सा ।—चिकित्सा क विषय में सध स
साधदशवीय विषय यह है कि जल हुए स्थान की पाय
स रक्षा परती चाहिये, अतएव किसी स्थान क जल
हो औषधादि ऊपर लगाकर उनी समय उस का टक दन
चिकित्साका एक प्रधान अङ्ग है । इस क लिय बहुत
सा औषधों का व्यवहार हाता है । यथा—

१। परकाहल ।—जल जाग पर जब तक फोला न
उठ तय तक इस औषध का ऊपरा प्रयाग करना विष
उपकार दीखपडता है ।

२। वैधिरस ।—ऊर ही ऊपर जल जाग स अधमा
बहुत गहरा न जलने स इस औषध का ऊपरा प्रया
करना बहुत पावना करता है । एक घातल पानी में स
बृह अधध मिठाकर इस पानी में कपडा भिगोकर ज
हुए स्थान पर सगदा टक रक्षना चाहय । उपरांत जल
आदि कष्टकर लघुन सय दूर हान पर जले हुए स्थान क
सामा य मरुदम या मक्खन लगादेना चाहिय ।

३। मैदा और ते ।—यह सधदा सहज में हा पा
जासकता है । किसी स्थान में जलन ही उस क उ
गातियल का तल टाक कर उपर स मैदा अष्ट त
पुरक दना चाहिय और जल हुए स्थान को पूर तरद क
दर दना चाहिय ।



2